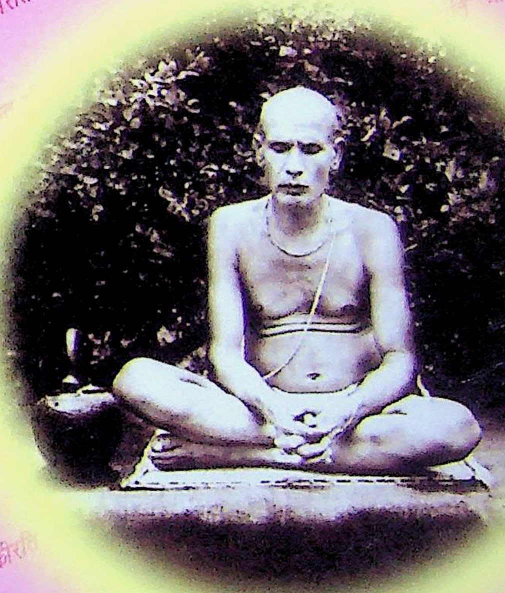
श्री संत भगवन्त कीरति

भगवान, देवी-देवता, ऋषि, मुनि, हर धर्म के सिद्ध-सन्त, पौराणिक तथा ऐतिहासिक महापुरुषों के द्वारा प्रकट होकर लिखवाए आध्यात्मिक पदों का दिव्य संग्रह

दिव्य ग्रन्थ-३



परमहंस राम मंगल दास

गोकुल भवन, अयोध्या

संत शिरोमणि

अनन्त श्री परमहंस राम मंगल दास जी

(12.2.1893 - 31.12.1984)

विश्व के एक अद्वितीय ब्रह्मलीन संत थे जिनके समक्ष सब देवी-देवता, हर धर्म के पैगम्बर व सिद्ध-सन्त नित्य ध्यान में तथा प्रत्यक्ष प्रकट होकर बातें करते तथा आध्यात्मिक पद लिखवाते थे। उन्होंने अपने गुरुदेव की अत्यन्त कठिन सेवा की तथा गुरुदेव की पांच आज्ञाओं (महावाक्यों) का आजीवन पालन किया : "अयोध्या में रहना, चाहें तहां पर। कोई जमीन दे तो न लेना। मरे पर पास में कफन को पैसा न निकले। कोई मारै तो हाथ न चलाना। किसी से बैर न करना ।" अनेक वर्षों से सोये नहीं, वे सदा अनहद नाद को सुनते रहते थे। अतः भक्तजन स्लेट अथवा कागज़ पर लिखकर प्रश्न पूछते। तत्पश्चात गुरुदेव अपने श्रीमुख से उनकी शंका समाधान करते व उपदेश देते।

वे करुणा के सागर थे तथा सदा नंगे पैर चलते थे कि कहीं कोई जीव मर न जाये। उनका जीवन अत्यन्त ही सरल व सादा था। सिर्फ एक अचला धोती पहने, बारहों मास एक सादी लकड़ी के तखत पर सुबह से रात तक बैठते तथा भक्तों को कल्याण मार्ग बताते।

श्री संत भगवन्त कीरति

श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति
श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति
श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति

श्री संत भगवन्त कीरति

भगवान, देवी-देवता, ऋषि, मुनि, हर धर्म के सिद्ध सन्त,
पौराणिक तथा ऐतिहासिक महापुरुषों के द्वारा प्रकट होकर
लिखवाये आध्यात्मिक पदों का दिव्य संग्रह

दिव्य ग्रन्थ - ३

परमहंस राम मंगल दास
गोकुल भवन, अयोध्या

ग्रन्थ प्राप्ति स्थान तथा संपर्क सूत्रः

आश्रमः-
गोकुल भवन
वशिष्ट कुंड
अयोध्या
उ.प्र. 224123
Tel. 05278– 32484

प्रकाशकः-
Prof. Rajiv K. Varma
C/o Sri S.C. Varma
A - 436 Shahpura
Bhopal – M.P. 462 039
Tel.: 0755 – 426124
e-mail: rkvarma@uwo.ca

Prof. Rajiv K. Varma
Dept. of Electrical & Computer Engg.
University of Western Ontario
London, Ontario N6A 5B9, Canada
Tel: 001- (519) 661 – 2111 ext. 85111
Fax: 001- (519) 661 – 3488
e-mail: rkvarma@uwo.ca

ये दिव्य ग्रन्थ सर्वोदय बुक स्टाल, कानपुर तथा लखनऊ रेलवे स्टेशनों पर भी उपलब्ध हैं।

प्रथम संस्करणः जून 2002
500 प्रतियाँ

न्योछावरः रू० 180/-

मुखपृष्ठ चित्रः गुरुदेव परमहंस राममंगल दास जी का सर्वप्रथम चित्र (1946)

कम्प्यूटरीकरणः श्री टी. सदागोपन

मुखपृष्ठ सज्जाः श्री काशी मिश्रा

मुद्रकः श्री प्रदीप भार्गव
शारदा ग्राफिक्स (प्राइवेट) लिमिटेड
111-A /407, अशोक नगर
कानपुर 208 012
फोनः 0512-290791, 256591

गणपति वन्दना

गणपति को प्रथमै करों वन्दन। मिलत सुक्ख दुख होत निकन्दन।।
रिध्दि सिध्द सोहत संग जाके। भाल विशाल सिन्दूर को चन्दन।।
अब हम पर नित दाया कीजै। वाहन मूष उमा के नन्दन।।

सुनिये विनय गजानन अब हम सुनाने वाले।
अब पार बेड़ा मेरा, तुम हौ लगाने वाले।
है मूष की सवारी औ डील डौल भारी।
देवन में आदि पूजन अपनी कराने वाले।
कवियों को कार्य्य सारो, बुद्धी मेरी सुधारो।
हिरदय में मेरे बसिये, आनँद बढ़ाने वाले।६।

शारदा वन्दना

शरन मैं निशि दिन हूँ तेरी, सुनौ शारद महरानी जी।।
बसौ हिरदय में आ मेरे, सकल गुण की निधानी जी।।
तुम्हारे ही बदौलत से हुये कवि लोग ज्ञानी जी।।
अरज मेरी सुनौ चित दै, कहौं मैं कछु कहानी जी।४।

- परमहंस राम मंगल दास



गुरु वन्दना

श्री गुरु महिमा को कहै अति ही ऊँच मुकाम।
ताते गुरु पद को करौं बार बार परनाम।।

- भगवान राम जी



दो शब्द

हम 28 की उम्र में राम घाट पर अपने गुरु जी परमहंस बाबा बेनी माधौ दास जी महाराज के पास आये। दो माह बाद सबसे पहले शुरु शुरु ध्यान में राम विवाह देखा था। महारानी जी दस हजार सखिन के बीच में जै माल लेकर धीरे धीरे चलती थीं, सब सखी मंगल गाती थीं। 20 कड़ी का था। ऐसे स्वर मिले थे मालूम होता था एक जनी गा रही है। हम सुबह लिखना चाहते थे तो महाराज जी ने मना कर दिया। कहा "पहिले पहिले न लिखौ नहीं तो फिर कुछ न होगा।" तब सब भूल गए।

फिर एक दिन नित्य दरबार गए। वहाँ बीच में राजा जनक जी बैठे थे, गल मोच्छा रखाये, गोरे गोरे पतरे पतरे, बन्ददार लम्बा अंगरखा पहिने, सफेद धोती, चौकसिया टोपी सर पर थी। हमने पूछा "आप कौन हैं," तो कहा "हम राजा जनक हैं।" हम ने कहा "आप राजा जनक हैं तो हमको राम जी का कोई पद सुनावो।" तो खड़े होकर, कुछ झुक कर दाहिना हाथ सामने करके पद सुनाने लगे, चारौं तरफ ठौर पर घूमकर पहिली कड़ी सुनाकर मस्त हो गए। तब हमै सब याद हो गया।

इसके 6 माह बाद नानक देव राम घाट पर बट बृक्ष के नीचे दिन में ११ बजे प्रगट हुए। शुकुल धोती पहिने थे जैसी हमारे यहाँ जनेऊ में पहिराई जाती है - पीली रंगी इस रीति से बहुत पंडित अभी पहिरते हैं। सफ़ेद बाल चांदी चांदी ऐसे चमकते थे, दाढ़ी भी सफेद चमकती थी। बहुत गोरे थे, शरीर महकता था। हम दंडवति किया। फिर उनके गले के पास से पेट तक चाँदी कैसी पटरी प्रगट हो गई। उसमें 35 अक्षरी खुदी थी काली रोशनाई की। हमसे कहा "सुनावो।" हमने कहा "हम रोज़ इसका पाठ करते हैं।" सुनाया तो वह पटरी उलट गई, पेट की तरफ अक्षर हो गए। हम से कहा "यह स्तोत्र तुमको सिद्ध हो गया।" फिर हमने चर्णोदक उतारा तब अन्तर हो गए। फिर थोड़े दिन में प्रगट होकर थोड़ा बताया। फिर तीसरी बार सब बता कर अन्तर हो गए। महाराज (गुरुजी) ध्यान में बैठे थे।

जब हमारी अवस्था 42 रही होगी, महाराज का शरीर शान्त हो चुका था, तो तमाम अजर अमर सिद्ध संत आने लगे, झुंड के झुंड और कहैं हमारा पद लिख लो, हमारा पद लिख लो। तो हम कहा, "का हमैं यादि रहैगा।" तो सरस्वती जी प्रगट हो गईं और आशीर्वाद दिया कि जो कोई जो कुछ तुमको बतायेगा या सुनायेगा सब तुम्हें यादि हो जायगा। तब से हमें यह सब यादि हो जाता है। हर मजहब के सिद्ध सन्त आते, सतसंग करते और अपना कोई पद सुना जाते। तो हम भोर में उठते ही पेन्सिल से कागज पर लिखते। दिन-दिन भर लिखते-लिखते थक जाते तो गोस्वामी जी (तुलसीदास जी) ने कहा - थोड़ी देर दिवाल के भल बैठकर आराम कर लिया करो, तो वैसा करने लगे, तो थकान चली जाती थी।

हमने दो किताब (कक्षा दो तक) पढ़ा है। जो हमको बहुत से अजर-अमर सिद्ध सन्तों ने तथा देवी-देवताओं ने दर्शन देकर लिखाया था, मैं श्री सरस्वती जी की कृपा और आशीर्वाद से उसको लिखने में समर्थ हो सका। किसी किसी महापुरुष ने एक दोहा या केवल एक पद ही लिखाया है और किसी ने अधिक लिखाया है। फिर ऐसे सिद्ध सन्त अभी तक दो हज़ार के ऊपर मिले हैं जिनके पद लगभग 3500 से ज्यादा ही होंगे। कभी गिने नहीं गए हैं। वह सब हम लिख लेते थे और वह हमारे भक्त साफ साफ नकल कर देते। मास्टर हरनाथ सिंह ने खुशखत लिखा है। चार जिलदें (ग्रन्थ) हैं।

इनको जो पढ़ेगा - प्रेरणा पायेगा, उन बातों पर चलेगा और तदनुसार अपनी दिनचर्या बनायेगा तो उसका जीवन सार्थक होगा, उसका कल्याण होगा।

जिसको जिस देवी देवता में प्रेम हो मन लगाकर और अपने इष्ट में विश्वास करके थोड़ा जप या पाठ नित्य करे।

द: परमहंस राम मंगल दास

परमहंस राम मंगल दास
गोकुल भवन, वशिष्ठ कुण्ड,
अयोध्या

प्रस्तावना

भगवान जी व परंपूज्य श्री गुरुदेव की असीम कृपा व दया है जो उनका यह दिव्य ग्रन्थ-3 जो लगभग 50 वर्षों से गोकुल भवन आश्रम में सुरक्षित रखा हुआ था, अब 2002 ई० में लोक-कल्याण के लिये प्रकाशित हो रहा है। ये संपूर्ण कार्य केवल भगवान व गुरुदेव ही करा रहे हैं।

श्री गुरुदेव परमहंस राम मंगल दास जी द्वारा रचित इन दिव्य ग्रन्थों का नामकरण दिव्य रूप से हुआ है। ये नामकरण का संकेत दिव्य ग्रन्थों के पदों में ही दिया गया है जैसे, दिव्य ग्रन्थ-1 के नामकरण *"श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली"* का संकेत भगवान राम के कुलगुरु श्री वशिष्ठ जी ने दिव्य ग्रन्थ 1 के पद 25 में इस प्रकार किया है:-

सोरठाः- खेल भक्त सँग कीन **राम कृष्ण लीला** भली।
जग हितार्थ हित दीन **भक्तामृत चरितावली**।२।

यही नाम दिव्य ग्रन्थ-1 के प्रारम्भ में लिखा हुआ है।

दिव्य ग्रन्थ-2 के नामकरण *"श्री भक्त भगवन्त चरितामृत सुख विलास"* का संकेत स्वयं मूल ग्रन्थ के पृष्ठ 491 में इस प्रकार दिया है।

"श्री भक्त भगवन्त चरितामृत सुख विलास सम्पूर्णम्"

इस दिव्य ग्रन्थ-3 का नाम मूल ग्रन्थ के मुखपृष्ठ या अन्त में नहीं दिया हुआ है। परन्तु यह आशा थी तथा विश्वास भी था कि पूर्व दिव्य ग्रन्थों की भाँति इस दिव्य ग्रन्थ-3 के नाम का संकेत भी इस ग्रन्थ में ही कहीं मिलेगा। सो ऐसा ही हुआ। इस दिव्य ग्रन्थ में सर्वाधिक पद श्री अंधे शाह जी के हैं। इस दिव्य ग्रन्थ-3 के मूल संस्करण में, जो गोकुल भवन आश्रम में सुरक्षित है, उसके पृष्ठ 462-463 में पूज्य "श्री अँधे शाह जी" ने यह लिखवाया है

पदः- गरभ ऋण को भक्तों चुकाना पड़ेगा।
कहैं अंधे चेतो नहीं तो हड़ैगा।

बिना सतगुरु कीन्हे को आगे बढ़ेगा।
धुनी तेज लै रूप सन्मुख लढ़ेगा।४।
वही मातु पितु का दुलारा कढ़ैगा।
रहनि औ गहनि औ सहनि में मढ़ैगा।
रहै एक रस फिर न बातें कढ़ैगा।
सदा **संत भगवन्त कीरति** पढ़ैगा।८।

इसी को भगवत्कृपा से संकेत मानते हुये श्री अंधे शाह जी द्वारा दिये नाम *"संत भगवन्त कीरति"* को ही इस दिव्य ग्रन्थ-3 का नाम मान लिया गया है।

इस दिव्य ग्रन्थ में अनेक सिद्ध सन्तों ने प्रगट होकर यह लिखवाया है कि इन संपूर्ण दिव्य ग्रन्थों की रचना श्री भगवान की आज्ञा से ही हुई है तथा ये सारे उपदेश जन-जन के लिये हैं। विभिन्न संतों द्वारा लिखवाये पदों की कुछ अत्यन्त महत्वपूर्ण लाइनें नीचे लिखी हैं:-

203 *।। श्री भर भर शाह जी ।।*

पदः- भर भर कहैं अब हमको, तुमको कुछ नहीं लिखवाना है।
करता हूँ अब मैं बन्दगी, हरि हुक्म जो था सो किया।।

204 *।। श्री घट घट शाह जी ।।*

शेरः- हरि हुक्म की तामील करना ही हमारा काम है।
जिस जगह चाहैं जांय हम, सकता न कोई थाम है।
लिखना लिखाना समय पर देता बड़ा ही काम है।
पढ़ि सुनि के चेतैं नारि नर जो फंसे दुख के ग्राम हैं।
घट घट कहैं हम जा रहे करते तुम्हैं परनाम हैं।

217 *।। श्री चमचम शाह जी ।।*

पदः- जो नहिं मानै कहा हमारा सो फिरि धोका खाई।
चम चम शाह कहैं हरि अज्ञा रही सो दीन लिखाई।।

235 ।। *श्री टकटकी माई जी* ।।

पदः- कहैं टकटकी चेतो बहिनो समुझाइत हम पुनि पुनि।।

ये पद संत श्री टकटकी माई जी ने यद्यपि श्री गुरुदेव परमहंस राम मंगल दास जी को लिखवाया है किन्तु इस आशा से कि यह पद अनेक स्त्रियों बहिनों तक पहुँचेगा तथा उनके कल्याण का मार्ग बतायेगा।

।। *श्री अंधे शाह जी*।।

पदः- सतगुरु करिके भेद जान लो जियति जाव ह्वै ब्रह्म परायन।
सुर मुनि सक्ती सब युग बरन्यो, वही वाक्य हम सब हित गायन।।

इस दिव्य ग्रन्थ की एक अत्यन्त विशेष व प्रेरणा दायक बात यह है कि इसमें दो ऐसे संत आये हैं जिनका कल्याण गुरुदेव परमहंस राममंगल दास जी ने किया, तथा यह बात उन संतों ने अपने पदों में इन पंक्तियों में लिखवाई है।

175 ।। *श्री राजेश्वरी माई जी* ।।
(मिती अगहन सुदी 2, सं. 1993 वि. तदनुसार 1936 ई०)

सोरठाः- आई कहन हवाल सुनिये श्री महराज जी।
आपने लीन्ह सम्हाल पूरण भा मम काज जी।।

चौपाईः- अवध पुरी सम धाम न दूजा। सुर मुनि करत आय नित पूजा।।
हरि की हम पर भइ अति दाया। अन्त आप की गोद बिठाया।।
दुख तन ते भा तुरत रवाना। मन में हर्ष स्वतः उमड़ाना।।

दोहाः- तेइस करोड़ बर्ष मोहिं, हरि ने दीन्हयो बास।
राजेश्वरी मम नाम है, बचन मानिये खास।।

210 ।। *श्री नानक राम जी वैश्य* ।।
(मुकाम साहब गंज, फ़ैज़ाबाद)

चौपाईः- अन्त कि बेरिया मुरली धारी। सन्मुख लखा खड़े सुखकारी।।
तन को त्यागि बैठि सिंहासन। जाय लीन श्री हरि पुर आसन।।
श्री महराज आप की दाया। सारे पापन धोय बहाया।।
चालीस लाख बर्ष रहि वहँ पर। फिर द्विज कुल में जन्मौं यहँ पर।।
नानक राम कहैं हरखाई। सत्य बचन हम दीन लिखाई।६।

इन सभी दिव्य ग्रन्थों के प्रकाशन में पूज्य श्री राम सेवक दास जी की कृपा, शुभाशीर्वाद व प्रेरणा है। उन्हें मेरा बारम्बार नमन। सभी भक्त जनों का निरन्तर सहयोग बना हुआ है जिनका उल्लेख पूर्व प्रकाशित दिव्य ग्रन्थों की प्रस्तावनाओं में कर चुका हूँ, उन सबको मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। प्रोफेसर एस.पी. दीक्षित जी तथा श्री बी.एन. श्रीवास्तव जी का विशेष रूप से कृतज्ञ हूँ जिन्होने गुरुदेव श्री महाराज जी के कई चित्र इन दिव्य ग्रन्थों में छपने के लिये प्रदान किये।

इन सभी दिव्य ग्रन्थों की फोटोकापी 1995 दिसम्बर में छपवाने के उद्देश्य से की गई थी। 1996 में ग्रन्थ कम्प्यूटर में टाइप भी कर दिये गये किन्तु इनका प्रकाशन 6 वर्षों बाद हो रहा है। गुरुदेव श्री परमहंस राममंगल दास महाराज जी कहते थे: "हर काम का समय भगवान बाँधे हैं"।

गुरुदेव, आपकी अनन्त दया व कृपा से ही यह प्रकाशन कार्य हो रहा है। आप ही असीम कृपा कर इन ग्रन्थों को छपवाएँ व जन जन तक पहुँचाकर उनका कल्याण करें। हम सामर्थ्यहीन हैं - यही सत्य है, यही सत्य है, यही सत्य है।

श्री गुरुदेव का परंतुच्छ दास
राजीवलोचन
(राजीव कुमार वर्मा)

दिनांक: 15 जून, 2002

क्षमा याचना

इस दिव्य ग्रन्थ के प्रकाशन में पूरा प्रयास किया गया है कि
जैसा मूल ग्रन्थ में है वैसा ही प्रकाशित किया जाये।
यदि इसमें कोई त्रुटि रह गई हो तो प्रकाशक
अपनी इस भूल के लिये हृदय से क्षमाप्रार्थी है।

पूर्व-प्रकाशित दिव्य ग्रन्थों की प्रस्तावनाएँ

दिव्य ग्रन्थ २

भगवान जी की असीम कृपा व परंपूज्य गुरुदेव श्री परमहंस राम मंगल दास जी महाराज की अनन्त दया से इस द्वितीय दिव्य ग्रन्थ का प्रकाशन हो रहा है। इस आशा से कि यह अनेकानेक भक्तजनों के हाथों में पहुँचेगा व उन सबके कल्याण में पथ प्रदर्शक होगा - हृदय में अत्यन्त हर्ष हो रहा है।

इस ग्रन्थ का नामकरण दिव्य रूप से "श्री भक्त भगवन्त चरितामृत सुखविलास" हुआ है। इस ग्रन्थ की एक विशेषता यह है कि इसमें हर धर्म के संत तो आये ही हैं बल्कि हर जाति व हर पेशे (व्यवसाय) के संत स्त्री पुरुषों ने साक्षात् प्रगट होकर आध्यात्मिक पद लिखवाये हैं। उन्होने यह लिखवाया है कि किस प्रकार जीवन जीना चाहिये। तथा यह भी लिखवाया है कि विभिन्न सत्कर्म व दुष्कर्म करने के परिणाम इस लोक में तथा परलोक में क्या होते हैं। ये पद अत्यन्त ही प्रेरणास्पद हैं।

इन दिव्य ग्रन्थों की भाषा के बारे में एक बड़ी विशेष बात एक स्त्री सन्त श्री राम जनी जी ने पद 778 में लिखवाई है कि इन दिव्य ग्रन्थों के संबंध में जगत् जननी श्री राधा महारानी (लाड़िली) जी की यह आज्ञा है:

दोहा:- उलट पुलट जो शब्द हों, सो न सुधारे कोय।
कहें लाड़िली नहीं तो, प्रेम जायगा धोय।।

यह जानने योग्य बात है कि प्रथम दिव्य ग्रन्थ "श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली" के प्रथम भाग में श्री गुरु वशिष्ठ जी ने लिखवाया है कि इन दिव्य ग्रन्थों की रचना जगत् जननी श्री जानकी जी व श्री राधा जी की ही आज्ञा व कृपा से हुई है।

परं आदरणीय श्री रामसेवक दास जी का मैं आत्मिक रूप से कृतज्ञ हूँ जिन्होने श्री गुरुदेव भगवान के इन दिव्य ग्रन्थों को छपवाने की अत्यन्त कृपापूर्ण अनुमति दी व सतत् शुभाशीर्वाद प्रदान किया है। गोकुल भवन के समस्त आश्रमवासियों तथा सभी भक्तजनों, जिनका आदरपूर्वक उल्लेख पूर्व-प्रकाशित दिव्य ग्रन्थों की प्रस्तावनाओं में किया गया है, उन सभी का स्नेहपूर्ण सद्भाव व सहयोग इस दिव्य ग्रन्थ के प्रकाशन में निरन्तर बना हुआ है। उन सभी का मैं अत्यन्त ऋणी हूँ।

इस दिव्य ग्रन्थ के मुखपृष्ठ पर "रेफ-बिन्दु" तथा गुरुदेव श्री परमहंस राममंगलदास जी महाराज की छबि का चित्रांकन बड़े मनोहारी रूप से श्री काशी मिश्रा जी ने किया है। उनके प्रति मैं हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

परम पूज्य गुरुदेव राम मंगल दास जी महाराज के श्री चरण कमलों में प्रार्थना है कि वे कृपा करें कि उनके सभी दिव्य ग्रन्थ जन-जन तक पहुँचे तथा सर्व जगत का कल्याण करें। उन्हीं की कृपा से ही इन ग्रन्थों का प्रकाशन अभी हो रहा है व उन्हीं के आशीर्वाद से ही इन ग्रन्थों का प्रकाशन आगे संभव हो पायेगा - यही सत्य है, यही सत्य है, यही सत्य है।

श्री गुरुदेव का परंतुच्छ दास
राजीवलोचन
(राजीव कुमार वर्मा)

दिनांक: 25 मई 2002

दिव्य ग्रन्थ १: भाग २

भगवान की असीम दया व परंपूज्य गुरुदेव श्री परमहंस राममंगलदास जी की कृपा से इस दिव्य ग्रन्थ के प्रकाशन कार्य सम्पन्न होने पर अत्यन्त हर्ष हो रहा है। सब देवी देवताओं, ऋषि मुनियों तथा हर धर्म के सिद्ध सन्तों व महापुरुषों ने गुरुदेव के समक्ष प्रकट होकर जो आध्यात्मिक पद तथा वार्तिक (कथाएँ) लिखवाए उन्हें श्री गुरुदेव ने चार मुख्य दिव्य ग्रन्थों में संग्रहीत किया है। श्री गुरुदेव द्वारा रचित इन चार ग्रन्थों में दिव्य ग्रन्थ- 1 "श्री रामकृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली" का प्रथम भाग सन् 1999 में छपा तथा उसका विमोचन अयोध्या जी के श्रद्धेय संत श्री नृत्य गोपाल दास जी के कर कमलों द्वारा 31 दिसम्बर 1999 को हुआ। इस दिव्य ग्रन्थ का यह दूसरा भाग अब आपके हाथों में हैं।

यह ग्रन्थ श्री गुरुदेव भगवान की इच्छा व आशीर्वाद से तथा अनेक भक्तों के अप्रतिम सहयोग से ही छप सका है। गुरुदेव के अनन्य शिष्य परम आदरणीय श्री रामसेवक दास जी का मैं अत्यन्त कृतज्ञ हूँ जो श्री गुरुदेव के गोकुल भवन का समस्त कार्य गुरु उपदेशों के अनुसार संभाल रहे हैं। उन्होने अत्यन्त कृपा कर गुरुदेव भगवान के दिव्य साहित्य को प्रकाशित करने की अनुमति मुझे प्रदान करी तथा इस कार्य के लिये अपना अपूर्व सहयोग व आशीर्वाद दिया। गोकुल भवन आश्रम के ही श्री प्रेमानन्द जी के अपरिमेय सहयोग व विश्वास के लिये में उनका आभारी हूँ। श्री रामायणी जी व श्री परशुराम जी की सतत् शुभकामनाएँ इस कार्य के लिये मुझे प्राप्त हुई हैं जिसके लिये मैं उनको हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। श्री अवस्थी जी अत्यन्त श्रद्धा व निष्ठापूर्वक जो प्रयास कर रहे हैं कि श्री गुरुदेव परमहंस राममंगल दास जी का साहित्य अधिक से अधिक लोगों तक पहुँच सके, वो अत्यन्त सराहनीय है।

स्वर्गीय श्री जगत नारायण बाबू जी को हृदय से नमन करता हूँ, जो इन सारे दिव्य ग्रन्थों के प्रकाशन के प्रेरणास्रोत थे तथा जिन्होने इन ग्रन्थों के प्रकाशन के लिये मेरा निरन्तर उत्साह वर्धन किया। वे 1944 से गुरुदेव के शिष्य थे तथा 1971 से गोकुल भवन में अन्त समय तक निरन्तर गुरुदेव की सेवा में रत रहे। वे कहते थे, "ये ग्रन्थ अलौकिक हैं। न पहले कभी ऐसे ग्रन्थ बने और न बाद में शायद कभी बनेंगे। हर परिवार में, सम्मान पूर्वक जैसे रामायण-गीता रखी जाती हैं, वैसे रखने लायक हैं। इनके नित्य पाठ से घर में रहने वालों को मार्गदर्शन मिलेगा व उनका कल्याण होगा।"

ये दिव्य ग्रन्थ श्री बलराम वर्मा जी के प्रयासों से गोकुल भवन आश्रम में सुरक्षित रखे हुये हैं। उन्होंने ग्रन्थों के बारे में बड़ी महत्वपूर्ण जानकारियों से मुझे अवगत कराया, उसके लिये उन्हें बहुत धन्यवाद देता हूँ। श्री गणेश प्रसाद माथुर जी का ऋणी हूँ जिन्होंने श्री गुरुदेव महाराज जी के अनेक हस्तलिखित पत्र व उपदेशों का संकलन तथा उनके साहित्य के अंश मुझे दिये, जिनको प्रभु इच्छा से भविष्य में छपाया जायेगा। उनकी शुभकामनायें व आशीर्वाद पाकर मैं कृतकृत्य हुआ हूँ।

मन में अतीव इच्छा थी कि परंपूज्य गुरुदेव के अधिकाधिक चित्र इन ग्रन्थों में छापे जा सकें, ताकि भक्त जन गुरुदेव के अनेक रूपों के दर्शन कर सकें। मैं डा० रमेश निगम का अत्यन्त कृतज्ञ हूँ जिन्होंने कृपा कर श्री महाराज जी के तीन फोटो एलबम मुझे दिये। इन एलबम के कई चित्र इस ग्रन्थ में समाहित हैं तथा कई अन्य चित्र श्री गुरु कृपा से भविष्य में छपने वाले ग्रन्थों में छापे जायेंगे। श्री बागेश्वरी नारायण श्रीवास्तव जी तथा डा० के० एन० मिश्रा जी ने जो हर पग पर मार्ग दर्शन किया व श्री गुरुदेव के चित्र उपलब्ध कराने में सहयोग दिया है, उसके लिये मैं उनका हृदय से आभारी हूँ। श्री रविशंकर तिवारी को ग्रन्थों के वितरण में उनके सहयोग के लिए धन्यवाद देता हूँ।

राजा भानु प्रताप सिंह जी का अति विशेष रूप से कृतज्ञ हूँ जिन्होने परंपूज्य श्री गुरुदेव के चित्र, उनका एकमात्र वीडियो तथा आडियो कैसेट मुझे दिया है, ताकि उनके संशोधित तथा समुन्नत रूप सब पाठकों व भक्तों के लिये भविष्य में उपलब्ध कराये जा सकें। जब भी मुझे प्रूफ-रीडिंग में संशय होता वे देर रात तक जागते व कृपा कर उन संशयों का निवारण करते।

आई०आई०टी० कानपुर में प्रोफेसर टी.वी. प्रभाकर, डा. टी. अर्चना तथा श्रीमती रजनी मूना का परं आभारी हूँ जिन्होंने पूज्य गुरुदेव के वेबसाइट के निर्माण में पूर्ण सहयोग दिया है। इस वेबसाईट के माध्यम से सारे विश्व में कहीं भी कम्प्यूटर द्वारा श्री महाराज जी के दिव्य ग्रन्थ पढ़े जा सकते हैं। इस समय प्रथम दिव्य ग्रन्थ का प्रथम भाग वेबसाईट पर उपलब्ध है।

इस वेबसाईट का विकास किया जा रहा है तथा शीघ्र ही श्री महाराज जी का अन्य दिव्य साहित्य, चित्र, वीडियो व आडियो को इसमें समाहित कर लिया जायेगा। इस वेबसाईट का पता है:

www.rammangaldasji.org

आई०आई०टी० कानपुर के टेलिविज़न सेन्टर तथा उसमें कार्यरत श्री अरविंद मिश्रा जी का आभारी हूँ जिनके माध्यम से श्री गुरुदेव का वीडियो तथा आडियो के एडिटिंग का कार्य हो रहा है। श्री गुरुदेव के दिव्य ग्रन्थों की वेबसाईट डिजाइनिंग के लिये श्रीमती सन्ध्या मिश्रा को धन्यवाद देता हूँ।

इस दिव्य ग्रन्थ के अन्त में परमहंस श्री राममंगलदास जी की गुरु परम्परा के आदिगुरु "श्री स्वामी रामानन्द जी" जो श्री विष्णु भगवान के अंशावतार थे, उनके द्वारा प्रकट होकर लिखवाये इन ग्रन्थों की महिमा का पद समाविष्ट किया गया है। तदोपरान्त डा० सुधाकर अदीब द्वारा विरचित श्री परमहंस राममंगल दास जी की आरती सम्मिलित की गई है।

प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रकाशन में आई०आई०टी० के प्रोफेसर सुमित गांगुली जी का जो अनुपम सहयोग प्राप्त हुआ है उसके लिये मैं उनका ऋणी हूँ। श्री प्रदीप भार्गव जी ने कठिन समयाभाव के बावजूद भी इस ग्रन्थ को समय से छापा है उसके लिये मैं उनका अति कृतज्ञ हूँ।

इस ग्रन्थ को अत्यन्त श्रद्धा व लगन से श्री सदागोपन जी ने कम्प्यूटर में टाइप किया है व रूप सज्जा की है। इस कार्य के लिये उनके तथा उनके परिवार की तपस्या के प्रति आभार व्यक्त करने के लिये मेरे पास शब्द नहीं हैं।

इस ग्रन्थ की सपूर्ण प्रूफ-रीडिंग मेरी धर्मपत्नी श्रीमती मालिनी वर्मा ने की है। इस सहभागिता के बिना यह ग्रन्थ समय पर नहीं छप पाता।

इस प्रकाशन कार्य का एक एक अंग श्री गुरुदेव ने ही जुटाया है तथा उन्होने ही कराया है। वे ही इन दिव्य ग्रन्थों के प्रगटकर्ता व प्रकाशक हैं-यह सत्य है, सत्य है, सत्य है।

श्री गुरुदेव का परंतुच्छ दास
राजीवलोचन
(राजीव कुमार वर्मा)

दिनांकः 27 दिसम्बर 2001

दिव्य ग्रन्थ १: भाग १

श्री महाराज जी की महिमा

भगवान श्री रामचन्द्र जी ने स्वयं प्रकट होकर श्री महाराज जी को लिखवाया है:-

श्री गुरु महिमा को कहै, अति ही ऊँच मुकाम।
ताते गुरु पद को करौं बार बार परनाम।।

श्री महाराज जी ने अपनी पुस्तक ''भक्त भगवन्त चरितावली एवं चरितामृत'' के ''दो शब्द'' में लिखा है, ''कुछ समय हुआ भगौती (माँ भगवती) का हुक्म हुआ कि कुछ भक्तौं की कथाएँ लिख दो। अवस्था 82 की हो गई है, शरीर कमजोर है पर भगौती का हुक्म है तो धीरे धीरे अभी तक 300 से ऊपर कथाएँ लिखी हैं। पहिले इनमें से 200 छपैंगी, फिर भगवान की जैसी इच्छा होगी।''

जो बातें स्वयं श्री भगवान, देवी देवताओं व संतों ने श्री महाराज जी के बारे में इन चार दिव्य ग्रन्थों में कही हैं तथा उपरोक्त भक्तों की कथाओं में लिखी हैं, जो मैं अपनी निपट बुद्धि से जान सका, वे ही बातें उन्हीं की कृपा से मैं नीचे लिख रहा हूँ।

जगदीशपुरी धाम की यात्रा के वर्णन में महाराज जी ने लिखा है - ''जब गौरांग जी के मंदिर में गये जहाँ वह छै भुजा से विराजमान हैं तो लम्बी दंडवति करने का विचार किया तो बड़ा प्रकाश हुआ। मालूम हुआ कि सारा संसार प्रकाशमान है। फिर लय दशा हो गई। ज्ञान, ध्यान, भान भूल गया। सीधा काठ ऐसा शरीर खड़ा रहा। तब भगवान ने अपना दाहिना चरण हमारी छाती पर लगाया। हम होश में आ गये। हमने चरण को माथे में लगा कर छोड़ दिया। वहाँ पर कबीर जी, मलूक साहेब, कर्मा माई, हरी दास, नित्यानन्द जी, रघुनाथ, अद्वैताचार्य और श्री बास के दर्शन हुये। सबने कहा, ''महाराज, कृष्णावतार का यह सखा आप का सुखदेव है।'' भगवान मुस्करा दिये। हमारे आँसुओं की धारा चलने लगी। वै प्रेम के आँसू बर्फ जैसे ठंडे होते हैं। यह प्रेम की नदी से बहते हैं। दुख की नदी के आँसू गरम होते हैं। दो नदी आँखों में हैं।''

बूढ़ी माता, हुसेन गंज, लखनऊ, की कथा में बूढ़ी माता ने श्री महाराज जी का हाल द्वापर का बताया था कि कृष्ण भगवान ने कहा है, ''यह हमारा सखा सुखदेव ग्वाल है हर समय संग नाचता, गाता था और दूध लूटने में संग रहता था''।

इस दिव्य ग्रन्थ में श्री महाराज जी के बारे में इन्होने यह लिखाया है:-

श्री भद्रसेन जी

राम मंगल दास तेरा नाम कहते संत जन ।
श्री गुरु जी के चरण सेवा में रहता था मगन ।।
दुनियां की मौज उड़ा चुका करता है अब प्रभु का भजन ।
किरपा हुई सरकार की अब छूटिगा आवागमन ।।

श्री सीता जी

गुरु दयाल तुम पर भये, दीन शब्द का रंग ।
आशिरवाद हमार यह, रहो सदा हरि संग ।।

श्री कलियुग महाराज जी

धन्य धन्य तुम धन्य हो धन्य धन्य तुम धन्य।
सब देवन के दरस भे तुम पर हम परसन्न।।
तुम हमार गुरु भाय हो हम तुमार गुरु भाय।
ताते विनती करत हौं बार बार सिर नाय।।
गुरु सेवा का फल यही आँखिन देखो भ्रात।
आवागमन न होय अब छूटा जग से नात।।
चहें तहाँ अब तुम रहौ राम कृष्ण हैं संग।
अब तुम्हारि रक्षा करैं शिव समेत बजरंग।।

श्री कलियुग महाराज जी को गुरुदीक्षा स्वामी रामानन्द जी ने दी थी और श्री महाराज जी स्वयं स्वामी रामानन्द जी की परम्परा के हैं।

श्री लक्ष्मी जी

बसो प्रभू के पास, हमको सब मालुम पता।

श्री पार्वती जी

सुनो पुत्र दुख भाग, अब जग में आओ नहीं।

श्री कबीर जी

सुर मुनि सब परसन्न हैं सुनिये तुमसे तात ।
ताते हमहूँ कहत हैं, तन मन से सब बात ।।

श्री वशिष्ठ जी

सब तुम पर नित खुश रहें गुरु सेवा तुम कीन ।
राम कृष्ण का खेल यह तुमरे संग जो कीन ।।

यह ग्रन्थ श्री महाराज जी के लिखे चार दिव्य ग्रन्थों के प्रथम ग्रन्थ का पहला भाग है। दूसरे भाग में श्री महाराज जी ने अपने पद में लिखा है।

गोलोक का कछु चरित दिल में था मेरे लिखता अभी।
श्री कृष्ण जी ने कह दिया अब कछु नहीं लिखिये कभी।।
अंदर से मेरे नाम की धुनि हो रही बसु याम है।
सुनते रहो इस शब्द को जो सत हमारा नाम है।।
और थोड़े दिन रहो अबहीं यहां कछु काम है।
आवागमन नहिं होय कबहूँ बसौ मेरे धाम है।।

यह पद श्री महाराज जी ने 1945 ईस्वी के लगभग लिखा था। इसमें श्री कृष्ण भगवान ने श्री महाराज जी को आशीर्वाद दिया था कि वे भगवान के साथ गोलोक धाम में ही रहेंगे। इसके उपरान्त एक विचित्र घटना हुई। श्री महाराज जी ने भक्तों की कथाओं में लिखा है, जो छप चुकीं हैं:-

"श्री राम सिंह, गंगवल स्टेट, जिला बहराइच के राजा थे। यह बहुत बीमार पड़े, मारकेश (ग्रहों के अनुसार मृत्यु योग) लग गया। घर का काम बहुत बाकी था। इनके संबंधी और घर के लोग हमारे पास आये, बहुत रोये। हमें दया आ गई तो हमने अपना सिर मान दिया तो अच्छे हो गये। मारकेश टल गया।

श्री महावीर प्रसाद श्रीवास्तव, कचहरी रोड, लखनऊ, के रानी इटौंजा के वकील हैं। इनका भी मारकेश आ गया। रानी बहुत दुखी हुईं, सारे मुकदमे झंझट के पड़े थे। राजा साहब थे नहीं। सब महाबीर प्रसाद को सुपुर्द कर दिये थे। रानी ने अपनी करुण कहानी

हमसे कही। हमें दया आ गई तो हम अपना सर तो मान ही चुके थे पहले राम सिंह को, धड़ महाबीर प्रसाद को मान दिया।

अब जब से भगवती ने रोक दिया है, सर, धड़ राम सिंह, महाबीर प्रसाद को माना था, तब से, कहा, दान जप करा दिया करो, यथा शक्ति धर्म जो तन मन से करेगा उसका भला होगा और जिसका भाव तुम में होगा उसका काम भगवान पूरा करेंगे। तुमको यही करने का अब अधिकार दिया गया है। शरीर हमारा हो गया।''

राजा राम सिंह, गंगवल, का 9-11-1973 को शरीर छूटा। श्री महाराज जी ने 21-11-1973 को एक अप्रकाशित भक्त कथा में लिखा है ''भगौती ने मुझे बताया कि राम सिंह जब पहले बीमार पड़े थे तभी से मारकेश शुरू हो गया था। तुमने उनके लिये अपना सिर और महावीर प्रसाद के लिये अपना धड़ मान दिया। हमें इतने दिन आयु बढ़ा देने की आज्ञा हुई और मैने अन्त में उन्हें बैकुण्ठ पहुँचा दिया।''

श्री महाराज जी की पुनः भगवती जी से (रामसिंह से संबंधित) वार्ता 22-11-73 को हुई जो उन्होंने अपनी अप्रकाशित कथाओं में लिखी हैः-

भगौती ने कहा ''हमारे ऐसा कोई भक्त नहीं है जो अपना सर व धड़ अपने भक्त के लिए हमैं माना हो। हम तुंमको भी अपने पास राखैंगी। कृष्ण भगवान ने तुम से कहा था, ''कुछ दिन और रहौ थोड़ा काम तुम से कराना है। फिर हमारे पास आवोगे। अब तुम सर व धड़ हमें दे चुके तो भगवान से हम तुम को माँग लेंगी। भगवान हमारी बात न टालेंगे। वै दीन दयाल करुणासागर हैं।'' और यह कहा ''जब अपने पास रखौंगी तो ऐसी शक्ति तुमको दे दूँगी कि सब देवी देवताओं के लोक देख आवोगे, सब से मिल आवोगे।''

भगवती ने आगे कहा कि जिसकी सुरति तुम में लग जायगी वह तुम्हारे पास आ जायगा। वह तार ऐसा है कि खींचि लेता है छूटता नहीं। जब सुरति लगाने वाला आ जाता है तभी छूटता है। इसी तरह सुरति लगाने से देवी देवता सब आ जाते हैं। इस सुरति के तार को बहुत कम भक्त जानते हैं। इसका प्रचार जानकी जी ने किया है। प्रथम शंकर जी को बताया, हनुमान जी को बताया। भरत जी, लखनलाल, शत्रुहन को बताया, माण्डवी, उर्मिला, श्रुतिकीर्ति को बताया। इसका बड़ा विस्तार है। सब काम सुरति से होते हैं। थोड़ा लिखाया है।'' हमने कहा ''जैसी आपकी इच्छा हो वैसा ही हमैं मंजूर है।''

भगौती ने फिर कहा "जिसका आप में सच्चा भाव और विश्वास होगा उसका काम ठीक होगा।"

17 दिसम्बर 1984 की रात को श्री काली जी महाराज जी के सामने विशाल रूप में प्रकट हुईं। वे अपने हज़ार हाथों में विभिन्न प्रकार के अस्त्र धारण किये हुईं थीं। उन्होने श्री महाराज जी से कहा "प्रिय पुत्र तुम्हारा इस संसार में कार्य पूरा हुआ। हम तुम्हें लेने आईं हैं। अब तुम चलो।" अगले ही दिन 18-12-1984 से श्री महाराज जी ने पूरी तरह से अन्न जल लेना छोड़ दिया। अन्ततः तेरह दिन के पूर्ण उपवास के बाद 31-12-1984 की रात को तीन बजे उन्होंने महासमाधि ले ली।

श्री गुरुदेव के महाप्रयाण के कई दिनों बाद तक भी भक्तों के मन में अनिश्चितता थी कि क्या उन्होंने वास्तव में शरीर छोड़ दिया है। क्योंकि उस समय श्री महाराज जी के शरीर में हृदय गति नहीं थी फिर भी आँखें खुलती बन्द होती थीं। ऐसा न कभी देखा गया था न सुना गया था। तो मैने परमपूज्य संत श्री देवरहा बाबा जी से ये सब बातें बताईं और पूछा। तब उन्होने कहा "बच्चा, यह सब सिद्ध सन्तों की लीला है। उन्होने शरीर छोड़ दिया है। वे तो भगवत् के स्वरूप थे। उनके बारे में जो कहा जाये वो थोड़ा है।"

इसके कुछ दिनों बाद पूज्य बुआजी (श्री महाराज जी की बहिन जी) जो स्वयं अत्यन्त उच्च सिद्ध अवस्था में थीं, उन्होने बताया कि श्री महाराज जी ने उनसे प्रकट होकर कहा था कि तुम हमारी दिव्य अन्तिम यात्रा देखोगी। बुआ जी ने बताया कि एक अलौकिक दिव्य विमान में श्री सीता जी, श्री राधा जी, श्री लक्ष्मी जी व श्री पार्वती जी बैठ कर आईं और श्री महाराज जी को अपने साथ ले गईं।

श्री महाराज जी के दिव्य ग्रन्थ

मैं निपट मूर्ख अज्ञानी श्री महाराज जी के दिव्य ग्रन्थों के बारे में क्या लिख सकता हूँ! श्री भगवान की असीम कृपा व इच्छा से तथा पूज्य श्री गुरुदेव परमहंस राम मंगल दास जी के आशीर्वाद से ही इस ग्रन्थ का प्रकाशन हो रहा है।

गुरुदेव ने इन ग्रन्थों को 1933 ईस्वी से आश्रम में पूज्यनीय रूप से सुरक्षित कर रखा था। गुरुदेव अक्सर इन ग्रन्थों का भक्तों से पाठ करवाते। कुछ भक्तों को इन ग्रन्थों से

कुछ पद उतार कर लिख लेने की आज्ञा देते। इन ग्रन्थों के कुछ अंश श्री महाराज जी की अनुमति से छपवाये गये पर पूरे ग्रन्थ अप्रकाशित ही रहे।

मेरे हृदय में बहुत इच्छा थी कि गुरुदेव की इस अमूल्य निधि का पूर्ण रूप से प्रकाशन किसी प्रकार से हो सके। श्री महाराज जी के शरीर छोड़ने के आठ वर्ष बाद 1992 में मैंने पूज्य योगी सन्त श्री स्वामी राम जी से प्रार्थना की कि इन ग्रन्थों को छपवाने की इच्छा है। उस समय मैं दो वर्षों के लिये कनाडा जा रहा था। उन्होंने कहा "जब भारत लौट आओ तब करना।" जब भारत लौट आया तब पूछा, तो कहा "सब काम धीरे धीरे करो।"

15 दिसम्बर 1995 को आदरणीय श्री राम सेवक जी जिन्होंने श्री महाराज जी की अनन्य सेवा की है तथा अब सारे गोकुल भवन आश्रम का श्री महाराज जी के उपदेशानुसार संचालन कर रहे हैं, उन्होंने अत्यंत कृपा कर मुझे इन चारों ग्रन्थों तथा कथाओं को फोटोकापी करने तथा छपवाने की अनुमति प्रदान की। मैं उनको हृदय से नमन करता हूँ।

श्री वशिष्ठ जी ने स्वयं इस ग्रन्थ में पद 253 में लिखाया है कि जगत जननी श्री जानकी जी व श्री राधा महारानी जी की कृपा व आशीर्वाद से इस दिव्य ग्रन्थ की रचना हुई है। गुरु वशिष्ठ जी ने ही प्रकट होकर पद 25 में इस दिव्य ग्रन्थ का नामकरण "श्री राम कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली" किया है। सब से विचित्र बात यह है कि श्री राधा जी ने प्रथम ग्रन्थ के द्वितीय अप्रकाशित भाग में कहा है कि जब श्री कृष्णदास पयहारी जी प्रकट होकर अपने पद लिखवायेंगे तब इन ग्रन्थों का समापन होगाः-

ऐहैं कृष्णदास पयहारी। कहिहैं हरि चरित्र सुखकारी ।
तब यह चरित समापति होई। भरिहैं प्रभु यश तत्वनि चोई ।।

और वास्तव में चतुर्थ ग्रन्थ जिसकी समापन तिथि 12-6-58 ईस्वी पड़ी है उसमें अन्तिम संत पयहारी जी ही हैं जिन्होंने दिव्य रामायण लिखवाई है। जब श्री महाराज जी कथाएँ लिख रहे थे 82 की अवस्था में तब एक सन्त प्रगट हुये और उनसे सत्संग करने लगे। श्री महाराज जी ने कहा "आप हमें जानते होते तो जब हमारा शरीर ठीक था तब आते तो

हमको बताते तो हम सब लिख लेते, कितने दिन लगते'', तो कहा ''मैं आपको जानता था लेकिन आ नहीं सके, सब काम भगवान की आज्ञा से होते हैं।''

इससे सिद्ध होता है कि इन सारे ग्रन्थों की रचना कैसे भगवान की इच्छा से इतने व्यवस्थित रूप से हुई है। एक ही विषय पर बोलने वाले संत एक ही साथ एक क्रम में प्रगट हो कर लिखवाते थे। फिर वे यह भी कहते थे कि अमुक विषय पर आपको वे संत लिखवा चुके है। जैसे, श्री ईसा मसीह जी ने शंकर जी, शुकदेव जी व गुरु नानक जी का उल्लेख किया है। सच है - भगवान की लीला अपरम्पार है।

एक दिन मैं प्रथम ग्रन्थ को अपने पिताजी को पढ़ कर सुना रहा था कि अचानक श्री वशिष्ठ जी के पद पर दृष्टि पड़ी। उसमें वशिष्ठ जी ने संवत् 1990 अर्थात् 1933 ईस्वी में श्री महाराज जी को प्रगट होकर आज्ञा दी थीः-

उनइससै निन्नानवे जब संवत् लगि जाय।
तब यह चरित छपाइये साँची दीन बताय।।

उसी पृष्ठ के नीचे ग्रन्थ समापन तिथि 11 जुलाई 1945 पड़ी हुई थी। मन में प्रश्न उठा कि वशिष्ठ जी ने क्या विक्रमी संवत् 1999 में छपवाने की आज्ञा दी थी या ईस्वी संवत् 1999 में छपवाने का आदेश दिया था। कानपुर के योगी श्री महेश चन्द्र द्विवेदी जी ने इसको स्पष्ट किया कि वशिष्ठ जी की आज्ञा ईस्वी संवत् 1999 मे छपवाने की ही है। क्योंकि विक्रमी संवत् 1999 के अनुसार ईस्वी संवत् 1942 होता है। जब ग्रन्थ की समाप्ति 11 जुलाई 1945 में ही हुई तो ग्रन्थ 1942 में कैसे छप सकता था। इसके अतिरिक्त यदि 1942 में छपवाने की आज्ञा होती तो श्री महाराज जी अवश्य ही वशिष्ठ जी की आज्ञा पालन करते हुए इस ग्रन्थ को उस वर्ष छपवा देते। पर ऐसा नहीं हुआ। श्री महेश जी का हृदय से अत्यन्त कृतज्ञ हूँ जिन्होंने मुझे सबसे पहले 1976 में श्री महाराज जी के बारे में बताया, अनेक उपकार किये तथा सदा मार्गदर्शन किया।

आदरणीय श्री जगतनारायण जी का मैं ऋणी हूँ जिनका मुझपर अत्यन्त स्नेह है तथा जिन्होने श्री महाराज जी के ग्रन्थों के प्रकाशन के लिये सदा ही उत्साह वर्धन किया।

मैं अपना हार्दिक आभार अपने अभिन्न मित्र श्री सदागोपन जी के लिये व्यक्त करता हूँ जो यद्यपि दक्षिण भारतीय हैं पर उन्होंने अत्यन्त श्रद्धा पूर्वक और तन मन से

इन ग्रन्थों को हिन्दी में कम्प्यूटर में टाइप किया तथा उनकी रूपरेखा तैयार की। श्री सदागोपन जी के परिवार से इस कार्य के लिये जो सहयोग प्राप्त हुआ उसके लिये मैं उनको सादर धन्यवाद देता हूँ।

इन ग्रन्थों की फोटोकापी एक मुस्लिम भक्त के द्वारा की गई जिनको मैं धन्यवाद व्यक्त करता हूँ।

गुरुदेव द्वारा समस्त दिव्य पद चार ग्रन्थों में संकलित किये गये हैं। "श्री राम कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली" प्रथम ग्रन्थ के दो भागों का प्रथम भाग है। बाकी ग्रन्थ तथा गुरुदेव द्वारा लिखित भक्तों की कथाएँ बाद में प्रभु कृपा से छपाई जायेंगी। ये सारे ग्रन्थ अवधी भाषा में हैं। इन ग्रन्थों की टीका का कार्य भी हो रहा है।

इस ग्रन्थ का प्रकाशन भगवान की असीम कृपा, सब देवी देवताओं, ऋषि मुनियों, पैगम्बरों, सिद्ध सन्तों व महापुरुषों के आशीर्वाद से हो रहा है। इस ग्रन्थ का प्रकाशन श्री महाराज जी के समस्त भक्तों की भगवान से प्रार्थना के फलस्वरूप ही हो रहा है।

यह सम्पूर्ण कार्य गुरुदेव श्री परमहंस राम मंगल दास जी महाराज ने ही किया है तथा करवाया है - यह सत्य है, सत्य है, सत्य है।

श्री गुरुदेव का परंतुच्छ दास
राजीवलोचन
(राजीव कुमार वर्मा)

दिनांक: 25 दिसम्बर 1999



दिव्य-ग्रन्थ महिमा

हरि हरिभक्तन का चरित, है अति सुख की खानि।
रामानन्द यह कहत हैं, लेव वचन मम मानि।१।

पढ़ै सुनै जो ग्रन्थ यह, तन मन प्रेम लगाय।
हर्ष शोक की शान्ति हो, भवसागर तरि जाय।२।

- श्री स्वामी रामानन्द जी

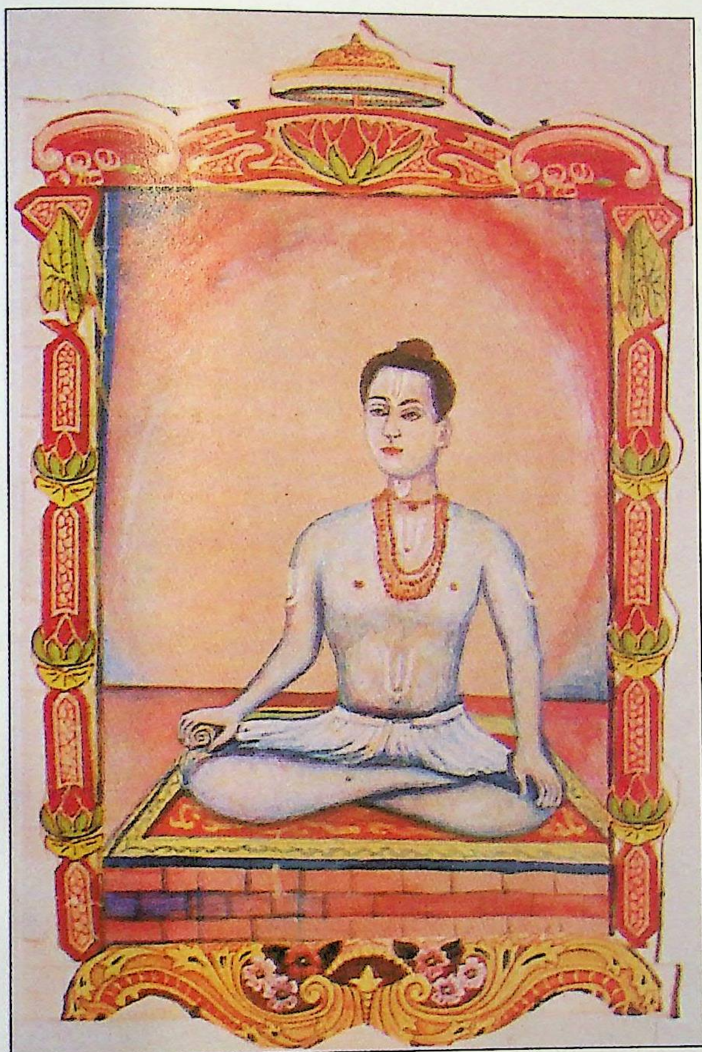
भक्त जनन का चरित यह पढ़ै सुनै जो कोय।
निश्चय पावै भक्ति पद, आतम अनुभव होय।।

- परमहंस राम मंगल दास

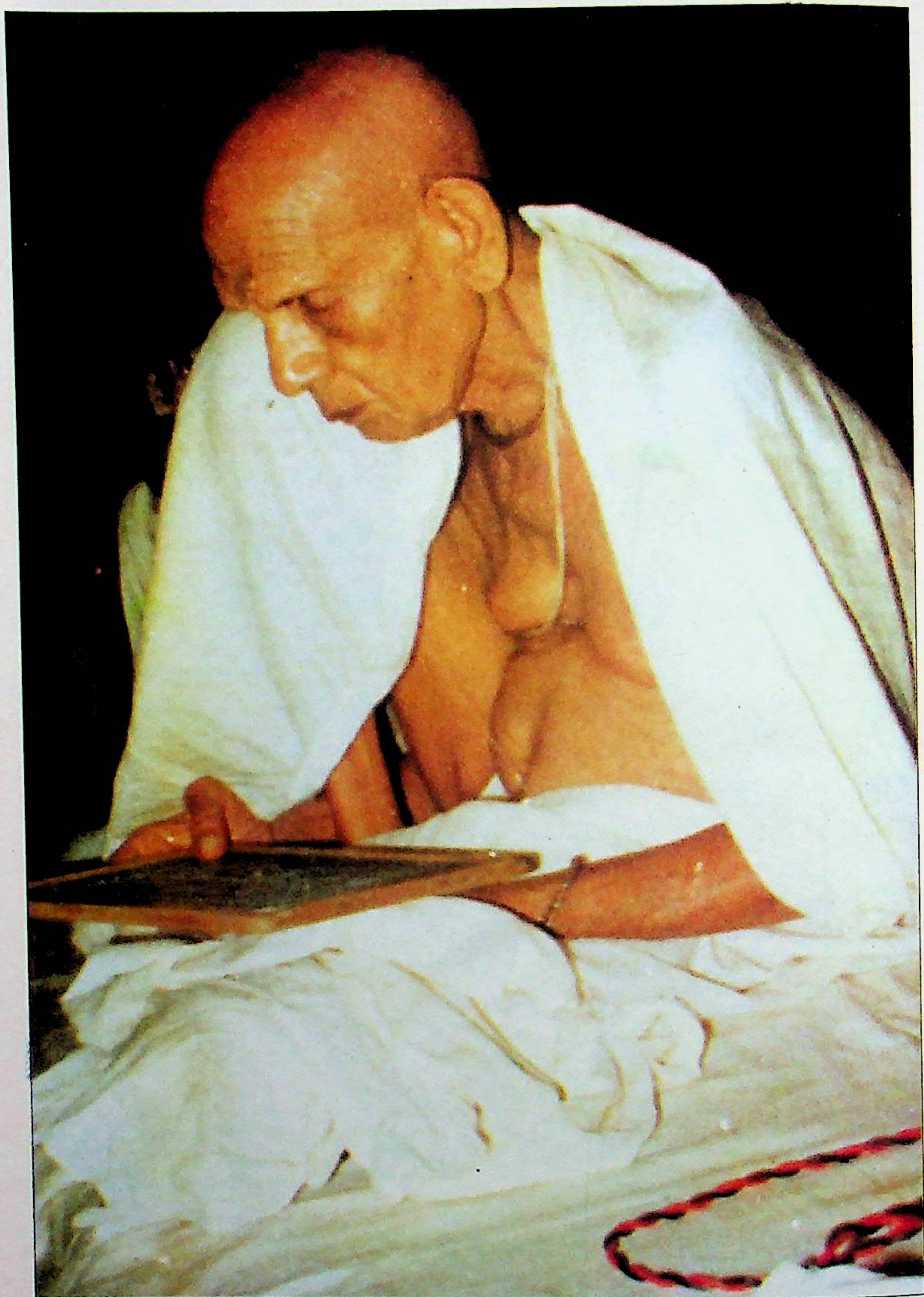


विषय सूची

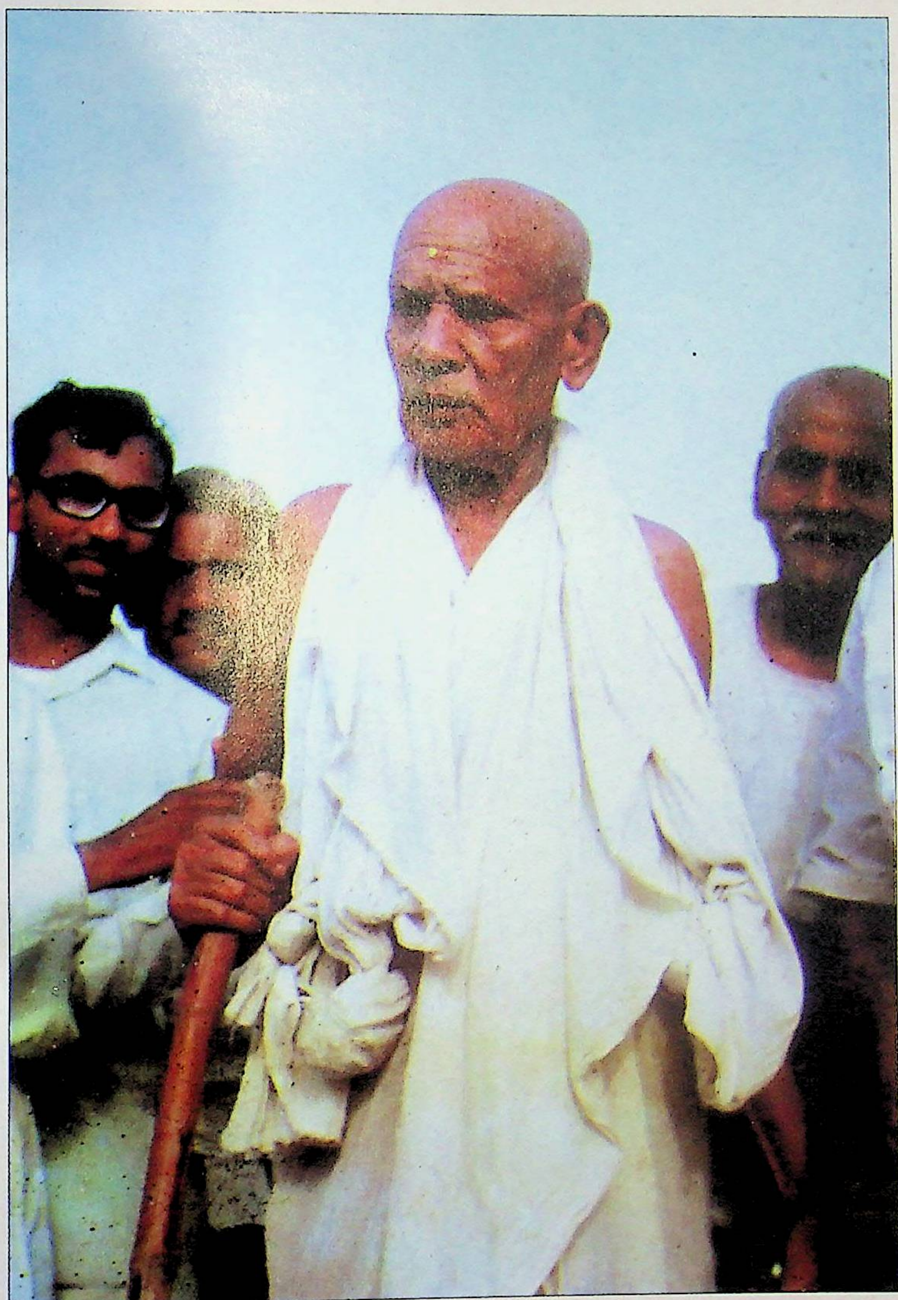
सीतानाथ समारम्भां, रामानन्दार्य मध्यमाम्
अस्मदाचार्य पर्यन्ताम् वन्दे गुरु परम्पराम्



परं वन्दनीय श्री जगत्गुरु स्वामी रामानन्दजी महाराज
विष्णु भगवान के अंशावतार ।
परमपूज्य श्री परमहंस राममंगलदास जी की
गुरु परम्परा के आदि गुरु



पूज्य गुरुदेव स्लेट पर लिखी भक्तों की
प्रार्थना पढ़ते हुये।



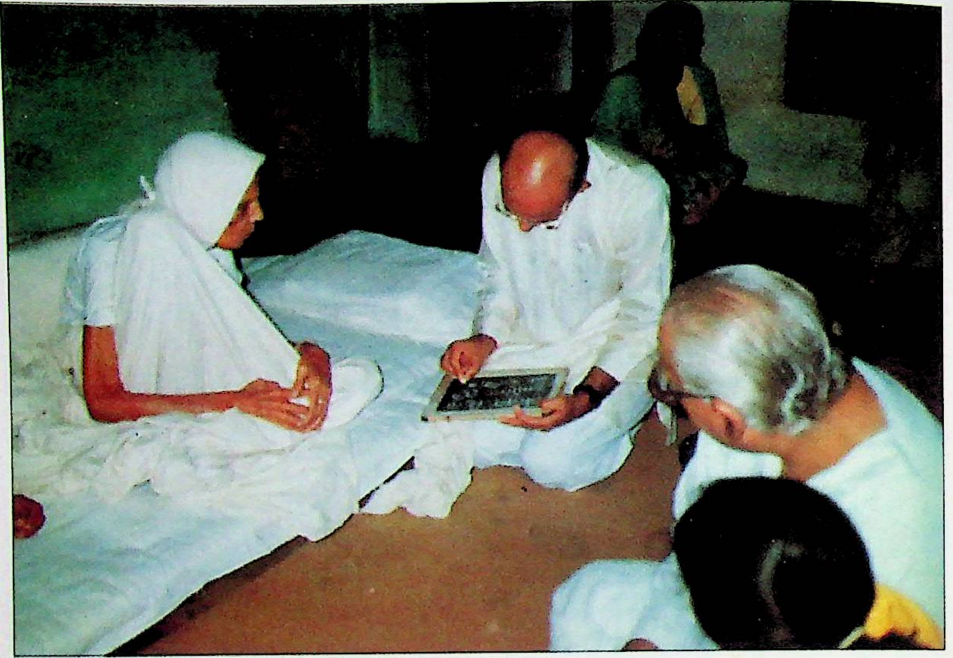
श्री परमहंस राम मंगल दास जी
यात्रा पर।



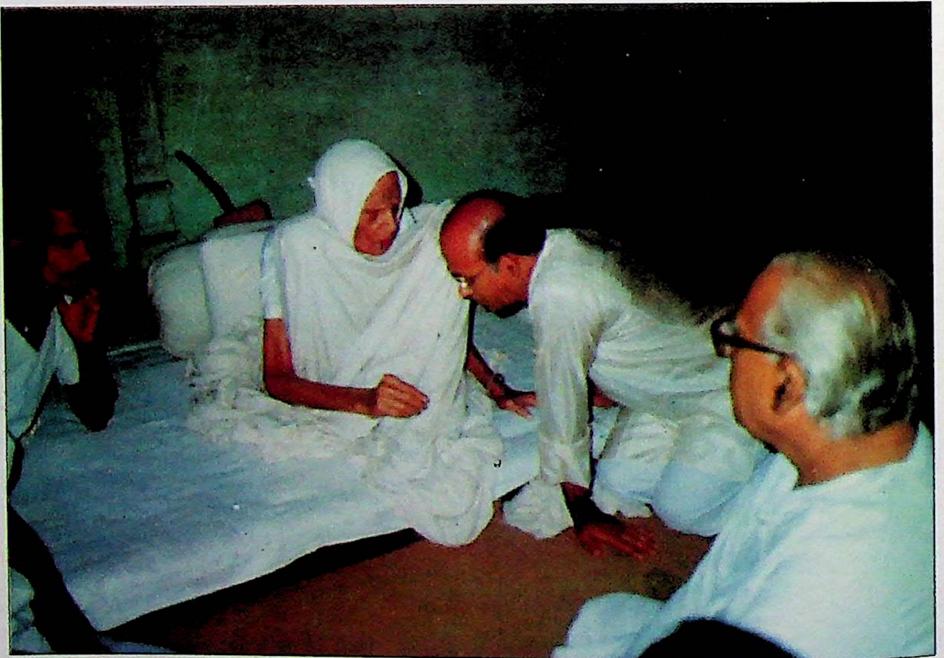
पूज्य श्री गुरुदेव।



पूज्य श्री परमहंस राम मंगल दास जी अपने निवास स्थान बजरंग भवन में अपनी छोटी बहिन के साथ।



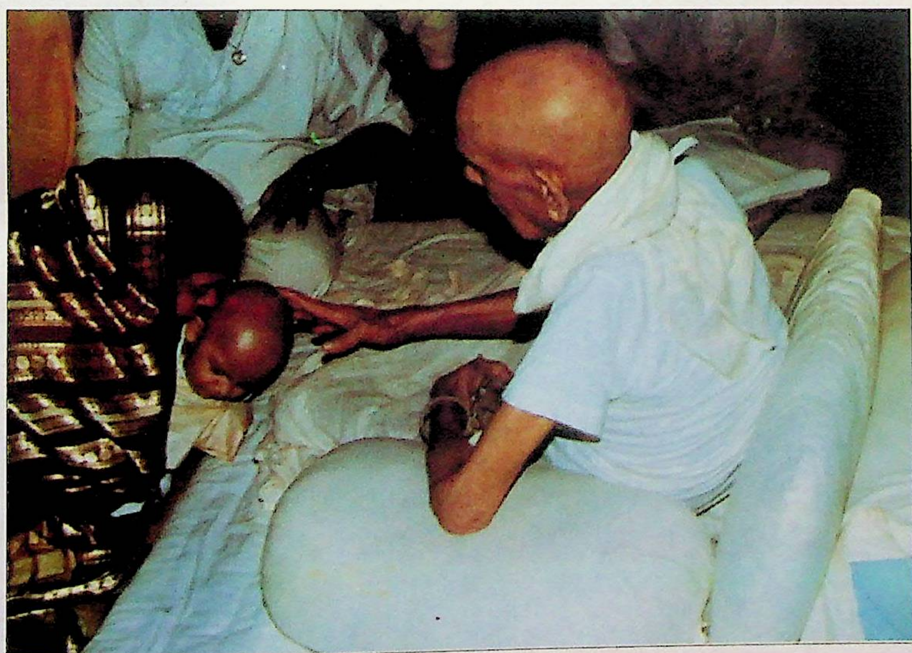
गुरुदेव के लिए भक्त स्लेट पर प्रश्न लिखते हुये।



गुरुदेव प्रश्न का उत्तर देते हुये।



गुरुदेव भक्त को उपदेश देते हुये।



गुरुदेव बालक को आशीर्वाद देते हुये।



गुरुदेव शान्तिमय।

१ ।। श्री काली दीन जी ।।

पदः- मन तुम प्रेत समान सतावत।
सुमिरन पाठ कीर्तन पूजन में हमको बिलगावत।
नाच तमाशा स्वांग बिषय में तब कहुँ भागि न जावत।
नीक कहैं नेकों नहिं समुझत ऊपर डाँट सुनावत।
का नुकसान कीन तुमरा हम कहि क्यों नहिं समुझावत।
गर्भ में जौन करार किह्यो संघ सो मिलि नाहिं चुकावत।६।

अब नहिं चले जबरदस्ती यह श्री गुरु ढिग हम जावत।
राम नाम बिधि जानि लेय तब देखैं कहां लुकावत।
मित्र भाव आखिर तब करिहौ अब ही पास न आवत।
लै परकाश ध्यान धुनि पैहौ जो भव ताप नसावत।
सीता राम रहैं नित सन्मुख जो सब में छबि छावत।
काली दीन कहैं यह मारग भाग्यवान कोइ पावत।१२।

दोहाः- मन तोता मानै नहीं काटै फल बहु धाय।
भूखा ज्यों का त्यों रहै निज स्वभाव नहिं जाय।।
मन मर्कट मानै नहीं घूमै डारै डार।
चोट खाय गिरि फिर चढ़ै निज स्वभाव उर धार।।
श्री गुरु बिन नहिं होय बस कहते काली दीन।
चंचलता या की कठिन जानि नाम जप लीन।३।

२ ।। श्री बांके लाल जी ।।

ध्रुपदः- धनि धनि श्री सीता राम धनि धनि श्री राधेश्याम
धनि धनि श्री रमा बिष्णु सुर मुनि बस जाके।
सुमिरत नित करत गान राखत नहिं सान मान
पूजत अरु धरत ध्यान फणपति शिव छाके।
दीनन पर ह्वै दयाल करते पल में निहाल
ऐसे हैं प्रणत पाल भक्तन रुख झाँके।
दुष्टन को दें संहारि निजपुर फिरि दें बिठारि
ऐसे करि करि उधार काटत दुख आंके।

तीनो प्रभु एक जान तीनो शक्ती समान
बिरदावलि को बखानि शारद बिधि थाके।
तन मन करि एक लेंय सूरति सो शब्द देंय
जियतै सब निरखि लेंय कहत सत्य बांके।

दोहाः- सोऽहं का आधार है ओंकार का प्राण।
रेफ़ बिन्दु वाको कहत सब में व्यापक जान।।
बिन्दु मातु श्री जानकी रेफ़ पिता रघुनाथ।
बीज इसी को कहत हैं जपते भोलानाथ।।
हरि ओ३म तत सत् तत्व मसि, जानि लेय जपि नाम।
ध्यान प्रकाश समाधि धुनि दर्शन हों बसु जाम।।
बांके कह बांका वही नाम में टांके चित्त।
हर दम सन्मुख हरि लखै, या सम और न बित्त।४।

३ ।। श्री मेहंदी जान जी ।।

पदः- मलक फ़लक सब में हरि व्यापक और दूसरा कोई नहीं।
सुर मुनि औ कहते अध्यापक हमने बीच में पोई नहीं।
नहिं याद करै हर दम जो बशर सो फिर सुख नींद में सोई नहीं।
मुरशिद से जानि के तै करिहै सो जग में आयके रोई नहीं।
धुनि ध्यान समाधि प्रकाश मिलै सो जाल में तन मन धोई नहीं।
मेंहदी कह हरदम हों दर्शन तब सूरति मूरति खोई नहीं।६।

४ ।। श्री शिव नारायण जी ।।

पदः- जै जै श्री राम ब्रह्म जै जै श्री कृष्ण ब्रह्म
जै जै श्री बिष्णु ब्रह्म मेरी सुधि लीजै।
दीनन के दीना नाथ स्वामी मैं हौं अनाथ
करिये अब प्रभु सनाथ दर्शन दै दीजै।
पापन का शीश भार बूड़त हौं बीच धार
लीजै कर गहि उबार दया दृष्टि कीजै।
अगणित पापी अराम करते प्रभु तुम्हरे धाम
रहते हर दम अकाम आयू नहिं छीजै।४।

५ ।। श्री देवेन्द्र जी ।।

पदः- जान सतगुरु से नाम का भेव। अगोचर को गोचर करि लेव।।
सुरति जब शब्द के ऊपर देव। ध्यान धुनि लै प्रकाश को लेव।।
जियति नर तन को भव से खेव। अन्त फिर चलो अचल पुर लेव।।
दीनता प्रेम से हरदम धेव। छूटि सब जाय कपट की टेव।४।

६ ।। श्री उपेन्द्र जी ।।

पदः- सूरति औ शब्द मार्ग सतगुरु बतलाई।
पीत श्याम सिया राम सन्मुख छबि छाई।
चिन्मय दोनों स्वरूप उपमा जिनकी अनूप
सुर मुनि नित धरत ध्यान तन मन चित लाई।३।

ब्यापक सब में समान निरखत कोइ भाग्यवान रहि रहि मुसक्याई।
कथनी को देंय छोड़ि जग से मुख लेंय मोड़ पासै तब पाई।
जियतै जो जानि लेय सोई सुख खानि लेय
नाहीं तो अन्त फेरि रहि रहि पछिताई।६।

७ ।। श्री जराखन दास जी ।।

पदः- चिन्मय अविनाशी ब्रह्म राम सबसे न्यारे सबमें बासी।
सतगुरु से जानि चित करु एकाग्र मिलि जावै चट तब सुख रासी।
तन मन हो मस्त फिरि क्या कहना धुनि होय ध्यान लै परकाशी।
क्या मारग सूरति शब्द क है दे काटि सबै दुख की फांसी।४।

झरि लागि अमी की गगन से क्या पीजै अनुपम बारह मासी।
बाजा अनहद हर दम सुनिये यह तन है अवध मथुरा काशी।
या में नित सुर मुनि खेल करैं मिलते लिपटाय के करि हांसी।
जियतै में जो नहिं तै करिहै सो तन तजि परिहै चौरासी।८।

८ ।। श्री संतोख दास जी ।।

पदः- कोइ बुरा कहै चहै भला कहै सुन कर उस पर तुम ध्यान न दो।
सिर कट जावै कट जाने दो पर तुम अपना ईमान न दो।
सतगुरु करि तन मन बस कर लो बे राह में उसको जान न दो।
सुर मुनि क़े कुल में जन्म मिला गुनि निज कुल की कुल कान न दो।

ज्वर तन पर हमला आन करे सहलो उसको जल पान न दो।
पढ़ि सुनि बे जाने तत्व ज्ञान की बात किसी से ठान न दो।६।

९ ।। श्री रघुवर प्रसाद जी ।।

पदः- आवै कोइ चोर लवार बशर रहने का उसको थान न दो।
भारी कोइ आफ़त आन पड़े सुमिरौ हरि मन दौरान न दो।
परतीत न हो जिसको नेकौं उसको प्यारे गुरु ज्ञान न दो।
बे जाने बूझे मारग पर लो मानि कभी हठ ठान न दो।
जो बात तुम्हें नहिं हासिल है पढ़ि सुनि के ताना तान न दो।
कुल जिसका तुमको नहिं वाकिफ़ बरतन में अपने खान न दो।६।

१० ।। श्री बर जोर जी ।।

दोहाः- पैसा प्राण बचावई, पैसे प्रान को लेय।
पैसा से रैसा बढ़े, पैसै भोजन देय।
भोजन बस्तर के लिये पैसा चाही पास।
गाड़ि के पैसा जो धरै होवै सत्या नास।४।

पैसा से बहु धर्म हों, पैसै नर्क क द्वार।
पैसा में मति गर्क हो, रहौ फर्क से यार।
जोरि जोरि पैसा धरै, बाँटै करज़ा जाय।
झूठे साधू हैं बने, लोभ के जानो भाय।८।

११ ।। श्री सनातन जी ।।

पदः- जगत से पार होने हित यह तन हरि ने बनाया है।
संग असुरन कि क्या सेना परिक्षा हित लगाया है।
माल अपना बचा ले जो वही फिर पार पाया है।
नहीं तो अन्त हो दोजक़ हाय की धुनि मचाया है।४।

सुरति औ शब्द का मारग जिसे सतगुरु बताया है।
छटा प्रिय श्याम की हरदम वही लखि लखि लुभाया है।
ध्यान धुनि नूर लय में जाय कर सुधि बुधि भुलाया है।
सनातन कह अन्त तन तजि के हरि पुर बास पाया है।८।

१२ ।। श्री रूप जी ।।

पदः- सतगुरु करि सुमिरौ अष्ट जाम प्रिय श्याम सदा सन्मुख ही रहैं।
तन मन से प्रेम लगै जिसका सो सूरति शब्द क मार्ग गहै।
नाहीं तो घूमै चौरासी कल्पौं दुख नाना बिधि के सहै।
विश्वास बिना कछु काम न हो आगे फिर कैसे जान चहै।
जब दीन बनै सब हो हासिल तब दुःख औ सुःख समान सहै।
सब इच्छा गत होवै जियतै कहै रूप कहौ फिरि काह कहै।६।

१३ ।। श्री बल्लभाचार्य जी ।।

दोहाः- श्याम प्रिया तन मन रमे, मोहिं न और सोहात।
कहैं बल्भा चार्य नित, सन्मुख में मुसक्यात।।

१४ ।। श्री गोविन्द जी ।।

दोहाः- मोहन प्रिय सब में लखै, सो है सांचा भक्त।
गोविन्द कहै सुजान सो, लौटि न आवै जक्त।।

१५ ।। श्री खुर्रम शाह जी ।।

शेर : छिपा पासै में तेरे मुरशिद बिना मिलता नहीं।
हुक्म उसके बगैर रस्ता ज़रा खुलता नहीं।।

१६ ।। श्री राम नारायण जी ।।

पदः- राधे रंग गौर पीत माधो रंग नील श्याम
कोटिन रति मदन लाजै अदभुद क्या झाँकी।
बेंदी औ कर्ण फूल कुण्डल औ क्रीट चमक
एकै में लपट मिलत लागत क्या बांकी।
प्यारी गले बाँह डारे मुरली हरि अधर धारे
सुर मुनि नभ ते निहारें सूरति हिय टांकी।
सुमिरन जो करत आज सन्मुख में रहे राजि
सारत हैं सकल काज जै जै पितु मां की।४।

दोहाः- कुट कुट मुरहा बने हो, मातु पिता को छोड़ि।
अन्त समय बतलाइये, कहां जाव मुख मोड़ि।१।

नुकता चीनी छोड़ि कै, भजन करो एक तार।
ज़वाँ कतरनी बन्द करि, निरखौं छबि सरकार।२।

१७ ।। श्री फूल चन्द्र जी ।।

पदः- मन कर रहा दौरान मैं जाऊँ किधर किधर।
इस पर चढ़ा शैतान दिखाऊँ किधर किधर।
यह हो गया खफ़ कान झराऊँ किधर किधर।
इससे हूँ मैं हैरान लगाऊँ किधर किधर।४।

१८ ।। श्री टेक चन्द्र जी ।।

पदः- मिल जाय जब गुरु ज्ञान न जावै इधर उधर।
हर दम रहै मस्तान न जावै इधर उधर।
खुल जावै नाम कि तान न जावै इधर उधर।
हो नूर लै व ध्यान न जावै इधर उधर।
हर दम लखै भगवान न जावै इधर उधर।
खुद आप हो कुर्वान न जावै इधर उधर।६।

१९ ।। श्री लक्ष्मी चन्द्र जी ।।

पदः- जिनको नहीं गुरु ज्ञान भटकते कहाँ कहाँ।
छूटी न सेखी शान झगड़ते कहाँ कहाँ।
रोकी नहीं ज़बान गटकते कहाँ कहाँ।
तन छोड़ि फिरैं हैरान लटकते कहाँ कहाँ।४।

२० ।। श्री अमी चन्द्र जी।।

पदः- बस में गर इन्द्रिन कीन चहौ तन को ज़्यादा जल पान न दो।
जो चोर घुसे बैठे भीतर इनको कबहूँ बलसान न दो।
जीता गर चाहौ तुम इनसे हुसियार रहौ मैदान न दो।
गुरु ज्ञान पाय कर दीन रहो कोइ बिषै पै अपनी बान न दो।४।

२१ ।। श्री श्याम बिहारी जी ।।

पदः- लांय लांय मन होत है नसा के बस में यार।
भजन कहौ कैसे करैं भई ज़िन्दगी ख्वार।

मन तो नाचत फिरत है माला साधे हाथ।
या बिधि पार न होंयगे कितनो कूटैं माथ।४।

२२ ।। श्री राम बिहारी जी ।।

पदः- लुबुरू लुबूरू मन होत है, बिषै का चसका लाग।
सुमिरन वह कैसे करै, तन से मन जब भाग।
माला हाथ में लिये हैं मन तो खेलत फाग।
तन अकेल क्या करि सकै लागो वा में दाग।४।

२३ ।। श्री चन्दन सिंह जी ।।

दोहाः- दाना पानी के बिना यारों कछु न स्वहाय।
जब जावै वह उदर में सबै बात बनि जाय।।
थोड़ा जल भोजन करै हलका रहै शरीर।
तब सुमिरन में मन लगै दरसैं सिया रघुवीर।२।

२४ ।। श्री दिलदार खां जी ।।

शेरः- बांगों से तन सब चूर है। क्या खुदा बहिरा सूर है।।
हर जां में वह भरपूर है। माने तु उसको दूर है।।
मुरशिद बिना तू कूर है। पाये न उसका नूर है।।
वरजिस तो कर क्यों झूर है। सुनु साज अनहद तूर है।४।

ऊपर से बनता घूर है। मन में समाई हूर है।।
लै ध्यान धुनी हजूर है। जपु नाम रूप क मूर है।।
नेकौं तुम्हें मगरूर है। उसको नहीं मंज़ूर है।।
तन मन से प्रेम में चूर है। दिलदार खां कह सूर है।८।

२५ ।। श्री हरी राम जी ।।

पदः- हरि पुर की डगर बतावै सो सतगुरु कोई।
नाम कि धुनि में लगावै सो सतगुरु कोई।
ध्यान प्रकाश मिलावै सो सतगुरु कोई।
शून्य में लै पहुँचावै सो सतगुरु कोई।
हर दम झाँकी करावै सो सतगुरु कोई।
जियतै भव से छोड़ावै सो सतगुरु कोई।६।

२६ ।। श्री राम बक्स जी ।।

पदः- तन मन बेताब हुआ यार नटवर के मारे।
गृह पुर कछु न स्वहाय मिलिहौ कब प्यारे।
मुरली की तान सुनाय क्यों बान से मारे।
जान लबों पर आय तब आस निहारे।४।

२७ ।। श्री जगदेई माई जी ।।

पदः- जोगिन का वेष बनाऊँ हरि तेरे ताईं।
घर घर अलख जगाऊँ हरि तेरे ताईं।
तन मन प्रेम पगाऊँ हरि तेरे ताईं।
मिलि फिरि तब पुर जाँऊ हरि तेरे ताईं।४।

२८ ।। श्री कौंडिल्य जी ।।

दोहाः- परा पैसन्ती मध्यमा, और बैखरी जान।
चारों चलत पिपीलिका, मार्ग से लीजै मान।
नासा ते स्वांसा चलै, तामे मारग मीन।
सूरति शब्द में जब पगै, चलै विहंग प्रवीन।४।

सोरठाः- कह कौंडिल्य सुनाय श्रुतिन में बास विहंग है।
तन मन प्रेम लगाय सुमिरै सो हरि संग है।।

२९ ।। श्री फ़ातिया शाह जी ।।

शेरः- हैं पांच वक्त निमाज़ के। क्या और वक्त मिज़ाज़ के।।
रोज़ा के दिन तो तीस हैं। खाली तीन से तीस हैं।।
ईद है बकरीद है जुमेरात है सुबरात।
मुहर्रम अलविदा पर्व है करते हो जीव घात।।
मल मूत्र की मिट्टी है तुम्हरी और जिसकी खात।
कानो से बने बहिरे आंखों से नहिं दिखात।४।

जिसके न रहेम दिल में सो है नमक हराम।
है सच सखुन यह मेरा कहता हूँ खा कलाम।।

सच्चे बनो खुदा के सब जन नमक हलाल।
मुरशिद करो और सुमिरो मिटि जाय सब मलाल।।
फ़ातिया शाह कह मानो कभी ईमान मत छोड़ो।
निकल जब जाय दम तन से, चलो दुनियां से मुख मोड़ो।७।

३० ।। श्री ब्रह्म देव जी ।।

दोहाः- श्री लव जी का दास हूँ, ब्रह्म देव है नाम।
हर दम दर्शन देत हैं, पूरन भा सब काम।।

३१ ।। श्री भागवत दत्त जी ।।

दोहाः- श्री कुश जी का दास हूँ, भगवत दत्त है नाम।
दर्शन मोको होत नित, दिब्य रूप गुण ग्राम।।

३२ ।। श्री बाबर शाह जी ।।

पदः- आसमान का चूल्हा बनै औ पवन का हण्डा।
पानी क बनै ढक्कन औ अग्नि का कण्डा।
पृथ्वी कि बनै अग्नी यह मान लूँ ग मैं।
मुरशिद बिना न पार हो यह पान दूँ ग मैं।
यह कायदा खुदा ने दुनिया के हित बनाया।
कहता है बाबर शाह यह मैं सच सखुन सुनाया।६।

३३ ।। श्री हेमाचल जी ।।

दोहाः- हेमाचल कह नाम जपि छूटि जाय सब दम्भ।
निर्गुण सर्गुण बनत है है वह सब का खम्भ।।

३४ ।। श्री मैना जी ।।

दोहाः- तन मन प्रेम औ दीनता, एक संग ह्वै जाय।
मैना कह हर दम लखौ, राम सिया सुखदाय।।

३५ ।। श्री सूर्य्यदीन जी ।।

दोहाः- सूर्य्य देव का दास हूँ, सूर्य दीन मम नाम।
दर्शन मोको देत नित, श्री स्वामी सुख धाम।।

३६ ।। श्री चन्द्रमा दीन जी ।।

दोहाः- चन्द्र देव का दास मैं, नाम चन्द्रमा दीन।
दर्शन मोको होत नित, सत्य बचन कह दीन।।

३७ ।। श्री कामता जी ।।

दोहाः- षडमुख जी का दास मैं, नाम कामता जान।
दर्शन मोको होत नित, मानो बचन प्रमान।।

३८ ।। श्री नारायण जी ।।

दोहाः- राम नाम जप जाय खुलि, होवै सुःख महान।
अन्त समय हरि धाम को, सीधे करै पयान।।

३९ ।। श्री उमाकान्त जी ।।

दोहाः- लखन लाल का दास हूँ, उमाकान्त है नाम।
दर्शन हर दम देत हैं, श्री स्वामी सुखधाम।।

४० ।। श्री श्री कान्त जी ।।

दोहाः- रिपु सूदन का दास हूँ, श्री कान्त है नाम।
दर्शन हर दम देत हैं, सुंदर शोभा धाम।।

४१ ।। श्री नर नारायण जी ।।

दोहाः- राम नाम को जानि कै चला जाय हरि धाम।
जग में फिरि फंसिहै नहीं, जियति भयो निश्काम।।

४२ ।। श्री बटोही जी ।।

छन्दः- जीह से जपि नाम योगी जागते तुलसी कहा।
सो जीह सुषमन घाट पर है, जानि सतगुरु से लहा।।
घृत दिया बत्ती नहिं जहां पर, होत परम प्रकाश है।
सो अचल पुर साकेत जानो, सर्व सुख की राशि है।४।

अनुभव बिना नहिं भजन में, आनन्द आती जानिये।
चित्त बृत्ति निरोध करिकै लै में जाय के सानिये।।
नाम हरि का बीज जो है, ख्याल उस पर राखिये।
कहता बटोही बाज हर दम, अमी अनुपम चाखिये।८।

दोहाः- राम नाम मणि दीप को, धरिये सुखमन घाट।
जीह देहरी द्वार यह, खुलि जावै तब बाट।।
भीतर बाहर एक रस, होवै बिमल प्रकाश।
कहै बटोही बाज़ सब, ह्वै जावै दुख नाश।।
ज्ञान भक्ति जो गरुड़ को, काग भुशिण्डि सुनाय।
सो स्वामी जी कृपा करि, सहजै दीन लखाय।।
चेला श्री कलिराज भे, स्वामी जी के जान।
नर नारिन के तरन हित, मांग्यो यह बरदान।।
राम नाम के होंय सब, अधिकारी महराज।
आप कृपा निधि जक्त हित, प्रगटे हौ सिरताज।५।

सतगुरु रामानन्द जी, दीन कलिहि बरदान।
तुम्हरी राज्य में भक्त जन, ह्वै हैं बहुत महान।।
कबीर दास रैदास को, श्री प्रभु अज्ञा दीन।
सूरति शब्द कि जाप को, बाँटौ लखि कै दीन।।
निर्गुण सर्गुण बोध हो, पावैं मुक्ति औ भक्ति।
ध्यान गुरु का प्रथम करि लें, है या में अति शक्ति।।
ऐसा सुलभ न मार्ग कोइ, सत्य कहौं मैं तात।
आप से क्या कछु छिपा है, जानत हौ सब बात।।
स्वामी रामानन्द का शिष्य जाति नट केरि।
पूरन किरपा कीन प्रभु, छूटी मेरि व तेरि।।
नाम बटोही बाज़ है, ग्राम सोहावलि खास।
तन मन प्रेम से हरि भजै, सो पावै हरि पास।११।

४३ ।। श्री रमाकान्त जी ।।

दोहाः- भरत लाल का दास मम, रमाकान्त है नाम।
मोको दर्शन देत हैं, स्वामी आठों याम।।

४४ ।। श्री पराना माई जी ।।

पदः- झूला पड़ा कदम की साख में झूलैं सघन छाह प्रिय श्याम।
ब्रह्मा बिष्णु महेश आय कर झूला प्रगट्यो आम।
रहीं झुलाय उमा ब्रह्माणी लछिमी जी गुण ग्राम।

जमुना जी मधुपुरी खड़ी तहं हवि अनार कर थाम।
सब सुर मुनि ऋषि सती चहुँ दिशि ठाढ़े करैं प्रणाम।५।

फेकैं पुष्प मेघ जिमि बरसैं लै लै दोनो नाम।
जै जै कार से ब्रज सब गूँज्यो अर्ध निशा का काम।
पुर भर के नर नारी जागे चहुँ दिशि ढूढ़ैं ठाम।
पता न पावै ब्याकुल तन मन उठैं गिरैं ब्रज धाम।
मुरली कूकि श्याम तहं दीन्ही ब्याकुलता सब थाम।१०।

निद्रा आय घेरि तहँ लीन्हेव सबै कीन बिश्राम।
झाँकी युगुल की शोभा सुर मुनि ऋषि शक्तिन लह्यो आम।
भोर होत सब अन्तर ह्वै गे पहुँचे निज निज धाम।
यह लीला हम नैनन देखा सतगुरु करि पथ थाम।
कहैं पराना पार होय सो भजन करै निष्काम।
मानुष का तन सब से उत्तम सुमिरन बिन बेकाम।१६।

४५ ।। श्री सट पट दास जी ।।

पदः- करो सतगुरु भजो हरि को बसे घट घट बसे घट घट।
ध्यान धुनि नूर लै पावो मिटै खट पट मिटै खट पट।
रहै सन्मुख लखौ हर दम सुघर छबि नट सुघर छबि नट।
अन्त तन छोड़ि हरि पुर लो कहैं सट पट कहैं सट पट।४।

४६ ।। श्री किलोल दास जी ।।

पदः- हम तो हैं हरि पुर के बासी कहैं बचन अनमोल जी।
सीता राम सीता राम सीता राम सीता राम।।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानौ तजि परपंच मखौल जी।
राधे श्याम राधे श्याम राधे श्याम राधे श्याम।२।

धुनि परकाश ध्यान लै पावो जहाँ सकौ नहि बोल जी।
सीता राम जै सीता राम सीता राम जै सीता राम।।
झाँकी युगुल लखौ निशि बासर मिटै गर्भ की कौल जी।
राधे श्याम जै राधेश्याम राधे श्याम जै राधे श्याम।४।

४७ ।। श्री विश्वकर्मा जी ।।

चौपाईः- आठ बीज बरनौं सुखदाई। सुनिये तन मन प्रेम लगाई।
पूजन जाप करै जो कोई। सबै कामना पूरन होई।
सोऽहँ ओंकार रँकारा। क्लीँ श्रीँ औ है हुँकारा।
ह्रीँ लीँ मिलि आठौं भयऊ। जप पूजन करि हम सुख लहेऊ।
तनमैता करिहौ जब भाई। बीज रूप ह्वै जाव हेराई।
प्रभु इच्छा से फिरि बिलगैहैं। कहैं विश्वकर्मा बनि जैहैं।६।

४८ ।। श्री दुलारी माई जी ।।

चौपाईः- तन मन ते पति सेवा कीन्हा। अन्त समय हरि पुर चलि दीन्हा।।
कहैं दुलारी तहं सुख भारी। बरनत बनै न रसना हारी।।

४९ ।। श्री रामगोपाल जी ।।

चौपाईः-मातु पिता की सेवा कीन्हा। अन्त समै हरि पुर हम लीन्हा।।
राम गोपाल कहैं का भाई। वहां क सुख कोइ वरनि न पाई।।

५० ।। श्री सुख राज जी ।।

पदः- ज़मीं उसकी फ़लक उसका सबी जां वह समाया है।
वही निर्गुण वही सर्गुण मुझे सतगुरु बताया है।
ध्यान धुनि नूर लै में जायकर सुधि बुधि भुलाया है।
सुरति औ शब्द का मारग सबी संशय मिटाया है।४।

राम सीता रहैं सन्मुख बड़ा आनन्द छाया है।
मधुर धुनि सुनि रहा अनहद शब्द तन मन लुभाया है।
देव मुनि संग में खेलैं चरित हरि के सुनाया है।
कहैं सुखराज जियतै जानि सो हरि पास धाया है।८।

५१ ।। श्री गरियावन जी ।।

पदः- अंश ईश्वर क कहलाकर भुलाया क्यों उन्हैं साले।
अन्त तू भागकर उनसे कहां को जायगा साले।
दूत जमराज के तेरे मुकाबिल आयगा साले।

देखते होश उड़ जैहैं बोलि नहिं पायगा साले।
मारि तन तूरि लै चलिहैं कौन छुटवायगा साले।५।
पकरि दोनों तेरी टांगें घसीटत जायगा साले।
रास्ते भर में सब छाला तेरा छिल जायगा साले।
करैं दरबार में दाखिल तो क्या बतलायगा साले।
जायकर नर्क में छोड़ैं पड़ा चिल्लायगा साले।
खान हित मूत्र मल देवैं विवश ह्वै खायगा साले।१०।
पहुँचतै पेट के अन्दर उलटि गिरि जायगा साले।
रहै हर दम बना भूखा न पल कल पायगा साले।
घोर अंधियार नहिं सूझै पवन नहिं आयगा साले।
सहै अति गन्ध की लपटैं कहां छिपि जायगा साले।
अगर मानै कहा मेरा तो सब दुख जायगा साले।१५।
मिलै सतगुरु से जा कर तू भजन बिधि पायगा साले।
सुरति को शब्द पर धरि कर जहां लगि जायगा साले।
ध्यान धुनि नूर लै पाकर मस्त बनि जायगा साले।
सुनै अनहद मधुर घट में वरनि क्या पायगा साले।
छटा सिया राम की सन्मुख तेरे छबि छायगा साले।२०।
देव मुनि संग में खेलैं लपटि मुसिकियायगा साले।
दीनता प्रेम ते तब फिर जगत बरतायगा साले।
कहै गरिआय गरियावन न फिर जग आयगा साले।२३।

दोहाः- गरिआवन गरियायके, कहैं जियति ले जान।
सतगुरु बिन छूटै नहीं, गर्भ केर लटकान।।

चौपाईः- गरिआवन कह मेरी गारी। मानि बहुत उतरे भव पारी।।
जे जन हिम्मत जावैं हारी। उनसे कह्यौं तुरत ललकारी।।
जग में आय भजो धनु धारी। जिन तुम्हरी यह देह संवारी।।
भोजन बसन कर्म अनुसारा। देत न नेकौं लागत बारा।।
गर्भ में कौल कीन जो भाई। सो करि अदा चलो चट धाई।।

सोरठाः- गरिआवन कह मानि जे जन हरि सुमिरन करैं।
ते पावैं सुख खानि जियतै चौरासी तरैं।।

५२ ।। श्री बिराट भगवान जी ।।

दोहाः- राम नाम जे जन जपैं, एक तार बसुयाम।
ते हमरे तन से निकरि, पावैं अचल मुकाम।।

५३ ।। श्री पर नारायण जी ।।

दोहाः- राम नाम को जानि ले, तन मन प्रेम लगाय।
सो साकेत में बास ले, हरि के रंग बनि जाय।।

५४ ।। श्री बूचा शाह जी ।।

पदः- बिना सतगुरु नहीं मिलता बड़े चक्कर क कूचा है।
पाय नर तन न हो गाफ़िल कहत यह सत्य बूचा है।
ध्यान धुनि नूर लै जानो जहां कोई न दूजा है।
सुरति औ शब्द का मारग जिसे जग आय रूचा है।४।

राम सीता रहैं सन्मुख नाम तन मन में गूँजा है।
कर्म शुभ अशुभ को लैकर ज्ञान अगिनी में भूँजा है।
देव मुनि आय दें दर्शन नहीं कछु और सूझा है।
अन्त हरि पुर में हो बैठक पहेली प्रेम बूझा है।८।

शेरः- पाठ पूजन नहीं वहँ पर न सुमिरन कीर्तन भाई।
कहैं बूचा जौन जावै रूप हरि का सो बनि जाई।।

५५ ।। श्री दिल खुसी जी ।।

पदः- हरि सुमिरन बिन तन जाय अन्त जम तूरैं पशुरिया राम।
करो सतगुरु भव दुख जाय कहत दिल खुशी पतुरिया राम।
लो सूरति शब्द लगाय खुलैं हिरदय कि केंवरिया राम।
धुनि ध्यान नूर लै पाय चलो हरि ओरिया राम।४।

प्रभु हर दम परैं दिखाय अधर पर धरे मुरलिया राम।
तन छोड़ि चलो चट धाय बसो हरि क्वरिया राम।
जहं महा प्रकाश दिखाय कहत नहिं सरिया राम।
नर नारी जो गुन गाय गर्भ नहिं परिया राम।८।

दोहाः- छीछा लेदर होयगी, जे न भजैं भगवन्त।
वेद शास्त्र बरनन करैं, ध्यावैं सुर मुनि सन्त।।
कहैं दिलखुशी आय जग, राम श्याम भजि लेव।
तन छूटै हरि पुर चलौ, बास पास में लेव।२।

५६ ।। श्री गंगा दीन जी ।।

दोहाः- श्री गंगा जी दर्श दें, हर दम मो को जान।
गंगा दीन है नाम मम, सत्य बचन लो मान।।

५७ ।। श्री जमुना दीन जी ।।

दोहाः- श्री जमुना जी दर्श दें, हर दम मोको जान।
जमुना दीन है नाम मम, मानो बचन प्रमान।।

५८ ।। श्री सरयू दीन जी ।।

दोहाः- श्री सरयू जी दर्श दें, हमै हर समै भ्रात।
सरजू दीन है नाम मम, मानो सांची बात।।

५९ ।। श्री गोमती दास जी ।।

दोहाः- धेनु मती जी दर्श दें, हमै हर घड़ी भाय।
नाम गोमती दास है, सत्य कहौं ग्वहराय।।

६० ।। श्री नरमदा दीन जी ।।

दोहाः- श्री नरमदा दर्श दें, हमै मानिये तात।
नाम नरमदा दीन है, हर दम हिय हरखात।।

६१ ।। श्री गोबिन्द जी ।।

दोहाः- दर्श देंय गोदावरी, हरदम मोको लाल।
गोविन्द नाम हमार है, तन मन प्रेम में साल।।

६२ ।। श्री बिष्णु दत्त जी ।।

दोहाः- परनारायण दर्श दें, हर दम मोको जान।
बिष्णु दत्त मम नाम है, सुनिये चतुर सुजान।।

६३ ।। श्री कृष्ण दत्त जी ।।

दोहाः- नर नारायण दर्श दें, हर दम मो को मान।
कृष्ण दत्त मम नाम है, सुनो लगाय के कान।।

६४ ।। श्री राम दत्त जी ।।

दोहाः- नारायण जी दर्श दें, मोहिं सदा सुख खानि।
रामदत्त है नाम मम, सत्य लेव तुम मानि।।

६५ ।। श्री शम्भु दत्त जी ।।

दोहाः- श्री बिराट रूप के दर्श हों, एक बार नित मोहिं।
शम्भु दत्त है नाम मम, सांच सुनायों तोहिं।।

६६ ।। श्री अखण्डा नन्द जी ।।

दोहाः- पृथ्वी जी दें दर्श नित, हर दम मोहि आनन्द।
सत्य बचन मम मानिये, नाम अखण्डा नन्द।।

६७ ।। श्री ज्वाला दीन जी ।।

दोहाः- ज्वाला जी मोहि दर्श दें, सिंह सवारी जान।
दिब्य सिंगार अनूप है, को करि सकै बखान।।
ज्वाला दीन है नाम मम, छत्री बंस औतार।
निर्भय औ निर्बैर हूँ, सत्य बचन उर धार।।

६८ ।। श्री सिखावन शाह जी ।।

पदः- अलिफ़ बे पे ए बी सी डी लिया पढ़ि बन गये साहब।
किया सतगुरु न पहिचाना बसे सब में जो हैं साहब।
कोट बास्कट और सूटर कमीचैं तन पहिन साहब।
बूट जूता और मोजा कसै पतलून को साहब।
कालर मफ़लर औ नकटाई हैट शिर धर लिया साहब।५।

फ्रेंच दाढ़ी कोई बनवा कोई बिलकुल सफ़ा साहब।
कोई अबलक मुड़ाये हैं कोई सब कुटकरा साहब।
कोई दोनो तरफ़ कटवा बीच में ली रखा साहब।

घड़ी कोइ जेब में डाले कोई कर में लगा साहब।
जला सिगरेट दबा मुख में उठा छाता छड़ी साहब।

चले मदमस्त ह्वै घर से टहलने के लिये साहब।
मिलै जहं मेल का कोई कहैं गुड मारनिंग साहब।
मिला कर हाथ फिर दोनों लगा झीटा हंसै साहब।
खड़े क्या कर रहै गिट पिट हैट बग़ली दबा साहब।
बना छप्पर है क्या शिर पर तेल बढ़िया से तर साहब।

मांग उसमे निकाली क्या कसर सेंदुर कि है साहब।
जाति मालुम नहीं होती कौन किस कुल के हैं साहब।
धर्म निज निज को त्यागन कर दिया धन हेतु बनि साहब।
एक सांची बीस झूँठी मिलाकर बोलते साहब।
कमा कर धन धरा घर में खुशी सब घर के हैं साहब।

खाना पीना गंदा खाते राक्षसी जौन हैं साहब।
दया की दे तिलांजुलि दी पाप से लदि गये साहब।
नारि अपनी न भाती है करैं वैश्या गमन साहब।
खांय उस धन को सब घर के अन्त दोज़ख पड़ैं साहब।
हाय रे हाय चिल्लावैं पड़े कल्पौं सड़ैं साहब।

प्रथम धन खर्च करि घर का कपट विद्या पढ़ैं साहब।
फेरि अब बुद्धि किमि सुधरै उसी रंग पर चढ़े साहब।
बहुत कम जीव ऐसे हैं जो अपने धर्म पर साहब।
उन्हैं हम धन्य कहते हैं होंय जग से रिहा साहब।
रहैं जब तक जगत में वै न हो कछु दुख उन्हैं साहब।

सदा हरि नाम को सुमिरैं होंय दर्शन उन्हैं साहब।
ध्यान धुनि नूर लै पावो सिखावन शाह कहैं साहब।

६९ ।। श्री कृपा शंकर जी ।।

पदः- शंकर भोलानाथ दयाल दया का खोलि खजाना दीजै।
औढर दानी आप कहाते सुर मुनि बेद शास्त्र जश गाते,
हर दम राम नाम मद माते भक्तन अभय नाथ अब कीजै।

माया फौज लिये संग घूमै छिन छिन निरखि निरखि मुख चूमै
अबला पुरुष फंसे जग झूमैं विरथा आयू सारी छीजै।
लै त्रिरशूल इन्हें अब मारो स्वामी भक्तन प्राण उबारो
मेरी बिनय हृदय में धारो काहे देर करत सुधि लीजै।४।

७० ।। श्री दया शंकर जी ।।

पदः- जै श्री पवन तनय बलवान कृपा निधि किरपा करि दुख काटौ।
असुरन फ़ौज बड़ी दुखदाई छिन छिन पकड़ि देत गोतियाई
नेकौं चलत न नाथ उपाई इनको गदा उठाय के डाँटौ।
आप तो राम सिया के प्यारे कहते सब भक्तन रखवारे
हर दम राम नाम उर धारे सो प्रभु खोलि खजाना बाँटौ।
बिनती सुनिये मेरी स्वामी गुनि कर भर लीजै अब हामी
कीजै तन से दुष्टन खामी सब दिशि घट घट जाय के छांटौ।४।

७१ ।। श्री उत्तान पाद जी ।।

पदः- हरि हर नाम कि अकथ बड़ाई।
सुर मुनि बेद शास्त्र नित गावत अगणित जन्म न सकत सेराई।
अगम अपार अकह यह जोड़ी है एकै दुइ कहन में आई।
चारि पदारथ करतल होवैं तन मन प्रेम से जो जन ध्याई।४।

७२ ।। श्री सियावर दास जी ।।

दोहाः- सीता जी मोहिं दर्श दें, हर दम मानो बात।
नाम सिया वर दास है, जग से छूटा नात।।

७३ ।। श्री चण्डी दीन जी ।।

दोहाः- चण्डी जी मोहिं दर्श दें, हर दम सन्मुख जान।
चण्डी दीन है नाम मम, मानो बचन प्रमान।।

७४ ।। श्री रामानन्द राव जी ।।

पदः- क्या बतलावैं कुछ कहा नहीं अब जाता।
सन्मुख हर दम घनश्याम मेरे दिखलाता।
या से हमको अब और कछू न स्वहाता।

तन से मन कोई तरफ़ नहीं है जाता।
खाने पीने में कोई स्वाद न आता।५।
खा लेते हैं जो कोई प्रेम से लाता।
कबहूँ तो मोहन मुरली खूब सुनाता।
कबहूँ तो भाव बताय के गाना गाता।
कबहूँ नूपुर धुनि छम छम नाचि बजाता।
कबहूँ उठाय के हाथन पर उर लाता।१०।
कबहूँ मुख चूमै नैन कि सैन चलाता।
कबहूँ कर से कर पकरि के साथ नचाता।
कबहूँ संघै में बैठि के भोजन पाता।
कबहूँ साथै में सोवत आनन्द दाता।
करता संघ में बहु खेल जौन मन भाता।
बस इसी में रामानन्द राव है माता।१६।

७५ ।। श्री चतुर दास जी ।।

पदः- सतगुरु दाया करी कोई कुछ भी कहै या न कहै।
धुनी सुनता हूँ चहै तन ये रहै या न रहै।
इच्छा पूरन है कोई कुछ भी लहे या न लहै।
बैन हम सत्य कहैं कोई गहै या न गहै।
कष्ट हम खूब सहा कोई सहै या न सहै।
सन्मुख घनश्याम कोई मुझ को चहै या न चहै।६।

७६ ।। श्री पीतम सिंह जी ।।

पदः- पाय नर तन नाम हरि का जान ले तो पूत है।
नाहीं तो उस से है भला जो करत वह मल मूत है।
अन्त में लै नर्क जाते पकड़ि जम के दूत है।
सतगुरु से नाम को जान के बन जाते जे मजबूत है।४।
आते न उनके पास पहिले ही चुके वै कूत है।
रूप ध्यान प्रकाश लै मिल जात नाम के सूत है।

कहता है पीतम सिंह जियतै बस किया सब भूत है।
निर्बैर निर्भय हो गया मिटि गई तन मन छूत है।८।

७७ ।। श्री पोले शाह जी ।।

पदः- मिटि जात करम गति हरि के भजे पढ़ि सुनि सुर मुनि सब कह्यौ है सही।
अब करु सतगुरु तन मन चित दे विश्वास बिना कछु होत नहीं।
क्या मारग सूरति शब्द क है जप होत सदा नहिं माल चही।
बाजा अनहद हर दम सुनिये क्या ध्यान में लीला दर्श रही।४।

परकाश समाधि में जाय मिलो जहं सुधि बुधि नेक न रहत मही।
उतरो फिरि झाँकी दिब्य लखौ सन्मुख सिय राम की राजि रही।
यह बात भ्रात बहिनो सब हित हम जानि मानि कै ठीक कही।
पोले कह जियतै मुक्ति भक्ति तन छोड़ि अचलपुर बास लही।८।

७८ ।। श्री भगवान दास अचारी जी ।।

दोहाः- नारायण के धाम को, पहुँचि गयेन हम जान।
भगवान दास कह सुख वहां, सब प्रकार है मान।।

७९ ।। श्री बलिराम अचारी जी ।।

दोहाः- नारायण के धाम हम, पहुँचि गयेन चढ़ि यान।
बलिराम अचारी कह वहं, सब को सम सनमान।

८० ।। श्री छरीदा जान जी ।।

पदः- तेरे ऊपर तन मन धन कुर्बान करूँ श्याम जरा सूरति दिखादे नजर भर के।
भूषण बसन संवारि के प्यारे मुरली मनोहर अधर धर के।
चितवन टेढ़ी चाल अलबेली नूपुर पग छम छम करके।
निसि बासर कल पल भरि नाहीं बिरह कि कर्द जिगर खरके।
बोलो चहै न बोलो प्रियवर तब मूरति सन्मुख छरके।
कहैं छरीदा घट घट बासी काहे हम से फिरत टरके।६।

८१ ।। श्री हलीम जी ।।

पदः- निज नाम ही से प्रगटैं जप करके देख लीजै।
मुरशिद को करके यारों जप भेद जान लीजै।

तन मन व प्रेम से जब सूरति शब्द पै दीजै।
सन्मुख में राम सीता दीदार हर दम कीजै।
यह तन बसर क सुन्दर जियतै सुफल तो कीजै।
कहता हलीम तन तज हरि पुर में बास लीजै।६।

८२ ।। श्री चुपन्ना जी ।।

पदः- राधा माधौ लखौ निज सन्मुख।
क्या बांकी जोड़ी अलबेली काटत जगत के जाल महादुख।
मुरली मधुर बजाय रिझावत तन मन प्रेम में मस्त महासुख।
कहत चुपन्ना सुर मुनि ध्यावत जानि लेव सब जन ह्वै गुरु मुख।४।

८३ ।। श्री ढोला जी ।।

पदः- श्रृङ्गी नाद सुना दो शिव शंकर भोला।
डमरू फिरि डिमका दो सूत्रन जो खोला।
कसि तिरशूल चला दो असुरन के टोला।
हरि नाम क जाम पिला दो तब हो सुख चोला।।
श्री सतगुरु नाथ मिला दो दागैं हम गोला।
लै ध्यान प्रकाश लखा दो होऊं अनमोला।।
सिय राम की झाँकी करा दो कहता है ढोला।
जियतै सब आस पुरादो छूटै तब चोला।५।

८४ ।। श्री छङ्गू मल जी ।।

पदः- निरखि छबि लीजै राधे संग सरकार।
चर औ अचर में जो परिपूरन सब के प्राण अधार।
मुरली दहिने कर में राजत साजे अजब सिंगार।
मंद हसनि खुम चितवनि प्यारी नूपुर पग झनकार।
सुर मुनि हर दम जिनको ध्यावत सब लोकन जैकार।
सतगुरु करि सुमिरौ निसि बासर तब करिहैं नित प्यार।६।

८५ ।। श्री बिन्दु मती जी ।।

पदः- छम छम छम पग नूपुर बाजत श्याम मनोहर आवत हैं रे।
कुण्डल क्रीट बसन औ भूषण चम चम चमकावत हैं रे।

ताल तान सम राग सप्त सुर मुरली माहिं सुनावत हैं रे।
छबि श्रृँगार छटा को बरनै अगणित मदन लजावत हैं रे।४।

निसि बासर सुर मुनि सब ध्यावत गावत गुण हरषावत हैं रे।
तन मन ते जे प्रेम करत जन तिनको गोद बिठावत हैं रे।
हंसि हंसि कै उनको मुख चूमत उर लगाय दुलरावत हैं रे।
बिन्दु मती कहैं सतगुरु करिये वै यह मार्ग बतावत हैं रे।८।

८६ ।। श्री बुक्काराय जी ।।

पदः- करो सतगुरु फते गढ़ हो बजै डंका कुड़ुम धुम तब।
सुरति को शब्द पर धरिहो बजै डंका कुड़ुम धुम तब।
ध्यान धुनि नूर औ लै हो बजै डंका कुड़ुम धुम तब।
देव मुनि संग खेलैं हो बजै डंका कुड़ुम धुम तब।
कर्म शुभ अशुभ का छय हो बजै डंका कुड़ुम धुम तब।
सदा निर्बैर निर्भय हो बजै डंका कुड़ुम धुम तब।६।

सामने श्याम श्यामा हों बजै डंका कुड़ुम धुम तब।
अन्त चलने पै जै जै हो बजै डंका कुड़ुम धुम तब।
छुटै संसार खैं खैं बजै डंका कुड़ुम धुम तब।
सुनो अनहद मधुर धुनि हो बजै डंका कुड़ुम धुम तब।
मधुर बाणी से बोलैं हो बजै डंका कुड़ुम धुम तब।
ख्याल में मस्त हर दम हो बजै डंका कुड़ुम धुम तब।१२।

दोहाः- स्वयं ब्रह्म जे बनत हैं, बातैं लीन्हीं सीख।
उनके पास में है नहीं, परमारथ की भीख।।
ब्रह्म बनत घर घर फिरत, लगै न उनकी सीख।
धनवानन के पास में, खाते नीकी भीख।२।

८७ ।। श्री श्याम कली सखी जी ।।

पदः- शिवा कुंज करत सैन श्याम राधे नित्य रैन।
सतगुरु के मानि बैन कीन ध्यान पहुँचि गैन।
निरखत भे सुफ़ल नैन शोभा के जौन ऐन।
लाजत लखि अमित मैन।
ऐसा हरि नाम पैन।५।

या के सम कोई हैन।
सुर मुनि बहु लैन लैन।
बैठत नित दरश दैन।
तन तजि हरि धाम छैन।
हर दम तहँ रहत चैन।१०।

८८ ।। श्री कृष्ण सहाय जी ।।

पदः- निरखो श्याम मनोहर प्यारो।
कौन भाँति कोइ सोभा बरनै जो सब जगत संवारो। मनोहर प्यारो।।
सुर मुनि सब निशि बासर ध्यावत शेष सहस मुख हारो। मनोहर प्यारो ।।
कर्म अनुसार खबरि सब की ले सब में सब से न्यारो। मनोहर प्यारो।।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि लीजै ध्यान धुनी उजियारो। मनोहर प्यारो।।
लय में पहुँचि जाव नहिं सुधि बुधि उतरो फेरि निहारो। मनोहर प्यारो।६।
करि रियाज जियतै करतल करो मानो बचन हमारो। मनोहर प्यारो।।
कृष्ण सहाय कहैं तन छूटै हरि पुर चलि पग धारो। मनोहर प्यारो।।
बाम भाग में राधे राजत मुरली अधर पै धारो। मनोहर प्यारो।।
भक्तन के संग ही संग डोलत अगणित पापिनि तारो। मनोहर प्यारो।।
प्रेम से प्रगट होय हैं पासै तन मन जब तुम वारो। मनोहर प्यारो।।
दुख सुख को सम करिकै मानो पीछे पग मति टारो। मनोहर प्यारो।१२।

८९ ।। श्री ग्वलन शाह जी ।।

शेरः- बेकार सान मान और कर रहे हो रिस।
अन्त में जमदूत गहैं टांय टांय फिस।।
स्मरन पाठ कीर्तन पूजन प्रेम की वर्जिस।
नाहीं तो अन्त यारों सब काम हो ढिस मिस।।
कहते ग्वलन मुरशिद करो दुबिधा ये बैरिन खाक हो।
जियतै में सब तै होय तंब तो पाक हो बे बाक हो।३।

९० ।। श्री श्याम बहादुर जी ।।

पदः- सतगुरु से लो नाम क तूर। सब में जो ब्यापक भरिपूर।।
ध्यान समाधि खुलै क्या नूर। राधे कृष्ण को ताको हजूर।।
तन मन प्रेम में कर दे चूर। श्याम बहादुर कह सो सूर।३।

९१ ।। श्री सुनारी साह जी ।।

पदः- सतगुरु करि लीजै देर न कीजै आयू छीजै यार जुटौ।
हो प्रेम कसौटी स्वांस मंझौटी दुइ तब छूटी आप मिटौ।
धुनि नाम कि जारी हो उजियारी ध्यान सुखारी लय में सटौ।
तन मन दो वारी कहैं स्वनारी लखौ मुरारी अन्त अटौ।४।

९२ ।। श्री गरीबा जान जी ।।

पदः- करि दीजै दया गिरिधारी। बनवारी मुरारी बिहारी।।
सुखकारी तुम्हारी बलिहारी। छबि प्यारी तन वारी निहारी।।
लगै तारी केवारी उघारी। धुनि जारी उजियारी लै प्यारी।।
मैं नारी दुखारी भिखारी। अब बारी हमारी भवपारी।४।

शेरः प्रेम में तन मन मिला दो श्याम को हर दम लखौ।
कहती गरीबा जान करि मुरशिद अमी अनुपम चखौ।।

९३ ।। श्री नफ़ीस जान जी ।।

पदः- ऐसा घनश्याम मेरे नैन इशारा मारा।
बेधिगा हाय कलेजे के करि दिया पारा।
ऐसा सैयाद कोई हमने नहीं देखा सुना।
बचना मुश्किल है सुनो तेज दुधारा मारा।
शिकार मारी लेने सामने जो आजावै।
फ़ौरन जी जाऊँ है वह जग का दुलारा प्यारा।६।

९४ ।। श्री सहीद जान जी ।।

पदः- ऐसी कमान अबरू से हरि तीर नजारा मारा।
चुभ गया हाय जिगर हो गया पारा पारा।
शिकार करके भला अपनी उठा लीजै तो।
तड़फ़ रही हूँ दिल बे पीर हमारा मारा।
ऐसा सय्याद कोई है न कभी होवैगा।
जिस को मारे है सो इस जग से न्यारा प्यारा।६।

९५ ।। श्री भानू दास जी ।।

पद:- ब्रज में क्या वंशी बाजै सुनो जसुदा नन्द लाल मनोहर की।
सुख सागर की गुण आगर की राधेबर की सर्वेश्वर की।
सतगुरु करि तन मन प्रेम करो तब बाट लखौ अपने घर की।
धुनि ध्यान समाधि प्रकाश मिलै छबि हरदम सन्मुख प्रिय हरि की।४।

सुर मुनि सब आय के दें दर्शन यह जाप अहै बिधि हरि हर की।
उनमुनी बैठि सूरति लगाय सुनु शब्द ब्रह्म टूटै फरकी।
चित करि एकाग्र तज चन्द्र सूर्य सुखमन में जावो चट ग़रकी।
कहते हैं भानु दास जियति तरि जावो देर न पल भर की।८।

९६ ।। श्री अलहुब्ब अली जी ।।

पद:- क्या साजे भूषण बसन श्याम नन्द लाला।
नित प्रति दर्शन हैं देत संघ प्रिय बाला।
जब मुरली देत बजाय सुनो अहवाला।
तन मन सुधि जाय भुलाय होहु मतवाला।
नूपुर धुनि नाचत समै बजै क्या आला।५।

दामिनि सम दमकै प्रिय प्रीतम दै ताला।
नैनों की सैन चलाय हाथ धरि भाला।
क्या कटि खमीद करि देत बाँसुरी वाला।
गावत जब राग अलापि कहै को हाला।
सब सुर मुनि लखि लखि नभ ते फेंकत माला।१०।

क्या ताल ग्राम स्वर धुनि सम साज निराला।
धरि दिब्य देह निज निज कामन पर ख्याला।
छा राग छतीसौ रागिन प्रगटत हाला।
संग में सोहत परिवार रूप रंग आला।
नाना बिधि लखि लखि खेल जिगर भा पाला।१५।

मुरशिद करि पीजै अनुपम नाम क प्याला।
मिटि जाय करम गति बिधि ने लिखी जो भाला।
धुनि ध्यान नूर लै होय मिलै सुख साला।

अनहद सुनिये नहि हद्द मधुर धुनि आला।
सन्मुख हों श्यामा श्याम हरै मन चाला।२०।

जिन तुमको उत्पति करि के बहु बिधि पाला।
तन मन प्रेम से लागि जाव तजि गाला।
सुर मुनि सब दर्शन देंय सुफ़ल हो छाला।
बनि जावो सांचे मात पिता के लाला।
सूरति शब्द पै धरि के करिये ख्याला।२५।

जियतै में तै होय मिटै जग जाला।
अलहुब्ब अली कहैं मानो बचन रसाला।
नहि अन्त समै में दोज़ख जैहो डाला।२८।

दोहाः- स्वामी रामानन्द का चेला हूँ मैं जान।
अलहुब्ब अली मम नाम है, सत्य लीजिये मान।।

९७ ।। श्री शिवराज जी ।।

पदः- बेदन ते शब्द होत स्वांस ते समाधि होत
त्रिकुटी ते ध्यान परकाश होत जानिये।
सतगुरु करि सिखौ अनुपम अमी चखौ
सीता राम हर दम लखौ बैन सत्य मानिये।
सुर मुनि दर्श देत हंसि हंसि गोद लेत
रहत न नेक द्वैत नेम टेम ठानिये।
शिवराज तन छोड़ि जगत से मुख मोड़ि
नित्य धाम नात जोड़ि लेव सुख खानिये।

दोहाः- हरि सा रंग औ रूप हो मौन खान नहिं पान।
अचल धाम शिवराज कह ताहि जियति लो जान।
सबै बासना होंय गत तब वह पहुँचै जाय।
सतगुरु बिन शिवराज कह भेद नहीं कोइ पाय।४।

९८ ।। श्री चलाका माई जी ।।

पदः- काटै गुदरी दिवस निशि मुसरी।
मय परिवार लिहे लागी रहै मानत नाहीं ससुरी। दिवस निशि मुसरी।

बिन सतगुरु कोइ पकड़ि सकत नहिं तन में बैठी घुसरी।
दिवस निशि मुसरी।
कहै चलाका शब्द क मुगदर लै तूरो सब पसुरी।
दिवस निशि मुसरी।४।

९९ ।। श्री चटाका माई जी ।।

पदः- शेर को पकड़ि बिलरिया लीन्हा।
भा बेहोश निकसि किमि पावै ऐसा झिटका दीन्हा। बिलरिया०।।
कुल परिवार से मास न्वचावत चढ़ि बैठी धरि सीना। बिलरिया०।।
सतगुरु मिलै कटै यह फन्दा जिमि जल पायो मीना। बिलरिया०।।
ध्यान धुनी परकाश दशा लै सन्मुख श्याम नगीना।। बिलरिया०।५।
हटै न फिरि सब फ़ौज को मारै जीति लेय करि खीना।। बिलरिया०।
सोई सूर बीर है जानो जो निज धन को छीना। बिलरिया०।
अनहद नाद सुनै क्या बाजै ताल तान स्वर झीना। बिलरिया०।
सातौं नीरज औ कुण्डलिनी षट चक्कर को चीन्हा। बिलरिया०।
निर्भय मस्त चहैं तहं डोलै हर दम अमृत पीना। बिलरिया०।१०।
सुर मुनि सब के दर्शन पावै तन मन प्रेम से दीना। बिलरिया०।।
कहैं चटाका धनि सोइ प्राणी जियति सुफ़ल तन कीन्हा बिलरिया०।१२।

१०० ।। श्री संत शरन जी ।।

पदः- चाहौ जो अगर हरि की भक्ती बजरंग से प्रेम लगावो तो।
सुर मुनि जो कीरति गाय गये सो कहि कर याद दिलावो तो।
ह्वै कर दयाल कर दें निहाल उनकी तुम शरनि में जावो तो।
कहते हैं संत शरन भाई यह बैन सुनो उर लावो तो।४।

१०१ ।। श्री रघुनाथ भक्त जी ।।

पदः- तन मन को मेरे लूट लिया घनश्याम प्रिया दिखलाय दरश।
हर दम मम सन्मुख राजि रहे नहिं बाकी कोई भ्रात हवस।
धुनि नाम कि रोवन ह्वै निकलै औ बोलि रही सब है नस नस।
क्या ध्यान प्रकाश समाधी हो सुधि बुधि तहं नेक नहीं को कस।
सतगुरु से जानि करो सुमिरन फिर अन्त में हरिपुर जावो बस।
रघुनाथ कहै यहि के आगे सब रंग फीक गर पावो लस।६।

१०२ ।। श्री महदेई माई जी।।

पदः- जनियां निरखि निरखि सुख लूटौ राधे श्याम खड़े मुसक्यात।
नील पीत परकाश निकलि क्या एकै में लिपटात।
छबि श्रृंगार छटा को बरनै अगणित काम लजात।
सुर मुनि सब नित प्रति गुण गावें कबहूँ नाहिं सेरात।
दरशन करें फूल बरसावे तन मन माहिं सिहात।
धन्य धन्य बृज बासी हैं सब जहं प्रगटैं पितु मातु।६।

सखा सखिनि संग रहस करत नित औ गृह गृह में खात।
नाना लीला हरदम होती सत्य कहैं हम तात।
सतगुरु करो मिलै तब मारग देखो अचरज बात।
नर तन को लाहो लै लीजे मिलै न ऐसी घात।
महदेई कहै नाम खुलै जब जग से छूटै नात।
नाहीं तो फिर तन पर नर्क में जमन कि चलिहै लात।१२।

दोहाः- चेली रामानन्द की, महदेई मम नाम।
ग्वाल वंश में जन्म, बरसानो है ग्राम।।

१०३ ।। श्री बृज रानी माई जी ।।

पदः- जै जै श्री राम ब्रह्म दशरथ सुत बनैया।
भरथ लाल बिष्णु अंश लखन लाल शेष अंश
रिपुहन श्री शम्भु अंश आये बनि भैया।
जोड़ी दुउ पीत श्याम लाजत लखि अमित काम
सुमिरै जो नित्य नाम सन्मुख दरसैया।
तन मन से रहत मेल खेलत नित नये खेल
फूलन कच सुभग बेलि शिर पर लहरैया।
आनन्द अति अवध माहिं लखि लखि सुर मुनि सिहाहिं
नित प्रति आवैं औ जाहिं नर तन शुभ धरैया।५।

किंकिणी कटि में बिराजै पौटा क्या पगन राजै
सब मिलि जिहि ओर भाजै छम छम धुनि उठैया।
मातन को बैठि पाय कांधेन पर चढ़त धाय
दोनो कर गले लाय हंसि हंसि लटकैया।

लीला को कहै गाय बरनत नाहीं सेराय
सतगुरु करि लखौ भाय हर दम छबि छैया।८।

१०४ ।। श्री रूप रानी माई जी ।।

पदः- पिता शम्भु उमा मातु जग बिख्यात दानी।
तन मन से प्रेम लाय ध्यावै सो दर्श पाय
सुर मुनि सब रहे गाय लेवै मन मानी।
आवै जो कोइ द्वार करते नाहीं बिचार
ऐसे सुंदर उदार बोलत मृदुबानी।
ऐसे स्वामी को पाय बिगरी लीजै बनाय
बिरथा आयू सेराय आखिर हैरानी।४।

१०५ ।। श्री गुरदेई माई जी ।।

पदः- ताकौ ताकौ खड़े सिय राम बाय।
सतगुरु करो दर्श हों हरदम मंद मंद मुसक्यात बाय।
बांये कर में धनुष बिराजै दहिने शर चमकात बाय।
छबि श्रृंगार छटा है अनुपम बरणत शेश चुपात बाय।४।

अगणित काम औ रति लखि लाजै नेकौ नहिं ठहरात बाय।
सुमिरन गान ध्यान करें सुर मुनि तन मन माहिं सिहात बाय।
सांचा ह्वै कर प्रेम करै जो सो हरि धाम को जात बाय।
गुरुदेई कहैं नाम को साधो दुर्लभ मानुष गात बाय।८।

१०६ ।। श्री रमदेई माई जी ।।

पदः- सतगुरु करि जो नाम को पयली।
हर दम राम सिया की झाँकी सन्मुख में छबि छयली।
कोटिन जन्म की होय कमाई सो यहि मारग अयली।
सुर मुनि सब नित दर्शन देवैं जन्म सुफल तेहिं भयली।४।

मन मतंग काबू जब ह्वै गो भागी असुरन सैली।
रमदेई कहैं अन्त छोड़ि तन चट हरि पुर को गयली।
आंखी कान बन्द हैं काहे मन की मति है मैली।
सबै वस्तु पासै में तुम्हरे लखौ खुलै जब थैली।८।

१०७ ।। श्री हरिदेई माई जी ।।

पदः- लखो लखो श्याम प्रिय मन्द मन्द जात गैलो।
शोभा कौन बरनै कैसी छटा छहरात गैलो।
बांह गले डाले प्यारी हंसि बतलात गैलो।
सुर मुनि देखैं नभ ते सुमन गिरात गैलो।
सतगुरु करि लीजै तब यह सुझात गैलो।
कहै हरदेई बिरथा आयू सेरात गैलो।६।

१०८ ।। श्री सूर्य नारायण जी ।।

पदः- विश्वास पात्र जो जीव होंय ताको निर्भय सब कार्य सरै।
सतगुरु करिके मुद मंगल ह्वै कोटिन को लैकर जियति तरै।
दुख सुख को मानै सम हर दम पग फेरि पछारी नाहिं धरै।
धुनि ध्यान समाधि प्रकाश लहै रसना बिन प्रभु को नाम ररै।
सन्तोष शांति दाया श्रद्धा तन मन औ प्रेम को एक करै।
कहैं सूर्य नारायण शूर बीर जा को हरि सब में देखि परै।६।

१०९ ।। श्री हरी पण्डित जी ।।

पदः- पढ़ना सुनना लिखना सच है समुझै जब आंखी कान खुलै।
सतगुरु करिके अभ्यास करै मुद मंगल हो सब ताप जलै।
क्या ध्यान समाधि प्रकाश होय धुनि नाम कि रोम रोम निकलै।
सन्मुख में श्यामा श्याम लखै सुर मुनि सब आय के नित्य मिलैं।
यह मारग सूरति शब्द क है पासै सब जियतै देखि मिलै।
कहते हैं हरी तन छोड़ि अन्त हरिधाम सिंहासन बैठि चलै।६।

११० ।। श्री गोदावरी माई जी ।।

दोहाः- गोदावरि कह गो दमन, करौ लखौ प्रिय श्याम।
नाहीं तो पछितावगे, अन्त समै नर बाम।।

१११ ।। श्री गंगा माई जी ।।

दोहाः- गंगा कह गम्भीर सो, जो प्रिय श्याम को जान।
नाहीं तो भरमत फिरै, निकसि जाय जब प्रान।।

११२ ।। श्री मुकतेश्वर जी ।।

पदः- श्रुतिन से हरि जस नैन से रूप लखौ
रसना से कीर्तन करो हर बार जी।
उनमुनी मुद्रा बैठो ध्यान होय लीला देखो
पावो परकाश दोनो कर्म होंय छार जी।
चन्द्र सूर्य एक मिलि सुखमन स्वांस होय
शून्य में समाय जाव सुधि ना बिचार जी।
सुर मुनि आय आय दर्श देंय बतलाय
रोम रोम शब्द धुनि उठै रंकार जी।
मुक्ति भक्ति ज्ञान योग जप तप संग डोलै
जियति में जानो करि सतगुरु सार जी।
मुकतेश्वर बैन कहैं पढ़ि सुनि जे न गहैं
तौन दुख जाय सहैं नर्क के मंझार जी।६।

११३ ।। श्री दंडवत श्वामी जी ।।

दोहाः- सब में हरि को देख लो, सतगुरु करि दुख जाय।
नाहीं तो फिर नर्क में, रोये नहीं सेराय।।

११४ ।। श्री जनारदन श्वामी जी ।।

दोहाः- सब में हरि को लेय लखि, हरि में सब को जान।
कहैं जनार्दन तौन जन, पावैं पद निर्वान।।

११५ ।। श्री सुशीला जी ।।

पदः- सुखी जग में हो वही जो हरि में तन मन सान दे।
करिके सतगुरु प्रेम से अजपा कि जाप को ठान दे।
ध्यान धुनि लै नूर हो औ रूप क्या चमकान दे।
देव मुनि नित दर्श देवैं हर्खि हर्खि कमान दे।
साधन न होवै सिद्ध जब तक और को मति ज्ञान दे।
कहती सुशीला अन्त तन तजि अचल पुर को तान दे।६।

११६ ।। श्री स्वामी ध्यानानन्द जी ।।

पदः- मधुर मधुर अनहद घट बाजै सूझि परै जब ध्यान धरौ जी।
पच्छिम मार्ग से चढ़ौ अटा पै पांच प्राण जब एक करौ जी।
रवि शशि तारे सुर मुनि दर्शैं नूर होंय चलि लै में परौ जी।
रोम रोम ते नाम कि धुनि हो सन्मुख सीता राम करौ जी।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानौ बिन रसना हरि नाम ररौ जी।
ध्यानानन्द कहैं यह बानी तन मन से जब जियति मरौ जी।६।

११७ ।। श्री ज्ञानानन्द जी ।।

पदः- राम मय सृष्टी लखै सो ज्ञान वान महान जी।
दीनता अरु भक्ति आवै खुलैं आंखी कान जी।।
सतगुरु करै सब होय तै मिटि जाय सान औ मान जी।
तन छोड़ि अन्त में जा बसे जहं होत खान न पान जी।।
अमित रवि सम तेज जहँ पर सो अचल पुर थान जी।
कहते हैं ज्ञानानन्द बानी भक्त ही कोइ जान जी।३।

११८ ।। श्री ओंकार सिंह जी ।।

पदः- सब सृष्टि में तुम हौ रमें सब सृष्टि तुम में है रमी।
करि प्रेम सतगुरु से लखौ इतनी ही तुम में है कमी।।
ध्यान धुनि परकाश लै पावौ मिटै सब गम हमी।
राम श्याम समेत शक्तिन होय झाँकी चमचमी।।
जियति में जो तै करी तन छोड़ि हरि पुर सो थमी।
ओंकार कह इस मार्ग पर कोइ धीर बीर क पग जमी।३।

११९ ।। श्री सोऽहँ स्वामी जी ।।

दोहाः- सोऽहँ कह सोऽहँ जपो सोऽहँ जाप अखण्ड।
सतगुरु से बिधि जान लो होय न फिरि भव दण्ड।।

१२० ।। श्री बिलासा माई जी ।।

पदः- मुरझा गई मैं गम में हा हरि की छटा मिलती नहीं।
आँसू पी पी के रहूँ भूख तो लगती नहीं।

झलकी दिखा लूटा मुझे अब मैं तो हट सकती नहीं।
कहती बिलासा आ मिलो लागी लगन कटती नहीं।४।

दोहाः- हरि में जाकी प्रीति हो, सो है चतुर सुजान।
नाहीं तो फिरि अन्त चलि, पावै नर्क में थान।
नाना बिधि के दण्ड जम, देंय करैं हैरान।
कहै बिलासा भजन बिन, ठीक न मिलै ठेकान।४।

१२१ ।। श्री मियां महबूब जी ।।

पदः- लखौ सभी जां रमा है प्यारा जसोदा नन्द सुत मनोहर माधौ।
मिलो तो मुरशिद से जा के यारों लगा के तन मन पगौं को साधौ।
बता दें सूरति शबद का मारग विश्वास करके उसी में लागौ।
लै ध्यान धुनि नूर होय करतल जियति ही भव का समुद्र नाघौ।४।

रहै क्या बांकी चमकती झाँकी हमेशा सन्मुख में प्रेम पागौ।
बजै जब बारह पै दो निशा में उठि बैठि अजपा पै ख्याल तागौ।
बरम महूरत इसी को कहते इसी में साधन हो सिद्धि जागौ।
महबूब कहता है अन्त तन तजि बिमान चढ़ि चट हरि पुर को भागौ।८।

१२२ ।। श्री अब्बू मियां जी ।।

पदः- कैसे राम नाम धन जोड़ैं यारों घर बट पार घुसे हैं।
लूट लेत कछु रहन न पावत ऐसे दुष्ट लसे हैं।
यही काम उनका है मानो हर दम कमर कसे हैं।
जिन पर सतगुरु दाया कीन्ही ते फिरि निडर बसे हैं।४।

बड़ा कठिन चक्कर भव भारी कितने जीव फँसे हैं।
को गिनि कहै शेश हिय हारे लीला समुझि हँसे हैं।
अब्बू कहैं ध्यान धुनि नूर औ लै में जौन रसे हैं।
हर दम राम सिया को निरखै तन तजि फिरि न खसे हैं।८।

१२३ ।। श्री जगमोहन सिंह जी ।।

पदः- दुनियां की बातन पर लात कसि मारि देव
देखौ फिरि श्याम नित्य श्यामा हैं संग में।

अब ही तो गप्प सप्प हाँकत फिरत हौ यार
जानि परी अन्त जब गहैं जम अंग में।
चूर चूर कर देत न बोलत बनैगो ताहिं
बांधि कढ़ि लावैं तुम्हैं लोहे के तंग में।
जीव तो अमर पै कलेश होय नाना बिधि
या से कहा मानो रंगौ कृष्ण नाम रंग में।४।

सतगुरु से जानो बिधि ध्यान धुनि नूर होय
लय में समाय जाव जीति आवो जंग में।
सुर मुनि औ शक्तिन की फौज क्या संघ रहै
निरभय हमेशा रहौ प्रेम की उमंग में।
हिम्मत न हारे सो जियति सब जानि लेय
बिना पिये नशा कहूँ आवत है भंग में।
कहत जगमोहन सिंह सिंह के बालक ह्वै चेतौ
उठि बैठो कहां परयौ बेढंग में।८।

१२४ ।। श्री श्याम कुँवरि जी ।।

पदः- सुरति कि डोरि शब्द का घैला लै जल भरन चलीं पनिहार।
अट पट डगर चोर बहु लागे जावै जो हुशियार।
इधर उधर को ताकि सकै नहिं धरती पगन संभारि।
जाय के कूप के तट जस पहुँची झुकि गई चट सुकुमार।४।

डोरि औ घड़ा संग लै डूबी किस बिधि सकै पुकारि।
सतगुरु की दाया से निकसी सो कुलवंतिन नारि।
परि पूरन जहँ कूप भरा है पर नहिं नेकौ वारि।
श्याम कुँवर कहै जावै सोई जो न सकै हिय हारि।८।

दोहाः- श्याम कुँवरि कह श्याम प्रिय हर दम दर्शन देंय।
श्री सतगुरु के बचन को तन मन प्रेम से सेय।।

१२५ ।। श्री जानकी कुँवरि जी ।।

पदः- जानकी कुँवरि कह जग में तौन नर नारि सुख पावै।
सुरति औ शब्द का मारग जानि सतगुरु से रमि जावै।

ध्यान परकाश लै धुनि हो रोम प्रति रोम गोहरावै।
छटा सिय राम की सन्मुख सदा निरखै औ मुसक्यावै।
देव मुनि देंय सब दर्शन मधुर बाणी से बतलावैं।५।

फेरि कर से पकड़ि कर को कीरतन संग करवावै।
मधुर अनहद बजै घट में वरनने में नहीं आवै।
कमल सातौं खिलैं सुंदर महक क्या स्वांस ते आवै।
नागिनी जागि सीधी हो चक्र षट बेधि घुमरावै।
पांचहु तत्व के क्या रंग न्यारे न्यारे दरशावै।१०।

इड़ा औ पिंगला नाड़ी एक में जाय मिलि जावै।
चित्त बृत्ती एकागर हो त्रिवेणी जा के नहवावै।
चखै अमृत अनुपम क्या जो बारह मास झरि लावै।
भरा सामुद्र अति गहरा थाह उसकी न कोइ पावै।
जियति में तै यहां करि ले अन्त साकेत सो जावै।
नहीं तो है बृथा नर तन पड़ा भव सिन्धु चकरावै।१६।

दोहाः- ब्रह्मचर्य्य धारन करै, घट में होय प्रकाश।
कहैं जानकी कुँवरि तब, आस होय सब नाश।।

१२६ ।। श्री सत्य वती जी ।।

पदः- घनश्याम प्रिय अब जैहौ कहां मैं राखौंगी उर में मूंद मूंद।
छबि देखि के सान औ मान हटा नैनन जल टपकत बूंद बूंद।
संसार कि बातैं भूल गईं अस प्रेम भरो तन खूंद खूंद।
कह सत्य वती सतगुरु कि दया मेरी छूट गई भव फूंद फूंद।४।

दोहाः- धुनी ध्यान परकाश लै, सतगुरु किरपा जान।
सत्य वती कह श्याम प्रिय, हर दम सन्मुख मान।।

१२७ ।। श्री खर खरी माई जी ।।

पदः- बहुत नर नारियाँ कहते भजन करने कि नहिं फुरसत।
कार्य्य अधरम के करने में मिलै उनको सदा फुरसत।
अन्त जमदूत लै चलिहैं न बोलैं है नहीं फुरसत।
नर्क में हर समै मारैं मिलै तब भी नहीं फुरसत।४।

पाय नर तन बृथा खोया भला उनको कहाँ फुरसत।
जोनि नाना में पड़ि भोगैं बिना सुमिरन नहीं फुरसत।
हमै उपदेश करने के लिये सुन लो मिली फुरसत।
तुम्हें सुनि ख्याल करने में नहीं नेकौ मिलै फुरसत।८।

दोहाः- सच्चाई तन से गई, फुरसत कहां से होय।
बहु प्रकार के पाप करि, रहे बीज नित बोय।१।
सतगुरु बिन सुधरै नहीं, पाप करै को नाश।
या से चित चेतौ सबै, कटि जावै भव त्रास।२।

१२८ ।। श्री सुखरानी माई जी ।।

पदः- सँवलिया कन्हैया नचैया गवैया मनोहर कहाँ है।
देखो घट में दुलारा कहां है।
खेलैया कुदैया भगैया लुटैया मनोहर कहाँ है। देखो०।।
छलैया छिपैया मँगैया हिलैया मनोहर कहाँ है। देखो०।।
भुलैया देवैया चटैया मलैया मनोहर कहाँ है। देखो०।।
हटैया बटैया रोकैया हँसैया मनोहर कहाँ है। देखो०।।
घटैया घड़ैया फोरैया लुकैया मनोहर कहां है। देखो०।६।
पियैया दुधैया छोरैया सिकैया मनोहर कहाँ है। देखो०।।
मरैया लतैया नोचैया झोटैया मनोहर कहां है। देखो०।।
बजैया बँसैया हरैया चिरैया मनोहर कहाँ है। देखो०।।
चढ़ैया घोड़ैया गोदैया लिलैया मनोहर कहाँ है। देखो०।।
सोवैया सँघैया ओढ़ैया पटैया मनोहर कहाँ है। देखो०।।
देखो लसैया उरैया चुमैया मुखैया मनोहर कहाँ है। देखो०।१२।

दोहाः- भासत नाहीं पास है, क्या अचरज की बात।
सतगुरु से उपदेश ले, वाको नित्य देखात।।

१२९ ।। श्री राम पियारी माई जी ।।

पदः- कन्हैया छबीला रँगीला रसीला सुरीला कहाँ गा।
ढूढ़ो घट में किधर को चला गा।।
हठीला कसीला छरीला कटीला कहाँ गा। ढूढ़ो०।।

महीला दहीला गहीला कहीला कहाँ गा। ढूढ़ो०।।
हँसीला गरीला खरीला जरीला कहाँ गा। ढूढ़ो०।।
चखीला नोकीला चोखीला बटीला कहाँ गा। ढूढ़ो०।।
घटीला गँसीला भगीला दरीला कहाँ गा। ढूढ़ो०।६।

मगीला लसीला जोसीला लटीला कहाँ गा। ढूढ़ो०।।
तरीला छहीला बँसीला बहीला कहाँ गा। ढूढ़ो०।।
घटीला फोरीला हटीला चोटीला कहाँ गा। ढूढ़ो०।।
झोटीला नोचीला बनीला सखीला कहाँ गा। ढूढ़ो०।।
लतीला मरीला पगीला छगीला कहाँ गा। ढूढ़ो०।।
परीला पटीला लोटीला गोदीला कहाँ गा। ढूढ़ो०।१२।

दोहाः- मिला रहै औ ना मिलै, क्या है खेल बिचित्र।
सतगुरु से उपदेश लै, देखो नित्य चरित्र।।

१३० ।। श्री चक्र पाणि जी ।।

पदः- कहौ सब जय जय जय यशुमति नन्द।
जिनके गृह हरि बास करत सब के आनन्द कन्द।
सतगुरु करि कै शब्द गहौ जब करि दोउ नयनन बन्द।
सुनो नाम धुनि रं रं होती एक तार क्या छन्द।४।

अनहद नाद बजै घट भीतर छूटै सुनि भ्रम फन्द।
ध्यान समाधि प्रकाश होय जहँ अगणित रवि जिमि चन्द।
सुर मुनि हरि यश आय सुनावैं हर दम उठै अनन्द।
चक्र पाणि कहैं नर तन पाय के जे न भजैं वे मन्द।८।

१३१ ।। श्री कूरा शाह जी ।।

पदः- शंकर समान को है रघुबर का भक्त पूरा।
बजरंग भी वही है दूजा है कौन सूरा।
जिनकी कृपा से हमहूँ नाघे गगन के घूरा।
जियतै में तन फल पाया कहता है शाह कूरा।४।

शेरः- खुलि जांय आंखी कान सतगुरु करि गहौ गर नाम को।
कच भी न टेढ़ा कर सकैं कूरा कहै कोइ चाम को।।

१३२ ।। श्री अलताफ़ हुसेन जी ।।

शेरः- हू बहू वह रू बरू तुम प्रेम में ग़रकाब हो।
परकाश ध्यान समाधि धुनि सुनि पटिक तीनो ताप हो।
मुरशिद करो पावो पता बस आप ही में आप हो।
अलताफ़ कह हर दम भजो सिय राम माई बाप हो।४।

पदः- उठा गोबरधन को नख पै हरि ने बिहंसि के ग्वालों को फिर पुकारा।
चलो सब दौरो यहां तो आवो लगावो हाली इस में सहारा।
नहीं तो गिरने में देर नाहीं कहां तलक रोकूँगा मैं भारा।
ये बैन सुनकरके ग्वाल दौड़े पहुँचिगे फौरन हुई न बारा।
लकुटियां निज निज लगाईं सब ने खड़े हुये बांधि कर कतारा।५।

कहैं प्रभू अब गिरैगा कैसे तुम्हारे ऊपर ज़रा इशारा।
कहैं कन्हैया तुम्हीं सबों की बदौलत हलका हुआ यह पारा।
बचाया बृज भर को आय तुम सब नहीं तो बिगड़ा था खेल सारा।
क्या मध्य में श्याम की है शोभा बरनि सकै को फणीस हारा।
सात दिन तक खड़े रहे सब किया किसी ने न कुछ भि चारा।१०।

कृपा से हरि की ऐसा बढ़ा बल किसी ने नेकौं कदम न टारा।
प्रलय के मेघा जुटै वहां पर सुदर्शन गिरि पर जलावै धारा।
सुरेश आकर चरण गहै जब क्षमा हो भगवन औगुन हमारा।
दया के सागर दया के स्वामी दयाल होकर कर सिर पै धारा।
श्री कृष्ण बोले हे गोपौ भाई हटा के लकुटी करो किनारा।१५।

यह सुनकर सब चट निकल भे बाहिर मुरारि महि पर गोबरधन डारा।
फूलौं कि बरखा सुर मुनि ने कीन्हीं बजाया ढफ़ ढोल औ नगारा।
उठा के कर सब यह बोलैं बानी गिरधारी जी की हो जै जै कारा।
दो गज उंचाई बृज भर में फूलों की मानो चुन चुन सब ने पसारा।
तरंगै उड़ती तरह तरह की ये घट में हमने किया दिदारा।२०।

करो तो मुरशिद लखो फिर लीला दिखावैं क्या क्या मनोहर प्यारा।
धुनि ध्यान नूर लै हो जहां घट लजावैं अगणित रवि चन्द्र तारा।
रिहाई होगी जहां से उनकी जे जान लें क्या सखुन उचारा।
अलताफ़ कहता भजो निरंतर नहीं तो दोज़ख़ धरा बिचारा।२४।

शेरः आह के नारे भरोगे हर समय दोज़ख में चल।
अलताफ़ कहता है वहां पर एक पल मिलती न कल।।

१३३ ।। श्री हज्जी जान जी ।।

पदः- हरि के चरित मनोहर गावो।
देवालय सत्संग होय जहं तहं पर बैठि सुनावो।
साज बजाय सकौ कोइ निज कर तो संग में लै आवो।।
या दूसर कोइ और बजावै तो कहि धूम मचावो।
या इच्छा हो बिना साज के छेड़ि के जश फैलावो।

नाच से वाकिफ़ हो तो नाचौ भाव बताय रिझावो।
सात पांच या दुइ पद प्यारे नेम टेम से गावो।
भोजन बसन से मतलब राखौ धन में परि न ठगावो।
सादे बसन अंग पर धारो रज तम अन्न न खावो।
जो कोइ प्रेम से आय देय कछु चट सब को बरतावो।

या बिधि बसर जगत में करिकै तन तजि हरि पुर जावो।
सत्गुरु करि गर नाम जानि लो मन का माल फिरावो।
ध्यान प्रकाश समाधि होय क्या रूप सामने छावो।
सुर मुनि का तब गान सुनो नित मुख से वरनि न पावो।
तब कीरतन करो गर भाई सब चरित्र दरसावो।

मुख से जौन शब्द तुम भाखौ रूप रंग लखि पावो।
पुलकावली होय सब तन में नैन नीर झरि लावो।
गद गद कंठ देह सब कांपै मुख से बोलि न पावो।
मुरछा होय रहै नहिं सुधि बुधि उठि फिर क्या बतलावो।
कबहूं नाना लीला ध्यान में लखि लखि के हर्षावो।

बाजा सुनो हद्द नहिं जिनकी कहं तक दृष्टि घुमावो।
राग रागिनी मैं परिवार के दर्शन करि सुख पावो।
बेद शास्त्र उपनिषद संहिता सुर मुनि बैठे पावो।
ताल ग्राम ध्वनि तान सप्त स्वर सम लखि फिर गश खावो।
हरि इच्छा से चेत होय जब फिर चलि तन में आवो।

अकथ अलेख अथाह अकह औ अगम अपार भँजावो।
सूरति हर दम शब्द पै राखो आप को आप मिटावो।
भीतर बाहर एक होय तब मुक्ति भक्ति को पावो।
तुरिया तीत दशा यह जानो तन मन प्रेम में लावो।
पांच प्राण गुण तीन चारि तन पांच तत्व गहि धावो।३०।
पाय अमोल शरीर नारि नर समय न खेलि गंवावो।
हज्जी जान कहैं आतम में परमातम बतलावो।३२।

१३४ ।। श्री अल्लर शाह जी ।।

पदः- कृपा के पुंज सीता राम राधे श्याम कमला बिष्णु को भजि लो।
करो सतगुरु मिलै मारग जियति खुब तन औ मन मंजि लो।
ध्यान धुनि नूर लय होवै रूप षट सामने सजि लो।
न होवै एक पल अन्तर प्रेम सुरमा दृगन अंजि लो।४।
कहैं हरि यश को आ सुर मुनि सुनो औ संग में गंजि लो।
हर जगह होयगी खातिर दीन बनि गढ़ि के मढ़ि बजि लो।
ताग ममता के सब खींचो एक रस्सी कड़ी भंजि लो।
मिलै पिन्शन यहीं पहलै वक्त आने पर तन तजि लो।८।

१३५ ।। श्री इसहाक जी ।।

पदः- मलक के ऐश में दुख है अमीरी है फ़कीरी में।
दीन बनना पड़ै पहिले पहुँचि जावो अखीरी में।
कहै इसहाक मुरशिद कर चलो तो इस लकीरी में।
नहीं तो अन्त हो दोज़ख पड़ो यारों जखीरी में।४।

१३६ ।। श्री टटोल शाह जी ।।

पदः- उतरते जौन ऊपर ते उन्हें औतार कहते हैं।
रमे सरकार हैं सब में जगत हित खेल करते हैं।
जहाँ जैसी जरुरत हो वैस ही रूप धरते हैं।
चारि दुइ तीनि या एकै बन के असुरन उधरते हैं।४।
दीन जे भक्त हैं हरि के उन्हैं हर दम संभरते हैं।
नीक नागा अंश सब हैं कर्म चक्कर में फिरते हैं।

उन्हें कृपालु कृपा करि आप ही खुद सुधरते हैं।
करो सतगुरु जियति जानो वही भव से उबरते हैं।८।

शेरः- कहने कि बात है नहीं गहने कि बात है।
पढ़ने कि बात है नहीं करने कि बात है।
सुनने कि बात है नहीं लखने कि बात है।
धरने कि बात है नहीं चखने कि बात है।४।

फेंकने कि बात है नहीं बंटने कि बात है।
उड़ने कि बात है नहीं मिलने कि बात है।
भुकने कि बात है नहीं सहने कि बात है।
हंसने कि बात है नहीं सिखने कि बात है।८।

१३७ ।। श्री सर्वजीत सिंह जी ।।

पदः- राधे पति अर्ज सुनो मेरी। अब काटौ आय नाथ बेरी।।
सब दुष्टन मिलि मो को घेरी। कर लीन जबरदस्ती चेरी।।
मति मेरी ऐसी है फेरी। अधरम करना हरदम हेरी।।
तन मन ते तो तोषा यह गेरी। ह्वै गई खूब भारी ढेरी।४।

था सिंह प्रथम भा अब छेरी। अब कीजै नाथ न कछु देरी।।
इन असुरन को कैसे पेरी। कह दीजै नैन सैन हेरी।।
जिन जिन हरि आप को है टेरी। करि दीन सुखी बाजी भेरी।।
जे भूलैं नहीं सुधि हरि केरी। कह सर्ब जीत धनि धनि तेरी।८।

१३८ ।। श्री पिलपिली शाह जी ।।

पदः- बिन समुझे जे कथैं ज्ञान को सूझे आव न ताउ।
उनकी गती कहां से होवै सब झूँठा है दांउ।
जैसे भूख नहीं है नेकौं कहे आय कोइ खाउ।
उत्तम अन्न होय विष छिन में शिथिल हाथ औ पांउ।
जैसे मन में नहिं हुलास है कहै आय कोइ गाउ।
गान तान सम लय नहिं बनिहै बिना बताये भाउ।६।

जैसे भूखा भोजन मांगै डाटौ तुम हटि जाउ।
सारे सुकृत नास हों छिन में फिरि पीछे पछिताउ।

सतगुरु करि हरि नाम को जानो तन मन प्रेम लगाउ।
यह तन समझौ ओस क मोती पौन चलै ढुरि जाउ।
ईश्वर अंश कहाय के चूकत गर्भ क कर्ज चुकाउ।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय रूप सामने छाउ।१२।
सुर मुनि के नित दर्शन होवैं हर्षि हर्षि बतलाउ।
अनहद बाजै हर दम सुनिये आप में आप सिहाउ।
सबै पदारथ पास में भाई जो यहि मारग आउ।
कहैं पिलपिली शाह जियति में भव बारिधि तरि जाउ।१६।

१३९ ।। श्री चिलबिली शाह जी ।।

पदः- होय न पावै गुदरिया दागी।
नेकौ दाग अगर लगि जैहे ह्वै हो फ़ौरन बागी।
पांच तत्व की गुदरी प्रभु दियो बिधि हरि हर मिलि तागी।
अब जन चूकौ भजौ निरन्तर तन मन प्रेम से लागी।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय लीजै सूरति पागी।
राम श्याम हरदम रहैं सन्मुख मलिन बासना भागी।६।
कर्म शुभाशुभ जरि तब जावैं प्रगटै ब्रह्म कि आगी।
सदा एक रस निर्भय जियतै तब जानो हम जागी।
ज्ञान बिराग करै सेवकाई हो पूरे अनुरागी।
अनहद सुनो देव मुनि आवैं कहैं तुम्हैं बड़भागी।।
कहैं चिलबिली शाह भजन बिन अन्त चलै तन सांगी।
नर्क में हाय हाय चिल्लैहो खाल खींचि दें टांगी।१२।

१४० ।। श्री खसोटे शाह जी ।।

पदः- निरगुण चावल सरगुण दाल। पावै सतगुरु का कोइ लाल।।
निरगुन रोटी सरगुण साग। पावै होय जौन बेदाग़।।
निरगुन पूरी सरगुन खांड़। पावै जौन मिटै जग जाड़।।
निरगुन मिश्री सरगुन कन्द। पावै जौन मिलै आनन्द।।
निरगुन पेड़ा सरगुन बरफ़ी। पावै जौन हटै दुइ तरफ़ी।५।
निरगुन तेज रूप है सरगुन। पावै जौन छुटै सब अवगुन।।
निरगुन जैसे चरनोदक है। सरगुन भक्तन का मोदक है।।

निरगुन पंचामृत है जानो। सरगुन सब व्यंजन है मानो।।
निरगुन त्रिबिधि समीर है भाई। सरगुन सुन्दर है फुलवाई।।
निरगुन बारि प्यास को हरई। सरगुन भोजन तन बल करई।१०।

निरगुन सब में परिपूरन है। सरगुन सब का मानो तन है।।
निरगुन सोना सरगुन भूषन। पहिने ताको हो प्रसन्न मन।।
निरगुन क्षीर औ सरगुन मक्खन। पावै सो तर होवै तत्छन।।
निरगुन रुई औ सरगुन बस्तर। पावै जौन न काटै मच्छर।।
निरगुन ईंधन सरगुन आगी। पावै जौन जगत भय त्यागी।।
कहैं खसोटे शाह सुनाई। कहन में दुइ है एकै भाई।१६।

१४१ ।। श्री दबोटे शाह जी ।।

पदः- कथा औ कीरतन पूजन पाठ करि सार क्या पाया।
हुआ मन है नहीं बस में करत जो उसके मन भाया।
मिलै सुख कुछ नहीं यारों जो तुमने मन न ठहराया।
करो मुरशिद पता पावो ध्यान धुनि नूर चमकाया।४।

समाधी में पहुँचि जावौ जहां सुधि बुधि न कुछ साया।
उतरि आवो लखौ सुर मुनि प्रेम करि उर में लिपटाया।
सामने हर समय सिय राम राधे श्याम छबि छाया।
दबोटे शाह कह चारिउ क फल अजपा से कर आया।८।

१४२ ।। श्री नगीना शाह जी ।।

पदः- राम नाम जे जानन हारे। तिनकी लीला अगम अपारे।।
ध्यान धुनी लय नूर संभारे। सन्मुख राम सिया सुख सारे।।
सुर मुनि जिनके हैं रखवारे। ज्ञान बिराग जोग गुन प्यारे।।
मुक्ति भक्ति जप तप औ दाया। श्रद्धा शील संग दुलरारे।।
शान्ति सत्य ब्रत नेम टेम मिलि। चारों ओर से शिर कर धारे।५।

रिद्धि सिद्धि पैकरमा करतीं। तीर्थ रोम रोम भरि डारे।।
क्षमा प्रेम संतोष दीनता। तन मन सब उन पर हैं वारे।।
असुरन को मरदन करि जियतै। निर्भय सिंह समान पुकारे।।

कहत नगीना शाह मरै सो। सतगुरु शब्द बान जेहि मारे।।
नाही तो फिरि नर्क में चलिके हरदम हाय हाय चिल्लारे।१०।

शेरः- सूरति लगै तब होय सुमिरन कह नगीना शाह जी।
नाहीं तो सब बेकार है मिलिहै न हरगिज़ राह जी।।

१४३ ।। श्री जदुनाथ कुंवरि जी ।।

पदः- विश्वास सतगुरु बचन पर जेहि उसकि बिगड़ी बन गई।
फ़ौज असुरन की जो तन में थी रुई सम धुन गई।
ध्यान धुनि परकाश लय जियतै में करतल ह्वै गई।
राम सीता की छटा सन्मुख में हर दम खिल गई।
देव मुनि नित दर्श दें कर प्रेम सब को हिल गई।
सूरति शबद के मार्ग का उपदेश जग में कर गई।६।

तुख़्म परमारथ क प्यारी बहुत सा भरि धर गई।
दोनों जहां उसके बने आनन्द का यश भर गई।
अन्त तन तजि रूप नर का चतुर भुज ह्वै चल गई।
निज रंग रूप बनाय प्रभु दीन्ह्यो सिंहासन सुधि गई।
मौन ह्वै बैठी न इच्छा कोई बाकी रह गई।
सूरति लगी मूरति में हरि की एकता भई मिल गई।१२।

१४४ ।। श्री बेशरम शाह जी ।।

दोहाः- संशय संड़सी कठिन है नारि कि कठिन निहाय।
पुरुष क घन अति ही कठिन उठै नर्क लै जाय।।
बिन सतगुरु उबरै नहीं बुद्धि भ्रष्ट ह्वै जाय।
ऊँच नीच समझै नहीं चसका जेहि लगि जाय।।
राम नाम को जानि ले तब को सकै गिराय।
ध्यान धुनी परकाश लै रूप सामने छाय।।
सुर मुनि आवैं संग में बैठें हंसि बतलाय।
ब्रह्म अग्नि में बासना सब वाकी जरि जाय।४।

सूरति शब्द कि जाप को जानै सब दुख जाय।
ऐसा मारग और कोइ सुलभ न देखा भाय।।
सबै पदारथ पास हैं सुमिरौ तन मन लाय।

नैन श्रवन खुलि जांय तब प्रेम में प्रेम समाय।।
कहैं बेशरम शाह मोहिं जो सतगुरु बतलाय।
तौन तुम्हैं हम आय के ठीक दीन लिखवाय।७।

१४५ ।। श्री हल्लर शाह जी ।।

पदः- कर रगर झगर खाते चटर पटर
चलैं लचर पचर रहिगे काका।
भई पकर धकर करैं हकर सकर
यम अकर डकर मारैं भटर पटर रहिगे काका।
रोवैं भकर ढकर ताकैं चकर मकर
कांपैं हलर थलर धरिगे काका।
तजि अगर मगर चलि सुघर डगर
उड़ी खटर सटर फिरिगे काका।४।

शेरः- तन मन में है गजर बजर कैसे भजन करैं।
काटैं लटर पटर में दिन जग जन्म फिरि मरैं।।

१४६ ।। श्री हक्कल शाह जी ।।

पदः- सिर हटर हटर, कान सनर सनर, आंखैं चपर चपर, लीवर पचर पचर,
आँसू टपर टपर, नाक सरर सरर, हाय हाय बप्पा।
मुख हपर हपर, लार भलर भलर, गला खरर खरर, कर मचर मचर,
सीना धकर धकर, पेट फकर फकर, हाय हाय बप्पा।
कटि खटर खटर, इन्द्री लचर लचर, गुदा परर परर, गांठी चटर चटर,
पग धसर धसर, अँगुली पटर पटर, हाय हाय बप्पा।
खाल चरर चरर, लाठी पकर पकर, चलैं संभर संभर, गिरैं डगर डगर,
रोवैं सपर सपर, मन लबर लबर, हाय हाय बप्पा।४।

दोहाः- गपड़ सपड़ में दिन गये जानिनि नहिं हरि नाम।
लपड़ झपड़ जम मारि कै लै गे अपने धाम।।

१४७ ।। श्री सुदामा सिंह जी ।।

पदः- चलती राम नाम की आंधी।
हर दम एक तार रहै जारी सकत नहीं कोइ बांधी।

ध्यान प्रकाश समाधि इसी में अद्भुद है यह बाधी।
राम सिया को सन्मुख लाय के देवै यारों साधी।
सुर मुनि सब के दर्श करावै या को सबन अराधी।
परिपूरन सब में यह बानी जैसे दाल में गांधी।६।

सतगुरु करि जप की बिधि जानै तौन सकै यह साधी।
मानुष का तन पाय अन्न जल करि जिन पेट को धांधी।
नाम धर्म कछु जानेव नाहीं जम काटैं दोउ कांधी।
जिन जियतै सब करतल कीन्ह्यो कर्म दियो दोउ रांधी।
तिन को मुद मंगल दोनो दिशि छूटी सकल उपाधी।
कहैं सुदामा सिंह चेत करि सब जन चीन्हो आंधी।१२।

१४८ ।। श्री जमुना बाई जी ।।

पदः- कन्हैया तेरो मुरहा ह्वै गो माई।
दूध दही माखन सब लूटत मटुकी देत बहाई।
हम सब दौरें पकरि न पावें ऐसी करत कुदाई।
आय झपटि फिर सारी पकड़ैं गोटा लेत छुटाई।
घेंघरा पकड़ि कबहुँ बैठारत मुख चूमत लिपटाई।
बंसी से दोनों कुच टोवत पूछत का भरि लाई।६।

ग्वाल बाल कहैं हमरो ही सा ऐसी सीख सिखाई।
निज घर में तो छोट रहत है हम सब संग बढ़ि जाई।
कौन भांति हम करैं गुजारा चलत न कछु चतुराई।
पांच वर्ष की बयस है नीकी कहं विद्या यह पाई।
आप कि गोद में दूध पियत पर बाहेर करत ढिठाई।
जमुना कहै सखी बहु हंसि हंसि बचन कहैं सुखदाई ।१२।

१४९ ।। श्री बेदांग मुनि जी ।।

दोहाः- राम नाम कल्याण मय जपै निरन्तर जौन।
राम सिया हर दम लखै अन्त जाय निज भौन।
सतगुरु बिन बेदांग कह मिलत न या की थाह।
बार बार जन्मै मरै छोड़ै नहिं जग चाह।४।

१५० ।। श्री फ़ज़ल खां जी "कुतुब फ़रोश" ।।

पदः- नाम में सब शक्तियां तुम प्रेम से जपते नहीं।
कैसे मिटैं वह तूटियां तन मन लगा खपते नहीं।।
करि दमन सारी इन्द्रियां अनुपम अमी चखते नहीं।
कहता फ़ज़ल हम कूतियां मुरशिद से क्यों सिखते नहीं।२।

१५१ ।। श्री जीवन दास जी ।।

चौपाईः- चूल्हा चौका हरि का कीन्हा। तन छूटा हरि पुर चलि दीन्हा।।
जीवन दास नाम है भाई। सत्य बचन हम दीन लिखाई।२।

१५२ ।। श्री सियावर दास जी ।।

चौपाईः- झाड़ू लै मन्दिर भंडारा। झाड़ेन नित प्रति नेम हमारा।।
अन्त समै हरि पुर भा बासा। कहैं सियाबर सत्य प्रकासा।२।

१५३ ।। श्री दिनकर दास जी ।।

चौपाईः- नेम टेम से पारखत मांजेन। अन्त समै हरि पुर को भाजेन।।
दिनकर दास कहैं हे ताता। बड़ा सुक्ख मानो सब बाता।२।

१५४ ।। श्री हरि शरन दास जी ।।

चौपाईः- भंडारे के बरतन धोयन। अन्त समय हरि पुर सुख सोयन।।
कहे हरि शरन दास सुनाई। जेहि बिधि गयेन ठीक बतलाई।२।

१५५ ।। श्री किशोरी शरन जी ।।

चौपाईः- कीन अमनियां तन मन लाई। ठाकुर हित जो बनन को जाई।।
अन्त समय हरि धाम सिधावा। नाम किशोरी शरन कहावा।२।

१५६ ।। श्री राम टहल दास जी ।।

चौपाईः- भोजन संतन को हम फेरा। अन्त समय हरि पुर भा डेरा।।
राम टहल कह सुख तंह ऐसा। निरखत बनै न बरनत वैसा।२।

१५७ ।। श्री दशरथी दास जी ।।

चौपाईः- जल फेरेन की टहल उठावा। तन छूट्यौ हरि पुर हम पावा।।
नाम दशरथी दास हमारा। ब्राह्मण कुल में भा अवतारा।२।

१५८ ।। श्री हरि शरण दास जी ।।

चौपाईः- पत्तल फेरेन फेरि उठायन। अन्त समय हरि पुर हम पायन।।
हरी शरण है नाम हमारा। क्षत्रिय कुल में भा अवतारा।२।

१५९ ।। श्री केशव दास जी ।।

चौपाईः- परभाती सन्तन को दीन्हा। अन्त समय हरि पुर हम लीन्हा।।
केशव दास कहैं कर जोरी। यही टहल ते गति भई मोरी।२।

१६० ।। श्री किंकर दास जी ।।

चौपाईः- जूठनि सन्तन की हम पावा। अन्त समय हरि धाम सिधावा।
बृद्धावस्था छूटि बन्दगी। याही बिधि ते कटी ज़िन्दगी।
पहले काम जौन गुरु दीन्हा। सो सब तन मन प्रेम से कीन्हा।
किंकर दास है नाम हमारा। या बिधि जग ते भा निस्तारा।४।

१६१ ।। श्री किशोर दास जी ।।

चौपाईः- बृद्ध अवस्था तन बल हीना। मांग मधुकरी भोजन कीना।।
अन्त समय हरि पुर भा डेरा। सब प्रकार तँह सुःख घनेरा।।
कहै किशोर दास हे ताता। मानो सत्य कहेन जो बाता।३।

१६२ ।। श्री सिया सरन जी ।।

चौपाईः- लकड़ी कंडा हरि हित ढोवा। तन मन मगन पाप सब धोवा।।
सिया सरन है नाम हमारा। तन छूटा हरि धाम सिधारा।२।

१६३ ।। श्री जराखन दास जी ।।

चौपाईः- हरि के हित हम फूल उतारा। लाय पुजारी के ढिग धारा।।
तन तजि हरि के धाम सिधावा। नाम जराखन सत्य बतावा।२।

१६४ ।। श्री जगेश्वर दास जी ।।

चौपाईः- हरि हित तुलसी सेवा कीन्हा। अन्त समय चलि हरि पुर लीन्हा।।
नाम जगेश्वर दास हमारा। कुर्म बंश में भा औतारा।२।

१६५ ।। श्री राम रज दास जी ।।

चौपाईः- हरि हित नित भंडार बनायन। अन्त समय हम हरिपुर पायन।।
नाम राम रज दास हमारा। द्विज कुल ग्राम क नाम स्वनहरा।२।

१६६ ।। श्री हरि शरन दास जी ।।

दोहाः- हरि के हित नित नेम से जल हम भरेन हमेस।
अन्त समय हरि धाम में जाय भयन फिरि पेस।१।
नाम हरि सरन दास है ग्वाल वंश है जान।
या में फरक न नेक है मानो बचन प्रमान।२।

१६७ ।। श्री खगेश्वर दास जी ।।

चौपाईः- सीला बृत्य कीन हम भाई। तीस बर्ष तक सत्य सुनाई।।
राम नाम का सुमिरन कीन्हा। अन्त समय हरि पुर चलि दीन्हा।।
सुःख वहां का को कहि पाई। लखितै बनै वरनि नहिं जाई।।
नाम खगेश्वर दास हमारा। क्षत्री कुल था ग्राम बिल्हरा।४।

१६८ ।। श्री मल्हर शाह जी ।।

पदः- गुफ़तगू झूठ कहि सुनकर पाप का फांकते फंकना।
खोदा का नाम नहिं सुमिरै अन्त दोज़ख पड़ै झखना।
चुस्त चालाक बनि बैठे लगे हैं द्वैत के पखना।
मांगते भीख घर घर में चहैं अनमोल लें कंगना।४।

माल सब है जमा घट में बिना मुरशिद न हो चखना।
उन्हीं के हाथ में ताली दिया रव ने जमा रखना।
कहा फिर ऐ मेरे प्यारे दीन को दे के सब भखना।
कहैं मल्हर भजो हर दम मिटै भव जाल का कंखना।८।

शेरः- बशर तन क हक़ है यही जान लो। कहैं मल्हर मेरे सखुन मान लो।।

१६९ ।। श्री राम सहारे दास जी ।।

पदः- सतगुरु करि गगन में ध्यान धरो।
सूरति शब्द क मारग जो है ता को ख्याल करो।
धुनि खुलि जाय होय सब करतल जियतै फेरि तरो।
दीन जानि करि कै उपदेशौ जीवन दुःख हरो।
कसनी कितनो परै सहौ सब तन मन से न टरो।
शूरबीर रणधीर होहु तब जब यह समर लरो।६।

१७० ।। श्री राम भरोसे दास जी ।।

पदः- सतगुरु करि गगन में बारो दिया।
सूरति शब्द क मारग जानो जिहि हित जन्म लिया।
नाम तान खुलि जाय अखण्डित सन्मुख सुघर पिया।
घट ही भीतर सकल पदारथ परदा द्वैत सिया।
या से जीव हेरि नहिं पावत करिखा लाग हिया।
जप तप मुक्ति भक्ति का मानो केवल शब्द बिया।६।

१७१ ।। श्री राम नेवाज जी ।।

पदः- मन तुम सुनौ नाम धुनि प्यारी।
ध्यान समाधि प्रकाश खुलै जब छाय जाय उजियारी।
सुर मुनि दर्शें अनहद बाजै हर दम मंगल कारी।
जोड़ी जुगुल होय तब सन्मुख सीता अवध बिहारी।
जियतै में सतगुरु करि निरखै तब होवै भव पारी।
राम नेवाज़ कहैं बे जाने किमि हो जीव सुखारी।६।

१७२ ।। श्री छुलाछनि माई जी ।।

शेरः रद्दी दिमाग़ कीन्हा बेकार बातैं कहि सुनि।
नहिं नाम रूप चीन्हा चकरांय जग में पुनि पुनि।।

१७३ ।। श्री निखट्टू शाह जी ।।

पदः- नाम रूप न मानते जे वै न बोलैं चुप रहैं।
लय ध्यान नूर न जानते जे वै न बोलैं चुप रहैं।
सुर मुनि को नहिं पहिचानते जे वै न बोलैं चुप रहैं।
पढ़ि सुनि के ज्ञान बखानते जे वै न बोलैं चुप रहैं।४।

जप बिधि न गुरु करि जानते जे वै न बोलैं चुप रहैं।
हर दम न ताना तानते जे वै न बोलैं चुप रहैं।
मन मुखी काम को ठानते जे वै न बोलैं चुप रहैं।
पाप में मन सानते जे वै न बोलैं चुप रहैं।८।

१७४ ।। श्री टंच शाह जी ।।

पदः- भजन बिन होइहौ काल क कौर।
राजा बाबू पण्डित साधू करत और का तौर।
यह तन तो है बारि क बुल्ला करत न नेकौ गौर।
सतगुरु करौ नाम बिधि जानो छूटै भव की लौर।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय पाय लखौ निज ठौर।५।

सुर मुनि मिलैं सुनौ नित अनहद टूटै असुरन बौर।
सन्मुख श्यामा श्याम कि झांकी जो सब में शिर मौर।
तन मन से निज को जो कोई करै जियति में छौर।
अन्त टंच कह राम धाम ले फिर न करै जग दौर।
मानुष का तन पाय हाय क्यों फँसे जगत की भौंर।१०।

१७५ ।। श्री राजेश्वरी माई जी ।।

(मिती अगहन सुदी २, सं. १९९३ वि. तदनुसार १९३६ ई०)

सोरठाः- आई कहन हवाल सुनिये श्री महराज जी।
आपने लीन्ह सम्हाल पूरण भा मम काज जी।।

चौपाईः- अवध पुरी सम धाम न दूजा। सुर मुनि करत आय नित पूजा।।
हरि की हम पर भइ अति दाया। अन्त आप की गोद बिठाया।।
दुख़ तन ते भा तुरत रवाना। मन में हर्ष स्वतः उमड़ाना।।
राम नाम धुनि सब तहँ कीन्हा। सो सब हम कानन सुनि लीन्हा।।
सुर मुनि सहित बिष्णु सुखदाई। मम सन्मुख प्रगटे तहँ आई।५।

आसा बल्लम पंखा मुरछल। ध्वज पताक सुर मुनि लीन्हे भल।।
छोड़ि शरीर दिब्य तन पावा। बारह वर्ष क सो मन भावा।।
चारि भुजा भइ कोमल बानी। जय जय जय श्री प्रभु सुखदानी।।
भूषण बसन गरुड़ चट साजा। सुर मुनि खूब बजायो बाजा।।
दिब्य बिमान तहां चलि आवा। शोभा निरखि हिया हरखाया।१०।

तामे चारि पारषद लागे। तन मन प्रेम से हरि रंग पागे।।
कर गहि तापर मोहिं बिठायो। सुर मुनि जय जय कार सुनायो।।
चलि इन्द्रासन में धरि दीन्हा। शची सुरेश के दर्शन कीन्हा।।

आय अप्सरा नाचन लागीं। अस्तुति करैं प्रेम में पागीं।।
उठयो बिमान फेरि सुखकारी। जाय धरयौ बैकुण्ठ मँझारी।१५।

भाँति भाँति तहँ पर सिंहासन। एक पै मोहिं करायो आसन।
चलीं अप्सरा इन्द्र के धामा। कर जोरयौ करि मम परनामा।
अति बिचित्र लागी फुलवारी। उड़त सुगंध सदा अति प्यारी।
पांच रंग के फर्श पड़े हैं। तिनमें बूटा बेल जड़े हैं।
पैर परत दबि जात बीत भरि। उन फर्शन की कौन करै सरि।२०।

शोभा वहँ की बरनि न जाई। त्रिबिधि समीर बहै छबि छाई।
नर नारी तहँ करैं किलोलैं। झूला झूलैं बैठें बोलैं।
पति दामाद पिता औ माता। सासु ससुर समधिनि कुशलाता।
सब हमको तन मन ते चहते। थोड़े दूर पै आसन रहते।२४।

दोहाः- तेइस करोड़ बर्ष मोहिं, हरि ने दीन्हयो बास।
राजेश्वरी मम नाम है, बचन मानिये खास।।

१७६ ।। श्री ठाकुर चन्द्रिका बक्स जी पंवार ।।
(मुकाम भष्मपुर रियासत महोना, जि. बाराबंकी)
(मिती पौष सुदी सप्तमी सं. १९९३ तदनुसार १९३६ ई०)

चौपाईः- शिव पूजन जप सधा सो कीन्हा। मानस पाठ में कछु मन दीन्हा।।
संत संघ पंडित औ सज्जन। कीन्ह सदा भा सब दुख भज्जन।।
त्यागा तन प्रयाग में ज्योंहीं। आय गयो सिंहासन त्योंही।।
दिब्य शरीर मिल्यो मन भावा। भूषन बसन गरुड़ पहिरावा।।
उड़े पारषद लै कर जाना। जाय उतारयौ इन्द्र के थाना।५।

दर्शन इन्द्र शची के कीन्हा। चढ़ि सिंहासन फिर चलि दीन्हा।।
पहुँचेन रमा बिष्णुपुर जाई। उतरेन यान से हिय हर्षाई।।
क्षीर समुद्र गयेन चट धाई। पग नहिं डूबे सत्य सुनाई।।
शेष सेज पर जग पितु माता। को बरनै शोभा अति ताता।।
कीन्ह दण्डवत शिर चरनन धरि। बार बार मुख से जय जय करि।१०।

कर शिर पर धरि मोहिं उठायो। मुख चूम्यो फिर उर में लायो।।
कह्यौ बसौ मम पुर अब जाई। तेइस कोटि बर्ष सुख पाई।।

तब हम वहँ से कीन्ह पयाना। बैठेन आयके सुघर बिमाना।।
झूलन हेतु मिला एक झूला। बे आधार पड़ा सुख मूला।।
जस बैठो तस ढारैं जारी। उड़ै सुगन्ध लगी फुलवारी।।
नर नारी तहँ पर जो राजैं। शोभा लखत काम गति लाजैं।१६।

दोहाः- कहैं चन्द्रिका बक्स मोहिं, सब प्रकार है सुक्ख।
हरि औ धर्म से जो बिमुख, उन्हैं सदा हैं दुःख।।

१७७ ।। श्री तन्दुरुस्त शाह जी ।।

पदः- जीव अकेल असुर दल भारी।
सब से काम लेत निशि बासर माया है महतारी।
नेकौं देर करै जहँ कोई नैन फेरि फटकारी।
या से वै जिस काम पै लागैं ता को देत संघारी।
सतगुरु करैं बचैं सो प्रानी तब जावैं ये हारी।५।

ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि इन्हैं देय करि छारी।
अनहद सुनै देव मुनि आवैं जय जय करैं निहारी।
सन्मुख राम श्याम नारायण तीनौ शक्ती प्यारी।
हर दम लखै न अन्तर होवैं जियति होय बलिहारी।
अन्त जांय तन्दुरुस्त शाह कह श्री साकेत सिधारी।१०।

१७८ ।। श्री पद्दन शाह जी ।।

पदः- सरयू बिरजा कि बहै घट धार चलौ स्नान करौ।
सतगुरु करि कै चट यार गैल पर पैर धरौ।
धुनि ध्यान औ लय उजियार होय मन हर्ष भरौ।
सन्मुख हर दम दीदार राम सीता क करौ।
सुर मुनि नित करिहैं प्यार सुनौ अनहद न टरौ।
तन तजि साकेत सिधार जाव नहिं गर्भ परौ।६।

१७९ ।। श्री मुत्तन शाह जी ।।

पदः- नित नर तन कि लीजै बहार भजो हरि पास मा।
सतगुरु करि कै जब यार गहौ निज हाथ मा।
धुनि ध्यान औ लय उजियार देव मुनि साथ मा।

प्रिय श्याम क अजब सिंगार लखौ मुसक्यात मा।
अनहद की क्या गुमकार सुनो दिन रात मा।
तन तजि छोड़ौ जग जाल चलौ सुख गात मा।६।

१८० ।। श्री हग्गन शाह जी ।।

पदः- शिष्य सतगुरु बचन मानै वही सतगुरु के जैसा हो।
नहीं तो पार नहि होवै कठिन भव का ये रैसा हो।
ऐश आराम में भूलै अगर मिलि जाय पैसा हो।
अन्त तन तजि नरक भोगै फेरि जग जन्म भैंसा हो।४।

ध्यान धुनि नूर लय पावै तो जारै कर्म कैसा हो।
सुनै अनहद मिलैं सुर मुनि न उस से फिर अनैसा हो।
नाम हर दम रगन रोवन से बोलै जिमि सतैसा हो।
लखै सिय राम राधै श्याम सब उसका घरैसा हो।८।

१८१ ।। श्री लुक्कन शाह जी ।।

पदः- सिय राम राधे श्याम कमला बिष्णु हरदम ही भजौ।
सतगुरु से मारग जानि कै जग जाल को जियतै तजौ।
तन मन व प्रेम को एक करि धरि शब्द पै सूरति मंजौ।
धुनि ध्यान लय परकाश सन्मुख षट दरश अदभुद सजौ।
सुर मुनि मिलैं अनहद सुनो निर्बैर निर्भय ह्वै गजौ।
अन्त में तन छोड़ि कै साकेत में चलि कै रजौ।६।

१८२ ।। श्री चुप्पन शाह जी ।।

पदः- भजु मन नाम ताबर तोर।
जाप बिधि सतगुरु से लै कर शान्ति गहु तजि शोर।
ध्यान धुनि परकाश लय हो भजैं तन से चोर।
सुनौ अनहद मिलैं सुर मुनि प्रेम में मन बोर।
सामने तब लखौ हर दम प्रिया नन्द किशोर।
अन्त तन तजि जाहु निजपुर मिटै तोर व मोर।६।

१८३ ।। श्री बनावन शाह जी ।।

पदः- ऊपर से दानी ज्ञानी। भीतर है पाप घानी।।
होवैंगे सारे फानी। पावैं न कौड़ी कानी।।

बनि बैठि यहाँ पै मानी। जियतै नरक निशानी।।
यम पुर है दुख कि खानी। मल मूत्र पावैं सानी।।
सतगुरु से जिसने जानी। तिन राम नाम छानी।५।

बिलगान दूध पानी। जारी भै ब्रह्म बानी।।
लय नूर बनिगे ध्यानी। सन्मुख में सारंग पानी।।
अनहद कि धुनि सुनानी। सब सुर मुनि दर्शै आनी।।
जिन नेम टेम ठानी। तिनकी हुई न हानी।।
तन मन कियो कुरबानी। ते गे अचल रजधानी।१०।

१८४ ।। श्री लण्ठ शाह जी ।।

पदः- सतगुरु भक्ती सीता राम। एकै जानौ पृथक है नाम।
सतगुरु भक्ती राधे श्याम। एकै मानौ पृथक है नाम।।
सतगुरु भक्ती श्री नारायण। एकै है हम सत्य बतायन।।
राम नाम भक्ती औ सतगुरु। जो पावै ता को जानौ फुर।।
कृष्ण नाम भक्ती औ सतगुरु। जो जानै सो सकै न जग ढुर।।
बिष्णु नाम भक्ती औ सतगुरु। गह्यो तिन्हैं भव है जिमि गोखुर।६।

१८५ ।। श्री शण्ठ शाह जी ।।

पदः- निज सूरति शब्द में पपोहै हनी।
सोइ सतगुरु क सच्चा सेवक बनी।।
ध्यान परकाश लय में जा कर सनी।
नाम धुनि रूप पाकर होगा धनी।४।

मिलै सुर मुनि कि नित प्रति आकर अनी।
सुनै अनहद मधुर घट बाजै घनी।
पियै अमृत गगन ते हर दम छनी।
तन तजि फिर वही अनमोल मनी।८।

१८६ ।। श्री ठाकुर धर्म्म सिंह जी ।।

पदः- कमला कामिनि कलम किताब। दुष्ट संग परि हों बेताब।
दया धरम जिनमें हो आब। तिन ढिग गये न बिगड़ै ताब।।

दोहाः- सब में समता जो लखैं, सो हैं चतुर सुजान।
सो चारिउ को प्रेम से, राखै करि सन्मान।।

१८७ ।। श्री ठाकुर राम सकल सिंह जी ।।

पदः- मल मूत्र हाड़ माँस चाम रक्त और मज्जा।
यह तन बना गुनो तो करत शौक औ लज्जा।
यम अन्त अन्धे घोड़े शिर देंय करि गंजा।
हरि नाम अमी छोड़ कर फल खा रहे कंजा।४।

१८८ ।। श्री ठाकुर गम्भीर सिंह जी ।।

पदः- भजन बिन यम करैं घण्टा चार।
अब हीं तो मन मानी करते परिहौ नर्क मंझार।
पाप कमाई जब गरुआई कौन उठाई भार।
दोनों तरफ़ से होय कुखातिर जैसे सड़ा अचार।
सतगुरु करो नाम बिधि जानौ छूटै भव भय जार।५।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि खुलि जावै रंकार।
हर दम झांकी नैनन सन्मुख कमला संग सरकार।
अनहद सुनो देव मुनि दर्शै कर्म होंय जरि छार।
कहैं गम्भीर सिंह तन छूटै निज पुर जाव सिधार।
नागिन जगै चक्र षट नाचैं सातौं कमल फुलार।१०।

१८९ ।। श्री गड़बड़ शाह जी ।।

शेरः- चोरों के संग पड़कर तन मन को लिया बेंच।
सतगुरु किया न जाना हरि नाम जप का पेंच।
तन छूटने की देरी जाओगे नर्क को।
परैं हथकड़ी औ बेड़ी तब करना तर्क को।
कहते हैं शाह गड़बड़ मानो बचन हमारा।
हरि नाम जान लो तो जियतै में हो किनारा।६।

१९० ।। श्री अड़बड़ शाह जी ।।

पदः- भजन बिन खांखर करत सियार।
सतगुरु करौ जाप बिधि जानौ तब सब जावैं हार।

ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि खुलि जावै एक तार।
अनहद सुनो अमी रस चाखो सुर मुनि करैं नित प्यार।
राम श्याम हरि शम्भु सामने हर दम हो दीदार।
अड़बड़ शाह कहैं तन तजि के निजपुर लेहु संभार।६।

(२)

दोहाः- शून्य शिखर चढ़ि मन मरयौ, तब सब मरे चमार।
सतगुरु के परताप से, छूट्यौ जग ब्यौहार।
हरि सुमिरन बिन तन गयो, डारिनि चीरि चमार।
सतगुरु की जे शरनि गे, तिनकी जय जय कार।
लय समाधि में मन गयो, नवो द्वार करि बन्द।
सतगुरु की किरपा भई, छूटि गयो भ्रम फन्द।
मन समाधि में चढ़ि गयो, नव दरवाज़ा त्यागि।
सतगुरु भेद बताय दें, सो चट जावै भागि।
मन सुख सागर में रम्यौ, संगिन दीन्ह्यो छोड़ि।
सतगुरु मार्ग सुझाय दें, कौन सकै मुख मोड़ि।५।

हरि सुमिरन बिन तन बृथा, कैसे होवै स्वच्छ।
जैसे पल्लव के बिना, नीक न लागत बृच्छ।।
हरि सुमिरन बिन तन बृथा, सत्य मानिये तात।
जैसे गज सूनो लगै, गिरि गे दोनों दांत।।
हरि सुमिरन बिन तन बृथा, काह भयो रहि मौन।
जैसे दीपक के बिना, रहत अंधेरा भौन।।
हरि सुमिरन बिन तन बृथा, सरयो न अपनो काज।
जैसे राजा के बिना, पड़ी शून्य सब राज।।
हरि सुमिरन बिन तन बृथा, कितनौ होवै मान।
जैसे सतगुरु के बिना, कथत बहुत जन ज्ञान।१०।

हरि सुमिरन बिन तन बृथा, भा सूकर मल मुत्र।
जैसे अबला पुरुष दोउ, हैं उदास बिन पुत्र।।
हरि सुमिरन बिन तन बृथा, भयो आइ बरबादि।
जैसे बीज कि नाश हो, परै जहां गज खादि।१२।

१९१ ।। श्री चर चर शाह जी ।।

पदः- ले मन राम नाम धन लूट।
सतगुरु करौ भजन बिधि जानौ कौन गहै फिर खूँट।
आपै आप भगैं तन ते सब खर सियार श्वान सूकर ऊँट।
सारे पाप नाश हों छिन में निर्भय पावो छूट।४।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रूप सामने जूट।
सुर मुनि मिलैं सुनो घट अनहद ताल सकत नहिं टूट।
अमृत पिओ बहै निशि बासर गगन ते सोता फूट।
अन्त त्यागि तन राम धाम लो जग जिमि टूटी बूट।७।

१९२ ।। श्री खड़भड़ शाह जी ।।

पदः- लूटौ राम नाम धन दद्दा।
सतगुरु से सुमिरन बिधि जानो करो गरभ रिन अद्दा।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि श्याम प्रिया लखु सद्दा।
सुर मुनि मिलैं साज सुनु अनहद चाखु अमी क्या मद्दा।४।
तन के असुर भागि सब जावैं रोकि सकै नहि रद्दा।
अन्त समय साकेत में बैठो शुभग यान जड़े मद्दा।
सूरति शब्द क मारग यह है ठीक मिलावै हद्दा।
ईश्वर अंश कहाय यहां क्यों बने बैठ हो भद्दा।८।

१९३ ।। श्री मक्कर शाह जी।।

पदः- मुरशिद से जानि जिसने नाम खुमारी पाई।
उस की हर जाँ में सुनो होगी समाई भाई।
ध्यान धुनि नूर समाधी में भुलाई धाई।
राम सीता कि छटा सामने छाई गाई।
देव मुनि रोज़ मिलैं मन से सिहाई आई।५।
घट में अनहद कि सुनै मधुर बधाई जाई।
निर्भय निर्बैर शक फिर तो न राई लाई।
अन्त तन त्यागि गर्भ में न झुलाई खाई।
भजन जिसने न किया उसको लुटाई माई।
नर्क में जाय दूत करते पिटाई काई।१०।

बांधि खम्भे में लोह सींक ललाई ताई।
नीचे से छोड़ि सीधी ऊपर चलाई नाई।
बोल फूटैगा नहीं होश उड़ाई झाई।
कल्पों भोगैगा दुःख हाय मचाई धाई।
कौन किसका है वहां जाय बचाई वाई।
मक्कर कहते हैं जपो होगि सुनाई साई।१६।

१९४ ।। श्री खरभर शाह जी ।।

पदः- नारि पुत्र कन्या औ भगिनी। बे अंकुश जारैं जिमि अगिनी।।
प्रथमै इनको शिक्षा दीजै। तब नित बचन अमी सम लीजै।।
इस ज़बान से आदर आसन। इस ज़बान से भोजन छाजन।।
इस ज़बान से भूषन पैसा। इस ज़बान से बढ़त है रैसा।४।

इस ज़बान से सहु पग दासी। इस ज़बान से हो सुख रासी।
इस ज़बान से नर्क को जाओ। इस ज़बान से हरि पुर धाओ।।
इस ज़बान का खेल अपारा। शारद शेष भनत हिय हारा।।
सतगुरु करै जानि कछु पावै। खरभर शाह सत्य बतलावै।८।

बार्तिकः- पिता को सांचा और माता को सांची, पिता के पिता को बम्बा, पिता की माता को गय्या, पुत्र को बछरू, पुत्री को बछरी, स्त्री पति को नकवा, पति स्त्री को नकिया, बहू को बल्ली, भगिनी को हल्ली, भाई को सग्गू, भैहो और भौजी को सग्गी, काका को बांका, काकी को बांकी, नाना को ढांचा, नानी को ढांची, मामा को खांचा, मामी को खांची, मौसिया को आंचा, मौसी को आंची, फूफा को रांचा, फूफू को रांची, फूफा के लड़के को टेरा, लड़की को टेरी, बहनोई को लग्गू, बहनोई के लड़के को मेरा, लड़की को मेरी, भाई के लड़के को खोदा, ससुर को सुक्खा, सासु को सुक्खी, सारे को सब्बू, सरहज को सब्बी, दामाद को दिद्दा, दामाद के लड़के को जूजू, और लड़की को जूजी, पुत्र के लड़के को पल्लू, लड़की को पल्ली, राजा को नाथू, रानी को नाथी, गुरु को टीका, गुरुवानी को टीकी, मझवानी को ठीकू, चोर को चुप्पा, डाकू को झोंका, दुश्मन को बुक्का, मित्र को हिल्ला, नाऊ को नक्का, धोबी को झक्का, तेली को टप्पू, तम्बोली को पच्चा, कहार को झुक्का,

लोहार को पित्तू, बढ़ई को छीलू, सुनार को फुक्का, मेहतर को साहू, राम को सर्वा, आकाश को देखू, अग्नि को लप्पी, हवा को वाह, पानी को फीका, धरनी को सीधी, अन्न को मौजी, हंसी को हाहू, रोने को हूँ हूँ, भुरजी को हल्ला, चमार को चाहू, पासी को अंग, कोरी को कोसा, बहना को धुक्का, कुम्हार को खूंदा, मुराई को लाया, चलने को फर फर, बैठने को कील, उठने को हील, गिरने को ढील, सीने को लील, मारने को छर छर, काटने को कर कर, दानी के देबू, कपड़े को छाजन, भूषन को जोहर, बदचलन पुरुष को दुरदुरा, बदचलन औरत को दुरदुरी, नंगे पुरुष को चूका, नंगी नारि को चूकी, मुर्दा को चालू, गर्भ को हालू, जन्म लेने को खालू, स्त्री पुरुष के बिहार को पीलू, स्त्री के स्तनों को गुल्पुल, दूध को हप्पा, घी को चीकस, दही को वांधा, माठा को धारा, मल को फट, मूत्र को सर, साह को लाहू, ग्राम को बाना, लड़ाई को ताना, खाने को आना, बनाने को घाना, परसने को जाना, चुराने को हाना, अस्त्र को माना, ग्राम के पशुओं को पैकू, पक्षिन को हैकू, जल जीवन को साफू, जंगली जानवरों को हौजी, छोटे छोटे कीड़ों को झीनू, सांपों को बढुवा, बीछी को नाची, कुत्ते को फहरू, ग्राम की रात्रि में रखवाली करने वाले को पूका, जागने को धूपा, विद्या को हेली, भूख को आई, प्यास को पाई, साधू को तक्का, और चेला होने को खुल्ला, फलों को रफ़ा, फूलों को सफ़ा, तोड़ने को दफ़ा, बृक्ष को सीधा, सूखी लकड़ी को झूट, चक्की को गाड़ी, बृक्ष के पत्तों को दाता, जल में तैरने को कभकभ, नेत्र मूँदने को टप, गोता लगाने को हप, पुकारने को कूकू, इशारा देने को सूसू, झाड़ फूक को ठूठू, वश करने को मूमू, उच्चाटन को घूँघूँ, आकर्षन को ऊ ऊ, स्तम्भन को रू रू, मारन को चू चू, मोहन को लू लू, धूप को लागी, छांह को भागी, डण्ड को पट, बैठक को खट, कुशती लड़ने को जुट, हारने को कट, जीतने को अट, पहलवान को नट, धन को हा हा, गाड़ने को खाँ खाँ, वायु खुलने को खर, गुदा को चौकी, नर की इन्द्री को छूछू, स्त्री की इन्द्री को बूची, शाक को भाया, मीठा को तरी, रस्सी को सांदा, घड़ा को लाया, नमक को आचा, तैल्य को चप, चिराग़ को दप, बाती को सफ़, कूप को झाक, नदी को धांधी, पहाड़ को काँगू, जंगल को आसा, खेत को तूजा, बोने को माजा, जोतने को हाजा,

सींचने को ईजा, निराने को ऊजू, माड़ने को गूँजू, अन्न ढोने को बूतू, बेंचने को देला, खरीदने को रेला, पीसने को फेला, चालने को झेला, पछोरने को खेला, अन्न से भूसा उड़ाने को गौ गौ, निमंत्रण को हौ हौ, खाने को हूँदू, पोतने को आला, बहारने को बर बर, झाड़ू को चाल, मिट्‌टी को खाल, आराम करने को ऐला कहते हैं।

शेरः- इदा गद्द यम करेंगे बांधि नर्क ले जावैं।
सतगुरु किया न हरि को भजा सुक्ख किमि पावैं।।
दुनियावी ऐश करके बृथा वक्त गँवाया।
खर भर कहैं निज कुल में हाय दाग लगाया।२।

१९५ ।। श्री भर भर शाह जी ।।

पदः- तत्ववेता जाव बनि जियतै में भव से पार हो।
सतगुरु करो पावो पता काहे यह तन बेकार हो।
ब्रह्म विद्या है यही सूरत शबद में ढार हो।
परकाश ध्यान समाधि धुनि खुलि जांय तब रंकार हो।
सुर मुनि मिलैं अनहद सुनो घट में मधुर गुमकार हो।५।
झूलो हिंडोला है पड़ा क्या अर्द्ध ऊर्द्ध मंझार हो।
छटा छबि श्रृंगार सन्मुख लखौ श्री सरकार हो।
जिस दिन चहौ उस दिन पहुँच देखौ सुघर दरबार हो।
शोभा वहां की को कहै हिय शेष शारद हार हो।
काम रति के रूप रंग के तहँ बहुत रखवार हो।१०।
स्नान सब तीरथ करौ सब लोकों का दीदार हो।
नागिनी माता जगै वा हित ये सब खेलवार हो।
चक्र षट बेधैं कमल सातों तुरत तैयार हो।
स्वांस सुखमन जाय ह्वै मारग बिहंग सुख सार हो।
अन्त तन तजि अचल पुर जावो वहाँ अति प्यार हो।
भर भर कहैं चेतो अभी वरना ये तन दुश्वार हो।१६।

(२)

पदः- सतगुरु करि नाम जाप जानि मन लाया जिसने।
सारे पापों को पकरिं बांधि जलाया उसने।

ध्यान धुनि नूर लय में गोता लगाया जिसने।
श्याम श्यामा कि छटा सामने छाया उसने।
देव मुनि संघ बैठि हरि क यश गाया जिसने।५।
साज अनहद भि सुना अमी पी पाया उसने।
शक्ति नागिन को जगा चक्र चलाया जिसने।
कमल सब फूलि गये महक उड़ाया उसने।
दीनता शान्ति सत्य प्रेम तन छाया जिसने।
भर भर कहते हैं बिजय ढोल बजाया उसने।१०।

शेरः- जिसने न सार जाना, उसके न चश्म काना।
सतगुरु बिना दिवाना, तन मन में पाप साना।
छूटै न आना जाना, पायो नहीं ठिकाना।
था गर्भ रिन चुकाना, सो भूल जग लुभाना।
यम अन्त मारैं ताना, क्यों बांधै मर्द बाना।
भर भर कहैं जो माना, सोई हुआ है दाना।६।

पदः- मानो सब जन सखुन सुनि हमार चलो सतगुरु की शरन।१।

शेरः प्रेम तन मन से लगा निज को संभालिये भाई।
बृथा बातों में समय अपना न टालिये भाई।।

टेकः यहां कोई नहीं है तुम्हार चलो सतगुरु की शरन।२।

शेरः ध्यान धुनि नूर समाधी में जहां जाओगे।
सारे पापों के ताप छिन ही में जलाओगे।।

टेकः करैं सुर मुनि आय नित प्यार चलो सतगुरु की शरन।३।

शेरः साज अनहद की ताल घट में सुनौ बाजै जी।
राम सीता कि छटा सामने में राजै जी।।

टेकः चखो अमृत मगन निशि बार चलो सतगुरु की शरन।४।

शेरः जागि कुण्डलिनी शक्ति चक्र घुमा लेवैगी।
कमल सातों को उलटि चट से खिला देवैगी।

टेकः खुशबू पाकर के हो मतवार चलो सतगुरु की शरन।५।

शेरः अन्त तन छोड़ि बास राम धाम होवैगा।
रूप रंग हरि सा मिलै फिर न गर्भ रोवैगा।।

टेकः कहैं भर भर प्रभु सुमिरन है सार चलो सतगुरु की शरन।६।

(४)

पदः- नाम पर तन मन प्रेम करके लगाओ लाला।
सतगुरु से मार्ग जानि निज को मिटावो लाला।
ध्यान धुनि नूर पाय लय में समाओ लाला।
श्याम श्यामा कि छटा सामने छाओ लाला।४।

देव मुनि संग बैठि नाम यश गाओ लाला।
ताल अनहद कि सुनो अमी पी पाओ लाला।
जियति सब जानि फेरि गर्भ न आओ लाला।
भर भर कहते हैं मर्द बनि न लुकाओ लाला।८।

सोरठाः चन्द रोज़ के बाद, जागै फिर भारत लला।
प्रगटै धर्म अनादि, शान्ति होंय दुख के कला।
सुर मुनि रहे मनाये, या में कछु संशय नहीं।
भर भर कहैं सुनाय, सुखी होय भारत मही।४।

दोहाः- पुरुष बने अबला फिरैं, अबला पुरुष क भेश।
भर भर कह यह चरित लखि, लज्जित भा मम देश।।

(५)

पदः- मन की एकाग्रता से सुख नारि नर को होता।
सहबास करने लगते तब तन मन कैसा नोता।
जब हो जुदाई उस से बल वीर्य्य बुद्धि खोता।
कानो से है वह बहेरा आंखों में माड़ा पोता।
दुख को है सुक्ख समझा याही से कूड़ा ढोता।५।

पढ़ि सुनि गुना नहीं कछु बनि बैठि रट्टू तोता।
सतगुरु करै सो चेतै दै पाटि भव क सोता।
धुनि ध्यान नूर पाकर लय में लगावै गोता।

सन्मुख में श्याम श्यामा कटि जाय द्वैत जोता।
भर भर कहैं तजै तन फिर गर्भ में न रोता।१०।

शेरः- प्रेम जिसका जिस से हो, उसको वही मानै सगा।
कहते हैं भर भर शाह श्री हरि भजन बिन सब है दगा।।

१९६ ।। श्री बकबक शाह जी ।।

पदः- हर दम तार लगा रहै घर से।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो पहुँच जाव तब सर से।
ध्यान धुनी परकाश समाधी होय छुटो भव डर से।
अनहद सुनो बजै निशि बासर पिओ अमी घन बर से।४।

सुर मुनि आय लिपटि दुलरावैं कर दाहिन शिर पर से।
नागिन जगै चक्र सब बैधैं कमल खिलैं क्या फर से।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख निरखौ दर से।
बक बक शाह कहैं सुनि गुनि अब चढ़ो नाम लै जर से।८।

१९७ ।। श्री गल्ला शाह जी ।।

पदः- सुनिये नाम कि धुनि का हल्ला।
मुरशिद करि सुमिरन बिधि जानो खुलि जावै तब पल्ला।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै सन्मुख निरखौ अल्ला।
पैग़म्बर सब दर्शन देवैं तब हो ठीक मुसल्ला।
कौसर पिओ सुनो घट अनहद चेत करो कहैं गल्ला।
अन्त त्यागि तन जाव वतन को छूटै जगत से तल्ला।

शेरः- गल्ला कहैं नेकी बदी बस संग में जावै तेरे।
तज कर बदी नेकी को कर, यह सच सखुन गहि ले मेरे।।

१९८ ।। श्री छल्ला शाह जी ।।

पदः- सुनिये नाम कि धुनि रग रोवन।
मुरशिद करि जपि की बिधि जानो मन करि प्रेम में मोवन।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै जो भव तापक धोवन।
अनहद सुनो पिओ घट कौसर करो रहेम का बोवन।

हर दम खोदा को सन्मुख देखो फिर न गर्भ हो रोवन।
छल्ला शाह कहैं सो उबरै करै सुरति से नोवन।६।

१९९ ।। श्री बनखण्डी बाबा जी ।।

पदः- सुनिये ओंकार का शोर।
सतगुरु करि जप की बिधि जानो छूटै जग से डोर।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय जहां मोर नहिं तोर।
अनहद सुनो मिलैं नित सुर मुनि गिरैं प्रेम के लोर।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख दें छबि जोर।
जियत लखै सो मुक्त भक्त है नाहीं तो है चोर।६।

(२)

पदः- सुनिये सोऽहं की आवाज।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो तन मन जावै भाँज।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै बाजै अनहद साज।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि तब सन्मुख जांय राज।
सुर मुनि मिलैं पिओ घट अमृत पूरन हो सब काज।
अन्त त्यागि तन निज पुर बैठो भक्त होहु सिरताज।६।

(२)

पदः- सुनिये राम कृष्ण हरि नाम।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो करो सुफ़ल निज चाम।
रेफ़ बिन्दु जो बीज कहावै है ब्यापक हर ठाम।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै सुनो साज घट आम।
सुर मुनि मिलैं पिओ घट अमृत ना कछु लागै दाम।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख हों बसु याम।६।

२०० ।। श्री माधव शाह जी ।।

पदः- घट में माल स्वांस ते जारी।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो हो मुद मंगल भारी।
ध्यान प्रकाश समाधि होय तब अनहद धुनि हर बारी।
अमृत पिओ देव मुनि आवैं जय बोलैं दै तारी।

सन्मुख झाँकी रहै टरै नहिं श्री राम सिय प्यारी।
अन्त त्यागि तन निज पुर बैठो परो न गर्भ मँझारी।६।

(२)

घट में फिरत निरंजन माला।
सतगुरु करि जप की बिधि जानो छूटै भव भय जाला।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै अनहद की क्या ताला।
सुर मुनि मिलैं छकौ नित अमृत जियति बनो मतवाला।
हर दम सन्मुख में छबि निरखौ राधे बसुदेव लाला।
अन्त त्यागि तन निज पुर जावो जो बाजत सुख साला।६।

२०१ ।। श्री सब्र शाह जी ।।

पदः- रोते रोते हमको भाई जन्म अगणित हो गये।
सतगुरु मिले शान्ती दिया सब पाप पल में खो गये।
परकाश ध्यान समाधि धुनि से असुर सारे सो गये।
अनहद सुना सुर मुनि मिले करि प्यार प्रेम से धो गये।
सिय राम भी अद्भुद छटा से सामने मम हो गये।
त्यागि तन निजपुर लिया जग बीज नाम क बो गये।६।

२०२ ।। श्री कमाल शाह जी ।।

पदः- चुपके चुपके भजन करि लीजै।
सतगुरु से सुमिरन बिधि जानि के तन मन प्रेम में दीजै।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि पाय के अमृत पीजै।
अनहद सुनो देव मुनि दर्शैं सब संघ बैठक कीजै।
तन के असुर भागि सब जावैं रोवैं औ कर मीजैं।५।

सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख दर्शन लीजै।
अजपा सूरति शब्द का यह है कहत शम्भु जेहि बीजै।
रं है नाम राशि का प्रभु के जो तिरगुन नहिं भीजै।
जियतै करतल करि के भाई निर्भय जुग जुग जीजै।
नर तन पाय जागि उठि चेतो समय न बिरथा छीजै।१०।

२०३ ।। श्री भर भर शाह जी ।।

पदः- सतगुरु करि सुमिरो राम नाम। तब होवै नर का सुफ़ल चाम।
धुनि ध्यान समाधि प्रकाश आम। सुर मुनि नित आवैं करु प्रणाम।
हर दम सुनिये बाजा तमाम। सन्मुख छबि छावैं सिया राम।
तन तजि चलि बैठो अचल धाम। भर भर कह छूटै गर्भ काम।८।

दोहाः- महा प्रकाश अखण्ड है, वहां दिवस नहिं याम।
भर भर कह सुर मुनि कहैं, वही नित्य सुखदाम।।

शेरः- आप को खुद आप भूले, दोष किसका इसमें है।
सतगुरु करो पावो पता, हरि हर जगह नहिं किसमें हैं।
हरि नाम धन जिसको मिला, उसको न आना जाना है।
भर भर कहैं अब हमको, तुमको कुछ नहीं लिखवाना है।
करता हूँ अब मैं बन्दगी हरि हुक्म जो था सो किया।
भर भर कहैं तव ज़िन्दगी सुख से कटै निज धन लिया।६।

२०४ ।। श्री घट घट शाह जी ।।

शेरः- तबदील मैं होता नहीं, ज़ाया समय खोता नहीं।
घट घट कहैं सोता नहीं, मुझको कोई कोता नहीं।।

शेरः- जिन्दगी में बन्दगी करि होहु हरि के दास।
सतगुरु कि बानि मानि जियति लेहु सब सुपास।

शेरः- धुनि ध्यान नूर लय पा हो देहु दुख की नास।
सन्मुख हों राम सीता जो सर्ब सुख कि रास।
सुर मुनि मिलैं हमेशा जो भक्त हरि के खास।
अनहद सुनो अमी चखौ टपकै जो बारह मास।
सूरति शबद क रास्ता दे मारि जग की आस।
घट घट कहैं तजो चलि लेहु निजपुर बास।६।

(२)

शेरः- हरि हुक्म की तामील करना ही हमारा काम है।
जिस जगह चाहैं जांय हम सकता न कोई थाम है।।

सतगुरु कृपा से ध्यान लय परकाश पाया नाम है।
सुर मुनि मिलत नित नेम से दो टेम बसु औ याम है।।
नौबत सुनो घट में सदा क्या हो रही बेदाम है।
सन्मुख में हरदम छबि छटा छाये रहत सिय राम है।।
वही बिष्णु श्री वही श्याम प्रिय वही सर्ब गुण के धाम हैं।
लिखना लिखाना समय पर देता बड़ा ही काम है।४।

पढ़ि सुनि के चेतैं नारि नर जो फंसे दुख के ग्राम हैं।
आता समय अब तो सुनो हों भक्त जे बदनाम हैं।।
धुनि ध्यान लय परकाश पावैं लखैं हरि हर ठाम हैं।
जे पाठ पूजा कीर्तन जप हवन में नर बाम हैं।।
तिनकी तो शैली अधिक हो सुर मुनि कहत यह आम हैं।
नाम धन जिनको मिला उनको बड़ी आराम है।।
श्रवन फल औ नयन फल भा सुफ़ल जियतै चाम है।
घट घट कहैं हम जा रहे करते तुम्हें परनाम हैं।८।

२०५ ।। श्री मस्त शाह जी ।।

पदः- सम्पादक उपदेशक बनि कोइ सार वस्तु को नहिं पैहौ।
मान बड़ाई संग न छोड़ै आखिर पीछे पछितैहौ।
सतगुरु करौ भजन बिधि जानौ जियतै तब भव तरि जैहौ।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रग रोवन सुनि हरखैहौ।४।

सुर मुनि मिलैं बजै घट अनहद अमी पाय निर्भय रहिहौ।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि हर दम सन्मुख छबि छैहौ।
शान्ति दीनता प्रेम से तब तो नित प्रति हरि के गुण गैहौ।
अन्त समय तन त्यागि अचल पुर चढ़ि बिमान सुख से जैहौ।८।

२०६ ।। श्री गस्त शाह जी ।।

पदः- भजन बिन हाथी को काटै बाँदर।
बार में बांधे मन है वाको ऐसा बनिगो कादर।
हर दम चिघरि चिघरि कै झूमै मानहु लागी साँकर।
ज्ञान गुमान सान सब भागी मिलत न कोई बागर।
सतगुरु करै भजन बिधि जानै फटै द्वैत की चादर।५।

ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि पाय बढ़ै तन जाँगर।
मन मुखिया औ पांचौं मरकट ह्वै जावैं तब डाँगर।
सुर मुनि मिलैं सुनै घट अनहद अमी पियै भरे सागर।
सन्मुख राधा माधव राजैं जो सब में गुण आगर।
अन्त त्यागि तन निज पुर बैठै पटकि भर्म कि गागर।१०।

२०७।। श्री ख्याल शाह जी।।

शेरः- जो ख्याल मस्त सो करै दस्त।
जो करै गस्त सो होय पस्त।।
जो माल मस्त सो नर्क अस्त।।

२०८ ।। श्री दीन शाह जी ।।

शेरः- सोते सोते हमको भाई जन्म अगणित हो गये।
सतगुरु मिले निद्रा मिटी सब पाप छन में धो गये।
धुनि ध्यान लय परकाश पाया असुर तन के रो गये।
सुर मुनि मिले अनहद सुना अमृत चखा भय खो गये।
प्रिय श्याम जी अनुपम छटा से सामने मम हो गये।
नाम से परिचय हुई तन छोड़ि प्रभु ढिग सो गये।६।

२०९ ।। श्री कृष्ण मोहन वैश्य जी।।

पदः- सूरति ताली शब्द है ताला। सतगुरु करि कै खोलौ लाला।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि होय फिरै मन घट का माला।
अनहद सुनो देव मुनि दर्शै पिओ अमी रस हो मतवाला।
सन्मुख राधा माधौ सोहैं जे करते जग को प्रति पाला।४।
शान्ति दीनता को गहि करके जे जन फिर करिहैं ख्याला।
वै निज पुर में बैठक पैहैं मेटि करम गति भाला।
नाहीं तो जग जाल में नाचैं रहै बना मूँह काला।
मानि बचन चेतो नर नारी भाखेन सत्य हवाला।८।

२१० ।। श्री नानक राम जी वैश्य ।।

(मुकाम साहब गंज, फ़ैज़ाबाद)

चौपाईः- अन्त कि बेरिया मुरली धारी। सन्मुख लखा खड़े सुखकारी।।
तन को त्यागि बैठि सिंहासन। जाय लीन श्री हरि पुर आसन।।

गीता पाठ मन्त्र जप कीन्हा। पर स्वारथ भी कछु करि दीन्हा।।
श्री महराज आप की दाया। सारे पापन धोय बहाया।।
चालीस लाख बर्ष रहि वहँ पर। फिर द्विज कुल में जन्मौं यहँ पर।।
नानक राम कहैं हरखाई। सत्य बचन हम दीन लिखाई।६।

२११ ।। श्री समी उल्ला जी ।।

पदः- दुखरा निज घर का बतलाई।
सुनी कहैं नहिं नैनन देखा सत्य मानिये भाई।
सन्त क भेष डरत नहिं नेकौं करत रहत मन भाई।
बरतन अन्न वस्त्र औ गौवें बेंचत हिय हर्षाई।
पूजा में जो चढ़त मिठाई ताहि लेत हलवाई।५।

सूत हेत कर्जा हैं बांटत कागज़ धरत लिखाई।
पढ़ि सुनि मीठे बचन सुनाय के चेला लेत बनाई।
जौन भांति धन हो एक ठौरी सोई रचत उपाई।
सब से मेल अदालत में करि सीखी खुब धुरताई।
सूत देन में देर करत जो डाटत नैन दिखाई।१०।

ऐंठत कान लगावत थप्पड़ मुर्गा देत बनाई।
चेला चेलिन को लै करके करते बिषय लुकाई।
आँखिन अन्धे कानन बहिरे मन की मति बौराई।
सतगुरु किह्यौ न तन फल पायो अन्त गह्यो यम आई।
दया धर्म्म सुमिरन को त्याग्यौ हिन्दू तुरक इसाई।
कहैं समी उल्ला चित चेति के गुनि लो तन मन ताई।१६।

२१२ ।। श्री लोटन शाह जी ।।

पदः- सुमिरो नाम पलक दरियाई।
सतगुरु करो भजन बिधि जानो छूटै तन मन काई।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रग रोवन खुलि जाई।
सुर मुनि मिलैं सुनौ घट अनहद पिओ अमी हर्षाई।
अजा असुर सब करैं दण्डवत नित प्रति शीश नवाई।५।

निर्भय चहै तहां फिरि डोलौ कोई न आँख उठाई।
चन्द्र सूर्य्य का मेल जाय ह्वै सुखमन स्वांस कहाई।

विहंग मार्ग तब मिलै मानिये जो मुद मंगल दाई।
कुण्डलिनी सब लोक लखावै षट चक्कर घुमराई।
सातौं कमल खिलैं अति सुन्दर अजब सुगन्ध उड़ाई।१०।

सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख रहैं सदाई।
लोटन शाह कहैं तन छूटै चलौ अचल पुर धाई।१२।

दोहाः- रेफ़ बिन्दु जो बीज है, वाको सारा खेल।
सतगुरु से बिधि जानिये, होय ब्रह्म से मेल।१।
लोटन शाह कि बिनय यह, गहौ दीनता शान्ति।
सब करतल जियतै करौ, छूटै तन मन भ्रान्ति।२।

२१३ ।। श्री तमाशा शाह जी।।

पदः- मुरशिद से एक हाला जप भेद जान लीजै।
धुन ध्यान नूर लय हो सन्मुख में रूप कीजै।
सुर मुनि के होंय दर्शन कौसर क जाम पीजै।
अनहद बिमल सुनो घट सूरति उधर तो दीजै।४।

करि प्रेम लागि जाओ नर तन बृथा न छीजै।
मन जियति करि लो काबू तब असुर फिर न मीजैं।
धन मुख्य कह तमाशा बस है वो शब्द बीजै।
पावै तो लेय निजपुर नाहीं तो जग में भीजै।८।

२१४ ।। श्री मुनाफ़ा शाह जी ।।

पदः- करै मुरशिद मिलै मारग जिसे हो शौक सुमिरन की।
ध्यान धुनि नूर लय पावै जहां सुधि बुधि न तन मन की।
पियै कौसर मिलैं सुर मुनि सुनै अनहद रहा ठनकी।
रहै सन्मुख सदा झाँकी राधिका श्याम जग धन की।४।

जियति में तै करो यारों मिटै भय तब तो यम गन की।
रहौ निर्बैर औ निर्भय तुम्हैं सकता न कोइ हनकी।
असुर सारे भगैं डर के न रोकैं वार एक छन की।
मुनाफ़ा कह अन्त तन तजि लेव रंग रूप हरि पन की।८।

२१५ ।। श्री रिहाई शाह जी ।।

पदः- सँवलिया नन्द के लालन हमै तो लागते आछे।
कभी प्रिय संग में सोहैं कभी गोपी सखा पाछे।
कभी भूषन बसन साजे कभी कटि पीत पट काछे।
कभी दधि दूध माखन ले कभी सब छीन लें छाँछे।४।

कभी मुरली बजा देवैं कभी चढ़ि बैठते गाछे।
कभी सुरभी लिये बन में हँसैं दुलराँय गहि बाछे।
करो मुरशिद भजन जानो शान्ति तन मन के हों माछे।
ध्यान धुनि नूर लय होवे रहैं सन्मुख सदा आछे।८।

(२)

पदः- कन्हैया नन्द के लालन हमै तो लागते नीके।
करो मुरशिद भजन जानो बृथा क्यों घूमते फीके।।
ध्यान धुनि नूर लय पाओ जाँय मिटि भाल के लीके।
सदा सन्मुख रहैं प्यारे तुम्हारे प्रेम में बीके।४।

असुर सारे निकरि भागैं जौन शत्रू बने जीके।
देव मुनि आय दें दर्शन सुनो अनहद अमी पी के।
खिलावैं उमा रमा शारद तुम्हैं भी नित बरे घी के।
अन्त तन त्यागि निज पुर लो मिटैं भव जाल के छीके।८।

२१६ ।। श्री मैले शाह जी ।।

पदः- करै मुरशिद भजन जानै वही हर वक्त मुसक्यावै।
ध्यान परकाश लय होवै नाम धुनि तार झन्नावै।
सुनै अनहद मिलैं सुर मुनि प्रेम करि सब को उर लावै।
सदा सिय राम की झाँकी सामने में छटा छावै।
जियति में तै करैं जे जन वही तन तजि वतन पावैं।
कहैं मैले बिना जाने जगत चक्कर में घुमरावैं।६।

२१७ ।। श्री चमचम शाह जी।।

पदः- अनुभव परम्परा चलि आई। सुनि गुनि चेतो लोग लुगाई।।
वेद शास्त्र उपनिषद संहिता औ पुरान कहैं गाई।

सुर मुनि सब इस बचन को मानत फरक परत नहिं राई।
हैं ह्वैगे ह्वै हैं युग युग की रीति यही है भाई।
सतगुरु करौ नाम बिधि जानौ खुलै मार्ग सुखदाई।

ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रग रोवन खुलि जाई।
सुर मुनि मिलैं कहैं श्री हरि यश अनहद सुनो बधाई।।
नागिन जगै चक्र षट बेधैं सातौं कमल फुलाई।
सारे तीर्थ नहाव लोक सब देखौ निर्भय धाई।
राम सिया की झाँकी अद्भुद सन्मुख में छवि छाई।

अमृत झरै गगन ते हर दम पावो आह बुताई।
चन्द्र सूर्य्य स्वर करैं एकता तब सुखमना कहाई।
तामे नारि चित्रणी राजे वामे बज्रणी बाई।
वाके अन्तर ब्रह्म नाड़ि है सब की जड़ कहलाई।
पच्छिम दिशि ते जावै प्राणी विहँग मार्ग स्थाई।

अजपा जाप यही है मानो सूरति शब्द में नाई।
इसी को राज योग हैं कहते तन मन प्रेम समाई।
अगणित जन्म सुकृत जिन कीन्ह्यो तिन यह लीन कमाई।
अन्त त्यागि तन मारि लात जग त्यागि दीन जिमि काई।
या से चेत करो नर नारी छोड़ि के जग औंघाई।

जौन देव से प्रेम हो जाको सुमिरै मन को लाई।
कथा कीर्तन पाठ औ पूजा हवन धर्म ब्रत भाई।
सब सीढ़ी ऊपर के हित हैं समय पै देंय चढ़ाई।
जो नहिं मानै कहा हमारा सो फिरि धोका खाई।
चम चम शाह कहैं हरि अज्ञा रही सो दीन लिखाई।

२१८ ।। श्री बर बर शाह जी ।।

पदः- सतगुरु ने नाम जप की बिधी ठीक बताया जिसको।
ध्यान धुनि नूर समाधी ने बुलाया उसको।
देव मुनि आय बिहँसि उर में लगाया जिसको।
साज अनहद कि तान मान उड़ाया उसको।

राम सीता ने छटा हर दम दिखाया जिसको।
बर बर कह अन्त नित्य धाम पठाया उसको।६।

२१९ ।। श्री लब लब शाह जी ।।

पदः- जोगी न तू भोगी न तू रोगी न तू ढोंगी न तू
तू तो सदा है एक रस सतगुरु से मारग जान ले।
पण्डित न तू सण्डित न तू छण्डित न तू मण्डित न तू, तू तो सदा है०।
खण्डित न तू हुण्डित न तू झुण्डित न तू मुण्डित न तू, तू तो सदा है०।
मरता न तू जरता न तू सरता न तू हरता न तू, तू तो सदा है०।
कटता न तू फटता न तू लड़ता न तू भगता न तू, तू तो सदा है०।५।

करता न तू परता न तू चलता न तू ठरता न तू, तू तो सदा है०।
धरता न तू उड़ता न तू डुबता न तू चिढ़ता न तू, तू तो सदा है०।
बढ़ता न तू घटता न तू घुलता न तू हिलता न तू, तू तो सदा है०।
छोटा न तू मोटा न तू रोता न तू सोता न तू, तू तो सदा है०।
खाता न तू पीता न तू दाता न तू मँगता न तू, तू तो सदा है०।१०।

पापी न तू टापी न तू दापी न तू श्रापी न तू, तू तो सदा है०।
बाजै न तू गाजै न तू साजै न तू लाजै न तू, तू तो सदा है०।
आता न तू जाता न तू माता न तू ताता न तू, तू तो सदा है०।
मानी न तू सानी न तू घानी न तू बानी न तू, तू तो सदा है०।
साहू न तू डाहू न तू हाहू न तू नाहू न तू, तू तो सदा है०।
क्षत्री न तू शस्त्री न तू चित्री न तू स्त्री न तू, तू तो सदा है०।१६।

२२० ।। श्री खट खट शाह जी ।।

पदः- सुनिये राम नाम की टीप।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो उघरैं दोनों कीप।
भीतर बाहेर होय एक रस प्रेम में जाओ लीप।
ध्यान प्रकाश समाधि जाय चढ़ि जहां रूप नहिं सीप।
तन के असुर भागि सब जावैं कौन सकै तब छीप।५।

अनहद सुनौ देव मुनि भेटैं शिर पर फेरैं चीप।
सन्मुख राम सिया छबि छावैं जियति मिटै भव खीप।

लोक भुवन औ खण्ड दरश हित आवैं देश औ द्वीप।
सूरति शब्द क मारग यह है जो जन लेवैं हीप।
खट खट कहैं अन्त ले निजपुर फेरि न आवै पीप।१०।

२२१ ।। श्री लड़ खड़ शाह जी ।।

पदः- मन की एकाग्रता का सुख ले लो ले लो लेलो।
मुरशिद करो गहो मग दुख ठेलो ठेलो ठेलो।
धुनि ध्यान नूर हो फिर लय पेलो पेलो पेलो।
सुर मुनि के होंय दर्शन सँग खेलो खेलो खेलो।
अनहद सुनो अमी चखि सुख सेलो सेलो सेलो।
सन्मुख में श्याम श्यामा छबि एलो एलो एलो।६।
है पास में तुम्हारे धन रेलो रेलो रेलो।
बह द्वैत से न मिलता एक धेलो धेलो धेलो।
गहि शान्ति दीनता को बनि चेलो चेलो चेलो।
सब चोर तन से भागैं तब मेलो मेलो मेलो।
जियतै में कर्म दोनों धरि बेलो बेलो बेलो।
लड़खड़ कहैं तजो तन घर केलो केलो केलो।१२।

२२२ ।। श्री मुरही माई जी ।।

पदः- बिषयानन्द अनन्द पुरुष से अष्ट गुणा है नारी को।
सतगुरु करै नाम धुनि जानै तब परमानन्द प्यारी को।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै सुधि बुधि वहाँ न यारी को।
सुर मुनि मिलैं सुनै घट अनहद लखै सिया धनु धारी को।
जय जय कार दोऊ दिशि होवै वाके पितु महतारी को।
मुरही कहै अन्त निज पुर हो फिर जग उसे उलारी को।६।

(२)

पदः- तन मन की एकता का सुख ले लो ले लो जनियाँ।
सतगुरु करो गहो मग सब चोर होवैं पनियां।
धुनि ध्यान नूर लय हो जहँ रूप रँग न बनियाँ।
सुर मुनि के होंय दर्शन सुनो घट में नाद तनियाँ।
संग खेलै कृष्ण राधे क्या बाल रूप अनियाँ।५।

हँसि चट उठाय लीजै जोड़ी को दोनों कनियाँ।
मल्हराओ चूमि मुख को बस जावै प्रेम सनियाँ।
आँसू चलैं दृगन से चुप चाप ह्वै रसनियाँ।
तन त्यागि लेव निज पुर छूटै गरभ झुलनियाँ।
मुरही कहै ऐ बहिनो गुनि लेव मम कहनियाँ।१०।

दोहाः- सन्त कि पदवी ऊँच अति, कवि कोविद क्या चीज़।
राम नाम जान्यो नहीं, जो सब वस्तु क बीज।
सान मान त्याग्यो नहीं, या से जग चकराँय।
सतगुरु करि जागे नहीं, पुनि पुनि धोखा खाँय।
मसलि तमाकू खाय करि, करैं भूमि बरबादि।
पूँछै कोई तब कहैं, है यह धर्म अनादि।६।

चौपाईः- मदिरा मांस क हाल बतावैं। ऋषि मुनि खायो लिखा दिखावैं।।
कलम दवाइत अपने हाथा। लिखि लिखि खूब बढ़ायो गाथा।।
जा के मन जो उठा बिचारा। वाको वाने खूब सँवारा।।
अधरम का फल नर्क में पाते। हर दम हाय हाय चिल्लाते।।
अपने कुल में दाग लगाना। गुनिये है यह पाप महाना।।
परम्परा या से सब बिगरी। छोड़त बानि न कैसे सुधरी।६।

दोहाः- मुरही कह हरि भजन बिन, मिलत न पद निर्वान।
सतगुरु करि जप भेद ले, खुलैं नैन औ कान।।

२२३ ।। श्री फर्च शाह जी।।

पदः- साधु क बाना वाँधि पियैं छिपि कारन खावैं मास।
मन माने कपड़े तन धारे बिषय कि तन मन आस।
परदारा वेश्या औ लड़के राखन में हैं पास।
करैं जबरदस्ती जब चाहैं मेल पुलिस से खास।
कोई अगर उन्हैं उपदेशै शिर पर देवैं बांस।५।

कुश्ती लड़ैं करैं नित वरजिश खेलैं जुआ औ तास।
करिखा बोलैं हंसैं गलिन में कहूँ देंय कसि खांस।
कहीं नैन की सैन चलावै कहीं साधि लें सांस।

कहीं हाथ का करैं इशारा कहीं लेंय चट गांस।
यह लीला लखि लखि के भाई बहुत दुःख के आँस।१०।

नर तन पायो भजन करन हित कीन्ह्यो सत्यानास।
अन्त समय यमदूत आय के गले में डारैं फाँस।
प्रान निकारि चलैं लै मारत देंय नर्क में बास।
हाथ पैर जंजीर से जकड़ैं मुख दें खूटा ठाँस।
फटकौ नेकौ बोल न फूटे तन रहे कीड़ा चाँस।१५।

अति दुर्गन्ध करै को वर्नन जहाँ न बारि बतास।
रहि रहि मुर्च्छा होत वहाँ पर मानहु तन भा लास।
नैन श्रवण नासिका कपोलन लपटे मच्छर डाँस।
चेत होय तस गहैं केश यम नोचैं जिमि कुश कास।
अन्धकार भय ब्याकुलता अति नेकौ नहीं प्रकास।२०।

यम गण निज निज काम रहे करि उन्है रह्यौ सब भास।
उन्है गन्धि नहि मालुम होवै बोलैं बड़ा सुपास।
सतगुरु करै भजन बिधि जानै तब हो सच्चा दास।
अन्त त्यागि तन राम धाम ले जहँ पूरन सुख रास।२४।

सोरठाः- हाथी घोड़ा ऊँट बेचैं संत क भेस धरि।
अन्त लेंय जम लूट जांय नर्क में देंय धरि।१।

२२४ ।। श्री रोवन शाह जी ।।

पदः- दुख हम अपने घर का रोई।
अजा पकड़ि सन्तन को जकड़िस बिरलै बचे हैं कोई।
पांच कि आंच में हर दम नाचत भजन कौन बिधि होई।
झूठ कपट सत्संगी भंगी मोह नींद रहे सोई।
या से नेकौ सूझत नाहीं पाप बीज रहे बोई।५।

सतगुरु करै भजन बिधि जानै जियति लेय सब पोई।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि कर्म देंय दोउ धोई।
अमृत पियैं सुनैं घट अनहद मिलैं देव मुनि टोई।
नागिन जगै चक्र षट घूमैं सातौं कमल फुलोई।
उड़ै तरंग कहै को मुख से मन मति जाय निचोई।१०।

सुखमन स्वांस विहँग मारग ह्वै निज धन ले खुब ढोई।
अपुरन की सब फ़ौज भागि जाय सकै कौन फिर नोई।
सन्मुख राम सिया छबि छावैं दृष्टि में दृष्टि मिलोई।
प्रेम मथानी सूरति कुरधन ले जो शब्द बिलोई।
रोवन शाह कहैं सोइ प्राणी जनम मरण दे खोई।
अगणित जन्म के सुकृत उदय हों जानि सकै तब कोई।१६।

२२५ ।। श्री पद्दन शाह जी ।।

पदः- दुलहिन श्यामा दुलहा श्याम को हर दम निरखौ सन्मुख छाय।
नर नारी सतगुरु करि जप बिधि जानि जपौ मन लाय।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय सुधि बुधि जहां हेराय।
सुर मुनि मिलैं चखौ नित अमृत अनहद सुनो बधाय।
सूरति शब्द क मारग यह है निर्भय देत बनाय।
अन्त त्यागि तन राम धाम हो जग चक्कर मिटि जाय।६।

२२६ ।। श्री मुत्तन शाह जी ।।

पदः- सूरति से अजपा जाप जप लो शरनि सतगुरु की गहो।
धुनि ध्यान लय परकाश सन्मुख रूप निज छाया चहो।
जियतै में मुक्ती भक्ति पाकर मस्त दुख सुख सम सहो।
सुर मुनि मिलैं अनहद सुनो अमृत पिओ मुख क्या कहो।
हरि यश भनौ औ सुनौ जब तक जगत में प्यारे रहो।
तन त्यागि कै निज धाम लो फिर गर्भ झुल्लू क्यों लहो।६।

२२७ ।। श्री हग्गन शाह जी ।।

पदः- सतगुरु शरनि सूरति भजन तब हरि परायन जीव हो।
धुनि ध्यान लय परकाश सन्मुख रूप जियतै शीव हो।
सुर मुनि मिलैं अनहद सुनै घट झरै अमृत पीव हो।
तन त्यागि ले परकाशपुर जहाँ दिया बाति न घीव हो।

दोहाः- रवि शशि बारि समीर नहिं, महा प्रकाश अखण्ड।
सतगुरु करि जियतै लखै, फूटै भर्म क भण्ड।।

२२८ ।। श्री घुरकन शाह जी ।।

पदः- कवि कोबिद बनौ भव नहि तरिहौ।
यह तो सब तिरगुन की लीला बार बार जग में परिहौ।
सतगुरु करौ भजन बिधि जानौ तब जियतै तन मन भरिहौ।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय रूप सामने निज करिहौ।
सुर मुनि मिलैं सुनो घट अनहद अमी पिओ फिर नहिं मरिहौ।
घुरकन शाह कहैं तन त्यागि के तब जग में पग नहिं धरिहौ।६।

२२९ ।। श्री ठोकन शाह जी ।।

पदः- सतगुरु किया जिसने नहीं यह निज वतन किमि जायगा।
शब्द पर सूरति दिया नहिं नाम धुनि किमि पायगा।
ध्यान नूर समाधि में चलि निज को किमि बिसरायगा।
सुर मुनि कि संगति साज अनहद अमी किमि पी पायगा।
शक्ति नागिन को जगा सब लोक किमि लखि आयगा।
षट चक्र बेधि के कमल सातों उलटि कैसे खिलायगा।६।

स्वांस सुखमन के बिना मारग विहँग किमि धायगा।
सत्संग भक्तों के बिना हरि चरित कैसे गायगा।
राम सीता की छटा छबि सामने किमि छायगा।
अजपा पै तन मन प्रेम के बिन ख्याल कैसे लायगा।
मानुष क तन बिरथा किया जग ही में चक्कर खायगा।
असुरों कि संगति में पड़ा रोयेगा औ पछितायगा।१२।

२३० ।। श्री मैले शाह जी ।।

पदः- चढ़िये राम नाम की रेल।
सतगुरु से टीकट को लै कर खोलि केंवारी पेल।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रूप से होवै मेल।
अनहद सुनो देव मुनि आवैं करैं संग में खेल।
शान्ति दीनता प्रेम से भाई जियति कर्म दोऊ बेल।
मैले कहैं अन्त तन छोड़ि के फिरि न परो भव जेल।६।

२३१ ।। श्री लाला खञ्जन लाल जी ।।

पदः- भजिये राम नाम दुख भंजन।
सतगुरु के चरनन की रज लै कीजै दोउ दृग अंजन।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि से तन मन हो मंजन।
सुर मुनि मिलैं सुनो घट अनहद पिओ अमी हो सज्जन।
श्यामा श्याम रहैं नित सन्मुख जो सुर मुनि मन रंजन।
अन्त त्यागि तन अचल धाम लो सत्य कहैं यह खंजन।६।

(२)

पदः- भजिये राम नाम बड़वानल।
सतगुरु के चरनन की रज लै लीजै प्यारे दोउ नैनन मल।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि होंय पाप सारे जावैं जल।
सुर मुनि मिलैं सुनो घट अनहद बन्द न होत जौन एकौ पल।४।

श्यामा श्याम कि झाँकी सन्मुख रहै सदा होवै झल झल झल।
जियतै जो अभ्यास लेय करि ताके सब ह्वै जावै करतल।
यह तो देह सुरन को दुर्लभ सुमिरन ही नर तन का है फल।
शान्ति दीनता के बिन खञ्जन कहैं होत नहिं शुभ कारज हल।८।

२३२ ।। श्री किलकिली शाह जी ।।

पदः- लखौ मुरशिद लखौ मुरशिद लखौ मुरशिद की क्या झाँकी।
मनोहर है मनोहर है मनोहर है बड़ी बाँकी।
रहै सन्मुख रहै सन्मुख रहै सन्मुख सदा टाँकी।
खुले नैनन खुले नैनन खुले नैनन तुम्है ताकी।
न हो बरनन न हो बरनन न हो बरनन गती काकी।
शेष शारद शेष शारद शेष शारद गये थाकी।६।

ध्यान धुनि लो ध्यान धुनि लो ध्यान धुनि लो चलै चाकी।
नूर लय हो नूर लय हो नूर लय हो कर्म खाकी।
मिलैं सुर मुनि मिलैं सुर मुनि मिलैं सुर मुनि प्रेम पाकी।
पिओ अमृत पिओ अमृत पिओ अमृत सदा छाकी।

सुनो अनहद सुनो अनहद सुनो अनहद न फिर ढाँकी।
चलो तन तजि चलो तन तजि चलो तन तजि आस फाँकी।१२।

(२)

पदः- रोते हो काहे यारों मुरशिद करो गहो मग।
धुनि ध्यान नूर लय हो भगि जांय तन से सब ठग।
सुर मुनि मिलैं लिपट कर जब जाव प्रेम में रंग।
अनहद सुनो बजै घट कौसर पिओ अजब ढँग।४।

राम सीता श्याम राधे बिष्णु कमला लखौ संग।
दीनता औ शान्ति से करि लेव जियतै फतेह जंग।
निर्बैर निर्भय जाव ह्वै कटि गिरै चाह क कठिन तंग।
तन त्यागि निज पुर बास लो मिटि जाय तब तो भव कि दंग।८।

२३३ ।। श्री लाला बाल किशोर जी ।।

पदः- दीनता औ शान्ति गहि कर दमन इन्द्रिन को करौ।
दाया धरम औ सत्यता में पग पछारी मत धरौ।
भजन बिधि सतगुरु से जानो नाम बिन रसना ररौ।
ध्यान लय परकाश होवै जियति भव सागर तरौ।।
सामने सिय राम हर दम रहैं मुद मंगल भरौ।
अन्त तन तजि लेहु हरि पुर फेरि गर्भ में नहिं परौ।६।

२३४ ।। श्री लाला बाल किशुन जी ।।

पदः- श्याम शौहर श्यामा जौजे रहैं सन्मुख तभी सुख है।
ध्यान धुनि नूर लय पावै वही मानो कि गुरमुख है।।

२३५ ।। श्री टकटकी माई जी ।।

पदः- दुलहा श्याम राधिका दुलहिन।
निरखौ सन्मुख हो जब बिरहिन।
सतगुरु करौ गर्भ रिन छूटै होवै ध्यान समाधि नूर धुनि।
अनहद सुनो चखौ घट अमृत आय मिलैं नित सुर मुनि।
अन्त त्यागि तन चलहु अचल पुर बैठि जाव तहँ बनि ठनि।
कहैं टकटकी चेतो बहिनो समुझाइत हम पुनि पुनि।६।

२३६ ।। श्री रोजे शाह जी ।।

पदः- जे लागिहैं ते जागिहैं। जे भागिहैं ते खाँगिहैं।
जे मांगिहैं ते पागिहैं। जे हांगिहैं ते नागि हैं।
जे सांगि हैं ते बागि हैं। जे रागि हैं ते दागि हैं।
जे टाँगि हैं ते त्यागि हैं। जे नागि हैं ते आगि हैं।४।

२३७ ।। श्री तीजा शाह जी ।।

पदः- जे तंग हैं ते चंग हैं। जे रंग हैं ते ढंग हैं।।
जे पंग हैं ते भंग हैं। जे मंग हैं ते नंग हैं।
जे गंग हैं ते अंग हैं। जे संग हैं ते टंग हैं।
जे व्यंग हैं ते जंग हैं। जे लंग हैं ते खंग हैं।४।

२३८ ।। श्री सीता राम उर्फ रसरंग मणि जी ।।

पदः- पाठ कीन माला जप कीन्हा। भक्त माल संग्रह करि दीन्हा।
शुभ कारज में समय बितावा। अन्त त्यागि तन हरि पुर पावा।
वहां क सुख को सकै बखानी। जो जावै ताको सुख खानी।
कह रस रंग मनी हे भाई। सत्य तुम्हें हम दीन लिखाई।४।

२३९ ।। श्री लाला शिव प्रसाद जी राय बहादुर ।।
(डिप्टी कलेक्टर मुकाम शिव कुटीर, फ़ैज़ाबाद)

पदः- सत्य धर्म प्रताप से हमको मिला हरि धाम है।
धारन करैं दोनों को जे सोई चतुर नर बाम है।
निर्वैर दुनिया में रहै सो हर जगह सरनाम है।
यहँ पर तो रहना है नहीं धिक्कार जो बदनाम है।
कहता है शिव परसाद चेतो चन्द रोज़ क चाम है।
सत्य धर्म न छोड़ना या से सरत सब काम है।६।

२४० ।। श्री शिव बालक जी ।।

पदः- मन तुम नाम अमल पिओ भाई।
ध्यान प्रकाश समाधि मिलै औ रूप सामने छाई।
सुर मुनि नित प्रति दर्शन देवैं प्रेम करैं उर लाई।
अनहद घट में हर दम बाजै सुनि सुनि हिय हर्षाई।

सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो जियतै लेहु कमाई।
शिव बालक कहैं अन्त छोड़ि तन निज पुर बैठहु जाई।६।

२४१ ।। श्री राम अँजोर जी ।।

पदः- मन तुम सुनो नाम धुनि आला।
ध्यान प्रकाश समाधि होय जहँ कटै जगत भव जाला।
अनहद बाजा घट में बाजै मधुर मधुर क्या ताला।
हर दम सन्मुख में छबि निरखौ सिया औ दशरथ लाला।
सुर मुनि मिलैं द्वैत मिटि जावैं है यह विहँग कि चाला।
राम अँजोर कहैं सतगुरु करि बनि जाओ मतवाला।६।

२४२ ।। श्री अकबाल शंकर जी ।।

पदः- मन तुम नाम से नेह लगाओ।
असुरन का दल पकड़ि बाँधि लो बैठि के मौज उड़ाओ।
ध्यान प्रकाश समाधि में जाय के शुभ औ अशुभ जराओ।
राम सिया की झाँकी सन्मुख हर दम लखि सुख पाओ।
अनहद घट में बाजै प्यारे सुर मुनि संघ बतलाओ।
कहैं अकबाल करो अब सतगुरु तब यह मारग पाओ।६।

२४३ ।। श्री बालक राम जी ।।

पदः- मन तुम नाम सुधा रस ले लो।
सतगुरु करो भेद सब जानो तन मन प्रेम से खेलो।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै सुधि बुधि सब तहँ मेलो।
अनहद सुनो देव मुनि दर्शैं नित दरबार में पेलो।
श्यामा श्याम सामने राजैं शुभ औ अशुभ को बेलो।
बालक राम कहैं तन तजि कै फिर भव दुख नहीं झेलो।६।

२४४ ।। श्री राम जी ।।

पदः- मन तुम पिओ नाम का प्याला।
हर दम मस्त रहौ तब प्यारे टूटै द्वैत क ताला।
सतगुरु करि सब भेद जान लो फेरौ घट में माला।
ध्यान प्रकाश समाधि होय तब मिटै करम गति भाला।४।

घट में अनहद बाजा बाजै धुनि सम कैसी आला।
सुर मुनि आय के दरशन देवैं बोलै बचन रसाला।
नैनन सन्मुख हर दम राजैं सिया औ दशरथ लाला।
श्री राम कहैं अन्त छोड़ि तन चलि बैठो सुखसाला।८।

२४५ ।। श्री बिष्णु दत्त राम जी ।।

पदः- सतगुरु करि निरखौ सन्मुख गोपाल।
नाम कि धुनी ध्यान लय होवै क्या परकाश बिशाल।
अनहद घट में हर दम बाजै सुनिये प्यारी ताल।
सुर मुनि आय पास में बैठें हरि यश बरनैं आल।
नीरज खिलैं चक्र हों बेधन जगै नागिनी हाल।
जियतै मुक्ति भक्ति हो हासिल मिटै करम गति भाल।६।

२४६ ।। श्री प्रिया दत्त राम जी ।।

पदः- सतगुरु करि खेलो सुर मुनि के साथ।
ध्यान समाधि प्रकाश नाम धुनि पाय के होहु सनाथ।
हर दम सन्मुख दर्शन देवैं सिया सहित रघुनाथ।
कठिन कुअंक जांय मिटि सारे बिधि ने लिखा जो माथ।४।

यहां वहां जयकार उठै तब जब हो ऐसा साथ।
चेत करो बिगरी सब सुधरै काहे फिरत अनाथ।
करुणा सिन्धु द्रबैं पल भर में ऐसे दीनानाथ।
या से अब मम कहा कीजिये ख्याल नाम में पाथ।८।

२४७ ।। श्री अफ़ज़ल खां जी ।।

पदः- बेद शास्त्र उपनिषद संहिता औ पुरान का पढ़ना।
सार वस्तु पावैं नहिं बिरथा बाद बिवाद का गढ़ना।
जैसे ढोल के भीतर पोल है ऊपर खाल क मढ़ना।
ठोकर लागि फूटि गा घेरा बे रंग भे दोउ चढ़ना।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानै तब हो आगे बढ़ना।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रूप सामने कढ़ना।६।

मुक्ति भक्ति जियतै में मिलि जाय तन मन प्रेम में लढ़ना।
अफ़ज़ल कहैं अन्त हो हरि पुर छूटि जाय सब पढ़ना।
पढ़ते कुरान बायबिल दिल में रहम नहीं।
मन मानी कर रहे हैं सुख दुःख में कहीं।
अफ़ज़ल कहैं सतगुरु बिना कूचा नहीं मिलै।
हा चश्म गोश बन्द हैं जग जाल में हिलै।१२।

२४८ ।। श्री कमला पत राम जी ।।

पदः- मिलैं सतगुरु बिना प्रिय श्याम नहिं हर वक्त लखने को ।
प्रेम तन मन में भर जावै अमी मिल जाय चखने को।
ध्यान धुनि नूर लय पाकर जगह कर लो तो रखने को ।
सुक्ख जो हो तुम्हीं जानो नहीं ताकत है भखने को ।
होय हासिल नहीं देरी जिसे हो शौक सिखने को।
दीनता शान्ति माता से मिलै जब त्यागि भखने को।६।

२४९ ।। श्री पण्डित बिचार दत्त जी ।।

बार्तिकः- आगे हमारे कुल में ऋषि मुनि और उनकी पत्नियां सब फूस की कुटियों में रहती थीं। अपना निर्बाह बड़े आचार बिचार से करते थे। कन्द मूल फल और अन्न भी सेवन करते थे। भोजन मृतिका के पात्र में बनता था। और कदली, पलाश, बट, साखू, सागौन, बड़हर, बिजय सार, पानी खम्भार और कमल के पत्तों पर परस कर और भोग लगाकर पाते थे। प्रेम से जो कोई अन्न या फल फूल देता था उसे ग्रहण करते थे। वेद पढ़ते और पढ़ाते थे। त्रिकाल स्नान और गायत्री सन्ध्या बन्दन करते थे। श्रद्धा प्रेम से जो कोई भोजन देता है वह भगवान ग्रहण करते हैं। यहां पर बिचार नहीं किया जाता है। भाव का दरजा सब से ऊँचा है। भाव के बिना सब ज़हर है। भाव होने से सब अमृत है। भाव से यदि अन्न चाण्डाल दे तो उसे पा लेना चाहिये। उस से बल और बुद्धि बढ़ती है। कुभाव से यदि ब्राह्मण दे तो उसके ग्रहण करने से बल बुद्धि हीन हो जाती है। यह बचन श्री राम जी ने और श्री कृष्ण जी ने कहा है जिनका सारा विश्व है। जे जन इन बचनों को समझ कर अमल करेंगे वे हमेशा सुखी रहेंगे और जे न मानेंगे वे

अपने कर्मों के अनुसार फल पावेंगे। जब से पक्के मकानों में पढ़ाई होने लगी तब से सब बर्णों का एक साथ में संसर्ग हो गया। सब के संसकारों का एकत्व होने से बिचार आचार बिगड़ गये। पुत्रों ने माता पिता का भाव त्याग दिया। अपने संघ के पढ़ने वालों में अधिक प्रेम भर दिया इसी से हमारा भारत देश बिगड़ गया। परन्तु अब समय आ रहा है थोड़े ही दिनों में फिर सुधरेगा। मकान सिर्फ वशिष्ठ जी का कीमती पत्थर का श्री अवध पुरी में बना था क्योंकि वे श्री राम चन्द्र जी के कुल गुरु थे।

२५० ।। श्री सिद्ध बाबा जी ।।

पद:- श्री कलियुग की राज है भाई।
शान्ति दीन बनि सतगुरु करिहै सो इनसे बचि जाई।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रोम रोम सुनि पाई।
अनहद सुनै देव मुनि भेटैं अमी पियै सुखदाई।४।

सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख दें छबि छाई।
नागिन जगै चक्र षट घूमैं सातौं कमल खिलाई।
हर दम मस्त चहै तहँ डोलै सब में समता आई।
अन्त त्यागि तन राम धाम ले फेरि न जग चकराई।८।

पद:- सतयुग त्रेता द्वापरहु, श्री कलि सम नहि जान।
थोड़े समय में जात मिलि, मुक्ति भक्ति का दान।।

पद:- समय न मिलिहै ऐस, सतगुरु करि सुमिरन करौ।
छूटै भव का रैस, चलि साकेत में पग धरौ।।

२५१ ।। श्री दुख हरन दास जी ।।

पद:- जयति जयति रामो संग सीता आदि शक्ती।
जयति जयति कृष्णो बाम दिशि राधिका जी।
जयति जयति बिष्णू लक्षिमी बाम अंगे।
जयति जयति शम्भू संग गिरिजा भवानी।
जयति जयति ब्रह्मा शारदा संग बिराजैं।५।

जयति जयति गणपति सरस्वती संग देवी।
जयति जयति सुरपति संग रमणी शची हैं।
जयति जयति भरथै संग में माण्डवी जी।
जयति जयति लखनै उर्मिला संग राजैं।
जयति जयति रिपुहन संग श्रुतिकीर्ति सोहैं।

जयति जयति श्री ध्वज संग सोहैं सुनयना।
जयति जयति नल जी संग प्यारी दमन्ती।
जयति जयति अत्री अनसुइया संग भार्या।
जयति जयति कर्दम देवहुती संग सुशोभित।
जयति जयति कपिलो सिद्धन में शिरोमणि।

जयति जयति नारद राम यश गान करता।
जयति जयति श्री शुक परम हंस तत्व ज्ञाता।
जयति जयति सनकादिक ज्ञान सागर।
जयति जयति नवयोगेश्वर तत्व ज्ञानी।
जयति जयति काली काल को काल करनी।

जयति जयति दुर्गा दुःख दारिद्र हरनी।
जयति जयति ज्वाला लाल चोला अमोला।
जयति जयति षटमुख असुर तारक हनन्ता।
जयति जयति हनुमत राम सीता के प्यारे।
जयति जयति भैरव बीरभद्रो समेता।

जयति जयति कश्यप आदिती बाम भागे।
जयति जयति मनुजी संग सतरूपा रानी।
जयति जयति दशरथ संग में कौशिला जी।
जयति जयति सूर्य्यै जक्त तम नाश करता।
जयति जयति चन्द्रै जक्त देते सुधा नित।

जयति जयति लोमश सर्वदा निज स्वरूपं।
जयति जयति कागा बाल हरि रूप संगी।
जयति जयति गरुड़ै बिष्णु श्री कृष्ण बाहन।
जयति जयति शेषै धरणि शिर भार धारी।
जयति जयति पृथ्वी सर्ब दुख सुख सहन्ती।

जयति जयति वरुणै सर्व जीवन के जीवन।
जयति जयति वायू आप सब में रमे हौ।
जयति जयति पावक सब के भीतर औ बाहर।
जयति जयति गगनै आप हो शामियाना।
जयति जयति धन पति देवतन के खजानची।४०।

जयति जयति तारा गण आप सब की चमक क्या।
जयति जयति भीषम अस्त्र हरि कर गहायो।
जयति जयति बसुदेव संग में देवकी जी।
जयति जयति नन्दै संग सोहैं यशोमति।
जयति जयति जयति सेबरी भक्ति तब है बखानी।४५।

जयति जयति द्रुपदी कृष्ण तब चीर बनिगे।
जयति जयति गज गीध हरि धाम बासी।
जयति जयति कर्मा श्री जगदीश प्रेमी।
जयति जयति जयदेव संग पद्मावती जी।
जयति जयति सधनै हाथ कटिगे औ प्रगटे।५०।

जयति जयति प्रहलाद ध्रू जग बिख्याता।
जयति जयति रैदास कबीर कमाल हरिजन।
जयति जयति पीपा संग सीता पतिब्रता हैं।
जयति जयति श्री राघवानन्द रामानन्दै।
जयति जयति स्वामी शंकराचारय और बुद्धै।५५।

जयति जयति तुलसी दास सूरदासै।
जयति जयति गोरख श्री गुरू नानक।
जयति जयति दादू सुन्दर श्री जग जीवन।
जयति जयति रामानुजाचार्य्य भक्त हरि के।
जयति जयति श्री गौराङ्ग प्रेम मूरति।६०।

जयति जयति श्री नित्यानन्द बाल रूपं।
जयति जयति श्री अनन्तानन्द योगानन्दै।
जयति जयति श्री नरहरियानन्द सुखानन्दै।
जयति जयति श्री भावानन्द गालवानन्दै।
जयति जयति श्री सुरसुरानन्द श्येन भक्तै।६५।

जयति जयति श्री धना बिन बीज खेत जाम्यौ।
जयति जयति श्री ज्ञानेश्वर नामदेवै।
जयति जयति श्री निबृत्तनाथ सोपान देवै।
जयति जयति श्री मुक्ता बाई चाङ्ग देवै।
जयति जयति ईसा दीनता औ दयामय।७०।

जयति जयति पैग़म्बर मुहम्मद औ मुस्तफ़ा जी।
जयति जयति फ़ातिमा श्री करोमियां जी।
जयति जयति चिश्ती श्री निजामुद्दीन औलिया।
जयति जयति रंका संग बंका भगौती।
जयति जयति अन्नपूर्णा अष्ट सिद्धी नव निद्धी।७५।

जयति बिक्रम कर्ण औ धर्म राजै।
जयति जयति अर्जुन भीम सहदेव नकुलै।
जयति जयति कुन्ती मन्दोदरी अहिल्या तारा।
जयति जयति कुब्जा गणिका और त्रिजटा।
जयति जयति सुरसा शूर्पनखा औ लंकिनी।८०।

जयति जयति पूतना श्री कृष्ण को कुच पिआयो।
जयति जयति रावण कुम्भकर्ण मेघनादै।
जयति जयति सुलोचना पति संग देह जारयो।
जयति जयति भीषम सुग्रीब अंगद जामवन्तै।
जयति जयति नल नील दधि बल गव गवाक्षौ।८५।

जयति जयति दुबिदै औ मयन्दौ महाभट।
जयति जयति त्रिशिरा खरदूषण और सुबाहू।
जयति जयति मारीच कालनेमि औ कबन्धै।
जयति जयति महिरावण बालि महारावण।
जयति जयति शिशुपाल कंस दन्त बक्रै।९०।

जयति जयति तारक रक्त बीज मधुकैटभ।
जयति जयति जरासिन्धु महिषासुर औ जलन्धर।
जयति जयति कुबलिया अघासुर औ बकासुर।
जयति जयति हिरण्याक्ष औ हिरण्यकश्यप।
जयति जयति जय औ बिजय बैकुण्ठ द्वारपालक।९५।

जयति जयति द्रोण और द्रोणी दुर्योधन।
जयति जयति बावन नित बलि को देत दर्शन।
जयति जयति शूकर मही असुर मारि थाप्यो।
जयति जयति नर हरि भक्त प्रह्लाद रक्षक।
जयति जयति कच्छप दोउ भक्तन सुधारयो।१००।

जयति जयति मच्छव जलधि शंखासुर हतैया।
जयति जयति कच्छप शेष तुम पर चढ़े हैं।
जयति जयति दिग्गज धरणि शिर जल खड़े हैं।
जयति जयति बाराह अवनि आपौ हौ थाम्हे।
जयति जयति नन्दी मूष सिंहै मयूरै।१०५।

जयति जयति हंसै श्वान भैरव के बाहन।
जयति जयति खर स्यार कागा औ महिषा।
जयति जयति रघुबंश कुल गुरु वशिष्ठै।
जयति जयति यादव कुल गुरु घोर अंगिरस।
जयति जयति सब अस्त्र सब बस्त्र भूषण।११०।

जयति जयति अष्टाङ्ग योग हठ योग राजयोगै।
जयति जयति चारिउ बेद आयुर्वेद षट शास्त्रै।
जयति जयति श्री उपनिषद और संहिता।
जयति जयति अठारह पौराण महाभारथै।
जयति जयति श्री बालमीकी वशिष्ठ योगै।११५।

जयति जयति श्री भागवत देवी भागवत।
जयति जयति गीता श्री हरि मुख कि बानी।
जयति जयति मानस शम्भु उर में समानी।
जयति जयति सुख सागर प्रेम सागर।
जयति जयति श्री गीत गोबिन्द राधा अष्टक।१२०।

जयति जयति श्री बृज बिलास बिश्राम सागर।
जयति जयति श्री कृष्ण गीतावली रुक्मिणी मंगल।
जयति जयति श्री बिनय पत्रिका जानकी मंगल।
जयति जयति श्री कवित्त रामायण दोहावली जी।

जयति जयति श्री राम नाम कलामणि कोष मंजूषा
गीतावली जी।१२५।

जयति जयति श्री हनुमान नाटक हनुमान बाहुक।
जयति जयति श्री हनुमान चालीसा हनुमान साठिका।
जयति जयति श्री बजरंग बाण हनुमान पंचक।
जयति जयति श्री पंच मुखी एक मुखी हनुमान पताका।
जयति जयति श्री हनुमान दुर्ग हनुमान जंजीरा।१३०।

जयति जयति श्री बायबिल कुरान भिश्त देनी।
जयति जयति सब मंत्र स्तोत्र सारे।
जयति जयति सब तंत्र औ यंत्र प्यारे।
जयति जयति सब दिन सब तिथि सब महीना।
जयति जयति सब ग्रह सब राशि सब महूरत।१३५।

जयति जयति सब नक्षत्र सब समय सब दिशन का।
जयति जयति सब सम्बत और शाके।
जयति जयति सब सन ईस्वी और फ़सली।
जयति जयति विद्या सब लोकन देश ग्रामन।
जयति जयति अमृत बिष सर्व अन्ने।१४०।

जयति जयति श्री समर्थ राम दासै।
जयति जयति श्री बालमीक और ब्यासै।
जयति जयति नरसी तुकाराम एकनाथै।
जयति जयति रहिमन आलम और खुसरु।
जयति जयति मीरा गणिका और कुब्जा।
जयति जयति सुर मुनि सर्व शक्ती औ सृष्टी।१४६।

२५२ ।। श्री लगन शाह जी ।।

पदः- करौ सतगुरु लखौ नयनन तुम्है हम सत्य बतलाते।
श्री गीता श्री मानस को सुर मुनि नित्य है गाते।
पाठ पूजन करैं जे जन जांय मिलि तौन दोउ माते।
लगावैं हर्षि के उर में करें फिर प्रेम से बातें।

मिलै हरि धाम क्या चौथा जहां बहु जीव सुख पाते।
पाय नर तन बृथा खोया वही फिर अन्त पछिताते।६।

उन्है यमपुर में हो जाना बदन कीड़े सदा खाते।
न पल भर कल मिलै भाई हौज गहिरे औ गन्धाते।
जांय नीचे फेरि ऊपर सांस लेने में अकुलाते।
देंय शिर पर गदा यम गण जौन ऊपर हैं उतराते।
कष्ट सहने के हित तन है छूटि सकते नहीं ताते।
करैं तन मन लगा सुमिरन तौन फिर जग में नहिं आते।१२।

२५३ ।। श्री झँडूले शाह जी ।।

पदः- लोक तीर्थ व्रत देश ग्राम गीता मानस के पग धरते।
बेद शास्त्र उपनिषद संहिता औ पुराण स्तुति करते।
सुर मुनि आरति साज उतारैं प्रेम से नैन नीर झरते।
श्री माता श्री माता कहि कहि मुर्च्छित ह्वै मही पर गिरते।४।

होश में आय उठैं हर्षित ह्वै तन मन रूप कि छवि भरते।
सतगुरु करैं लखैं ते कौतुक उनके सारे दुख टरते।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय पाय जयति जग से तरते।
सिया राम प्रिय श्याम सामने हर दम निज झाँकी ठरते।८।

दोहाः- शान्ति दीनता लेय गहि, निज को देय मिटाय।
सतगुरु करि सुमिरन करै, सो यह मारग पाय।।

२५४ ।। श्री सुस्त शाह जी ।।

चौपाईः- जै श्री सतगुरु अधम उधारन। राम भजन में तन मन वारन।
जै नित्यानन्द जी बलिरामा। आय जगत कीन्ह्यो बहु कामा।
जै रघुनाथ दास सुख दानी। रामानन्द अंश हम जानी।
जै शंकरा चार्य्य शिव रुपं। जगत प्रचारयो चरित अनूपं।
जै रामानुज लखन के अंशं। आय जगत कियो दुख बिध्वंसं।५।

जै कबीर औ श्री रैदासा। सूरति शब्द क भेद प्रकाशा।
जै जग जीवन कोटवा बासी। भजनानन्द रूप गुण रासी।
जै दादू औ सुन्दर दासा। नाम रूप लय मारयो आसा।

जै नानक बिदेह की जोती। जग में नाम क बोयो मोती।
जै गौराङ्ग कृष्ण नट नागर। सोबरन से अति रूप उजागर।१०।

जै श्री रामानन्द नारायन। प्रगटे जगत हेतु सुखदायन।
जै ज्ञानेश्वर हरि अवतारा। जग में कीन्ह्यो चरित अपारा।
जै ईसा दाया की मूरति। गौर बदन अति सुन्दर सूरति।
जै पैगम्बर साहब मुहम्मद। गौर शरीर मजे का है कद।
जै लव कुश सिय राम के लाला। दुष्ट संहारि प्रजहिं प्रति पाला।१५।

जै श्री पृथ्वी जीवन माई। निज आवरन कि फर्श बिछाई।
जै श्री वरुण देव बलवन्ता। जीवन तन मन सुक्ख भरन्ता।
जै श्री पवन देव बलवाना। जीवन का करते कल्याना।
जै श्री अगिनि देव सुखदाई। वस्तु कुवस्तु समान जलाई।
जै श्री गगन बने शाम्याना। जग तब भीतर माहिं समाना।२०।

जै बारह बराह गज चारी। शेष के आप सहायक कारी।
जै आठौ गण सुनिये बाता। कविता देवी के तुम ताता।
जै सब राग ताल सुर ग्रामा। जै अलाप सम धुनि परनामा।
जै सब साज तान गुण सुख जप। जै श्रृंगार छटा छबि लय तप।
जै श्री सत्य धर्म ब्रत नेमा। जै सन्तोष शील औ टेमा।२५।

जय श्री प्रेम पाठ विश्वासा। जै श्री श्रद्धा दया हुलासा।
जय श्री क्षिमा ज्ञान और स्वांसा। जय श्री ध्यान यज्ञ परकासा।
जय श्री मुक्ति भक्ति महरानी। जय श्री रेफ़ बिन्दु सुख खानी।
जय श्री पांच तत्व चारौं तन। जय श्री पांचौं मुद्रा चित मन।
जय अष्टाङ्ग योग हठ योगा। जय श्री राज योग संयोगा।३०।

जय सब साधक सिद्ध सुजाना। जय श्री जीव आतमा प्राना।
जय सब दिन तिथि मास महूरति। जय नक्षत्र ग्रह राशि ज़रूरति।
जय श्री बर्ष लगन पल सूरति। जय मुद मंगल श्यामल मूरति।
जय आशिष प्रणाम नमस्कारा। जय दीनता हरौ दुख भारा।
जय सब घरी भूँख औ प्यासा। जय तरंग त्रिकुटी औ स्वांसा।३५।

जय सब अन्न फूल फल मेवा। जय जहाज नौका औ खेवा।
जय जल चर थल चर औ नभ चर। जय श्री धूप छाँह खुश्की तर।

जय योगिनी बीर बैताला। जय खेचर भूचर क्षेत्र पाला।
जय गन्धर्व यक्ष औ किन्नर। जय संसार के सब नारी नर।
जय सोऽहं औ श्री ओंकारा। जय श्री क्लीं और हुँकारा।४०।

जय सब सम्बत इसवी फ़सली। जय पट भूषण मणि धन असली।
जय षट रितु सब देश शहर पुर। जय सब खण्ड
और द्वीप भुवन फुर।
जय सब दिशा और महिपाला। जय सब सागर सरिता नाला।
जय सब बन गिरि पोखर तलिया। जय सब बापी कूप
औ गलिया।
जय सब लोक वेद गुनवाना। जय बलि रूप बुद्ध भगवाना।४५।

जय सब सुर मुनि दैत्य बखानों। जय सब प्रेत पितर मोहिं मानों।
जय कृपान बर्छी औ भाला। जय सब अस्त्र बने बिकराला।
जय अमृत बिष दूध मिठाई। जय खोया रबड़ी औ मलाई।
जय श्री दही मही घृत मक्खन। जय श्री कन्द मूल तन रक्खन।
जय श्री निद्रा सब श्रम हरनी। जय श्री माया दुख सुख करनी।।

जय धनुचाप बाण तूणीरा। जय शँख चक्र गदा गम्भीरा।
जय श्री मुरली सब की प्यारी। जय प्रिय श्याम सर्व सुख कारी।५२।

२५५ ।। श्री सूर शाह जी ।।

पदः- सतगुरु करै जप बिधि सिखै तब जीव फिर मंजूर हो।
परकाश ध्यान समाधि धुनि होवै हमेशा दूर हो।
अनहद सुनै अमृत पियै सुर मुनि मिलैं कहि सूर हो।
हर दम रहैं सिय राम सन्मुख छबि छटा से पूर हो।४।

दीनता औ शान्ति गहि जब छोड़ि दे मगरुर हो।
तन मन कि होवै एकता तब प्रेम में वह चूर हो।
असुरों क दल होवै बिदा शिर करके नीचा हूर हो।
तन त्यागि निज घर को चलै बाजै बिजय का तूर हो।८।

पदः- राम नाम मन से जपो, जमा होय तब बित्त।
बाहर फेंके से कभी, शान्त होय नहिं चित्त।।

२५६ ।। श्री लंगड़ी माई जी ।।

पदः- जे जन बसैं मिथिला नगर।
जाप बिधि सतगुरु से जानै मिलै तब सुख डगर।
ध्यान धुनि परकाश लय हो मिटै असुरन रगर।
सुनै अनहद मिलैं सुर मुनि चखै अमृत गगर।
सामने सिय रहैं हर दम परै प्रेम क लंगर।
अन्त तन तजि लेहिं निजपुर छोड़ि जग जिमि कगर।६।

(२)

पदः- बिहरत श्री जनक लली सखिन संग बिहार सर।
दिब्य नाव जगमगात घूमत सर में दिखात उठत शब्द छर।
बरनै को छबि अपार शारद औ शेष हार जिन सम को कर।
सुर मुनि नभ रहे छाय जय जय की धुनि सुनाय गिरत फूल फर।
सतगुरु करि लखौ भाय तन मन तब तो जुड़ाय करते क्यों बर।
ध्यान धुनी लय प्रकाश जियतै लहि होहु पास
आखिर तन त्यागि जाव अपने चलि घर घर घर।६।

२५७ ।। श्री अबदुल रहिमान शाह जी ।।

पदः- सतगुरु से जप बिधिं जान ले सिय राम दें दरशन सफ़ा।
धुनि ध्यान लय परकाश हो जियतै में पूरी ले नफ़ा।
सुर मुनि मिलैं अनहद सुनै अमृत चखै छूटै दफ़ा।
माया असुर यमदूत सूत न आ सकैं होवैं रफ़ा।
मन से बचन से दीन बनि मति हो किसी पर तुम खफ़ा।
अन्त तन तजि घर चलो मिटि जाय जग की तब हँफ़ा।६।

२५८ ।। श्री कृष्ण भगवान की मुरली ।।

पदः- मैं तो श्री हरि के प्रेम में पागी।
हरि बिधि हर ने मोहिं बनायो जे हरि के अनुरागी।
दिब्य रहौं टूटौं ना फाटौं ना कबहूँ हों दागी।
हरा रंग मम तन में शोभित सात छिद्र बड़भागी।
कबहूँ हरि के कर में राजौं कबहूँ अधर पै लागी।५।

कबहूँ बग़ल कबहूँ रहौं कछनी शयन शीश तरे छांगी।
विश्व तान सुनि मोहि जात सब तन मन एक में तागी।
रेखा रूप से हरि के चरन में हर दम मैं रहौं चाँगी।
हरि का नाम बीज तन ब्याप्यो सकत न नेकौं खाँगी।
ध्यान प्रकाश समाधि आय कर लें नित आशिष माँगी।१०।

हरि सुमिरन बिन तन जो खोवैं ते जानो भे बागी।
नर्क में पल भरि कल नहिं पावैं सहैं यमन की साँगी।
नर नारी सतगुरु करि हरि भजि जियति जाव अब जागी।
अन्त त्यागि तन हरि ढिग बैठो छूटै भव की आगी।
शांति दीनता प्रेम बिना नहिं छूटै द्वैत कि टाँगी।
चेतौ गर्भ कि बात न भूलौ भखे रहै जो हाँगी।१६।

२५९ ।। श्री सदायार खां जी पठान ।।

(मुकाम शाहाबाद)

पदः- राम सीता श्याम श्यामा सामने में छा रहे।
सतगुरु करौ हर दम लखौ हम सच तुम्हें बतला रहे।
धुनि ध्यान लय परकाश हो जहँ अमित भानु लजा रहे।
अमृत पिओ अनहद सुनो सुर मुनि मिलन हित आ रहे।४।

साज निज निज कर लिये हरि नाम का यश गा रहे।
कण्ठ गद्गद तन सुलक से नयन नीर बहा रहे।
तन मन कि करिकै एकता जे जियत में सुख पा रहे।
अन्त तन तजि चढ़ि सिंहासन पास पग के ना रहे।८।

२६० ।। श्री जय किशुन भाट जी ।।

(मुकाम मलिहाबाद)

पदः- भजिये राम नाम मुद मंगल।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानौ जियतै जीतौ दंगल।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि में तन मन चित रंगल।
राम सिया प्रिय श्याम सामने छूटि जाय जग जंगल।४।

२६१ ।। श्री बलवन्ती माई जी ।।
(मुकाम संडीला)

पदः- कीजै बास द्वारा वती।
जाप बिधि सतगुरु से लीजै ठीक हो तब मती।
ध्यान धुनि परकाश लय हो जहां सुधि नहिं रती।
चखौ अमृत सुनौ अनुहद मिलैं सुर मुनि अती।४।

छटा छबि श्रृंगार सन्मुख रहैं त्रिभुवन पती।
अन्त तन तजि चलो प्रभु पुर जियति बनि लो सती।
दीनता औ शान्ति गहि जो कर्म डारै हती।
कहै बलवन्ती गुनो चित तब तो होवै गती।८।

२६२ ।। श्री किशोरी माई जी ।।
(मुकाम शाहजहाँपुर)

पदः- लीजै राम नाम की हुंडी।
सतगुरु करि जप की बिधि जानो अजा भागि जाय गुंडी।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि छूटै तन मन घुंडी।
सुर मुनि मिलैं सुनो घट अनहद पिओ अमी भरि कुंडी।
गणपति मोदक नित्य खिलावैं फेरैं शिर पर शुंडी।
तिरभंगी झांकी रहै सन्मुख जग त्यागौ जिमि झुंडी।६।

२६३ ।। श्री जगन्नाथ कुँवरि जी ।।

पदः- साधन राम नाम का कीजै।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानि के तन मन प्रेम में दीजै।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रग रोवन सुनि लीजै।
अनहद बजै देव मुनि दर्शैं अमृत टपकै पीजै।
हर दम राम सिया रहैं सन्मुख द्वैत दूर धरि दीजै।५।

अन्त त्यागि तन राम धाम ले जो इस रंग में भीजै।
यह तन सुरन को दुर्लभ जानो बृथा न आयू छीजै।
या से बैन मानि नर नारी बोय लेहु यह बीजै।
यम गण तुम्हैं देखि कर भाजैं कर पर धरि कर मींजैं।
या बिधि के बिन मिलै न छुट्टी फँसे रहौ भव तीजै।१०।

२६४ ।। श्री बृषभान कुँवरि जी ।।

पदः- कीजै सिद्ध राम का नाम।
सतगुरु से सुमिरन बिधि जानो सुफ़ल होय नर चाम।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि होवै बसु औ याम।
अनहद सुनो पिओ घट अमृत सुर मुनि मिलैं तमाम।
सन्मुख रहैं न अन्तर होवैं सिया राम प्रिय श्याम।
अन्त त्यागि तन राम धाम में बैठि करौ बिश्राम।६।

२६५ ।। श्री भजनी माई जी ।।

पदः- भजिये राम नाम सुख दाई।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो छूटै तन मन कांई।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रग रोंवन खुलि जाई।
सुर मुनि मिलैं सुनौ घट अनहद पिओ अमी हर्षाई।
नागिन जगै चक्र षट बेधैं सातौं कमल फुलाई।५।

पांचों तत्व के रंग लेव लखि स्वरन ते महक उड़ाई।
मुद्रा आसन तीरथ ब्रत सब करैं नित्य सेवकाई।
हर दम नैनन सन्मुख राजैं सिया सहित रघुराई।
शान्ति दीनता प्रेम से सब जन.कीजै यही कमाई।
अन्त त्यागि तन निज पुर बैठो छूटै गर्भ झुलाई।१०।

२६६ ।। श्री मती माई जी ।।

पदः- तन मन नाम क बीज जमाओ।
सतगुरु से किसनई जान लो बृथा न वैस गँवाओ।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रग रोंवन सुनि पाओ।
सुर मुनि मिलैं बजै घट अनहद अमी चखौ हर्षाओ।४।

नागिन जगै चक्र षट बेधैं सातों कमल खिलाओ।
निर्भय औ निर्बैर जियति बनि हरि यश जग फैलाओ।
राम सिया की झाँकी सन्मुख हर दम निज में छाओ।
अन्त त्यागि तन राम धाम लो गर्भ में मति फिर आओ।८।

२६७ ।। श्री मियां मक्खी चूस जी।।

पदः- एकै परम्परा सब केरी।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो काहे करते देरी।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय होय कटै दुख बेरी।
अनहद सुनो पिओ घट अमृत मिलैं देव मुनि टेरी
कमल खिलैं चक्कर सब बेधैं नागिनि जागै तेरी।५।

सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि रहे सामने हेरी।
सूरति शब्द क भजन सही है गुनो बिनय यह मेरी।
तन के असुर हारि सब बैठैं अजा जाय ह्वै चेरी।
मुद मंगल तब जियतै होवै बिजय कि बाजै भेरी।
अन्त त्यागि तन अचल धाम लो छूटै गर्भ कि फेरी।१०।

दोहाः- सन्त क भेष बनाय के, यहां कमाते पाप।
अन्त जाय कर नर्क में, सहैं महा दुख ताप।।

२६८ ।। श्री पण्डित पञ्चानन जी ।।

पदः- जे जन बसैं सीता मढ़ी।
जाप बिधि सतगुरु से जानै असुर जावैं कढ़ी।
ध्यान धुनि परकाश लय हो जीति ले तब गढ़ी।
पियै अमृत सुनै अनहद देंय सुर मुनि बढ़ी।४।

दिब्य ग्रन्थन भवन हरि पुर देखि आवैं पढ़ी।
हर समय सन्मुख लखैं सिया सुभग यान पै चढ़ी।
तन मन कि करिकै एकता जे जियति लें सब लढ़ी।
अन्त तन तजि लेहिं निज पुर छोड़ि जग जिमि दढ़ी।८।

(२)

पदः- जे जन बसैं नन्दी ग्राम।
जाप बिधि सतगुरु से जानै सुफ़ल हो नर चाम।
ध्यान धुनि परकाश लय हो मिलैं सुर मुनि आम।
पियै अमृत सुनै अनहद बजत जो बसुयाम।

भरथ रिपुहन की छटा सन्मुख रहै सुखधाम।
अन्त तन तजि जाहि निज पुर को सकै फिर थाम।६।

२६९ ।। श्री शिव जी की झोरी जी ।।

पदः- मैं तो श्री शिव के अमल कि झोरी।
चार खूँट लागी दुइ गाँठी सकत न कोई छोरी।
दिब्य रहौं नेकौं नहिं फाटौं श्वेत वरन छबि मोरी।
राम सिया ने मोहिं प्रकट करि दीन्ह शिवहिं बरजोरी।
भंग मिर्च औ सौंफ़ कासनी बिष उपबिष इकठौरी।५।

कूड़ी सोंटा दिब्य श्याम रंग साफ़ी रंग कि धौंरी।
कबहूँ स्वयं आप हैं घोटत कबहूँ उमा बरजोरी।
कबहूँ गणपति कबहूँ षड़ानन कबहूँ सरस्वती भोरी।
कबहूँ भैरव जी की बारी बीर भद्र दै घोरी।
साफी धरि छानै बरतन में गहि गड़बड्डु दियोरी।१०।

थोड़ी देर के बाद भंग का फेना शान्त भयोरी।
मन में सुमिरि राम सीता को शिव ने ध्यान कियो री।
छबि श्रृंगार छटा को बरनै प्रगट के पाय लियोरी।
गंगा जी को फेरि देंय शिव भरि कै दिब्य कटोरी।
मैं परिवार के आप पियैं फिरि आनन्द हिये हिलोरी।१५।

गण बाहन व्यालन औ बिच्छुन मन भर खूब पियोरी।
दोनो समय होत यह लीला सुनो बचन नर गोरी।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानै लागै तन मन डोरी।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै जो भव बन्धन तोरी।
अमृत पियै सुनै घट अनहद मिलैं देव मुनि दौरी।२०।

सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि निरखैं हँसि मुख ओरी।
नागिन जागि लोक दिखलावै चक्र चलैं सुख सोरी।
कमल फूलि कै देंय सुगन्धी वायू पंखा ढोरी।
जियतै में सब करतल करि ले तब मुद मंगल होरी।२४।

२७० ।। श्री शिव जी का डमरु बाजा जी ।।

पदः- मैं तो श्री शिव के कर का बाजा।
डमरु नाम विश्व सब जानत डिम डिम करत अवाजा।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो जियति लेहु सब साजा।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि पाय जाव बनि राजा।४।

सुर मुनि मिलैं सुनो घट अनहद पिओ अमी रस ताजा।
सन्मुख राम सिया की झाँकी कबहूँ न होय अकाजा।
उमा रमा शारदा आय कर नित्य पवावैं खाजा।
अन्त त्यागि तन राम धाम लो जग छूटै जिमि छाजा।८।

२७१ ।। श्री शिव जी का त्रिशूल जी ।।

पदः- मैं तो श्री शिव जी का तिरशूल।
हरि ने मोहिं प्रकट करिकै फिर शिवहिं दीन दै रूल।
दुष्टन के संघार करन में या को मानौ मूल।
शिव ने अज्ञा मानि लीन मोहिं सकै कौन करि तूल।
उन्हीं का संघार करौं मैं जे प्रभु के प्रतिकूल।५।

हर दम रक्षा उनकी राखौं धर्म के जे अनुकूल।
कर में शिव के हलुक रहौं अस जिमि कोइ छोटा फूल।
जा के ऊपर छोड़ि देहिं मोहिं ताहि देउँ चट हूल।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानै जियति मिटै भव गूल।
अन्त त्यागि तन निज पुर बैठै फेरि गर्भ नहिं झूल।१०।

२७२ ।। श्री शिव जी का श्रृंगी बाजा जी।।

दोहाः- सिंगी कहे शिव को भजे सिया राम मिलि जांय
ध्यान धुनी परकाश लय, सुर मुनि दर्शै आय।
अनहद बाजै सुनो घट, अमृत पिओ अघाय।
अन्त त्यागि तन चलो घर, आवागमन नशाय।
राम सिया का भोग जब, शिव जी होहिं लगाय।
साधि दोऊ कर अधर धरि, तब मोहिं देहिं बजाय।६।

२७३ ।। श्री रँगौटे शाह जी ।।

पदः- भक्त क भेष कर्म करैं खोंटे।
कोइ मुण्डित कोइ झुण्डित रहते कोइ दूबर कोइ मोटे।
पर धन पर नारी पर धरनी छल बल ते करैं गोटे।
डाका मारै करैं दलाली सेंधि काटते चोटे।
अन्त समय यमदूत आय कर मुख पर देंय चपोटे।५।

प्राण निकारि चलैं लै यमपुर मग में करत खसोटे।
लै इजलास पै हाजिर करते दोउ कर रहैं दबोटे।
पेशी होय बोलि नहिं पावैं भूलैं बचन बनौटे।
हाथ हथकड़ी पाँवन बेड़ी डारि लगावैं सोंटे।
हाय हाय कहि कहि चिल्लावैं संग न देत संगोटे।१०।

लै कराह में फेरि बिठावैं तप्त तेल जांय औंटे।
चुरैं जलैं अति दुःख कहै को नेक न पावैं बौटे।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जाना ते नहि जग में लौटे।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि जियतै जानि अँगोटे।
अनहद सुनै पियै घट अमृत सुर मुनि कहैं सफ़ौटे।१५।

नागिनि जागि जाय सीधी ह्वै चक्र चलैं भन्नौटे।
उड़ै गमक जब खिलैं कमल सब एकै नाल जमौटे।
सन्मुख राधे कृष्ण बिराजैं छम छम बाजैं पौटे।
तिरगुन की लर छूटि टूटि गइ अब किमि कौन गंजौटे।
अन्त त्यागि तन निज पुर बैठे कहते शाह रंगौटे।२०।

२७४ ।। श्री धमसा माता जी ।।

पदः- धमसा कहैं सुनो सुत जग में बीज मन्त्र ही सार कहावै।
सतगुरु करि जप भेद जानि ले जियतै नर तन का फल पावै।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रग रोवन हर शै से सुनावै।
सुर मुनि मिलैं अमी रस चाखै अनहद बिमल बजै मन भावै।४।

नागिन जगै चक्र सब घूमैं कमल फूलि के महक उड़ावैं।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख आय छटा छवि छावैं।

दही दूध रबड़ी औ मलाई बिन्ध्य बासिनी नित्य पवावैं।
अन्त छोड़ि तन अचल धाम ले फेरि गर्भ में काहे क आवै।८।

२७५ ।। श्री बिन्ध्यबासिनी जी ।।

पदः- बिन्ध्यबासिनी कहैं सुनो सुत सतगुरु बचन बड़ा सुखदाई।
करि विश्वास गहै जो प्रानी सो भव से जियतै बिलगाई।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रग रोंवन से होत सदाई।
अमृत पियै सुनै घट अनहद सुर मुनि मिलैं दौरि चिपकाई।४।

राम सिया प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख रहैं हटैं नहिं राई।
नागिन जगै चक्र सब बेधैं कमल खिलैं क्या महक उड़ाई।
श्री काली जी लाय खिलावै भांति भांति की रोज मिठाई।
अन्त त्यागि तन चलि साकेत में बैठि जाय सब आस नसाई।८।

२७६ ।। श्री पाटेश्वरी माता जी ।।

पदः- पाटेश्वरी कहैं सुनिये सुत सतगुरु बिन भव तरै न कोई।
भजन के जौन सिंगार कहावत सो तो निकट न आवत कोई।
शान्ति शील सन्तोष दीनता सरधा छिमा दया नहिं होई।
सत्य धर्म विश्वास प्रेम औ भाव गया भीतर में खोई।
तन मन अजा असुर बस कीन्हो कैसे नाम बीज कोइ बोई।५।

या से जानि बूझि सतगुरु करि पाप ताप डारै सब धोई।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय जाय तहां पर सुख से सोई।
सुर मुनि मिलैं सुनै घट अनहद पियै अमी रस सुरति मिलोई।
नागिनि जागै चक्र सब बेधैं खिलैं कमल रंग तत्व बिलोई।
सन्मुख राम सिया छबि छावैं जाय त्यागि तन आस निचोई।१०।

२७७ ।। श्री हुल्का माता जी ।।

पदः- हुलका कहैं सुनो सुत चित दै बीज मन्त्र है सब सुख कारी।
सतगुरु करि सुमिरै जो प्राणी सो जियतै निज काज सँवारी।
रं रं रं धुनि नाम कि होवै ध्यान प्रकाश समाधि सिधारी।
अमृत पियै सुनै घट अनहद सुर मुनि मिलैं कहैं बलिहारी।४।

नागिन जगै चक्र सब नाचैं फूलैं कमल महक दें प्यारी।
सियाराम प्रिय श्याम कि झाँकी सन्मुख रहै न होवै न्यारी।
अष्ट भुजा नित लाय खिलावैं पेड़ा बर्फी जल भरि झारी।
अन्त त्यागि तन अचल धाम ले भव का दुख दे लात से टारी।८।

२७८ ।। श्री अष्ट भुजा माता जी ।।

पदः- अष्ट भुजा कहैं सुनो पुत्र है बीज मंत्र सब सुख का दाता।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानै तब प्रानी करतल करि पाता।
रंरंरं धुनि होत अखण्डित ध्यान प्रकाश समाधि में जाता।
अनहद सुनै पियै घट अमृत हरि यश सुर मुनि संघ बतलाता।४।

नागिनि जगै चक्र हों चालू खिलैं कमल क्या महक उड़ाता।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख निरखि निरखि हरखाता।
निर्भय औ निर्बैर जियति ह्वै अधिकारिन को मार्ग बताता।
अन्त त्यागि तन राम धाम चलि बैठि जाय फिर गर्भ न आता।८।

२७९ ।। श्री जय कुमार सिंह जी ।।

पदः- भजिये महा मंत्र सुख दाई।
मेटत कठिन कुअंक भाल के सुर मुनि सब बतलाई।
सतगुरु करै मिलै तब मारग सब में वही सुनाई।
रं रं की धुनि होत अखण्डित रेफ़ बिन्दु कहलाई।
उत्पति पालन परलय करता ध्यान प्रकाश दिखाई।५।

अनहद नाद सुनाय अमी रस घट में देत पिआई।
पहुँचि समाधि में बैठि जाय जब सुधि बुधि वहां भुलाई।
मुनि देवन के दर्श करावै तन मन प्रेम मिलाई।
नागिनि को जागृत करिकै सब लोकन देत घुमाई।
षट चक्कर बेधन करि कै फिरि सातों कमल फुलाई।१०।

भाँति भांति की देत सुगन्धी तब रंग चमकाई।
अजा चोर जो करत परिक्षा सब को शान्त बनाई।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि देत सामने छाई।
निर्भय औ निर्बैर देत करि कौन तुम्हे धमकाई।

तन छोड़ाय साकेत जात लै आवागमन छोड़ाई।
जय कुमार कह बिनय मानि मम गुनिये सत्य लिखाई।१६।

२८० ।। श्री कमल सिंह जी ।।

पदः- भजिये मंत्र परम लघु भाई।
बिधि हरि हर बश रहत जासु के सुर मुनि सब रहे ध्याई।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो छूटै भव की काई।
सब में ब्यापक सब से न्यारो रेफ़ बिन्दु कहलाई।
रं रं रं धुनि हर दम होती रोम रोम भन्नाई।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै जहँ सुधि जात हेराई।६।

सुर मुनि मिलैं सुनै घट अनहद पियै अमी हरखाई।
नागिनि जगै चक्र सब बेधैं कमल खिलैं फर्राई
उड़ै तरंग मस्त हो तन मन मुख ते बोलि न आई।
पांच प्राण एक ठौर जाँय ह्वै सुखमन घाट नहाई।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख दें छबि छाई।
छोड़ि शरीर जाय साकेतै कमल सिंह कहैं गाई।१२।

२८१ ।। श्री पं. प्रभू दत्त ब्रह्मचारी जी ।।

(मुकाम बाँगरमऊ, जिला उन्नाव)

पदः- भरत लखन रिपु दमन लाल को श्री सिय राम नाम की जाप बतायो।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रग रोंवन सुनि हिय हर्षायो।
ताल बिमल अनहद की खुलि गई सुर मुनि आय के शीश नवायो।
अमृत पाय मस्त भे ऐसे कहत बनै नहिं जो सुख आयो।
नागिनि जगी चक्र सब बेधे कमल फ़ूलि अति महक उड़ायो।५।

सुखमन स्वांस विहंग मारग ह्वै निज घर जाय देखि सब आयो।
दिब्य रूप ते राम सिया संग सब के सन्मुख में छबि छायो।
सतगुरु करि जप की बिधि जानो सब के हित मैं यह पद गायो।
बाजी जीत गयो सो जग ते जो तन मन को प्रेम में तायो।
परभू दत्त कहैं दुर्लभ तन पाय बृथा मति स्वांस गवाँयो।

बार्तिकः- पहिले सीताजी ने शिव जी को जप का भेद बताया फिर हनुमान जी को बताया फिर लंका में मंदोदरी को बताया। श्री सीता जी ने श्री श्रुति कीर्ति जी, श्री माण्डवी जी और श्री उर्मिला जी को यही उपदेश दिया। यह उपदेश राजगद्दी के दस दिन बाद सब को किया गया फिर बारह हजार सखा जो श्री राम जी के साथ अवतरित हुए थे, उन्हें दिया गया। वे सब इस पद के अधिकारी हो गये। फिर दस हजार सखी महारानी जी के साथ जनकपुर में अवतरित हुईं ब्राह्मण क्षत्री वैश्य के घर उनको बताया।

२८२ ।। श्री राम जी का तरकस जी ।।

पदः- मैं तो श्री हरि के सरन क तरकस।
हर दम भरे रहैं शर मम तन बड़े तेज औ करकस।
हरि मोहिं पीठि के ऊपर राखैं रेशम डोरि से जरकस।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि लेवै सो सब जानै भरकस।४।

ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि मिटे दुःख भव डर कस।
सन्मुख राम सिया छबि छावैं दुष्ट देंय तजि अरकस।
अमृत पियै सुनै घट अनहद मिलैं देव मुनि धरकस।
अन्त त्यागि तन राम धाम ले फेरि गर्भ में परकस।८।

२८३ ।। श्री राम जी के बाण जी ।।

पदः- हम तो श्री राम के सर कहवावैं।
एक ते होंय अनेक देर नहिं मंत्र जोर जब पावैं।
दुष्टन का संघार देंय करि नेक देर नहिं लावै।
मोर सर्प पावक औ पानी वायू खूब चलावैं।
मोहि लेंय सब कटक जाय कर शान को धूरि मिलावैं।५।

जांय संदेश कहन कहि लौटैं आय के हाल बतावैं।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानै सो जियतै लखि पावै।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रग रोंवन खुलि जावै।
सुर मुनि मिलैं सुनै घट अनहद अमी पियै हरषावै।
सिया राम की झाँकी अद्भुद सन्मुख मे छवि छावै।१०।

निर्भय औ निर्वैर जाय ह्वै हरि यश सुनै औ गावै।
अन्त त्यागि तन राम धाम ले फेरि न जग चकरावै।१२।

२८४ ।। श्री राम जी का धनुष जी ।।

पदः- धनुष कहैं मम सम नै जावैं। सो तो यहां वहां यश पावै।।
सतगुरु करि तन मन को तावै। ध्यान प्रकाश समाधि में जावै।।
नाम कि धुनि हर दम भन्नावै। अनहद सुनै अमी रस पावै।।
जागि सर्पिनी लोक लखावै। षट चक्कर बेधन ह्वै जावै।४।

सातौं कमल फूलि लहरावैं। महक उड़ै तन मन हर्षावैं।
सुर मुनि मिलै संग बतलावैं। राम सिया सन्मुख छबि छावैं।।
कर्म लिखा बिधि सो मिटि जावै। अन्त त्यागि तन गर्भ न आवै।।
सो जियतै में जो यहाँ कमावै सोई सच्चा भक्त कहावै।८।

सोरठाः- मेरे संग में चाप, जस रहती बसुयाम है।
सूरति नाम में आप, साटि देउ आराम है।।
(शब्दार्थः- मम सम नै = मेरे समान झुकना)

२८५ ।। श्री बिष्णु भगवान का शंख जी ।।

दोहाः- पंचजन्य कह पांच जब, प्राण एक ह्वै जांय।
ध्यान प्रकाश समाधि हो, नाम कि धुनि खुलि जाय।
अमी पान के हित मिलै, अनहद बिमल सुनाय।
सुर मुनि आवैं मिलन सब, उर में लेंय लगाय।
कुण्डलिनी शक्ती जगै, षट चक्कर घुमरांय।५।
उलटि कमल सातों खिलैं, स्वरन ते महक उड़ाय।
नारायण लक्ष्मी सहित, सन्मुख दें छबि छाय।
मुक्ति भक्ति जियतै मिलै, आवागमन नशाय।
सतगुरु करि साधन करै, सो यह मारग पाय।
नाहीं तो बिरथा जनम, बार बार चकराय।१०।

२८६ ।। श्री बिष्णु भगवान की गदा जी ।।

दोहाः- गद भव का मिटि जाय तब, जब तन मन जुटि जाय।
ध्यान प्रकाश समाधि धुनि, रग रोवन खुलि जाय।

सुर मुनि के नित दर्श हों, अनहद नाद सुनाय।
सुधा पान हित जो मिलै, स्वाद कहा नहिं जाय।
नागिनि जावै जागि तब, षट चक्कर सुधि जांय।५।
कमल सातहूँ जाँय खिलि, मन्द सुगन्ध उड़ाय।
रमा बिष्णु की छवि छटा, सन्मुख जावै छाय।
गदा कहैं तब जियति ही, मुक्ति भक्ति मिलि जाय।
सतगुरु करि सुमिरन करै, सो या बिधि को पाय।
नाहीं तो जन्मै मरै, निज घर कैसे जाय।१०।

२८७ ।। श्री बिष्णु भगवान का पद्म जी ।।

चौपाईः- पद्म कहैं सतगुरु करि भाई। श्री हरि सुमिरो तन मन लाई।
ध्यान प्रकास समाधि में जाई। कर्म भर्म सब देय मिटाई।
एक तार धुनि नाम सुनाई। झाँकी युगुल सामने छाई।
हर दम अनहद बजै बधाई। सुर मुनि मिलैं लिपटि उर लाई।४।
अमी पान कीजै सुखदाई। बरनत बनै न हिय हर्षाई।
साँपिन जागि गगन को धाई। सब लोकन में देय घुमाई।
छइउ चक्र घूमै भन्नाई। सातौं कमल खिलैं फर्राई।
सतगुरु करि जो जियति कमाई। कहैं पदुम सो निज पुर जाई।८।

दोहाः- दिब्य रहौं कुम्हिलाँव नहिं, हरि किरपा बसुयाम।
कहैं पदुम सुमिरन करूँ, हर दम हरि को नाम।।

२८८ ।। श्री राम, कृष्ण, बिष्णु जी के मुकुट जी ।।
(एक ही बाणी)

पदः- राम श्याम नारायण के शिर के हम मुकुट कहावैं जी।
छबि श्रृंगार छटा की शोभा हम ही अधिक बढ़ावैं जी।
दिब्य हेम में रतन जड़ित क्या नाना रंग चमकावैं जी।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानै सो यह आनन्द पावै जी।४।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रूप सामने छावै जी।
सुर मुनि मिलैं पियै घट अमृत अनहद सुनि हर्षावैं जी।
नागिनि जगै चक्र षट बेधैं सातों कमल खिलावैं जी।
अन्त त्यागि तन निज पुर राजैं गर्भ उपाधि मिटावै जी।८।

२८९ ।। श्री राम, कृष्ण, नारायण जी के कुण्डल जी ।।

(एक ही बाणी)

पदः- राम कृष्ण औ बिष्णु के कानन के कुण्डल हम भाई जी।
भूषन बसन मुकुट की शोभा हम बिन ठीक न आई जी।
हेम क तन औ मणी जड़ित क्या लहर लहर लहराई जी।
एक निगाह करै जो कोई नैन जांय चौंधाई जी।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानै सो देखै हर्षाई जी।५।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै नाम कि धुनी सुनाई जी।
सन्मुख तीनों स्वामी राजैं घटैं बढ़ैं नहि राई जी।
अमृत पियैं देव मुनि दर्शैं अनहद बिमल सुनाई जी।
नागिनि जगै चक्र सब बेधैं कमलन महक उड़ाई जी।
अन्त त्यागि तन निज पुर बैठी गर्भ कि मिटी झुलाई जी।१०।

२९० ।। श्री सीता, राधिका, कमला जी की चन्द्रिका जी ।।

(एक ही बाणी)

पदः- श्री सीता राधिका कमला जी की हम चन्द्रिका कहावैं जी।
भूषन बसन सँवारि मातु जब हमको भाल लगावैं जी।
छबि श्रृंगार छटा को बरनै शारद शेष लजावैं जी।
हेम क तन मम रतन जड़ित बहु रंग प्रकाश देखावैं जी।
सतगुरु करि जप की बिधि जानैं ते यह मारग पावैं जी।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै सुधि बुधि तहां भुलावै जी।६।
नाम कि धुनि रग रोंवन होवै सुर मुनि मिलन को धावैं जी।
अमृत पियै सुनै घट अनहद मन्द मन्द मुसक्यावै जी।
नागिनि जगै चक्र षट घूमैं सातौं कमल फुलावै जी।
लोक वेद तीरथ ब्रत मुद्रा आय के सीस नवावै जी।
तीनों मातु सामने सोहैं पल भर नहिं बिलगावै जी।
अन्त त्यागि तन अचल धाम ले फेरि न जग चकरावैं जी।१२।

२९१ ।। पं. श्याम नाथ झा जी।।

पदः- भजिये परम तत्व रंकार।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि लैकर तन मन प्रेम में वार।

ध्यान प्रकाश समाधी होवै कर्म होंय दोउ छार।
अनहद सुनो देव मुनि भेटैं कर दोनो गले डार।
अमृत पिओ कहो का मुख से गगन ते जारी धार।५।
नागिनि जगै चक्र हों सोधन फूलैं कमल निहार।
सुखमन स्वांस विहंग मारग ह्वै निज घर जाय सिधार।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख में निशि वार।
जियतै मुक्ति भक्ति हो करतल कौन सकै तब टार।
निर्भय औ निर्बैर मस्त बनि खेलौ जगत मँझार।१०।
तीनौ माता नित्य खिलावैं दिब्य भोग लै थार।
मानुष क तन पाय न चूकौ मानौ बचन हमार।
ऐसा समय फेरि नहिं मिलिहै आपु क लेह संभार।
तब जीवन को मार्ग बताय के करि पैहौ उद्धार।
यहां वहां फहराय पताका धुनि हो जय जय कार।
छोड़ि शरीर जाहु साकेतै भक्तन माहिं शुमार।१६।

२९२।। श्री पं. पञ्चानन जी का कीर्तन ।।

पदः- जै गोविन्द श्री जय गोपाल। जय यशुमति सुत जय नन्द लाल।
जय राधे पति जय जगपाल। जय देवकि सुत बसुदेव लाल।
जय दशरथ सुत रघुपति राम। जय करुणा निधि शोभा धाम।
जय सब गुण आगर सिय राम। जय सर्वेश्वर सीता राम।
जय श्री बिष्णु सर्ब उर वासी। जय कमला पति सब सुख रासी।
जय श्री हरि नारायण स्वामी। जय लक्ष्मी निधि अन्तर यामी।६।

(२)

पदः- गोविन्द हरे हरे गोपाल हरे हरे।
श्रीकृष्ण हरे हरे घनश्याम हरे हरे।
गोविन्द जय जय गोपाल जय जय।
श्री कृष्ण जय जय घनश्याम जय जय।
गोविन्द नमो नमो हरे गोपाल नमो नमो।
श्री कृष्ण नमो नमो घनश्याम नमो नमो।
सिया राम हरे हरे प्रिय श्याम हरे हरे।

श्री बिष्णु हरे हरे श्री राम हरे हरे।

जय राम हरे हरे जय श्याम हरे हरे।

जय बिष्णु हरे हरे जय कृष्ण हरे हरे।

जय राम नमो नमो जय कृष्ण नमो नमो।

जय बिष्णु नमो नमो जय श्याम नमो नमो।

हरे राम जय जय नमो राम जय जय।

श्री राम जय जय, जय राम जय जय।

हरे कृष्ण जय जय नमो कृष्ण जय जय।

श्री कृष्ण जय जय, जय कृष्ण जय जय।

हरे बिष्णु जय जय नमो बिष्णु जय जय।

श्री बिष्णु जय जय जय बिष्णु जय जय।

हरे श्याम जय जय नमो श्याम जय जय।

श्री श्याम जय जय जय श्याम जय जय।

२९३ ।। श्री कफिल्ला मुनि जी ।।

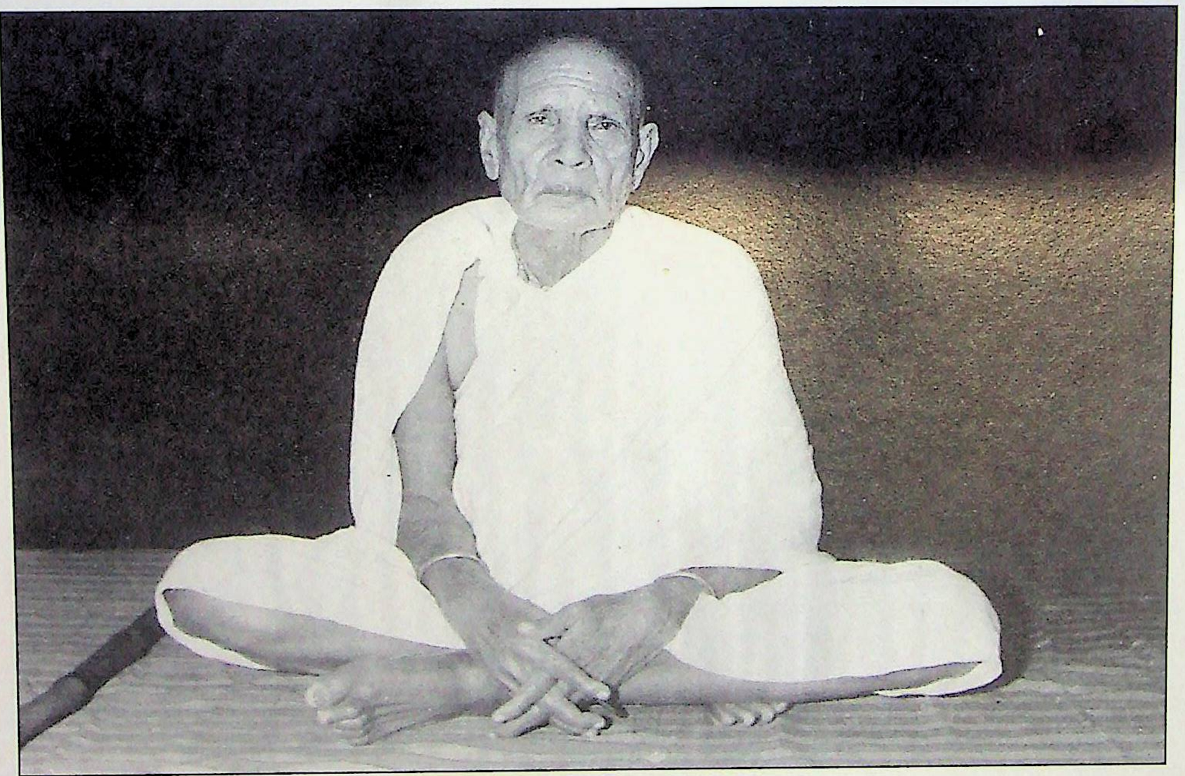
दोहाः- नाम हमारो लेय जो, तीनि बार निशि माहिं।
तारी देय बजाय सँग, चोर न गृह में जाहिं।।

२९४ ।। श्री जाह्नवी जी ।।

दोहाः- कुकरम से आयू घटै, सुकरम से बढ़ि जाय।
कहैं जाह्नवी देव मुनि, वेद शास्त्र बतलाय।।

२९५ ।। श्री भगत राम जी ।।

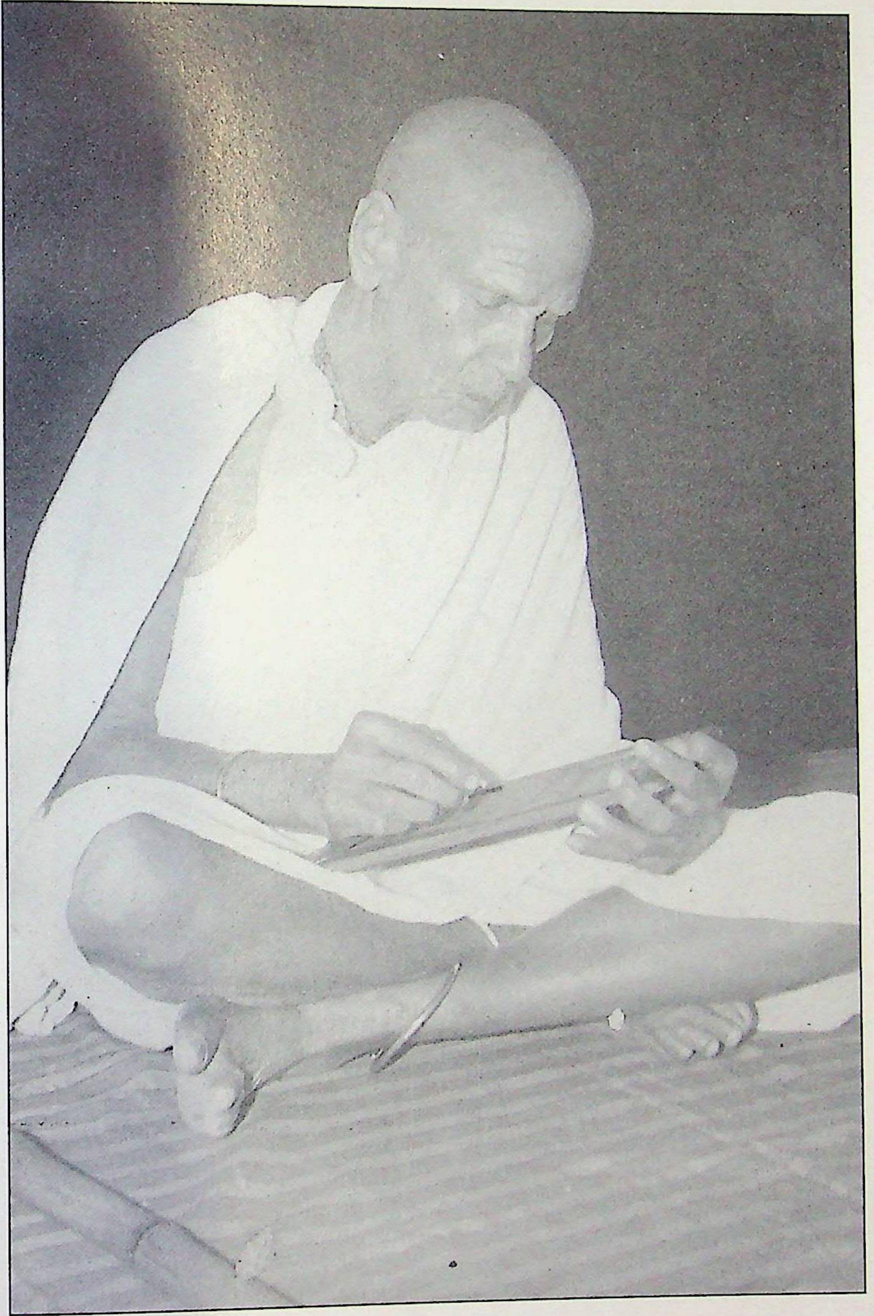
पदः- भक्तों राम नाम पर तुलना।
सतगुरु से जप भेद जानि कै नेक ख्याल नहिं भुलना।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय पाय आप में घुलना।
सुर मुनि मिलैं सुनो घट अनहद पिओ अमी भरा ढुलना।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख निरखौ खुलना।
अन्त त्यागि तन राम धाम लो छूटै गर्भ क झुलना।६।



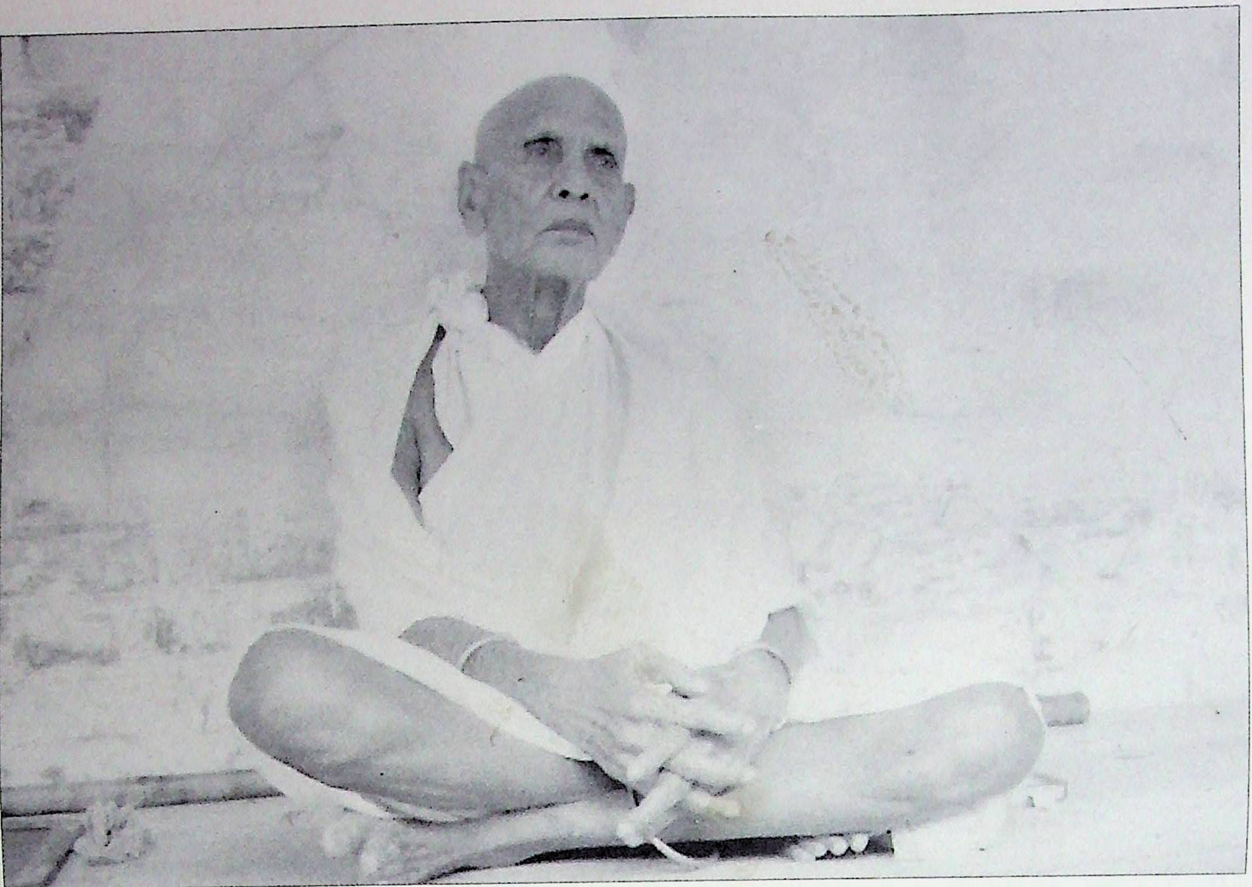
श्री गुरुदेव दयामय।



श्री गुरुदेव तखत पर।



श्री गुरुदेव स्लेट पर लिखते हुये।



श्री गुरुदेव तखत पर भाव में लीन।

२९६ ।। श्री पं. वियोगी जी नागर ।।

पदः- कैसी राम नाम धुनि होती सुनिये रग रोंवन निशिवार।
हैर शै में है यही समानी सबको कियो पसार।
नाम अनादि इसी को कहते सुर मुनि सब रंकार।
सतगुरु करौ भजन बिधि जानौ छूटै द्वैत केंवार।
ध्यान प्रकाश समाधी जानो जहँ नहिं रहत बिचार।५।
अनहद बजै बन्द नहिं होवै क्या प्यारी गुमकार।
अमृत पिओ देव मुनि आवैं विहँसि कहैं बलिहार।
नागिनि उठै चक्र सब घूमै फूलैं कमल निहार।
चन्द्र सूर्य्य की होय एकता सुखमन करैं संभार।
विहँग मार्ग पच्छिम दिशि ह्वै कर दे तिरगुन से न्यार।१०।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख लो दीदार।
अन्त त्यागि तन चढ़ि सिंहासन निज पुर जाहु सिधार।
या के बिन जाने कोइ जग से होत नहीं है न्यार।
नर नारी चित चेत भजहु नित आप क लेहु सुधार।
तन औ समय मिला अति दुर्लभ मानो बचन हमार।
कहैं बियोगी दीन शान्ति बनि लूटौ जय जय कार।१६।

२९७ ।। श्री संयोग सिंह जी ।।

पदः- करम गति टारो टारो टारो।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो तन मन प्रेम में जारो।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रग रोंवन झनकारो।
अमृत पिओ सुनो घट अनहद सुर मुनि कहैं मम प्यारो।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि हर दम रूप निहारो।
अन्त त्यागि तन निज पुर राजौ फेरि न जग पग धारो।६।

२९८ ।। श्री त्रिभुवन सिंह जी ।।

पदः- जय जय कार होय दोनों दिशि जो कोइ हरि सुमिरन ले जान।
सतगुरु करै मिलै तब मारग खुलि जांय आँखी कान।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि हर शै से ले तान।
सुर मुनि मिलैं सुनै घट अनहद करै अमी रस पान।४।

नागिनि जगै चक्र सब बेधैं कमल उलटि जांय मान।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख प्रगटैं आन।
सूरति शब्द क मारग यह है जो सब सुख की खान।
तन छूटै साकेत जाय लै जग छूटै जिमि दान।८।

२९९ ।। श्री गोपाल सिंह जी ।।

पदः- गिरधर गोपाल मोहन घनश्याम श्याम यदुपति।
मुरली मनोहर माधव बृज राज नाथ जग पति।
राधे रमन बिहारी बनवारी लाल प्यारे।
गोपी औ गोप के धन नन्द यशुमति के दुलारे।
केशव मुकुन्द कान्हा हरि दूध दधि लुटैया।
दीनन के बन्धु स्वामी भक्तन क दुख हरैया।६।

करुनानिधान भगवन सब के बनाने वाले।
केहि बिधि करै को बरनन सब में समाने वाले।
बिनती मेरी मुरारी सुन लेव रास धारी।
भव का है दुःख भारी। अन्धे बहिरे नर औ नारी।
दीजै सबन सुधारी। खिलि जाय फिर फुलवारी।
कीजै न अब अबारी। सब लीला है तिहारी।१२।

३००।। श्री खिल खिली शाह जी ।।

कीर्तनः- प्रकाश राम सीता क घट में प्रकाश।
प्रकाश श्याम श्यामा क घट में प्रकाश।
प्रकाश बिष्णु कमला क घट में प्रकाश।
प्रकाश शम्भु गिरिजा क घट में प्रकाश।
प्रकाश बिधि शारद क घट में प्रकाश।५।

प्रकाश गणपति सरस्वति क घट में प्रकाश।
प्रकाश शची सुरपति क घट में प्रकाश।
प्रकाश भरत माण्डवी क घट में प्रकाश।
प्रकाश लखन उर्मिला क घट में प्रकाश।
प्रकाश शत्रुहन श्रुति कीर्ति क घट में प्रकाश।१०।

प्रकाश कौशिल्या दशरथ क घट में प्रकाश।
प्रकाश जनक सुनयना क घट में प्रकाश।
प्रकाश बसुदेव देवकी क घट में प्रकाश।
प्रकाश नन्द यशुमति क घट में प्रकाश।
प्रकाश हलधर रेवती क घट में प्रकाश।१५।

प्रकाश सुर शक्तिन क घट में प्रकाश।
प्रकाश मुनि तीर्थों क घट में प्रकाश।
प्रकाश लोक वेदों क घट में प्रकाश।
प्रकाश नाम लीला क घट में प्रकाश।
प्रकाश श्री सतगुरु क घट में प्रकाश।२०।

३०१ ।। श्री झक्के शाह जी ।।

पदः- क्या जोर पेंच से चलते फ़ौरन हैं माया के धक्के।
सान मान जिनके तन मन में ते गिरते हैं थक्के।
फेरि सँभरि के उठि किमि पावैं छूट जात हैं छक्के।
मुरशिद करै भजन बिधि जानै ते होवैंगे पक्के।४।

ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि होय मिटैं शक्के।
अनहद सुनै दैव मुनि दर्शै बिहँसि नैन ढक्के।
निरखैं राम सिया को हर दम सन्मुख में टक्के।
अन्त त्यागि तन राम धाम ले कहैं शाह झक्के।८।

३०२ ।। श्री शरारत शाह जी ।।

पदः- राखो राम नाम पर सूरति।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो जो है तुम्है ज़रूरत।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि होय जो भव भय तूरति।
अजा असुर तन से सब भागैं जो हर दम हैं घूरति।
सुर मुनि मिलैं दिब्य साँटी कर हंसि हंसि चहुँ दिशि हूरत।५।

अमृत पिओ सुनो घट अनहद होय न कबहूँ पूरति।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि की सन्मुख रहै मूरति।
अन्त त्यागि तन निजपुर बैठो जहां बिषय नहिं बूरति।

नागिनि जगै चक्र सब नाचैं कमल खिलैं नहिं झूरति।
सच्चा भक्त वही है जानो किसी को देखि न चूरति।१०।

३०३ ।। श्री हकीकत शाह जी ।।

पदः- सतगुरु करि तजो हम हम हम।
राम नाम में रम रम रम।
छूटै मन का गम गम गम।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै जहां जाय नहिं तम तम तम।४।
अमृत पिओ सुनो घट अनहद सुर मुनि भेटैं सम सम सम।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख चमकैं चम चम चम।
कहैं हकीकत शाह चेतिये चन्द रोज की दम दम दम।
नाहीं तौ पछिताइहो भक्तौं छूटि जाय सब धम धम धम।८।

३०४ ।। श्री ताकन शाह जी ।।

पदः- सतगुरु करि जप की बिधि जानै ते सिया राम को ताकै जी।
अजपा जाप कहत जेहि सुर मुनि सूरति शब्द में टाकैं जी।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय जहां कर्म दोउ पाकैं जी।
अमृत पियैं सुनैं घट अनहद सुर मुनि हँसि मुख झाँकै जी।४।
शची दिब्य भोजन करवावैं सुरपति माछी हांकैं जी।
निर्भय औ निर्वैर जांय ह्वै जियतै भव दुख ढाँकै जी।
अजा असुर नेरे नहि आवैं शोच क फँकना फाँकै जी।
जे नहि मानैं सखुन हमारा ते चक्कर में डाकैं जी।८।

(२)

पदः- पाया खजाना नाम का ते नारि नर बाँके हुए।
ताकन कहैं सब बासना जियतै में हैं हाँके हुए।
ध्यान लय परकाश सन्मुख रूप छबि छाके हुए।
तन छोड़ि निजपुर को गये ते धन्य पितु मां के हुए।४।

(३)

सतगुरु किया तन मन मगन हरि नाम रंग माते हुए।
अमृत छकैं अनहद सुनै सुर मुनि से बतलाते हुए।

परकाश ध्यान समाधि सन्मुख रूप छबि छाते हुए।
निर्बैर निर्भय घूमते हरि के चरित गाते हुए।
भागे असुर सब ला पाता आपस में पछिताते हुए।
ताकन कहैं ते धन्य निज पुर बास चलि पाते हुए।६।

३०५ ।। श्री भले मानुष शाह जी ।।

पदः- राम श्याम हरि सब में राजत।
धनुष बाण मुरली कर धारें शंख चक्र गदा पद्म बिराजत।।
तीनौ शक्ती संग में सोहैं ते निरखैं जे तन मन माँजत।
सतगुरु के चरनन की रज लै प्रेम से जे नैनन में आँजत।४।

ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि हर दम रग रोंवन ते बाजत।
अमृत पियैं सुनैं घट अनहद सुर मुनि मिलैं लिपटि कै गाजत।
माया असुर हारि सब भागैं सन्मुख आय सकैं नहि लाजत।
अन्त समय ते दिब्य देह धरि सिंहासन चढ़ि निज पुर भाजत।८।

शेरः- भले मानुष उन्हें समझो जो निज को जियत में जाना।
नहीं तो छूटना मुश्किल जगत चक्कर में चकराना।।

३०६ ।। श्री बे फ़िक्र शाह जी ।।

पदः- सुमिरो राम नाम बिन रसना।
सतगुरु करि जप भेद जानि कै तन मन प्रेम से लसना।
सुर मुनि मिलैं सुनो घट अनहद होय अमी रस चखना।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि सन्मुख हरि प्रिय लखना।
माया असुर शान्त ह्वै बैठें करै न कबहूँ गँसना।
अन्त त्यागि तन निज पुर बैठो जहां से फेरि न खसना।६।

३०७ ।। श्री मुलायम शाह जी ।।

पदः- सतगुरु करै भेद सब जानै छूटै भव का धम धम धम धम।
शान्ति प्रेम विश्वास बिना नहिं होवै कोई नम नम नम नम।
पासै में लखि लेय खजाना होय न कबहूँ कम कम कम कम।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि मिलै मिटै सब तम तम तम तम।४।

सन्मुख राधा माधौ नाचैं नूपुर बाजैं छम छम छम छम।
अमृत पियैं सुनैं घट अनहद सुर मुनि भेटैं सम सम सम सम।
कहैं मुलायम शाह त्यागि तन निज पुर चमकैं चम चम चम चम।
या से चेत करौ नर नारी चन्द रोज का दम दम दम दम।८।

३०८ ।। श्री घूमन शाह जी ।।

पदः- अवध मिथिला मधुपुरी की है अजब शोभा बनी।
सतगुरु करै सो लखि सकै आँखों में आवै रोशनी।
मणियों क क्या परकाश है कैसे सुघर हैं जन जनी।
रंग रंग की फैली हैं लता बस प्रेम में मानो सनी।४।

(२)

पदः- तन मन है मुअत्तर खुशबू से फुलवारी चहुँ दिशि खूब घनी।
हैं क्यारी क्यारी चमन बने पत्थर पचरंग जड़ी है मनी।
क्या हेम के गमला भाँति भाँति बाहेर हीरन की लगी कनी।
हैं पांति पांति रक्खे तहँ पर सुर मुनि घूमैं संग सहस फनी।
हम तो टहलैं नित एक दफ़े है मंगलमय क्या दिब्य बनी।
सतगुरु करि खोलै चश्म गोश बनि जावै जियतै खूब धनी।६।

धुनि ध्यान प्रकाश समाधि मिलै सारे असुरन को देय हनी।
सिय राम श्याम प्रिय सन्मुख हों सिंहासन आसन छत्र तनी।
तन छोड़ि वतन में हो दाखिल फिर गर्भ में काहे आय छनी।
चेतो नर नारि करो सुमिरन सब के हित सांचे बैन भनी।
नाहीं तो अन्त में हो मुश्किल यम दूतन ते जब जंग ठनी।
लखिकै मुख से नहिं बोल कढ़ै हैं रूप भयानक संघ अनी।१२।

३०९ ।। श्री शिव नाथ ओझा जी ।।

पदः- वेद शास्त्र उपनिषद संहिता औ पुराऩ श्री रामायन।
सब में गलती अनुभव कीन्हा गीता शुद्ध है मुद दायन।
श्री बैकुण्ठ में ग्रन्थ धरे सब पढ़ि सुनि जाना हरखायन।
यहाँ वहाँ ते फर्क बड़ा है यह गुनि मन में पछितायन।४।

समय समय की बात है भाई प्रेम से करिहैं जे गायन।
ते अशुद्ध ते शुद्ध जाँय ह्वै सत्य बचन ये समुझायन।

सतयुग त्रेता द्वापर में सब कण्ठ रहत यह सुनि आयन।
तब कोई नहिं उलट पुलट हो सुर मुनि कह्यो सो बतलायन।८।

३१० ।। श्री कदीम शाह जी ।।

पदः- सुनिये बोलत घट में तार।
बनो तार बाबू सतगुरु करि छूटै भर्म क भार।
लोक भुवन औ द्वीप खण्ड पुर देशन का निशिबार।
शब्द शब्द स्पष्ट लेव गिनि आवत नीक बिकार।
काह कहैं कछु कहत बनै नहिं जारी जो जो कार।
बे पैसा के काम होत सब कहत कदीम पुकार।६।

(२)

पदः- सुनिये महा मंत्र रंकार।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो तब होवै एक तार।
ध्यान प्रकाश समाधि जाव चलि कर्म होंय दोउ छार।
अमृत पिऔ सुनौ घट अनहद करैं देव मुनि प्यार।
काह बताय सकौ तब भाई दर्शें सब औतार।
अन्त त्यागि तन राम धाम लो कहैं कदीम पुकार।६।

३११ ।। श्री बचावन शाह जी ।।

पदः- भक्तों तजो त्रिगुन का खेल।
भूत भविष्य औ बर्तमान कहि करत यहाँ हो मेल।
वाह वाह की कठिन है साँकरि देहैं तुमको बेल।
जानि अजान बनौ मति भाखौ नाही तो हो फेल।
या में सार नहीं हो हासिल महा कठिन भव जेल।५।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो दुख सुख सम लो झेल।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि लेहु खजाना रेल।
सुर मुनि मिलैं सुनौ घट अनहद अमृत पियौ सकेल।
सिया राधिका कमला नित शिर मलैं सुगन्धित तेल।
राम श्याम नारायण सन्मुख तन तजि निज पुर पेल।१०।

(२)

पदः- सतगुरु करौ मारग गहौ जियतै में हो निसकाम जी।
परकाश ध्यान समाधि धुनि सन्मुख हों सीता राम जी।
सुर मुनि मिलैं अमृत छकौ अनहद सुनौ बसु याम जी।
तन त्यागि निज पुर को चलौ पावो अचल बिश्राम जी।४।

(३)

पदः- सतगुरु करो मारग मिलै छूटै गरभ का लटकना।
धुनि ध्यान लय परकाश हो टूटै भरम का भटकना।
अनहद सुनो अमृत चखौ सुर मुनि मिलैं नित अटकना।
हर दम लखौ सन्मुख में राधा कृष्ण का क्या मटकना।४।

मुसक्याय कर दाहिन उठा दें प्रेम का मुख चटकना।
कण्ठ गदगद पुलक तन हो गुदगुदी कोइ खटकना।
माया असुर होवैं बिदा फिर दे सकैं नहिं झटकना।
अन्त निज पुर बास लो जहँ से न हो फिर सटकना।८।

(४)

पदः- सतगुरु करो मारग मिलै आनन्द लो निशि बार जी।
सुर मुनि जिसे चाहो बुला लो ख्याल का दै तार जी।
बनि जाव बाबू तार के लो दीनता उर धार जी।
विश्वास शान्ति औ सत्यता है प्रेम का श्रृंगार जी।
धुनि ध्यान लय परकाश हो सन्मुख सँवलिया यार जी।५।

अमृत पिओ अनहद सुनो क्या हो रही गुमकार जी।
हनुमान हर हरदम तुम्हारे सँग रहैं रखवार जी।
दोनो जहां में होय तब तो मान लो जयकार जी।
जिसने न हरि सुमिरन किया है उसकी जिन्दगी ख्वार जी।
तन त्यागि दोज़ख में पड़ै पल भर न कल चिक्कार जी।१०।

(५)

पदः- जाते भगत निज धाम को चढ़ि यान हरखाते हुये।
सुर मुनि सभी जै जै करैं निज साज चटकाते हुए।

रंग रंग की माला गले में फूलों कि पहिनाते हुये।
पंखा मुरछल आसा बल्लम झण्डा फहराते हुये।
नाचैं अप्सरा गान करि करि फूल बरसाते हुये।५।

सतगुरु करौ नैनन लखौ क्यों जक्त में माते हुये।
धुनि ध्यान लय परकाश सन्मुख श्याम छवि छाते हुये।
देव मुनि भेटैं तुम्हैं हरि के चरित गाते हुये।
अनहद सुनो अमृत पिओ पितु मातु के काते हुये।
लेते कमा जे जन यहां ते बैठि वहँ खाते हुये।१०।

जिसने न जाना जियति में ते दोनो दिशि ताते हुये।
पीटैं नरक में दूत हर दम कल न पल पाते हुये।
मानो कहा नर नारि चेतो क्या हौ बतलाते हुये।
गर्भ का रिन दो चुका हम सब को समुझाते हुये।
खोते समय अनमोल हो नाहक में अलसाते हुये।
दुर्लभ यह तन चारों पदारथ देत मन भाते हुये।१६।

३१२ ।। श्री सीधे शाह जी ।।

पदः- झूठ समान पाप नहिं कोई।
सारे पाप सहैं पृथ्वी जी झूठ सुनत दें रोई।
भार से तन मन ब्याकुल होवै जावै सुधि बुधि खोई।
हरि किरपा ते थोड़ी देर में दुःख जाय सब धोई।
सब की सुनै सहै नहिं बोलै ऐसि मातु को होई।
जीवन के पालन हित इनको राम सिया ने पोई।६।

सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो नाम बीज लो बोई।
सन्मुख जोड़ी युगुल की झाँकी प्रेम से लीजै नोई।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय दे दोउ कर्म निचोई।
सुर मुनि आवैं संग बतलावैं लेहु सबन तब टोई।
श्री गिरिजा जी नित्य खिलावैं घी शक्कर की लोई।
जो नहिं ख्याल करैं मम बानी सो जग कूड़ा ढोई।१२।

३१३ ।। श्री चाखन शाह जी ।।

पदः- भजिये कृष्ण नाम पति राखन।
सतगुरु करि जप भेद जान लो शान्ति रहौ तजि भाखन।
मन तब ठहरै दौर देय तजि घूमत गिरि बन साखन।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि हरि को निरखौ आँखन।
श्री राधे नित लाय खिलावैं सिता मिलाय के माखन।
अन्त त्यागि तन निज पुर राजौ सत्य बचन कहैं चाखन।६।

३१४ ।। श्री झक्कर शाह जी ।।

पदः- भजिये बम शंकर बम शंकर।
सतगुरु करि विश्वास करौ दृढ़ बैठि जाव मति थक्कर।
सारे चोर भागि जांय तन से करैं न एकौ टक्कर।
सुर मुनि मिलैं प्रेम से बोलैं करैं तुम्हारो चक्कर।
ह्वै प्रसन्न भैरव जी दें नित सानि के खोवा शक्कर।
अन्त समै कैलास बिराजौ कहैं बचन ये झक्कर।६।

३१५ ।। श्री टोला शाह जी ।।

पदः- भजिये बम भोला बम भोला।
सतगुरु करि कै जुटो बीर बनि जियति सुफ़ल हो चोला।
सुर मुनि आय कहैं निज निष्ठा भयौ आप तो ओला।
बीर भद्र भोजन हित लावैं फल मेवा औ गोला।
तन के असुर बोलि नहिं पावैं शक्ति हीन हों पोला।
अन्त समय कैलाश जाव चलि सत्य कहैं यह टोला।६।

३१६ ।। श्री तान तान शाह जी ।।

पदः- सतगुरु करि भजु शिव शिव शिव शिव।
छूटै जग का चिंव चिंव चिंव चिंव।
तन मन को करु घिव घिव घिव घिव।
पासै अमृत पिव पिव पिव पिव।
युग युग प्यारे जिव जिव जिव जिव।
तन तजि हर पुर ठिव ठिव ठिव ठिव।६।

३१७ ।। श्री शान शाह जी ।।

पदः- सतगुरु करि भजु हर हर हर हर।
छूटै भव का डर डर डर डर।
दुःख पड़ै मति टर टर टर टर।
तन मन प्रेम से जर जर जर जर।
सुर मुनि बोलैं फर फर फर फर।५।

सब से रहना खर खर खर खर।
देहैं भोजन तर तर तर तर।
पाना मत चित भर भर भर भर।
तन तजि लो निज घर घर घर घर।
जहँ न सकत कोइ धर धर धर धर ।१०।

सुनिये नारी नर नर नर नर।
त्यागो करना बर बर बर बर।
आलस नींद में पर पर पर पर।
किमि कारज हो सर सर सर सर।
छोड़ि के अपना दर दर दर दर।
डोलत काँपत गर गर गर गर।१६।

३१८ ।। श्री मान शाह जी ।।

पदः- राम सिया हर दम रहैं सन्मुख सुमिरन करि लखि लेहु खुलासा।
सतगुरु करि जप भेदि जानि लो देखहु नाना भांति तमाशा।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय जहँ पर पहुँचि सकत नहिं आसा।
सुर मुनि मिलैं पिओ घट अमृत अनहद सुनो बजत क्या ख़ासा।
श्री कमला जी लाय पिआवैं प्रति दिन तुमको दूध बतासा।
अन्त त्यागि तन राम धाम लो जहां अमित रवि सम परकासा।६।

(२)

पदः- सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानै राम नाम में तन मन मांजै।
नस नस हड्डी हड्डी बोलै रोम रोम ते होंय अवाजै।
सुर मुनि मिलैं पियै घट अमृत अनहद सुनै बिमल क्या बाजै।

ध्यान प्रकाश दशा लय होवै मानहु बना जियति सब काजै।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि हर दम सन्मुख में तब राजें।
अन्त त्यागि तन चढ़ि सिंहासन अचल धाम में जाय बिराजै।६।

३१९ ।। श्री खुलासा शाह जी ।।

पदः- सूरति शबद मारग गहौ सब से सुलभ सब से बड़ा।
सतगुरु करो पावो पता है द्वैत का परदा पड़ा।
धुनि ध्यान लय परकाश हो सन्मुख लखौ मोहन खड़ा।
मुरली अधर पर हैं धरे मधुरे स्वरन रहे तड़ तड़ा।४।

अमृत पिओ अनहद सुनो घट में रहा जो गड़ गड़ा।
सुर मुनि मिलैं बोलैं बिहँसि छूटा जगत फंदा कड़ा।
सारे असुर जावैं पसर जैसे गिरा फूटा घड़ा।
अन्त निज पुर बास लो जहँ खान पान न हो हड़ा।८।

३२० ।। श्री चौपट शाह जी ।।

पदः- रसना राम नाम में माती।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो छूटै द्वैत कि गाती।
हाड़ हाड़ रग रग सब रोंवन कैसी धुनी सुनाती।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै जहां अवाज न जाती।४।

अमृत पिओ देव मुनि दर्शै साज बजैं बहु भाँती।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि की छबि सन्मुख छाती।
चौपट शाह कहैं जिन भाई तन मन प्रेम से काती।
ते प्रकाश पुर जाय के बैठे जहँ घृत दिया न बाती।८।

३२३ ।। श्री भली जान जी ।।
(श्री काशी बासिनी)

पदः- हाड़ हाड़ रग रग रोम रोम नाम धुनि।
सतगुरु करि सुनौ कहैं सब देव मुनि।
ध्यान परकाश लय जाय कर्म देहु भुनि।
सन्मुख राम सिया झाँकी लखौ पुनि पुनि।

मम बैन मानि निज तन मन लेव गुनि।
तन त्यागि पास बास काहे गिरौ घुनि घुनि।६।

(२)

पदः- सतगुरु बिना सुमिरन कि बिधि मिलती नहीं अच्छी तरह।
सूरति ध्यान धुनि नूर लय पिलती नहीं अच्छी तरह।
दुःख सुख सम मानि कै झिलती नहीं अच्छी तरह।
सुर मुनि के संग उमंग से खेलती नहीं अच्छी तरह।
अमृत को पी घट साज सुनि हिलती नहीं अच्छी तरह।
सन्मुख छटा सिय राम की खिलती नहीं अच्छी तरह।६।

तन मन मिलाकर प्रेम संग गलती नहीं अच्छी तरह।
तब तक करम की गति कठिन टलती नहीं अच्छी तरह।
दीनता औ शान्ति गहि चलती नहीं अच्छी तरह।
तन के असुर तब तक पकड़ि मलती नहीं अच्छी तरह।
जियतै में जब तक बासना जलती नहीं अच्छी तरह।
तब तलक सुख की लता फलती नहीं अच्छी तरह।१२।

(३)

पदः- हाड़न हाड़न रगन रगन सब रोंवन रोंवन धुनि होती।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो मोह नींद में क्यों सोती।
ध्यान में नाना लीला देखौ बरै अखण्डित तहँ जोती।
लय चलि कर्म शुभा शुभ जारो सुधि बुधि तुरत तहां खोती।
प्रेम की सारी तन में पहिरो फेंको छोरि द्वैत धोती।
डरि सब असुर बिदा हों तन से संग भगै माया रोती।६।

सिया राम की झाँकी सन्मुख झरैं रंग रंग के मोती।
सुर मुनि मिलैं लिये कर चन्दन मुख पर हँसि देवैं पोती।
उमा रमा शारद सब शक्ती नित आकर गहि तन टोतीं।
मुख चूमैं फिर हिये लगावैं नाम बीज कहै खुब बोतीं।
अमृत पिओ सुनो घट अनहद काहे वयस बृथा खोती।
तन तजि आवा गमन मिटावो फिरती जग कूड़ा ढोती।१२।

।। श्री स्वामी रामानन्द जी महाराज जब चारों धामों की यात्रा कर के लौटे अर्थात श्री काशी जी आये, उस समय का निम्न पद है।।

पदः- सतगुरु हमारे स्वामी रामानन्द स्वयं सरकार थे।
क्या कहूँ मुख से सबी सुक्खों के सुख का सार थे।
श्याम रंग कोमल बदन द्युति के उड़त झलकार थे।
नारि नर बहु संत आते होत नित दरबार थे।
इच्छा सबन की करत पूरी दानि आप उदारि थे।

शिष्य जो द्वादश रहे सो देव मुनि अवतार थे।
शान्ति शील औ दीनता सब गुण के ज्ञानागार थे।
सोरह सहस क्या शिष्य नर औ नारि यमन शुमार थे।
हिन्दू भी एक करोड़ पक्के प्रेम में मतवार थे।
बसुधा बरुण अग्नी पवन औ गगन तहँ रखवार थे।

परदा हटाने औ गिराने में सुरेश हलुकार थे।
पंखा हिलाने में गजानन बीर एकै तार थे।
मुरछल करन में काल भैरव मानते नहिं हार थे।
चरण सेवा में श्री जी जिनके प्राण आधार थे।
भीतर औ बाहेर कुटी के धनपति झाड़ू बरदार थे।

जल काठ कण्डा के लिये षट मुख बड़े चटकार थे।
तन्दुल व मिश्री क्षीर घृत लाने में शिव ज़रदार थे।
हंडी पै पोती फेरने में वीर भद्र हुशियार थे।
पायस बनाने में चतुर बजरंग प्राण से प्यार थे।
भोग ठाकुर का लगाने में तो बिधि बलिहार थे।

सब को परोसन में गरुड़ जी श्रद्धा ही में ढार थे।
जय घोष करने में तो काग भुशुण्डि सब से न्यार थे।
पत्तल उठाने में बृहस्पति जी बड़े बलदार थे।
ठाकुर की सेवा में कपिल मुनि दिवस निशि तय्यार थे।
दीपक लगाने में बड़े फुर्तील अश्वनी कुमार थे।

जनता के स्वागत में जुटे मनु जी रहत हर बार थे।
पट पात्र फल धन देन हित बलि जी बने मुख्त्यार थे।

अन्न पूर्णा जी ने तहँ पर भर दिये भण्डार थे।
भाँति भाँति के कुटी पर आते भी नित उपहार थे।
निरखतै बनते थे वहँ के जौन कारोबार थे।३०।

असुर भी नर तन को धरि आ कर करत दीदार थे।
प्रात औ मध्याह्न सायंकाल क्या सदाचार थे।
वेद चारों अस्तुती करते बने भिखियार थे।
चरित यह जानै वही जो बैठ तन मन मार थे।
कार्य्य निज निज करन में सब गुप्त चर सरदार थे।
शेष शारद क्या भनैं वे चरित अपरम्पार थे।३६।

३२२ ।। श्री कमिच्छा जी ।।

पदः- कहैं कमिच्छा सुनिये मम सुत राम नाम को जे जन ध्यावैं।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानै ते जियतै करतल करि पावै।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय जाय के दोनो कर्म जलावै।
सुर मुनि मिलैं सुनै घट अनहद पियै अमी रस क्या बतलावै।४।

सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख आय छटा छवि छावैं।
नागिनि जगै चक्र सब बेधै खिलैं कमल महकैं अति आवैं।
सुखमन स्वांस विहँग मारग ह्वै जाय अपन घर घूमि दिखावै।
तन तजि निज पुर जाय बिराजै गर्भ बास ते छुट्टी पावै।८।

३२३ ।। श्री कानी माई जी ।।

पदः- धन पुत्र यश से नारि नर की खोपड़ी भरती नहीं।
बासना आगे बढ़ै पीछे कदम धरती नहीं।
धर्म्म पर मन की मती चल कर के फिर गिरती नहीं।
तब तलक दुख बेलि कटि सुख की लता फलती नहीं।४।

सतगुरु से सुमिरन जानि कै जो मार्ग पर परती नहीं।
वह कभी संसार सागर से सुनो तरती नहीं।
उनके बिना माया हमेशा पीटती डरती नहीं।
छर दर उसे को करि सकै वह अग्नि में जरती नहीं।८।

दीनता औ शान्ति गहि हिम्मत को जो हरती नहीं।
सो जियति सब तै करै होवै अमर मरती नहीं।
धुनि ध्यान लय परकाश सन्मुख श्याम छबि करती नहीं।
तब तलक बिधि की लिखी गति भाल से टरती नहीं।१२।
(शब्दार्थः छर दर = छरना, कूटना, पीसना)

३२४ ।। श्री पानी शाह जी ।।

पदः- तीनि बार हरि माफ़ करैं जो जानि ज़हर को खावैं।
उलटी दस्त दवाई से सब तन से बिष बिलगावैं।
चौथी बार छूटि जाय जड़ तन प्रेत योनि में जावै।
जितनी आयू रही हो बाकी उतनी लै दुख पावै।
जल अशुद्ध नित मिलै पियन को कैसे प्यास बुझावै।५।
मल भोजन करै रोय रोय औ मन ही मन पछितावै।
उनके नाम से घर का कोई प्रेम से बिप्र जेवाँवै।
तौ कछु पुण्य जाय मिलि वा को बार बार हर्षावै।
कथा कीरतन पूजन सुमिरन तारा चहै करावै।
तो उस योनि को त्यागि देय सीधे बैकुण्ठ सिधावै।१०।

३२५ ।। श्री चंट शाह जी ।।

पदः- जिन यहँ मन नहिं काबू कीन्ह्यो अन्त ते नर्क को जाते हैं।
हर दम यम दुख उनको देते आह मचाते हैं।
झूठा भेष बनाय साधु का धोक़ा खाते हैं।
भोजन बसन औ मान बड़ाई में परि जाते हैं।
सुमिरन पाठ कीर्तन पूजन से बिलगाते हैं।५।
मन मानी बातैं करि हँसि हँसि शीश हिलाते हैं।
वेद शास्त्र पढ़ि करैं नौकरी नहिं शरमाते हैं।
मास मास पर तलब मिलै कर गहि मुसक्याते हैं।
कोई साफ़ी पारस बेचैं कोई गाते हैं।
कोई साज बजाय कमावैं कोई फुसलाते हैं।१०।
कोई पूजा भण्डार कराई कोई जल लाते हैं।
कोई रामाधुनि में पैसा ले तब आते हैं।

नाना भाँति से द्रब्य कमावैं वैस गँवाते हैं।
संतन का यह धर्म नहीं जो ढोंग बनाते हैं।
ब्रह्म ज्ञान की बातैं पढ़ि सुनि ठगैं ठगाते हैं।१५।
सत्संगति जहँ साँची होवै बोलि न पाते हैं।
आवै अगर बोलावै कोई क्या बतलाते हैं।
चलौ आप हम आवैंगे विश्वास दिलाते हैं।
चंट शाह कहैं वहाँ जाँय नहिं सत्य सुनाते हैं।
सतगुरु बिना पार किमि होवैं असुर रुलाते हैं।२०।

शेरः- हरामी से पैदा हुये नारि नर। न हो उनसे सुमिरन रहै पाप कर।।

३२६ ।। श्री जवाहिर दास जी ।।

चौपाईः- श्री गुरु मोहिं कोठारी कीन्हा। ऋद्धी प्रेम से धरेन औ दीन्हा।।
अन्त त्यागि तन हरि पुर लीन्हा। सब प्रकार सुख का जहँ जीना।।
नाम जवाहिर दास कहावा। धीमर जाति सत्य बतलावा।।
श्री गुरु अज्ञा मानै जोई। ता को कार्य्य सिद्धि सब होई।४।

३२७ ।। श्री श्याम दास जी ।।

चौपाईः- श्री गुरु मोहिं कीन्ह कोतवाला। बाँटि निमंत्रण दीन्ह दीन्ह हवाला।
सन्तन से बन्दगी करावा। तन मन प्रेम से उन्हैं बतावा।
अन्त समय हरि पुर भा बासा। सब प्रकार तहँ रहत सुपासा।
श्याम दास था नाम हमारा। कुर्म बंश में भा अवतारा।४।

३२८ ।। श्री ठाकुर जद्दू सिंह जी परिहार ।।

पदः- करो सतगुरु न हो बद्दू। भजो हरि नाम को दद्दू।
मरत जन्मत हुये मद्दू। नहीं कछु चेतते भद्दू।
पाप का भार शिर लद्दू। खांय किरि काल जिमि कद्दू।
बिनय सबसे करै जद्दू। जियति लखि लेव निज हद्दू।४।

३२९ ।। श्री ठाकुर मुलायम सिंह जी ।।

पदः- मेरी बिनती यही नर लुगाइयों से।
फल पाओगे निज निज कमाइयों से।
बचा चाहो गर्भ की झुलाइयों से।

करो सतगुरु गिरो क्यों मुलाइयों से।
नाम पाओ बरी हो जुदाइयों से।
तन छूटै तो जाओ बधाइयों से।

३३० ।। श्री ठाकुर कमल नयन सिंह जी ।।

पदः- मही माल पर मेहरी। तीनौ को समुझो केहरी।
जब माँगै निज निज बेहरी। तब कस आँगन घर डेहरी।
जिन पायो नाम कि जेहरी। चट नांघि गयो भव देहरी।
भजि लीजै हर दम हेहरी। नहिं यम तन दें सब चेहरी।४।
(शब्दार्थः जेहरी = अनमोल जेवर)

३३१ ।। श्री अन्धी माई जी ।।

पदः- याद कर कर्म निज खोंटे जीव सतगुरु के ढिग जाते।
वहां तन मन से ब्याकुल ह्वै परैं चरनों में अकुलाते।
बयाँ चिट्ठा करैं अपना ज़रा पर्दा नहीं लाते।
उसी छन प्रभु दया सागर माफ़ सब करके अपनाते।४।

नाम जप की बिधी देवैं ध्यान धुनि नूर लय पाते।
सुनै अनहद चखै अमृत देव मुनि संघ बतलाते।
जगै नागिनि चलैं चक्कर कमल सब उलटि खिल जाते।
महक सब स्वरन से निकलैं कहन में सो नहीं आते।८।

रहैं उनके सदा सन्मुख राधिका श्याम मुसक्याते।
सदा निर्बैर औ निर्भय चरित हरि के बिमल गाते।
मिलै तर खुश्क जो भोजन उसे लै प्रेम से खाते।
अन्त तन तजि चलैं निज पुर कहै अन्धी वही माते।१२।

३३२ ।। श्री बाझिन माई जी ।।

पदः- यह लीला सरकारी बहिनों होती होतै जावैगी।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानै सो कछु लखि सुख पावैगी।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय चलि शुभ अशुभ जलावैगी।
अमृत पियै देव मुनि दर्शै अनहद सुनि हर्षावैगी।४।

नागिनि जगै चक्र षट बेधैं सातौं कमल खिलावैगी।
मन्द सुगन्ध स्वरन ते निकसै मस्त बोलि नहिं पावैगी।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि की छवि सन्मुख छावैगी।
बाँझिन कहै त्यागि तन निज पुर जाय गर्भ नहिं आवैगी।८।

३३३ ।। श्री कोढ़ी शाह जी ।।

पदः- पहले बहुत नीक लागत है यारों पाप कर्म करने में।
बीज जामि कै बृक्ष होत फल लागत दुख धरने में।
पाकैं फूटैं गिरैं खाय को गन्ध उठै सरने में।
बैठव उठव जात ह्वै भारु नेक न कल परने में।४।

गाँव परोस औ घर के कहते सुक्ख इन्हैं मरने में।
मुश्किल से कोइ पास में आवत पानी मुख डरने में।
सब को हड़ै घिना तब तन की ऊब स्वाँस भरने में।
कोढ़ी साह कहैं सतगुरु करि भजो न भय तरने में।८।
(शब्दार्थः हड़ै = तकलीफ)

३३४ ।। श्री बहिरे शाह जी ।।

पदः- भक्तों करो शिष्य असुरन दल।
बड़े गुलाम नेक नहिं मानत हर दम करते हलचल।
सतगुरु करौ परै तब सब के तन मन में बड़ी खल भल।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि पाय फँसावो दल दल।
सन्मुख राम सिया रहैं छाये जिनके बल से सब बल।
बहिरे कहैं अन्त निज पुर हो फेरि सकौ नहिं जग ढल।६।

३३५ ।। श्री दया शाह जी ।।

पदः- नर तन पाय वृथा क्यों खोवत।
समय अमोल जात है यारों मोह नींद में सोवत।
या से चेति करो अब सतगुरु जे सब भय दुख धोवत।
तन के असुर निसरि सब भागैं कर मीजैं औ रोवत।४।

ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि हर दम सुनिये होवत।
सन्मुख श्यामा श्याम को निरखौ जो भक्तन मुख जोवत।

दया शाह कहैं तन मन प्रेम में एक तार जो नोवत।
ते तन तजि साकेत बिराजत फिर नहिं कूड़ा ढोवत।८।

३३६ ।। श्री अपाहिज शाह जी ।।

पदः- सतगुरु करि सुमिरन बिधि पाई। सो जियतै सब लेय कमाई।
ध्यान प्रकाश समाधि में जाई। रोम रोम धुनि नाम सुनाई।
अनहद नाद कि सुनै बधाई। पियै अमी रस आह बुताई।
सुर मुनि मिलैं लिपटि मुसक्याई। नागिनि जगि सब लोक दिखाई।४।

षट चक्कर बेधन हों भाई। सातौं कमल खिलैं सुखदाई।
राम सिया सब के पितु माई। सन्मुख देंय छटा छबि छाई।
कहैं अपाहिज दीन बताई। यहि बिधि बिन निज पुर को आई।
का नंगे का पहिने भाई। प्रेम बिना नहिं हो स्थाई।८।

३३७ ।। श्री लाला राधे रमन लाल जी ।।

पदः- आयु घटाना और बढ़ाना धन यश पुत्र रोग हरना।
सुर मुनि को अधिकार दीन प्रभु करि विश्वास हृदय धरना।
शुभ कामन से सुक्ख होत औ अशुभ से मानो क्षय करना।
या से नर नारी सब चेतो पाप में तन मन मति भरना।४।

नाहीं तो तन तजि चलि नर्क में कल्पन होवैगा सरना।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो जियति होय भव से तरना।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय चलि दोनो करमन जरना।
राम श्याम नारायण सन्मुख तन तजि गर्भ न हो परना।८।

३३८ ।। श्री हवा शाह जी ।।

पदः- उन्चास कोटि पृथ्वी पर हम सब अगणित बार मरे जल्मे।
नहिं योनि कोई छूटी बाकी तिल तिल घूमे सब जल थल में।
सतगुरु कि कृपा श्रुति नयन खुले फिर आय गये अपने दल में।
है वक्त मुकर्रर धीर धरो बिगड़ी हरि ठीक करैं पल में।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधि मिलै फिर काहे गिरो दुख के नल में।५।

सब दिशि झाँकी नैनन सन्मुख सरिता गिरि पेड़ पान फल में।
बनि दीन रहौ तब होय गुजर कबहूँ मति भूलौ निज बल में।

नहिं ख्याल करो तो होय नरक यम छोड़ैं कसि गन्दे मल में।
ऊपर से खूब मरम्मत हो हर दम रोओ उस खल भल में।
तहँ कौन सहायक हो तुम्हारा अब हीं माते जग हल चल में।१०।

३३९ ।। श्री अड़बड़ शाह जी ।।

पदः- करो सतगुरु भजन जानो होय भव सिन्धु से तरना।
ध्यान धुनि नूर लय जाओ होत जहँ कर्म दोउ जरना।
मिलैं सुर मुनि सुनौ अनहद पिऔ अमृत झरै झरना।
सामने राम सीता औ श्याम श्यामा कि छबि करना।
प्रेम में चूर तन मन से तभी हो जियति में मरना।
कहैं अड़ बड़ त्यागि तन फिर न हो पग गर्भ में धरना।६।

(२)

।। सम्बत् १९९३ तदनुसार १९३६ ई० में यह पद लिखा गया ।।

पदः- राम नाम परताप से गाँधी मोहन दास बिजय पाया।
भारत देश में स्वराज्य का क्या सुघर पताका गड़वाया।
सात द्वीप नौ खण्ड भुवन चौदह में क्या यश फहराया।
स्वामी रामानन्द कि बानी सुफ़ल भई जो बतलाया।
समय पलटिहै सतरह वर्ष के बाद बिष्णु पुर सुनि आया।५।
गौवन के अब प्राण बचैंगे घर घर आनन्द रहै छाया।
दृढ़ विश्वास है राम नाम पर तन मन तीनि जन्म ताया।
प्रथम जन्म प्रहलाद नाम भा दूसर कबीर जी कहलाया।
तीसर मोहन दास नाम भा वैश्य बंश में है जाया।
अड़बड़ शाह कहैं तुमको संक्षेप में हमने समुझाया।१०।

३४० ।। श्री ठाकुर बहोरी सिंह जी ।।

पदः- तन मन का सम्बन्ध घना है।
मन का दुख सुख तन को ब्यापत तन का दुख सुख मनहिं बना है।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानै सो दोनो के पार छना है।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि सन्मुख ता के रूप तना है।४।
अमृत पियै देव मुनि दर्शै हर दम अनहद सुनै ठना है।
नागिनि जगै चक्र सब बेधैं कमल खिलैं आनन्द सना है।

निर्भय औ निर्वैर जियति सो जा को स्थिर रहत मना है।
अन्त त्यागि तन निज पुर राजै फिर जग जन्मि न होत फना है।८।

३४१ ।। श्री सटालू शाह जी ।।

पदः- मुरशिद बचन पर जाय तुल सो जियत भव से पार हो।
धुनि ध्यान लय परकाश पावै कर्म दोनों क्षार हों।
अनहद सुनै अमृत पियै सुर मुनि के संग खेलवार हो।
सन्मुख में सीता राम की छबि हर समय दीदार हो।
नर नारि तन मन प्रेम से सुमिरन करो निशि बार हो।
कहते सटालू त्यागि तन चट जाव वतन सिधार हो।६।

३४२ ।। श्री गोपाल सिंह जी ।।

पदः- सतगुरु करि सुमिरो निशि बासर हरि को कभी भुलाना मत।
सच्चे मातु पिता के सुत ह्वै कुल में दाग लगाना मत।
शान्ति दीनता को गहि प्यारे किसी को कभी सताना मत।
दुःख सुक्ख सम मानि के अपनी नेत को कभी डिगाना मत।४।

कथा कीर्तन हवन औ पूजन हो तहँ कभी लुकाना मत।
पढ़ना सुनना प्रेम से हरि यश हँसना और बकाना मत।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि मिलिहै ख्याल हटाना मत।
सन्मुख राम सिया रहैं हरदम तब तो नैन फिराना मत।८।

अमी पाय घट अनहद सुनि कै सुर मुनि लखि गश खाना मत।
करि परनाम प्रेम से मिलना नेकौ मन सकुचाना मत।
नागिनि जगै चक्र सब बेधैं कमल खिलैं अलसाना मत।
गुप्त भेद यह अधिकारी बिन किसी को कभी बताना मत।१२।

३४३ ।। श्री रघुपति सिंह जी ।।

पदः- बांधो राम नाम का हीरा।
सतगुरु करि जप भेद जानि लो जियति मिटै भव पीरा।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि सन्मुख सिय रघुबीरा।
अनहद सुनो पिओ घट अमृत सागर भरे गंभीरा।४।

तन मन प्रेम से सुर मुनि भेटैं झरै दृगन ते नीरा।
करि विश्वास सत्य को साधै दीन रहै धरि धीरा।
सोरह सहस दैत्य माया दल पकड़ि तिनहिं सो चीरा।
दोनो दिशि जय जय हो ताकी बाजै सूर कबीरा।८।
उमा लाय वा के मुख देवैं नित ताम्बूल क बीरा।
शारद कमला पंखा मुरछल से करैं सुभग समीरा।
अन्त त्यागि तन चढ़ि सिंहासन पहुँचि जाय प्रभु तीरा।
पढ़ि सुनि गुनि जे सुमिरन करते तिन के धन्य शरीरा।१२।

३४४ ।। श्री राघो सिंह जी ।।

पदः- कण्ठी राम नाम की बांधो।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो अजा चोर गहि राँधो।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि सन्मुख राधा माधो।
अन्त त्यागि तन निज पुर बैठो शान्ति मौन ब्रत साधो।४।

३४५ ।। श्री कमलेश्वरी सिंह जी ।।

पदः- भजन बिन कागा फोरि खाँय आँखी।
अन्त समय कोइ काम न देहैं जब यम पकड़ि के झाँखी।
वा के संग में जंग करौ किमि पड़े रहौ जिमि माखी।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो सुर मुनि कहा सो भाखी।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय जहँ सुधि बुधि हो राखी।५।
सुर मुनि मिलैं सुनौ घट अनहद लेव अमी रस चाखी।
सूरति अपनी शब्द पै धरि कै जियति देय जो लाखी।
सो तन तजि कै जाय अचलपुर जग त्यागै जिमि पांखी।
या विधि में कोइ संशय नाहीं वा के हम हैं साखी।
चारि पदारथ नाम देत हैं सब के शिर की ताखी।१०।

३४६ ।। श्री उमेश सिंह जी ।।

पदः- हे हरि करुणा निधि चित चोर।
सुर मुनि बेद भजत निशि बासर त्रिभुवन में है शोर।
अधमन का शिरताज एक मैं बिनय करौं कर जोर।
पाप ताप भगि जावैं सारे चितवो नैन कि कोर।४।

३४७ ।। श्री अचल सिंह जी ।।

पदः- सात पांच चौपाई पढ़िये श्री मानस की नर नारी।
सीता राम देंय तब दर्शन संग लखौ सुर मुनि झारी।
पढ़ना सुनना तन मन प्रेम से तब पाओ यह सुख भारी।
नाहीं तो अन्धे के अन्धे सत्य कहौ मैं दै तारी।४।

३४८ ।। श्री ठाकुर बावन सिंह जी ।।

पदः- राम नाम बिधि लेख को मेटत।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानै ते जियतै जग चेतत।
निज परमारथ साधि लीन जिन ते औरन दुख छेकत।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि नित प्रति सुर मुनि भेंटत।४।
अनहद सुनै पियै घट अमृत तन मन प्रेम में फेंटत।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि हर दम सन्मुख देखत।
माया असुर होंय सब काबू जो जीवन को रेतत।
अन्त त्यागि तन निज पुर जावै बैठि मौन नहिं लेटत।८।

३४९ ।। श्री ठाकुर गुर दयाल सिंह जी ।।

पदः- देखौ श्याम प्रिया हंसि हेरत।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानै जे भव दुख को पेरत।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै मिलैं देव मुनि टेरत।
अनहद सुनौ पिऔ घट अमृत असुर भगैं मुख फेरत।४।
अधिकारी या के हैं सोई तन मन प्रेम में जे गेरत।
धन्य धन्य पितु मातु हैं उनके जे हरि नाम में भेरत।
जो कोइ उनके पास में आवै कहैं नाम का ले रत।
अन्त त्यागि तन निज पुर राजैं जहां न कोई घेरत।८।

३५० ।। श्री पावन सिंह जी ।।

पदः- भजन बिन मन न कभी ठहराय।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो नयन श्रवन खुलि जांय।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि हर शै से भन्नाय।
सुर मुनि मिलैं सुनौ घट अनहद पिओ अमी हर्षाय।

नागिनि जगै चक्र षट बेधैं सातौं कमल फुलाय।
माया असुर भागि जांय तन से हाथ मलैं पछिताँय।६।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख दें छबि छाय।
पेड़ा बर्फी जल समेत नित सुर पति दें पहुँचाय।
पाय होहु जो कछु बचि जावै सो वै लें गठिलाय।
शची समेत जाय निज पुर में पावैं सुख से भाय।
सुमिरन बिन बिरथा तन जानो कहेन सबन हित गाय।
जियति जानि तन तजि साकेत में बैठो दुख मिटि जाय।१२।

३५१ ।। श्री अति बल सिंह जी ।।

पदः- भजिये राम नाम को ककुआ।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो बने बैठ क्यों भकुआ।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि होय चलै जिमि तेकुआ।
अनहद सुनो पिओ घट अमृत काटो असुरन नकुआ।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख दर्शैं झकुआ।५।
हरदम मस्त बताय सकौ क्या निरखि निरखि छबि छकुआ।
अन्त त्यागि तन निज पुर राजौ फेरि न जग दुख फकुआ।
जो नहिं मानौ कहा हमारा चलैं यमन के चकुआ।
तन से जीव बिलग करि देवैं पकड़ैं जैसे केचुआ।
जाय नरक में दाखिल कर दें काम न देवै ककुआ।१०।

३५२ ।। श्री लाल सिंह जी ।।

पदः- एक श्लोक पढ़ै गीता का तन मन प्रेम से नारी नर।
सत्य बचन यह मानो मेरा पाप ताप सब जावैं जर।
दर्शन देवैं कृष्ण मनोहर अधर पै सुन्दर मुरली धर।
मन्द हंसनि क्या चितवनि बांकी नूपुर दोउ पग छम छम कर।
सुर मुनि मिलैं शीश कर फेरैं कहैं मांगिये तो कछु बर।
अन्त समय बैकुण्ठ धाम ले बोलैं जय जय बिधि हरि हर।६।

(२)

तन मन प्रेम से शिवं महिम्न की पाठ करै जो कोई।
धन यश पुत्र भक्ति बर दें शिव रहै सुखी नर सोई।

नर नारी सतगुरु करि चेतो समय रहे क्यों खोई।
अघ संघारन रा को सुमिरो आवागमन न होई।४।

३५३ ।। श्री लाला दशरथ लाल जी ।।

पदः- भरथ राम की प्रीति अगम जहँ रज तम सत को मन नहिं जावै।
बिधि हरि हर फणपति औ गणपति शारद कहि न सकैं सकुचावै।
प्राण जीव आतम में मिलकर परमातम में जाय समावै।
कहन सुनन ते परे गयो ह्वै एक रूप तेहि को बिलगावै।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानै तब जियतै करतल करि पावै।५।

ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि सन्मुख राम सिया छवि छावैं।
अमृत पियै सुनै घट अनहद सुर मुनि मिलैं बिहँसि उर लावैं।
नागिनि जगै चक्र सब बेधैं कमल खिलैं क्या महक उड़ावैं।
निर्भय औ निर्बैर जाय ह्वै माया असुर न नेरे आवैं।
अन्त त्यागि तन निज पुर राजैं फेरि न चौरासी चकरावैं।१०।

३५४ ।। श्री प्रभाकर जी ।।

पदः- अर्थ न जप में अनमिल आखर। सतगुरु का जानै कोइ चाकर।
शिव बजरंग शेष औ लोमश। मस्त भये सुर मुनि बहु पाकर।
महा वाक्य औ महा मंत्र यह। परम तत्व लघु मंत्र बताकर।
अजपा रेफ़ बिन्दु कोइ भाख्यौ। कोई बीज मंत्र कह्यौ आकर।
सोऽहं का आधार कह्यौ कोइ। कोइ ओंकार क प्राण सुनाकर।५।

कूटस्थो अक्षर निःक्षर। कोइ रंकार कह्यो मुसक्या कर।
हैं ह्वैगे ह्वै हैं हर दम रहैं। सारा विश्व रचा है ताकर।
या से चेत करो नर नारी तन समझो जिमि पाकी काकर।
मन एकाग्र करिकै जियतै में पिसि जाओ जिमि काँकर।
रूप प्रकाश समाधि ध्यान धुनि यही देत कहते परभाकर।
अन्त त्यागि तन निज पुर बैठो छूटै दुख की साँकर।११।

३५५ ।। श्री पलटन शाह जी ।।

पदः- प्रेम में तन मन को जे जन देत हैं बलिदान कर।
छा दें छटा सन्मुख में उनके श्याम श्यामा आन कर।

अमृत पियै अनहद सुनै सुर मुनि मिलैं लपटान कर।
असुर माया शान्त हों फिर किमि सकै दौरान कर।
चेत कर सुमिरन करो यह बैन साँचे जानकर।५।
पावो पता गहि लो लता खाओ खता क्यों छान कर।
ख्याल नाम पै हर समय कर लेव ताना तान कर।
गुदरी न हो दागी बचो गुनि लेव यारो ज्ञान कर।
जियतै में सब सुख खान लो सतगुरु बचन को मान कर।
अन्त तन तजि जाव निजपुर बासना सब पान कर।१०।

३५६ ।। श्री उल्टन शाह जी ।।

पदः- तन समय है अनमोल मानो नारि नर मत चूकना।
सतगुरु करो हरि को भजो छूटै गरभ का भूँकना।
धुनि ध्यान लय परकाश पा माया असुर गहि बूँकना।
सुर मुनि मिलैं तन में लिपट दें गुद गुदा हो हूकना।
अनहद सुनौ अमृत पिऔ निर्भय रहौ तजि पूकना।५।
सन्मुख लखौ घनश्याम को मुरली अधर धरि फूँकना।
सब साज ताल और तान स्वर क्या राग रागिनि कूकना।
स्तब्ध सब सुनि जांय ह्वै किमि होंय तँह पर हूँकना।
पढ़ि सुनि व गुनि के जाव लगि आनन्द लो हौ मूकना।
तन त्यागि निज पुर बास हो जहँ खान पान न थूकना।१०।

३५७ ।। श्री निहोरे शाह जी ।।

पदः- भोजन बसन के बहुत संत हैं भजन करन के थोरे जी।
सतगुरु किह्यो न जप बिधि जान्यो रहे कोर के कोरे जी।
मूँड़ मुँड़ाय केश रखाये कोइ काले कोइ गोरे जी।
तन में तैल सुगन्धित लेपै मन बिषयों संग जोरे जी।
हाट बाट में घूमन जावैं गावैं तानै तोरे जी।५।
पाप कमाई हर दम करते लोक लाज को छोरे जी।
कपट कि मूरति मीठी बानी बोलत मानहु भोरे जी।
पैसा के हित ज्ञान कथत क्या नयन बहावत लोरे जी।

लखि लखि कलि का नाटक भाई कहते शाह निहोरे जी।
अन्त समय जमदूत बाँधि लै जांय नर्क में बोरैं जी।१०।

३५८ ।। श्री हुशियार शाह जी ।।

(स्थान मुर्शिदाबाद, बंगाल)

पदः- जियतै नर तन को लीजै सुधार गुनो सतगुरु ढिग चलो।१।

शेरः- नाम जपने की बिधी तुमको बता देवैंगे।
पाप तन मन के सुनो सारे मिटा देवैंगे।।
होवै दोनों तरफ़ जयकार गुनो सतगुरु ढिग चलो।२।

शेरः- ध्यान धुनि नूर समाधी में जहां पैठोगे।
देव मुनि रोज़ मिलैं बिहँसि संग बैठोगे।।
उठै अनहद कि क्या गुमकार गुनो सतगुरु ढिग चलो।३।

शेरः- जगै कुण्डलिनी शक्ति चक्र छइउ घूमैंगे।
कमल सातौं भि खिलैं महक उड़ै झूमैंगे।।
चखौ अमृत मगन निशि बार गुनो सतगुरु ढिग चलो।४।

शेरः- श्याम श्यामा कि छटा सामने में छावै जी।
मस्त तन मन से बनौ बोलि नहीं आवै जी।।
हर दम करते रहौ दीदार गुनो सतगुरु ढिग चलो।५।

शेरः- कदम इस मार्ग पर जिसने है धरा लूटा मज़ा।
काल कर जोरे खड़ा दण्डवत करती है कज़ा।।
अजा भागी सकै ना निहार गुनो सतगुरु ढिग चलो।६।

शेरः- त्यागि तन राम धाम चढ़ि बिमान जाना हो।
लौटि फिर गर्भ दुःख काहे को उठाना हो।।
सर्व सुक्खों क है यह सार गुनो सतगुरु ढिग चलो।७।

शेरः- चेतो नर नारि अपने कुल की कान छोड़ो मत।
बलि बलि मैं जाऊँ बचन मानि लेव मेरे सत।।
यही बिनती करैं हुशियार गुनो सतगुरु ढिग चलो।८।

३५९ ।। श्री गावन शाह जी ।।
(मुकाम कुतुबनगर)

पदः- लीजै जियतै में नर तन सुधार करो सतगुरु हो मगन।१।

शेरः- ध्यान परकाश समाधी औ धुनी जारी हो।
देव मुनि रोज मिलैं बोलैं जै तुम्हारी हो।।
भगैं असुरन क दल चुप मार करो सतगुरु हो मगन।२।

शेरः- घट में अनहद कि ताल मधुर मधुर सुनना हो।
अमृत नित पान करो झरत रहत झरना हो।।
रेख कर्मन कि पर मेख मार करो सतगुरु हो मगन।३।

शेरः- शक्ति कुण्डलिनी जाग चक्र सब चला देवै।
कमल सब सीधे करिके एक दम खिला देवै।।
महक मिलती रहै निशिवार करो सतगुरु हो मगन।४।

शेरः- बिष्णु कमला कि छटा हर समय सन्मुख देखो।
सारे संसार का हो हाथ तुम्हारे लेखो।।
होवै दोनों जहां में प्यार करो सतगुरु हो मगन।५।

शेरः- जपा हरि नाम नहीं तन मन लगा जिसने भाई।
छूटैगि कैसे सुनो उसकि पुरानी काई।।
भई सारी उमर बेकार करो सतगुरु हो मगन।६।

शेरः- कदम जिसने है धरा मार्ग पर सब करतल किया।
त्यागि तन जाय करके पास ही में बास लिया।।
कहैं गावन हुई बलिहार करो सतगुरु हो मगन।७।

शेरः- कोटिन में कोई होगा इस मार्ग पर चलने वाला।
सारी सिद्धिन का है यह एक दम तलने वाला।।
है सब में औ सबसे न्यार करो सतगुरु हो मगन।८।

३६० ।। श्री दरीना शाह जी ।।

(मुकाम मुज़फ़्फ़र पुर)

पदः- लीजै जियतै में निज घर निहार करो सतगुरु मग मिलै।१।

शेरः- नाम कि तान रोम रोम जहां जारी हो।
ध्यान परकाश समाधी तो सुधि बिसारी हो।।

कर्म होवैं शुभा शुभ छार करो सतगुरु मग मिलै।२।

शेरः- देव मुनि आय मिलैं अनहद सुनो घट में सुधर।
पान अमृत क करौ कैसा स्वाद आवै मधुर।।

नहिं बरनत बनै कछु यार करो सतगुरु मग मिलै।३।

शेरः- जगै कुण्डलिनी शक्ति चक्र छइउ बेधैं तब।
कमल चट फूलि महक देंय बड़ी सातौं तब।।

प्रेम तन मन में हो एक तार करो सतगुरु मग मिलै।४।

शेरः- राम औ कृष्ण बिष्णु शक्तिन सहित आ जावैं।
हर दम सन्मुख में छटा छवि श्रृंगार छा जावै।।

लखौ नयनन बहै जल धार करो सतगुरु मग मिलै।५।

शेरः- पांचों तत्वन के रंग न्यारे न्यारे दर्शैं।
कभी रंग रंग के कुम कुमे प्यारे बर्षैं।।

दगैं गोला औ छूटैं अनार करो सतगुरु मग मिलै।६।

शेरः- घटा घहराय कभी आय दामिनी दमकैं।
मेह बरसै औ कभी साफ़ सितारे चमकैं।।

नाना कौतुक होंय निशि बार करो सतगुरु मग मिलै।७।

शेरः- शाह दरीना के सखुन सुनि के जौन ख्याल करैं।
मार्ग यह साफ़ बनैं दीन शान्ति पग तो धरै।।

वाकी दोनो तरफ़ जयकार करो सतगुरु मग मिलै।८।

३६१ ।। श्री हिम्मत शाह जी ।।

(शाहजहाँ पुर)

पदः- करो सतगुरु मिलै सुख सार नहीं तो नर तन बृथा।१।

शेरः- ध्यान धुनि नूर समाधी क सुक्ख कैसा है।
बनता देखत ही कहत बनत नहिं ऐसा है।।

रहै तन मन मगन निशिवार नहीं तो नर तन बृथा।२।

शेरः- साज अनहद तो मधुर मधुर हर समय बाजै।
अमृत पीने को मिलै देव मुनि सन्मुख गाजै।।

करैं तारी बजाय बलिहार नहीं तो नर तन बृथा।३।

शेरः- जाग कुण्डलिनी मातु चक्र षट नचा डालै।
कमल सातों को उलटि एक दम फुला डालै।।

मिलै खुशबू बड़ी मजेदार नहीं तो नर तन बृथा।४।

शेरः- शम्भु गिरिजा कि छटा हर समय सन्मुख होवै।
फ़ौज असुरन कि निकसि भागि जाय औ रोवै।।

फिर कबहूँ करै नहिं वार नहीं तो नर तन बृथा।५।

शेरः- अन्त में राम धाम तुम को शिव पठावैंगे।
फेरि काहे को भला गर्भ में झुलावैंगे।।

लिखा बिधि का है मेटन हार नहीं तो नर तन बृथा।६।

शेरः- कामना त्यागि भजन किसी देव का कीजै।
मुक्ति औ भक्ति का बरदान सभी दें लीजै।।

कहैं हिम्मत न बैठो हार नहीं तो नर तन बृथा।७।

३६२ ।। श्री खुदा जान जी ।।

(मुँगेर)

पदः- लीजै अपना परमारथ सुधार करो सतगुरु दुख मिटै।१।

शेरः- जाम कौसर क पिओ साज सुनो अनहद का।
देव मुनि आय मिलैं भेद देवैं सरहद का।।

बनि जाओ बीर हुशियार करो सतगुरु दुख मिटै।२।

शेरः- ध्यान धुनि नूर समाधी में जहां चलना हो।
सारे पापों के ताप खुद बखुद तलना हो।।

फौज असुरन कि भागै हार करो सतगुरु दुख मिटै।३।

शेरः- शक्ति कुण्डिलिनी जगै चक्र छइउ घूमैंगे।
कमल सातों भि उलटि एक साथ फूलैंगे।।

खुशबू मिलती रहै हर बार करो सतगुरु दुख मिटै।४।

शेरः- सरस्वती गणेश की सन्मुख में रहैगी झाँकी।
बरनि पाओगे नहीं ऐसी अजब है बाँकी।।

मुद मंगल कि देने हार करो सतगुरु दुख मिटै।५।

शेरः- करिके यतन मगन बनो खुदा जान सच कहैं।
सूरति शबद के साथ धुनो मन न तब बहै।।

यही समझो भजन का सार करो सतगुरु दुख मिटै।६।

३६३ ।। श्री रहीम जान जी ।।

पदः- मुरशिद करि सूरति शब्द पै दो हालै मति रसना हलक हलक।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधि चलो तहँ होहु गरक नहिं मलक फलक।
सुर मुनि सब आय के दें दरशन बोलैं नहिं मारे पलक तलक।
घट साज सुनो कौसर चाखो भरा सागर होय न छलक छलक।
नीरज फूलैं सब चक्र सुधैं नागिनि चमकै जिमि अलक अलक।
हर दम सन्मुख महबूब लखौ क्या झाँकी बाँकी झलक झलक।६।

३६४ ।। श्री सांई जान जी रण्डी ।।

पदः- जय श्री सतगुरु अधम उधारन बसो हमारे सन्मुख में।
दीनन को निज पुर बैठारन बसो हमारे सन्मुख में।
बिधि की लिखी करम गति टारन बसो हमारी सन्मुख में।
तन मन धन तब चरनन बारेन बसो हमारे सन्मुख में।४।

३६५ ।। श्री करीम जान जी रण्डी ।।

पदः- मैं बार बार परनाम करूँ गुरुदेव आप के चरनों में।
सुर मुनि सब नित प्रति गुन गावत तन मन प्रेम ते शरनों में।
आप की कृपा बिना सुख कबहुँ मिलत न कोई वरनो में।
या से जीव परे चकरावैं चौरासी के झरनों में।४।

३६६ ।। श्री सच्ची जान जी रण्डी ।।

चौपाईः- शीश मुकुट सोहैं आल कानन कुण्डल बिशाल
केशर को तिलक भाल आयुध भुज चारी।
पीत बसन अंग साजे बांय दिशि रमा राजें
कोटिन लखि मदन लाजैं गरुड़ की सवारी।
सतगुरु करि जपै नाम सूरति धरि अष्ट याम
तन तजि लें अचल धाम होवै भव पारी।
भाखै यह सच्ची जान छोड़ो मति कुल की कान
लीजै मम बिनय मानि चेतो नर नारी।४।

३६७ ।। श्री दाता जान जी रण्डी ।।
(मुकाम बनारस)

पदः- जिसे मुरशिद मिलै उसकी भलाई होने वाली है।
तन से सारे दुशमनों की भगाई होने वाली है।
ध्यान धुनि नूर लय अनहद बंधाई होने वाली है।
भरा घट में जो है कौसर पिलाई होने वाली है।४।

देव मुनि संग करि कीर्तन कुदाई होने वाली है।
ताल दै दोनो हाथों पर नचाई होने वाली है।
नागिनी को जगा चक्कर सोधाई होने वाली है।
कमल सातों उलटि एक दम फुलाई होने वाली है।८।

बिधाता के लिखे अक्षर मिटाई होने वाली है।
जगत पति कृष्ण प्यारे संग सगाई होने वाली है।
हर समय नैनों से नैना भिड़ाई होने वाली है।
अन्त तन छोड़ि निज पुर को बिदाई होने वाली है।१२।

३६८ ।। श्री अवसान शाह जी ।।

पदः- हर जगह श्री अवध है और हर जगह मिथिलापुरी।
हर जगह कैलाश काबा हर जगह काशी पुरी।
हर जगह बैकुण्ठ चारों हर जगह श्री मधुपुरी।
हर जगह सब तीर्थ सुर मुनि छोड़िये संगत बुरी।४।

मुरशिद करो मारग मिलै टूटै कपट की सब छुरी।
धुनि ध्यान नूर समाधि सन्मुख कृष्ण राधे छबि जुरी।
असुर दल लै अजा भागै फेरि कबहूँ नहिं घुरी।
यम काल मत्यू दूरि ते लखि लेंय निज मुख को मुरी।८।

निर्वैर निर्भय जियति हो तब आप सब अनुभव फुरी।
बेकार स्वांस न जान दो यह तन परम पावन पुरी।
नहिं अन्त में यम दूत आकर देंय मुख भाला हुरी।
तन मन औ प्रेम से हो ग़रक अवसान कह सो नहिं दुरी।१२।

३६९ ।। श्री अवसान बीबी जी ।।

पदः- क्या लिखवावें कछु कहत नहिं बनि आवै।
हर दम संग में नन्द लाल रहैं नहिं जावै।
नाना बिधि खाना खाय औ मुझे खिलावै।
क्या किस्म किस्म के आब सुगन्धित प्यावै।
जो पहिनै भूषन बसन वही पहिनावै।५।

लाकर के रूह गुलाब मेरे शिर नावै।
खुशबू से तन मन मस्त बोलि नहिं आवै।
ऐछैं केशन को कंघा सुन्दर लावै।
गूँथै केशन में कली जौन मन भावै।
जब लेटै संग में गले मोहिं लिपटावै।१०।

मुख चूमै हँसि हँसि थपकि के फेरि सुलावै।
जब उठने का हो समय तुरन्त जगावै।
आँखैं मुख धोकर पोंछि के गोद बिठावै।
जब करै गुस्ल तब संघै मुझे करावै।
जब बैठि के प्यारी मुरली कूकि बजावै।१५।

सुर मुनि नभ तें लखि फूलन की झरि लावै।
नाचै कर से कर पकरि के मुझै सिखावै।
गति नेक न होवै भँग भाव बतलावै।
सब सखा सखी प्रगटैं औ रहस मचावैं।
तहँ मध्य में राधे तारी दै हर्षावैं।२०।

मुरशिद करि के जे शब्द पै सूरति लावैं।
ते जियतै करतल करैं जन्म फल पावैं।
लय ध्यान प्रकाश औ नाम कि धुनि खुलि जावै।
अनहद घट बाजै सुनै अमी पी पावै।
सुर मुनि नित आवैं मिलन संघ बतलावैं।२५।

क्या करैं कीर्तन हरि यश खूब सुनावैं।
नागिनी मातु जगि चक्र वेगि घुमरावै।
फूलैं एक दम सब कमल तरंग उड़ावै।
सन्मुख हरि छबि श्रृंगार छटा तब छावै।
करि नैन सैन औ मन्द मन्द मुसक्यावै।३०।

शुभ अशुभ कर्म जरि जाँय द्वैत बिलगावै।
तब हो निर्भय निर्बैर कौन धमकावै।
अवसान बीबी के सखुन जौन उर लावै।
सो अन्त जाय निज वतन न जग चकरावै।३४।

३७० ।। श्री राम सरन दास जी ।।
(स्थान भदसाना, जिला रायबरेली)

पदः- सतगुरु बचन भजन से बढ़िकै।
सुर मुनि सब हम से यह भाख्यौ हम न कहैं कछु गढ़िकै।
ध्यान प्रकाश धुनी लय होवै श्याम प्रिया मिलैं कढ़िकै।
सुर मुनि मिलैं सुनो घट अनहद पिओ अमी मन लढ़िकै।
जियतै ठौर ठेकान लेव करि होय न सुनि लिखि पढ़िकै।
अन्त त्यागि तन राम सरन कहैं चलौ सिंहासन चढ़िकै।६।

३७१ ।। श्री बाबा उधो दास जी ।।

(मुकाम धनुआ, तिलोई, जिला रायबरेली)

पदः- गोलोक वासी श्याम ही साकेत बासी राम हैं।
बैकुण्ठ बासी बिष्णु चारों अंश उनके आम हैं।
सतगुरु करै मारग मिलै तब सुफ़ल नर का चाम है।
आतमा तन में अठारह बसत जो बसुयाम हैं।४।

नर नारि चेतो जानि लो लागत न नेको दाम हैं।
सुर मुनि मिलैं अनहद सुनो अमृत चखो आराम है।
धुनि ध्यान लय परकाश सन्मुख रूप सब गुण ग्राम है।
ऊधो कहैं तन त्यागि बैठो अचल पुर निज धाम है।८।

३७२ ।। श्री साहेब सहाय जी ।।

(मुकाम अहमद नगर, जिला रायबरेली)

पदः- सब विश्व तुम में है बसा सब विश्व में तुम हो बसे।
सतगुरु करो पावो पता दुख जाल में काहे फंसे।
धुनि ध्यान लय परकाश हो भागैं असुर फिर नहिं चसे।
अमृत पिओ अनहद सुनो सुर मुनि बिहँसि उर में लसे।४।

सन्मुख में राधे श्याम मुरली अधर धर हर दम हँसे।
दीनता औ शान्ति गहि तन मन को जिन जियतै कसै।
ते प्रेम पद करतल किया सूरति शबद पर धरि ठसे।
मस्त मुख से क्या कहैं अनमोल पाकर के रसे।८।

३७३ ।। श्री बाबा हरि चरन दास जी ।।

(मु. पाकरि गाँव, जिला रायबरेली)

पदः- नाम का अमल चढ़ै जब भाई।
रोम रोम रग रग सब हाड़न हर शै से सुनि पाइ।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानै ता को यह सुख आई।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै सुधि बुधि जहां भुलाई।४।

अमृत पियै सुनै घट अनहद सुर मुनि संघ बतलाई।
नागिन जगै चक्र षट बेधैं सातौं कमल फुलाई।

सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख दें छबि छाई।
अन्त त्यागि तन हरि पुर राजैं कह हरि चरन सुनाई।८।

(२)

पदः- जानत भक्त जगत का खाता।
सतगुरु करि तन मन को तायो सब दृष्टी में आता।
नाम अमल उतरत नहिं नेकौ एक तार भन्नाता।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै जहाँ रूप नहिं बाता।४।

अनहद सुनै पियै घट अमृत सुर मुनि संघ बतलाता।
नागिनि जगै चक्र षट घूमैं कमल खिलैं क्या साता।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख लखि मुसक्याता।
कह हरि चरन छोड़ि तन निज पुर चढ़ि सिंहासन जाता।८।

(३)

पदः- नाम क नशा जौन कोइ पावै।
चढ़ै अमल कबहूँ नहिं उतरै तन मन प्रेम मिलावै।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय जहाँ पवन नहिं जावै।
अमृत पियै सुनै घट अनहद सुर मुनि हँसि उर लावै।४।

नागिनि जगै चक्र सब नाचैं कमलन महक उड़ावै।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि हर दम सन्मुख छावैं।
सतगुरु करै मिलै यह मारग जियतै भव दुख जावै।
कह हरि चरन त्यागि तन हरि ढिग जाय न जग चकरावै।८।

३७४ ।। श्री कमल शाह जी ।।

पदः- सुमिरन बिना दोज़ख में पड़ो जाय किसी दिन।
अबहीं तो नहीं ख्याल करौ हाय किसी दिन।
मुरशिद करो मारग गहो सुख आय किसी दिन।
धुनि ध्यान नूर लय मिलै दुख जाय किसी दिन।४।

सुर मुनि मिलैं बिहँसि के गले लाय किसी दिन।
अनहद सुनो अमृत पिओ हर्षाय किसी दिन।
नागिनि जगै षट चक्र भी घुमराँय किसी दिन।
सातों कमल खिलैं महँक उड़ाय किसी दिन।८।

सन्मुख में श्याम श्यामा छबि छाँय किसी दिन।
संग सोहैं सखा सखियाँ नाचैं गाँय किसी दिन।
चारों तरफ़ से घेरि गुद गुदाय किसी दिन।
तन छोड़ि लेव निज पुर सुनो भाय किसी दिन।१२।

३७५ ।। श्री गुलज़ार शाह जी ।।

पदः- वारिस अली जी हाजी देवैं सरीफ़ के।
जो फना फिल्ला जानिगे बेटे सरीफ़ के।
गुलजार शाह कहते मुरशिद मेरे वही थे।
जिनकी दया से हमहूँ उस राह पर सही थे।

(२)

पदः- बिसवाँ नगर हाट मगरहिया। पूरब नाके पर हम रहिया।
इमली का एक पेड़ पुराना। खोखल वा में एक दिखाना।
वाके तले बास मन माना। जब चाहैं तब बैठक ठाना।
पानी बरसै आंधी आवै तब ओके खोखल में जावैं।

(३)

पदः- गुलशन तुम्हारा तन है चमनों पै टहलो भाई।
सतगुरु से जानि सुमिरन मन से करो मिताई।
धुनि ध्यान नूर लय हो सब में वही दिखाई।
सुर मुनि मिलैं लिपटि के अनहद सुनो बधाई।४।

अमृत पियो मगन ह्वै सोता चलत सदाई।
नागिन जहाँ जगैगी सब लोक दे घुमाई।
षट चक्र सोधि नाचैं सातौं कमल फुलाई।
तन त्यागि निज वतन लो गुलज़ार शाह गाई।८।

३७६ ।। अनन्त श्री स्वामी बाबा गोपाल दास जी ।।
(स्थान सीतापुर, नदी सराइन के समीप)

दोहाः- सीतापुर स्थान मम, नदी सराइन पास।
गोपाल दास कह मानिये, बात कही हम खास।
नब्बे बर्ष की आयू में, बैठि क तजा सरीर।

गोपाल दास कह यान चढ़ि पहुँच गयन हरि-तीर।
मंत्र षड़ाक्षर के जपे, षट बिकार हों नास।
गोपाल दास कह भक्त सो, जावे प्रभू के पास।६।

मन्त्र राज या को कहैं, गुरु से लै उपदेश।
बैठि एकान्त में जप करै, पावै अपना देश।
बिधि हरि हर शारद जपैं, शेष गणेश दिनेश।
पवन तनय सुर मुनि जपैं, सब मन्त्रन में पेश।
शान्ति दीन बनि लागिये, सफ़ल होय नर चाम।
गोपाल दास कह छाड़ि तन, जाव राम के धाम।१२।

पदः- राम नाम मुद मंगल दाता।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो तब भक्तों फरियाता।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रूप सामने छाता।
सब अवतार देव मुनि दर्शें अनहद नाद सुनाता।
अमृत पिओ स्वाद क्या बरनौ रोम रोम पुलकाता।५।

नागिन चक्र कमल सब जागैं अदभुत महक उड़ाता।
वेद शास्त्र उपनिषद संहिता सब पुरान बुलवाता।
राग रागिनी द्वापर त्रेता सतयुग को बैठाता।
लोक भुवन औ द्वीप खण्ड सब देश शहर ले आता।
कसबा पुरी ग्राम गिरि सागर नदी ताल उमड़ाता।१०।

सब से नाच गान करवावै देखत ही बनि आता।
माया मृत्यु काल कर जोड़े बनगे पूरे नाता।
बीज मन्त्र औ मन्त्र परम लघु महा मन्त्र बिख्याता।
रेफ़ बिन्दु है नाम राशि का राम पिता सिय माता।
सब से सब में परे नाम है बिधि कर लेख मिटाता।१५।

चारों मोक्षन का दरवाजा आपै जाय खोलाता।
है अलेख औ अकथ अगम यह कोई पार न पाता।
प्रेम कि ताली से यह हाली दौड़ि तुम्हैं लिपटाता।
दीन बने बिन मिलै न यह पद सत्य मानिये ताता।
कहैं गोपाल दास मत चूकौ है अमोल यह बाता।२०।

(२)

पदः- जानो राम नाम सतसंग।
सतगुरु से जप की बिधि लीजै तब लागै यह रंग।
चौदह सहस चोर तन भीतर सारे होंय अपंग।
निर्भय औ निर्बैर जियत हो कौन करै फिर तंग।
हर दम रक्षक शिव त्रिशूल लिये बांये दिशि बजरंग।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय जहँ सुधि बुधि हो भंग।६।

सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख निरखौ अंग।
अन्तराय नेकौ नहिं होवैं तन मन भरौ उमंग।
अमृत पिऔ सुनौ घट अनहद सुर मुनि लेंय उछंग।
नागिन जगै चक्र सब घूमैं कमलन उड़ै तरंग।
सब लोकन की फेरी करिकै जीति लेओ जग जंग।
कहैं गोपाल दास तन छूटै बैठो हरि के संग।१२।

(३)

पदः- हरि सुमिरन बिनु धोखा खैहो।
सतगुरु करि जप भेद जानि कै तन मन प्रेम में तैहो।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि हर शै से सुनि पैहो।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख में छबि छैहो।४।

हर हनुमान संग में हर दम सुर मुनि संग बतलैहौ।
अमृत पिऔ सुनौ घट अनहद मन्द मन्द मुसुकैहौ।
नागिन जगै चक्र सब घूमैं सातौं कमल खिलैहौ।
कहैं गोपाल दास तन तजि के हरि पुर बैठक पैहौ।८।

(४)

पदः- खीस भया तन नाम न जाना।
सतगुरु से जप भेद जानकर तन मन प्रेम में साना।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि हर शै से भन्नाना।
सुर मुनि मिलैं सुनौ घट अनहद अमी करौ खुब पाना।४।
षट झाँकी हर दम रहैं सन्मुख मन्द मन्द मुस्क्याना।
नागिन जगै चक्र षट बेधैं सातों कमल फुलाना।

इड़ा पिंगला सुखमन ह्वैगा सब तीरथ स्नाना।
कहैं गोपाल दास तन तजि कै चलि बैठो निज थाना।८।

(५)

पदः- स्वांसा समय अनमोल तन सदगुरु से सुमिरन जानिये।
जुटि जाओ भक्तों प्रेम से जियतै में सब सुख खानिये।
ध्यान धुनि परकाश लै षट रूप सन्मुख तानिये।
सुर मुनि मिलैं आशीष दें राखा तु निजकुल कानिये।४।

अमृत पिओ अनहद सुनो क्या बिमल गति चटकानिये।
नागिन जगै चक्कर चलैं सब कमल खिलि उलटानिये।
इन्द्रिन दमन कर लो जियति मानो मेरी यह बानिये।
गोपाल दास कहैं अमर हो निज तन में घूम के छानिये।८।

३७७ ।। श्री गाज़ी मियां जी ।।

(मुकाम काशी, श्री स्वामी रामानन्द जी के शिष्य)

पदः- राम नाम सम नाम नहिं, अवध धाम सम धाम।
तप धन सम कोइ धन नहीं, पर स्वारथ सम काम।।
नर तन सम कोइ तन नहीं, अन्न वस्त्र सम दान।
गाजी कह सतगुरु कह्यौ, मम मन लीन्ह्यौ मान।।
राम नाम के बीच में, राजत राधे श्याम।
गाज़ी कह भक्तों गुनो, सुन्दर शोभा धाम।३।

(१)

पदः- परम परा लै चाटौ भक्तों परम परा लै चाटौ।
पढ़ि सुनि लिखि धरि इधर उधर चलि बातैं गढ़ गढ़ छांटौ
अन्त समय जब लेखा लेहैं केहि बिधि खाता काटौ।
नीक कहैं तो नेक न मानत नैन फेरि के डांटौ।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानौ तन मन प्रेम में सांटौ।
गाज़ी कहैं अन्त निज पुर हो आवागमन को काटौ।६।

दोहाः- मन को बस में लेहु करि, निरखौ सीता राम।
गाज़ी कह हर दम सुनौ, एक तार धुनि नाम।।

पदः- नर तन भजन बिना बेकार।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो छोड़ो जग व्यौहार।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि हर शै से रंकार।
अमृत पिओ सुनो घट बाजा सुर मुनि करैं दुलार।४।

नागिन जगै चक्र सब बेधैं सातौं कमल फुलार।
भाँति भाँति की गमकैं आवैं तन मन हो मतवार।
सिया राम की झाँकी सन्मुख जो सब के सरकार।
अन्त त्यागि तन हरि पुर बैठो गाज़ी कहैं पुकार।८।

(३)

पदः- रूप कि छबि लखि नैन सुफ़ल हों नाम कि धुनि सुनि श्रवन सुखारी।
सतगुरु करि जप की बिधि जानो जियतै जीत जाव भव पारी।
सारे चोर किनारे होवैं हर दम भक्तों आनन्द भारी।
सुर मुनि नित हरि चरित सुनावैं संघै कर गहि लें बैठारी।४।

झारैं अंग दिब्य बसनन ते बिहँसि बिहँसि बोलैं बलिहारी।
भाँति भाँति के फूल चढ़ावैं लेंय उठाय उछँग उलारी।
उर लगाय मुख को सब चूमैं जय जय कार करैं दै तारी।
गाज़ी कहैं भयो मुद मंगल तन छूटै साकेत सिधारी।८।

दोहाः- तन स्वाँसा औ समय यह, मिला बड़ा अनमोल।
गाज़ी कह मन बस करो, बिजय कि बाजे ढोल।
हाट बाट औ घाट पर, भेष बनाये बैठि।
मधुर बचन सब से करैं, जांय हृदय में पैठि।
नीच जाति के ऊंच बनि, करते सदा ठगाय।५।

जो अपना कल्यान चह, इनके पास न जाय।
भीषम जी के बचन यह, कहैं सुना हम तात।
गाज़ी कह हरि भजन बिनु, नर तन धोखा खात।
राम नाम अनमोल धन, बड़ी भाग्य सो पाय।
गाज़ी कह सतगुरु बिना, कौन सकत बतलाय।१०।

(५)

पदः- शंका चिंता संघै लागी भजन एकान्त में करते हैं हो।
सतगुरु से जप भेद न जान्यौ मन के साथ बिचरते हैं हो।
पढ़ि सुनि लिखि कंठस्थ लीन करि कोरा ज्ञान पसरते हैं हो।
रहै ठगाय भुलाय जगत में या बिधि पेट को भरते हैं हो।४।

शिष्य करैं स्वामी बनि झूठे तन तजि नर्क में पड़ते हैं हो।
मीठे बैन सुनाय रिझावैं हाथ शीश पै धरते हैं हो।
नैन मूँद कर आशिष देवैं कारज सिद्ध सकरते हैं हो।
गाजी कहैं जाल यह फैली अंधे जीव पछरते हैं हो।८।

(६)

पदः- मन को ठीक ठिकाने लाओ।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो जियतै तन पुलकाओ।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रूप सामने छाओ।
अनहद सुनो पिओ घट अमृत सुर मुनि संघ बतलाओ।४।

नागिन जगै चक्र षट बेधैं सातौं कमल खिलाओ।
उड़ै तरंग बोल नहिं फूटै बिहँसि बिहँसि हरषाओ।
नैनन ते शीतल जल बरसै रह रह शीश हिलाओ।
गाज़ी कहैं अन्त निज पुर हो आवागमन मिटाओ।८।

(७)

पदः- हाट बाट औ घाट क रहना साधक का यह काम नहीं।
गाज़ी कहैं खूब हम छाना भजन क वहँ पर नाम नहीं।
लोभ में हर दम माते रहते तप धन सम कोई दाम नहीं।
अहंकार औ कपट जहां पर वहँ पर मिलते राम नहीं।
गर्भ कि बात भूल कर बैठे नर तन सम कोइ चाम नहीं।५।

चित्रगुप्त के ख़ाता में है ग़ैर हाजिरी खाम नहीं।
अन्त त्यागि तन नर्क में पड़िहैं जहँ पल भर बिश्राम नहीं।
सतुगुरु करि मन को बस करिये तब कोई इलज़ाम नहीं।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि हर शै से हो थाम नहीं।
हर दम राम सिया रहैं सन्मुख पकड़ सकैं तब बाम नहीं।१०।

इस प्रकार बिन भजन को जाने कोई भा निष्काम नहीं।
महा प्रकाश बनत है देखत जहां तिमिर औ घाम नहीं।
को बरनै साकेत कि शोभा ऐसा कोई धाम नहीं।
अगणित भक्त रूप रंग हरि के कहीं ऐसा आराम नहीं।
शान्ति दीनता प्रेम बिना कोइ पाया शब्द क झाम नहीं।
सुमिरन बिना धाम निज जाना और तरीका आम नहीं।१६।

(८)

पदः- चारों युग बेद पुकार यही, भजि लेहु रकार मकार सही।
सब सुर मुनि ध्यावत सार यही, भजि लेहु रकार मकार सही।
भव सागर पार उतार यही, भजि लेहु रकार मकार सही।
सब मंत्रन का है तार यही, भजि लेहु रकार मकार सही।
सोऽहं ओंकार रकार यही, भजि लेहु रकार मकार सही।
गाज़ी कहैं बारम्बार यही, भजि लेहु रकार मकार सही।६।

(९)

पदः- श्री मद भागवत पुराण को, पढ़ै सुनै मन लाय।
ध्यान प्रकाश समाधि धुनि, रूप सामने छाय।
सुर मुनि सब के दरश हों, उर में लेंय लगाय।
कुण्डलिनी शक्ती जगै, षट चक्कर घुमरांय।४।
कमल खिलैं सातौं तबै, महक दसौं दिशि जाय।
अमृत पीजै मगन ह्वै, अनहद सुनौ बधाय।
तन छूटै हरि धाम को, चढ़ि बिमान पर जाय।
गाज़ी कह मानो सही, श्री गुरु मुख बचनाय।८।

(१०)

पदः- परम परा लै खायो भक्तों परम परा लै खायो।
पढ़ि सुनि लिखि कंठस्थ लिह्यो करि सब को गाय रिझायो।
राम नाम को जान्यौ नाहीं, ठग्यौ न आप ठगायो।
यह धूर्ताई काम न आई, नर्क में सदन बनायो।
कर्म अनुसार हिसाब होत वहँ, जेहि बिधि जौन कमायो।
या से चेत करो अब सतगुरु, जौन हेतु तन पायो।६।

ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि, हर शै से सुनि पायो।
सिया राम हर दम रहैं सन्मुख, निरखि निरखि मुसक्यायो।
सुर मुनि मिलैं शीश कर परसैं, मन ही मन हुलसायो।
अनहद सुन्यौ अमी रस चाख्यौ हरि जस कह्यौ कहायो।
नागिन जगी चक्र सब बेधैं सातों कमल फुलायो।
गाज़ी कहैं अन्त साकेतै चढ़ि सिंहासन जायो।१२।

(११)

पदः- चामुण्डी भैरवी कपाली पंच मकारी हैं।
यह सब सिद्धी बड़ी निषद्धी अति हत्यारी हैं।
कर्म अनुसार मिलत फल या को नर्क मँझारी हैं।
हर दम कष्ट एक पल कल नहिं ऐसी ख्वारी हैं।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानें ते सरकारी हैं।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय सुधि बुधि ढारी हैं।६।
सिया राम की झाँकी हर दम रहै बिहारी हैं।
सुर मुनि मिलैं करैं हंसि जय जय दै कर तारी हैं।
भाग्य सराहैं मातु पिता की कह बलिहारी हैं।
अमृत पियै सुनै घट अनहद क्या गुमकारी हैं।
नागिन चक्र कमल सब जागैं खुशबू प्यारी हैं।
गाज़ी कहैं जियति बिधि लेख पै मेख को मारी हैं।१२।

(१२)

पदः- भजु मन नाम रामानन्द।
सुमिरतै सब बिघ्न भागैं मिटै भव का फन्द।
सरन में जे पहुँचि गे ते ह्वै गये निरद्वन्द।
गाज़ी कहैं वह रूप सुन्दर श्याम आनन्द कन्द।४।

(१३)

दोहाः- नाम प्रेम रस जो पियै, तौन भक्त जग सूर।
गाज़ी कह जे चूक गे, गिरि हों चकना चूर।।

पदः- नाना सिद्धी सिख दुनिया को ठगते नहिं आप ठगाते हैं।
तन छूटन की देरी भक्तों खुब नर्क में पीटे जाते हैं।

निशि बासर कल नहिं एकौ पल, मुख बाय बाय चिल्लाते हैं।
तहँ कौन सहायक हो उनका जिनके हित फूले जाते हैं।४।

धन धाम मही परिवार सही अब कोई काम न आते हैं।
सब सोच बिचार अचार भई मन ही मन में पछताते हैं।
क्या बात करैं जम दूतन ते जो दया न उर में लाते हैं।
नैनन से नेक न सूझ पड़ै औटाय सीस रंजवाते हैं।८।

ठेठर लटकैं तन हैं कुरूप अंधियार गंध लहराते हैं।
मल मूत्र पीव औ रक्त मिलै पावै किमि देखि न पाते हैं।
जमदूत पकड़ि मुख में नावैं निगलैं औ उलटि गिराते हैं।
गाज़ी कहैं सुमिरन जिन जाना तिनको हरि पास बिठाते हैं।१२।

(१४)

पदः- रसरी राम नाम अति पोढ़ी ता में बंधा सबै संसार।
गाज़ी कहैं बिना सतगुरु के कोई न जानन हार।
अनुभव बिना जाय डिगि प्राणी पढ़ि सुनि रहै पुकार।
वाक्य ज्ञान अंधा है भक्तों भेजै नर्क मँझार।
ध्यान प्रकाश समाधि धुनी सन्मुख सिया राम निहार।५।

सुर मुनि मिलैं बिहँसि उर लावैं बोलैं जै जै कार।
अमृत पियै गगन ते बरसै अनहद की गुमकार।
नागिन जगै चक्र षट बेधैं कमल खिलैं एक तार।
तरह तरह की महक उड़ै तब, तब मन हो मतबार।
अन्त त्यागि तन निजपुर राजौ दोनौ दिसि बलिहार।१०।

दोहाः- गाज़ी कह विद्या वही, करै अविद्या दूर।
तब तो वा को तन सुफ़ल, नाहीं झूर क झूर।।

(१५)

पदः- नेम टेम औ प्रेम भाव में राम रमे रमि जावो तुम।
सतगुरु से जप भेद जानकर सूरति शब्द लगाओ तुम।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रूप सामने छाओ तुम।
अमृत पिऔ सुनौ घट अनहद सुर मुनि संग बतलाओ तुम।४।

नागिन जगै चक्र षट बेधैं सातों कमल खिलावो तुम।
तर दिमाग़ खुशबू से होवै मुख से क्या कहि पावो तुम।
सबै बासना नाश जाय ह्वै जियतै मुक्त कहावो तुम।
गाज़ी कहैं अन्त तन तजि कै अवध पुरी को जावो तुम।८।

(१६)

शेरः- जीव तरता भाव से बिन भाव के तरता नहीं।
गाज़ी कहैं सुमिरन कि बिधि सतगुरु से लै करता नहीं।
जब प्रेम हरि में है हमारा चोर तन के क्या करैं।
गाज़ी कहैं हम तो बिलग, वे देखि देखि जरा करैं।४।

(१७)

पदः- नाम कि फूल रही फुलवारी।
सतगुरु करि सब भेद जानि लो है तिरगुन ते न्यारी।
उस गुलशन में फूल अतौल हैं पावत दीन भिखारी।
ध्यान ज्ञान विज्ञान के गुल हैं तेज समाधि सुखारी।
रूप के फूल अमोल हैं भक्तों सीता राम निहारी।५।

छबि सिंगार छटा की शोभा है मुद मंगल कारी।
को बरनै देखत बनि आवै फण पति शारद हारी।
जियतै फूल लेहु करि करतल दोनों दिसि बलिहारी।
निज कुल में मति दाग लगावो मिलै न ऐसी बारी।
यह नर देह सुरन को दुर्लभ गाज़ी कहत पुकारी।१०।

(१८)

पदः- भजु नाम रामानन्द का। सुख होय परमानन्द का।।
क्या शंख आनन्द कन्द का। धुनि होत रं रं छन्द का।।
गाज़ी कहैं आनन्द का। बरनन करै मति मन्द का।।
यह नाम मम परसन्द का। दुख मिटै भव के फन्द का।८।

दोहाः- सतगुरु बिन मन चन्द का, हटै न तन से द्वन्द।
गाज़ी कह सुर मुनि कह्यौ, चारौ गल्ली बन्द।।

(१९)

पदः- कला पर कला, कला पर कला यही तेहरी कला भाई।
करो सतगुरु बिधी जानो बरनने में नहीं आई।
नाम जो राशि का हरि का बीज सुर मुनि रहै धाई।
उसी की धुनि जो रं रं है सुनो हर शै से भन्नाई।४।

जगै नागिन चलै चक्कर खिलैं सब कमल फर्राई।
सुनो अनहद पिओ अमृत भरा तहँ कूप हहराई।
छटा सिय राम की सन्मुख रहै तेरे सदा छाई।
कहैं गाज़ी छुटै तन जब चलै निज पुर न चकराई।८।

(२०)

शेरः- बतसंग से सतसंग का रसता मिलै चट मानि लो।
लट संग से गाज़ी कहैं चल नर्क दुख की खानि लो।।

पदः- पढ़ि सुनि उपदेश करैं उमगैं औ आँसु बहाते हैं।
नर नारी सन्त भेष लखि कै चेला बनि जाते हैं।
नहिं ऊपर का है देश लखा हँसि गाल बजाते हैं।
धन लेना धर्म नहीं करना ऐसे मद माते हैं।
हैं नीच ऊँच बनि के डोलैं पूछैं गुस्साते हैं।५।

सुख खानि मिलै किमि हानि हानि दोनों दिशि ताते हैं।
रज वीर्य में फर्क पड़ा जानो ते जाति छिपाते हैं।
बहु जाति जनेऊ गले डारे कलि काल के नाते हैं।
सतगुरु करि सुमिरै राम नाम गाज़ी बतलाते हैं।
तन त्यागि चलैं निज धाम बसैं फिर गर्भ न आते हैं।१०।

(२१)

पदः- किया सुमिरन नहीं हरि का भया रद्दी तेरा खाता।
बिना सतगुरु से बिधि जाने वहाँ कोइ पहुँच नहिं पाता।
जगत ठगने ठगाने हित पढ़ा कण्ठस्त करि गाता।
सुना तूने नहीं कबहूँ ये प्रभु को है नहीं भाता।
ज्ञान यह है आडम्बर का इससे प्रभू से नहीं नाता।५।

कमाई हाय यह कीन्हे पाप का सर धरा छाता।
मिला अनमोल नर तन क्या गर्भ की बात बिसराता।
अन्त तन छोड़ि ले जम पुर जहाँ तेरा न कोइ नाता।
हर समय दूत वहँ कूटैं कष्ट से तन रहै माता।
जवानी कै नशे में तू बचन अच्छे से रिसिआता।१०।

वहाँ पर कछु नहीं औरै हाय रे हाय चिल्लाता।
मूत्र मल का मिलै खाना पचै नहिं उलटि गिरि जाता।
कहैं गाज़ी मियाँ चेतो समय जाकर नहीं आता।
हमै तो दुःख यही भारी भेष बदनाम करवाता।१४।

दोहाः- चरन कमल श्री गुरु के, उर में लेहु बसाय।
गाज़ी कह फिर देर नहिं, भव का दुख मिटि जाय।।

पदः- श्री गुरु रामानन्द जी ने मुझे चेला बनाया जी।
उठा कर शंख दहिना वर्त बिहँसि मुख से बजाया जी।
उसी क्षण श्रवण और आँखैं सुनो भक्तों खोलाया जी।
ध्यान धुनि नूर औ लय में जाय गोता लगाया जी।
आय कर राम सीता ने छटा सन्मुख में छाया जी।५।

देव मुनि सब मिलै आकर शीश पर कर फिराया जी।
जन्म भूमि मेरी काशी तुरुक के घर में जाया जी।
अजर औ अमर तन मेरा बड़ा आनन्द पाया जी।
कहैं गाज़ी मियां चेतो ये पद सब हित सुनाया जी।
लगा तन मन करो सुमिरन करै प्रभु तुरत दाया जी।१०।

(२३)

पदः- भजिये राम नाम सुखदाई।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो तब तो भली भलाई।
तन से प्राण पयान करैं जस मिट्टी में मिट्टी मिलि जाई।
की अगिनी में धरि कै जारैं की जल मांहि बहाई।४।

की मिट्टी में खोद के तोपैं कीड़ा पड़ि गंधाई।
जीव जन्तु की खोदि के खावैं ठठरी पड़ी दिखाई।

तुमको जम नरकै लै जावैं रोये नाहिं सिराई।
गाज़ी कहैं गुनो सब भक्तों तुम्हरे हित पद गाई।८।

(२४)

पदः- विद्या से विद्वान समझता मूरख मूरखता से।
गाज़ी कहैं बात मन मानी बैसे वाको भासे।।

चौपाईः- बीज मंत्र खुलि जावै ताता। सो तो ब्रह्म रंध्र ह्वै जाता।
श्री गुरु के मुख की यह बानी। गाज़ी कहैं लीन हम मानी।
पढ़ा नहीं मैं एको अक्षर। श्री गुरु किरपा भागै मच्छर।
सब विश्वास केर है कामा। गाज़ी कहैं भजौ हरि नामा।१।

मंत्र परम लघु महामंत्र यह। र रंकार जानो सुर मुनि कह।
यह बिधि शिव को सिया बतायो। शिव छकि पियो अमर पद पायो।
शिव से सुखद देव गे पाई। अजर अमर वै रहत सदाई।
प्रेम भाव जा के उर आई। गाज़ी कहैं तौन बनि आई।२।

पदः- श्री गुरु रामानन्द जी, जो मोहिं दीन लखाय।
सोई तुम को हम यहां, आय के दीन बताय।।
या में संशय जो करै, ता की यही उपाय।
शान्ति दीन ह्वै लेय सुनि, वह फिर घर को जाय।।
गाज़ी कह हरि भजन बिन, ऐसै चक्कर खाय।
मूरख़ के कोइ बचन पर, ख्याल न कीजै भाय।३।

(२५)

पदः- वह शंख भी प्रभु ले गये गर दे गये होते हमें।
संसार को किरतार्थ करि फिर जाय हम देते उन्हें।
गाज़ी कहैं वे धन्य हैं जे लेत प्रभु का नाम हैं।
श्री स्वामी रामानन्द जी दिल में बसे बसुयाम हैं।
श्री गुरु बिधि हरि शँभु हैं गुरु ही बने भगवान हैं।
श्री गुरु ध्यान प्रकाश लै, श्री गुरु नाम कि तान हैं।६।

(२६)

शेरः- नाम की डोरि अति पोढ़ी बंधे सब लोक हैं जिसमें।
जीव अंधे व बहिरे हैं कहैं गाज़ी लखैं किस में।।

पदः- हरि नाम सब का सार है जो भजै भव से पार है।
धुनि नाम की रंकार है हर शै से होत पुकार है।
निगुन सगुन निराकार है, सब में वो सब से न्यार है।
अनमोल तन नर क्यार है, जाने बिना बेकार है।
उस जीव को धिक्कार है, सिय राम का नहिं प्यार है।
तन छोड़ि नर्क मँझार है, गाज़ी कहैं दुख भार है।६।

दोहाः- गाज़ी कह सो भक्त है जाके आँखी कान।
अविनाशी की गोद में राजैं हर दम जान।।
नाम रूप जा को मिल्यो गाज़ी कह सो भक्त।
अविनाशी की गोद में खेलैं तजि कै जक्त।२।

परजा से राजा भयो गाज़ी कह सो धन्य।
अविनाशी की गोद में रहत सदा पसन्य।।
गाज़ी कह जियतै तरा पायो नाम औ रुप।
अविनाशी की गोद में, बनि कै बैठो भूप।।
गाज़ी कह भक्तन चरित को करि सकै बखान।
वेद शास्त्र सुर मुनि थके महिमा कोऊ न जान।५।

(२७)

पदः- सुरति निरत करै शब्द के संग में तब तो जीव सुखी ह्वै जावै।
सतगुरु बिन यह भेद मिलै नहिं पढ़ि सुनि कोई जान न पावै।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि सन्मुख राम सिया छवि छावै।
सुर मुनि मिलैं शीश कर फेरैं जै जै कार का शब्द सुनावैं।४।

अनहद सुनै बिमल घट बाजै अमृत पान करै मुसक्यावै।
कमल खिलैं चक्कर हों चालू कुण्डलिनी सब लोक दिखावै।
जियतै मुक्त भक्त सो जानो जो तप धन यहि भाँति कमावै।
गाज़ी कहैं अन्त तन तजि कै जाय अमर पुर जग नहिं आवै।८।

(२८)

पदः- प्रेम भाव करि नाम न सुमिरै ठगवा घर में घूमैं।
मन उन्हीं के संग में रहता हँसै औ चहुँ दिसि झूमै।

बज्र की डोरि से जीव को बाँधि कहै बड़ा यह सूमै।
माया कहै लूटि लेव या को सुनत सुकृत सब तूमै।४।

लूटि कूटि कैं निज घर धरि लैं करैं सबै तब घूमैं।
बोलो दें इनाम रोयां का एक एक सब रूमै।
फेरि आय सब करैं मसखरी रहि रहि के मुख चूमैं।
गाज़ी मियाँ कहैं तन छूटै निज पुर ज्जम नित गूमैं।८।

शेरः- गाज़ी कहैं राजी हरी जब नाम धुनि को जानिये।
तब हर समै सुख शान्ति है यह बैन मेरे मानिये।।

(२९)

पदः- जियति शरन औ जियति मरन औ जियति तरन सब एकै है।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो या में नहिं कोइ छेकै है।
दुख आने जाने का भारी नित तामे लगती टेकै हैं।
गाज़ी कह सुमिरन खुलि जावै जो बिधि लेख को मेटै है।४।

(३०)

पदः- बिमल बारीक मन मोहन मनोहर मन लोभावन हैं।
करो सतगुरु पता पाओ बने घट घट के दावन हैं।
प्रेम औ भाव से सुमिरौ सदा वह परम पावन हैं।
कहै गाज़ी मान लो साजी फेरि भव में न आवन है।४।

(३१)

पदः- सुमिरौ नाम सुफ़ल हो गुदरी।
सतगुरु करि जप भेद जानि लो तब तो हाली सुधरी।
जब तक प्रेम भाव नहिं आवै तब तक है गल मुंदरी।
गाज़ी कहैं चेतिये भक्तों नहिं तो खाय छछुँदरी।४।

(३२)

पदः- चपलता जिस भगत में हो उसे चंचल बुरा जानो।
किया कंठस्थ पढ़ि सुनि कछु बना जग का धुरा मानो।
मान हित कर रहा चेला धरै गर्दन छुरा जानो।

त्यागि तन दुख सहै नाना चला यम पुर ढुरा मानो।
मूत्र मल का मिलै भोजन वही वहँ की सुरा जानो।५।

पहुँचतै जाय ह्वै उलटी रहै तन सब झुरा जानो।
तुरत ही देंय जम गारी खोंस दें मुख हुरा मानो।
हाय रे हाय कहि फटकैं चलै ऊपर कुरा मानो।
दीनता शान्ति बिन आये नहीं कोई फुरा जानो।
कहैं गाज़ी करै सतगुरु वही निज पुर घुरा जानो।१०।

(३३)

पदः- दीनता शान्ति की नकलैं बड़ी अच्छी जगह धरना।
सदा सतगुरु के चरनो में दोऊ कर जोरि के परना।
छिमा संतोष औ श्रृद्धा धर्म दाया सदा करना।
प्रेम औ भाव विश्वासा सत्य औ शील में ठरना।
यही नकलों के अधिकारी होय कबहूँ नहीं सरना।५।

इसी से होयगी डिगरी नहीं बिगड़ी रही सुधरी,
यह बातैं ख्याल कर लीजै जियत में होयगा तरना।
मान लो यह बिनय मेरी चोर अब नहिं सकैं हेरी,
देव मुनि सब मिलैं घेरी कहैं जियतै भया मरना।
न कोई बात है करी न इस में है कोई मुर्री,
मान जो निज को ले धुर्री वही जियतै भया सरना।
मिलै साकेत में बासा अजर औ अमर तन खासा,
न कोइ इच्छा न कोइ आसा मौन हरि रूप रंग बरना।
कहैं गाज़ी मिया गाज़ी न मानै सो रहै राजी,
काल कि जाय ह्वै भाजी अन्त भव जाल में गरना।१०।

चौपाईः- प्रेम का बास नैन में जानो। ध्यान बसत त्रिकुटी में मानो।
ज्ञान शून्य में करत निवासा। अमर पुरी विज्ञान क वासा।
श्री गुरु मुख की है यह बानी। जो जानी सोई मन मानी।
सूरति शब्द पै अपनी दीजै। गाज़ी कहैं भजन करि लीजै।४।

३७८ ।। श्री तितुलिया माई जी ।।

पदः- ऊपर से राम राम साधे हैं भक्ती। भीतर में पूरी है धन की आसक्ती।
लीन चाहत तन तजि कै मुक्ती। राम नाम की मिली न युक्ती।
चलि सतगुरु के ढिग जे सिखती। वै तन तजि निज धाम में रुकती।
कहै तितुलिया फिरती तकती। तन अनमोल पाय हाय चुकती।८।

३७९ ।। श्री मुन्दर माई जी ।।

पदः- प्रभु अब दीजै भीख हमारी।
आप तो हैं हरि अधम उधारन मैं पापिन हत्यारी।
आप तो हैं हरि दीनन पालक मैं गरीब अति भारी।
आप तो हैं हरि सब के स्वामी मो को काहे बिसारी।
आप तो हैं दाया के सागर देहु छींटि एक डारी।
मुन्दर बिनय करै कर जोड़े लीजै खबरि हमारी।६।

३८० ।। श्री सुन्दर माई जी ।।

पदः- हरि अब दीजै मोरि मजूरी।
सुमिरन में जैसे मैं बैठूँ मन भागत ले दूरी।
या से बिकल रहौं निशि बासर नेक न होंत सबूरी।
या के संग रहत बहु डाकू लूट मिलाइन धूरी।४।
तुम बिन नाथ करै को पालन होय बिनय यह पूरी।
नाम में तन्मयता हो जावै जौन सजीवन मूरी।
सुन्दर कहै छूट तब जावै जियतै भव दुख छूरी।
अन्त त्यागि तन निज पुर राजौं होय न कबहूँ सूरी।८।

३८१ ।। श्री मियां मक्खी हूस जी ।।

पदः- हरि कछु लै लीजै दस्तूरी।
ठगवा सब धन लूट लिहिन मम कैसे होय सबूरी।
इन से छीनि दिलाय देव मोहिं होवै आशा पूरी।
हर दम तब मैं सुमिरन करिहौं छोड़ि कपट मगरुरी।
अबकी बार नाथ फिर सुनिये फूटै कर्मन चूरी।
मक्खी हूस कहैं प्रभु तुम बिन कौन लिखै मंजूरी।६।

३८२ ।। श्री मीना शाह जी ।।

(लखनऊ चौक)

पदः- जाना ज़रा जाना ज़रा मुर्शिद के ढिग जाना ज़रा।
सूरति शबद का मार्ग गहि तन मन से लगि जाना ज़रा।
ध्यान धुनि परकाश लै सुधि बुधि को बिसराना ज़रा।
प्रिय श्याम की अदभुत छटा छबि सामने छाना ज़रा।४।

नागिनि जगा, चक्कर चला, सब कमल उलटाना ज़रा ।
अमृत को पी अनहद को सुनि सुर मुनि से बतलाना ज़रा।
यह शाह मीना की अरज़ पढ़ि सुनि कै समझाना ज़रा।
तन छोड़ि निज पुर बास लो तब गर्भ का आना ज़रा।८।

३८३ ।। श्री ग़रीब शाह जी ।।

दोहाः- राम नाम नौका भई, सूरति भई पतवार।
जीव बैठि तामे गयो, खेय भयो भव पार।
राम नाम नौका भई, सूरति ह्वै गई बांस।
जीव बैठि ता में गयो, खेय कियो दुख नाश।४।

पदः- सुनिये राम नाम का गाना।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो, तन मन प्रेम लगाना।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै, सुधि बुधि जहां भुलाना।
र रंकार की धुनि खुलि जावै रोम रोम गलताना।
यह गाना सुर मुनि जब जाना बनि बैठे मस्ताना।५।

हर दम हर शै में यह बोलत ऐसा है तर्राना।
अनहद बाजा घट में बाजै अमृत करिये पाना।
नागिन उठी चक्र षट सोधें सातों कमल खिलाना।
सुर मुनि सब से भेंट होय नित हृदय से हृदय लगाना।
सिया राम की झाँकी अद्‌भुत लखि लखि कै मुसक्याना।१०।

चारि ध्यान चारै हैं अजपा तेरह त्यागि बखाना।
आठ परा औ सात ज्ञान विज्ञान्न चारि का थाना।
तीनि मंत्र औ तीनि जंत्र ग्यारह भक्ती परमाना।

परा मध्यमा पयशंती बैखरी जाप बतलाना।
सोऽहं का आधार यही है ओंकार का प्राना।१५।

मंत्र परम लघु महा मंत्र वही बीज मंत्र सुख साना।
अगम अपार अकह या की गति को करि सकत बखाना।
सब कछु इसी से परगट जानो इसी में फेरि समाना।
पाँचौ मुद्रा जौन कहावैं सब पर यह भन्नाना।
पढ़ि सुनि गुनि कै लागौ भक्तों तब होवे कल्याना।२०।

कथनी कथना है यह सपना बिरथा गाल बजाना।
यह विद्वता गई दिखलाई किमि समझै विद्वाना।
स्वामी रामानन्द गुरु मम पार ब्रह्म भगवाना।
उनकी सरबरि कौन सकत करि जिनका रचा जहाना।
पढ़े को बिद्या से समझावैं छीनि लेंय अज्ञाना।२५।

मूरख को संखः ध्वनि करि के खोलैं आँखी काना।
सब का धाम एक है मानो ता में अगणित खाना।
भांति भांति के लगे बगीचे फूले फूल महाना।
उड़ैं तरंगैं बहु प्रकार की तन मन रहे जुड़ाना।
सब से ऊँचा है सिंहासन सिया राम स्थाना।३०।

तहँ पर हर दम राजि रहे हैं चहुँ दिशि भक्तन थाना।
कहैं गरीब शाह चलि बैठो भजन करो नर बाना।३२।

दोहाः- राम नाम ही सार है और बात बेकार।
कह गरीब सतगुरु करो ह्वै जावै निस्तार।।
बिन सतगुरु के है कठिन, जाना भव के पार।
कह ग़रीब सुर मुनि कह्यौ, वेद पुरान पुकार।२।

३८४ ।। श्री रमजानी शाह ज़ी ।।

पदः- लीजै राम नाम की आँड़।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो शान्त होय मन भाँड़।
तन के चोर होंय सब चेला संघै चेली रांड़।
सुर शक्ती भोजन हित लावैं रोज़ सुहारी खांड़।
निर्भय औ निर्बैर जाव ह्वै बिजय की बांधौ फाँड़।५।

अजर अमर ह्वै घूमौ भक्तों लगै न गरमी जाड़।
उपदेशो जो दीन मिलै कोई वाके दुख हों माड़।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि पापन डारै चांड़।
बिधि कर लेख जाय जियतै कटि सुफ़ल होंय तन हांड़।
रमज़ानी कहैं लखौ राम सिया होय न नेकौ हांड़।१०।

दोहाः- सतगुरु से उपदेश ले, बनो नाम के सांड़।
रमजानी कहैं तब कभी, लगै न चोरन कांड़।।

(२)

पदः- भानु समान उदार होय औ सरिता के सम दानी जी।
बसुधा के सम सहन शील हो तब जानो भा ज्ञानी जी।
धीरे धीरे इस प्रकार से ह्वै जावै विज्ञानी जी।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो कहैं शाह रमज़ानी जी।४।

(३)

पदः- चारि बोल से माया पकड़ै चौपट करि कै छोड़ै जी।
हां हां, आ हा, ओ हो, सी सी कहि के नाता जोड़ै जी।
साधक या के अर्थ न जानै बार बार जग गोड़ै जी।
कहैं रमज़ानी शाह दीन बनि सतगुरु करि मुख मोड़ै जी।४।

३८५ ।। श्री ख्याल शाह जी ।।

पदः- मार्ग सतगुरु ने बतलाया, वो हम जाना वो हरि जाना।
ध्यान धुनि नूर लै पाया, वो हम जाना वो हरि जाना।
मातु पितु जियति अपनाया, वो हम जाना वो हरि जाना।
देव मुनि संघ बतलाया, वो हम जाना वह हरि जाना।
सुना हरि यश अमी पाया, वो हम जाना वह हरि जाना।
छोड़ि तन निज वतन धाया, वो हम जाना वह हरि जाना।६।

३८६ ।। श्री बैली माई जी ।।

पदः- सतगुरु करि जप नाम की पैली।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै सन्मुख छैला छैली।
बंसी अधर धरे हैं कूकत सप्त स्वरन धुनि फैली।

को बरनै वो झाँकी अद्‌भुत देखत ही बनि ऐली।
सुर मुनि आय आय उर लावैं कहैं सिद्धि तू भैली।५।

अनहद सुनौ अमी रस चाखौ अमृत धरी है घैली।
कमल चक्र शिव शक्ती जागी सब लोकन में गैली।
अन्त त्यागि तन चढ़ि सिंहासन निज पुर को चट धैली।
इस बिधि ते जे भजन करैं ते सारे पापन खैली।
गुने नहीं ते चक्कर काटैं कहे बचन यह बैली।१०।

३८७ ।। श्री झँगली माई जी ।।

पदः- सतगुरु करि सुमिरन में लग ली। तन से बुजरी माया भगली।
ध्यान प्रकाश समाधि में पग ली। राम नाम धुनि में मन रंग ली।
राम सिया सन्मुख में टंग ली। कहै तुम्है छोरी हम संग ली।
तन तजि बैठिउ पासै बगली। गर्भ बास छूटा कहै झँगली।८।
(शब्दार्थः बुजरी = बड़ी खराब)

३८८ ।। श्री खफ़ीफ़ शाह जी ।।

पदः- सतगुरु से सुमिरन बिधि जानो नाम क जारी तार रहै।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै सन्मुख सिया सरकार रहैं।
अमृत पिओ सुनो घट अनहद मधुर मधुर गुमकार रहै।
सुर मुनि आवैं हिये लगावैं नित संगति सुख सार रहै।४।

नागिन जगै चक्र सब नाचैं कमलन का फुलवार रहै।
दीन बने तो तप धन पावै वरना यह दुशवार रहै।
अन्त समय निज धाम चलो जहँ अमित भानु झलकार रहै।
कहैं खफ़ीफ़ शाह भई पेन्शन यह तुम्हार घर बार रहै।८।

(२)

पदः- भीतर से दाया नौकर पर ऊपर ते फटकार रहै।
तब सब काम घरेलू सुधरें मन से हटा गुबार रहै।
खान पान की वस्तु होय वा पर नित यही बिचार रहै।
बालक बृद्ध नौकरै देवै पहिले तो हुशियार रहै।४।

सेवा करना कभी न टरना जब तक कोइ बीमार रहै।
दीन दुखी को जल भोजन औ बस्तर दै चुप मार रहै।
अन्त समय बैकुण्ठ को जावै यह बातैं उर धार रहै।
पर स्वारथ बिन कह खफ़ीफ़ तन दोनों दिशि बेकार रहै।८।

३८९ ।। श्री बांके शाह जी ।।

पदः- संसारी चीजैं हैं दुशमन राम नाम में पाग रे मन।
बड़े भाग्य से पायो नर तन चेत करौ जावै बिगड़ी बन।
सतगुरु करि जीतो जियतै रन हर दम तब तो रहियौ टन मन।
ध्यान प्रकाश समाधि धुनी धन राम सिया सन्मुख जीवन धन।५।

(२)

हां हां, आ हा, ओ हो, सी सी। यह चारों मिलि डालैं पीसी।
गंजीफ़ा यह है बत्तीसी। ग्यारह या में बड़ी खबीसी।
सतगुरु कृपा ते कहौं पुकारी। सुमिरन बिना सकै को टारी।
ध्यान प्रकास धुनी हो जारी। लै दे कर्म शुभाशुभ टारी।४।

३९० ।। श्री सरारति शाह जी ।।

पदः- सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो छूटै गर्भ का झुल्लम झुल्ला।
सिया राम की झांकी सन्मुख दर्शन होवैं खुल्लम खुल्ला।
सुर मुनि मिलैं सुनो घट अनहद अमृत पीवो कुल्लम कुल्ला।
नागिन जगै चक्र सब बेधैं कमल उलटि हों फुल्लम फुल्ला।४।

ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि हर शै से हो तुल्लम तुल्ला।
नर तन पाय सुकृत नहिं कीन्ह्यो जम बांधै गहि चुल्लम चुल्ला।
नाना कष्ट देंय गरियावैं राम नाम क्यों भुल्लम भुल्ला।
कौन सहायक यहं पर तेरा कर्म भोग ले रुल्लम रुल्ला।८।

(२)

पदः- लड़ाई होगी हमारी तेरी जो नाम में तू न मन लगावै।
आखिर में जमदूत आय पकरैं तू रोवैगी औ हमै रुलावै।
इसी से मुझको है शोक प्यारी जो मानि मेरा सखुन यह जावै।

तो दोनों मिलि कर अजर अमर हों यह मार्ग सुन्दर गुरु बतावै।
धुनि ध्यान नूर लै हो चमाचम सिया राम आकर सन्मुख में छावै।५।
सुर मुनि मिलैं सब बिहंसि लिपट कर फिर
नाम महिमा को जस सुनावै।
बजै क्या अनहद बिमल बिमल घट पियै अमी रस न बोलि आवै।
जगैगी नागिन षट चक्र बेधैं कमल भि सातौं खिलैं दिखावैं।
सुगन्धैं निकलैं किसिम किसिम की मगन मनै मन व सर हिलावै।
कहैं बराती तन त्यागि निज पुर चलैं जहां में न फेरि आवैं।१०।

३९१ ।। श्री चिरौरी शाह जी ।।

पदः- कहैं शाह चिरौरी मेरी चिरौरी नर-नारिन सुख दाय।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो त्यागो मान बड़ाय।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रूप सामने छाय।
सुर मुनि मिलैं पियौ घट अमृत अनहद सुनो बधाय।
नागिन जगै चक्र षट नाचैं सातों कमल फुलाय।
अन्त समय निज पुर को जावो आवागमन नसाय।६।

(२)

पदः- कहैं चिरौरी शाह छोड़ि दो टिर टिर टिर टिर टिर।
सतगुरु बचन पर तुलो होय मन थिर थिर थिर थिर थिर।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय भिर भिर भिर भिर भिर।
हर दम सन्मुख लखौ राम सिय घिरि घिरि घिरि घिरि घिरि।
अमृत पिओ गगन ते बरसै झिरि झिरि झिरि झिरि झिरि।५।
सुर मुनि आवैं गले लगावैं धिरि धिरि धिरि धिरि धिरि।
बिमल बिमल अनहद धुनि सुनिये तिरि तिरि तिरि तिरि तिरि।
नागिन जगै चक्र षट नाचैं किरि किरि किरि किरि किरि।
सातौं कमल खिलैं लहरावैं सिरि सिरि सिरि सिरि सिरि।
अन्त त्यागि तन गर्भ न आवो फिरि फिरि फिरि फिरि फिरि।१०।

३९२ ।। श्री अम्बर बारी जी ।।

पदः- किया हरि पाप अति भारी कि तुम जानौ कि हम जानै।
ख़ता अब माफ़ हो सारी कि तुम जानौ कि हम जानै।

आप बिन कौन निस्तारी कि तुम जानौ कि हम जानै।
बिनय करता अम्बर बारी कि तुम जानौ कि हम जानै।४।

३९३ ।। श्री सूरति शाह जी ।।

पदः- शब्द में लागौ सूरति मम प्यारी।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो मानो बात हमारी।
सांकरि गल्ली अमर नगर की धीरे धीरे चलो सुकुमारी।
नागिन जगै चक्र सब घूमैं फूलैं कमल महक हो जारी।४।

सुर मुनि मिलैं सुनो घट अनहद अमृत पियो भरी बहु क्यारी।
ध्यान धुनी परकाश दशा लै सुधि बुधि जहां बिसारी।
सिया राम की झाँकी सन्मुख हर दम तुम्हैं निहारी।
अन्त त्यागि तन चढ़ि सिंहासन बैठो भवन मँझारी।८।

३९४ ।। श्री मक्का शाह जी ।।
(मुकाम शाहजहां पुर)

पदः- हे हरि ! हम जीते तुम हारे।
आपै सृष्टि बनाय के स्वामी हौ सब खेल प्रचारे।
आपै सेय सयान दीन करि आपै साजि संवारे।
आपै घट घट के हौ बासी आपै हो रखवारे।
आपै निर्गुन आपै सर्गुन आपै सब से न्यारे।५।

आपै मारैं आप जियावैं आपै गोद बिठारें।
जीवन का दुख लखि लखि स्वामी मम उर होत दरारे।
आप तो दीन दयालु कहावत बेचि दया कहां डारे।
करुना सागर आप कहावत क्या करुना को फारे।
आप तो कर्म भर्म सब मेटत सुर मुनि बेद पुकारे।१०।

सब आपै के अंश कहावत राव रंक हत्यारे।
धर्म धुरन्दर आप कहाइ के सोंवत पांव पसारे।
या में जीव की लागु कौन है बोलत नहीं चुप मारे।
परम स्वतंत्र आप हैं स्वामी सब मरज़ी में तुम्हारे।
साधक यह पद पढ़ि सुनि गुनि के बोलैं बचन संभारे।१५।

नाहीं तो फिर धोका खावें नर्क में जावैं डारे।
हमरी मत कोइ करे बराबरि हम बिधि लेख को टारे।
हर दम प्रभु संग हंसै औ खेलैं कबहुँ गयन न मारे।
यह पद सीधा है नहिं उलटा जानहिं श्री गुरु द्वारे।
मक्का शाह देंय यह अरज़ी आप के परम दुलारे।२०।

३९५ ।। श्री नखरे शाह जी ।।

पदः- नखरा राम नाम मन भाया।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जाना तन मन प्रेम में ताया।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रूप सामने छाया।
अनहद सुना पिया घट अमृत सुर मुनि संग बतलाया।४।

नागिन जगी चक्र षट नाचें सातौं कमल खिलाया।
उड़ै तरंग बनै नहिं बरनत ऐसा आनन्द छाया।
चौदह लोक की फेरी कीन्हा जैति पत्र को पाया।
अन्त त्यागि तन चढ़ि सिंहासन श्री साकेत सिधाया।८।
(शब्दार्थः जैति = विजय)

३९६ ।। श्री खर्च शाह जी ।।

पदः- धन झूठा गाड़ि के मत धरना जो आवै उसको खर्च करो।
शुभ काम में भक्तों लगा लगा तन मन अपना अब फर्च करो।
संग्रह मे़ं ताकत है इतनी आसक्ती पकड़ि दबा लेती।
जप पाठ औ पूजन कीर्तन में मन लगै नहीं बिगड़ी नेती।
फिरि मुक्ति भक्ति मिलिहै कैसे जब पकड़ि जकड़ि माया लेगी।५।

तब उठैं तरंगैं बिबिधि भांति बस वही घुन घुना कर देगी।
हर दम तुम उसे बजाओगे नाचौगे उसके चक्कर में।
हंसि हंसि कै तब वह देखैगी फंसि गयो उसी के मक्कर में।
सतगुरु करि सूरति शब्द पै दो जो सारे दुख को नाश करै।
कहैं खर्च शाह तन होय सुफ़ल फिर अन्त में प्रभु के पास करै।१०।

३९७ ।। श्री बकचोंचों शाह जी ।।

पदः- परमात्मा का नाम जानो मन की संशय दूर हो।
सतगुरु करो मारग गहौ बस प्रेम में तुम चूर हो।

असुर सारे निकरि भागैं संग रोती हूर हो।
नागिनि जगै चक्कर चलैं सातौं कमल खिलि पूर हों।
अमृत पिओ अनहद सुनो सुर मुनि मिलैं कहि सूर हो।५।

हर समय सियराम निरखौ एक पल नहिं दूर हो।
श्वांसा समय अनमोल है बनि जाव जैसे धूर हो।
चेतो उठो मानो सखुन क्यों बने कायर कूर हो।
सूरति शबद में जब लगै निज धाम में मंजूर हो।
तन त्यागि हरि रंग रूप लो जहं अमित भक्त हजूर हों।१०।

(२)

पदः- श्वांसा त्रिकुटी ब्रह्म रंध्र श्रुति चारि मोक्ष के द्वारे जी।
सतगुरु करि जपि भेद जानि ले तब खुलि जांय किवारे जी।
नागिन जगै चक्र षट घूमैं सातौं कमल फुलारे जी।
सुर मुनि मिलैं सुनै घट अनहद अमृत पियै सुखारे जी।४।

सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख सदा निहारे जी।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय सुधि बुधि तहां बिसारे जी।
पाप पुण्य की नास जाय ह्वै कर्म की गति को टारे जी।
अन्त त्यागि तन चढ़ि सिंहासन राम के धाम सिधारे जी।८।

दोहाः- बकचोंचों कह भक्त जन, दीन बनो सुख होय।
नाहीं तो पछिताओगे, तन अमोल को खोय।।
सब के हित की बात यह सुरति शब्द पर देहु।
ध्यान धुनी परकाश लय रूप सामने लेहु।२।

इस अजपा के गहे ते वोऊ तीनि खुलि जाहिं।
चारों ध्यान क सुख मिलै नेकौ संशय नाहिं।।
शिव शंकर ने यह बिधी, मोहिं दीन बतलाय।
महा सुखी मैं ह्वै गयो, सत्य शब्द को पाय।४।

३९८ ।। श्री चौंसर शाह जी ।।

पदः- सतगुरु करि सूरति शब्द पै दो बनि दीन दास ह्वै जावोगे।
तब पदवी श्रेष्ट मिलै भक्तों काया के बीर कहावोगे।

धुनि ध्यान प्रकाश समाधि होय सिय राम सामने छावोगे।
सुर मुनि सब आय करैं सेवा बाजा सुनि अमृत पावोगे।
नागिन जागै षट चक्र चलैं सातौं फिर कमल खिलावोगे।
तन त्यागि चलो साकेत डटौ फिर बंधन में नहिं आवोगे।६।

शेरः- मीठे बचन पुकारना। किसी को मत तुकारना।
नेकी से सब को मारना। किसी को मत बिगारना।
पर नारि मत निहारना। उस से न हो उबारना।
हरि नाम पर बिचारना। नाहीं तो हो उद्धारना।
सतगुरु बचन न टारना। यह बैन उर में धारना।५।

३९९ ।। श्री दग़ा शाह जी ।।

पदः- सांचे जे भक्त जक्त में हैं वै प्रभु की गोद में खेलि रहै।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जाना दुख सुख को सम कर झेलि रहै।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधि मिली जहं सारी सुधि बुधि मेल रहै।
सुर मुनि के संग करैं कीर्तन आनन्द के रेला रेलि रहै।
जिनके नहिं आंखी कान खुले परपंच क ठेला ठेलि रहै।५।

जियतै जिन करतल नहिं कीन्हा वै चौरासी की जेलि रहै।
सब लोकन में खातिर उनकी बिधि लेख पै बेलन बेलि रहै।
यह सहजा बृत्ति कहावति है बिरलै कोई चेला चेलि रहै।
कहैं दग़ा शाह दागै गोला तन तजि साकेत में पेलि रहै।
भे अजर अमर प्रभु रंग रूप सिंहासन पर करि केलि रहै।१०।

४०० ।। श्री बन्दे शाह जी ।।

पदः- मन है बंध मोक्ष का कारण।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो जो भव ताप निवारन।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि सन्मुख अधम उधारन।
अमृत पिओ सुनौ घट अनहद सुर मुनि करैं दुलारन।४।

नागिन चक्र कमल जगि जावैं निरखौ सब औतारन।
अन्त त्यागि तन निज पुर बैठो छूटै गर्भ क धारन।
शान्त दीन ह्वै भक्त जाव बनि करो नाम का पारन।
बन्दे शाह कहैं नहिं मानो करै काल चट मारन।८।

४०१ ।। श्री रोशन शाह जी ।।

पदः- भजि लेहु नाम हो सुफ़ल चाम लो नित्य धाम जहं सुख भारी।
यह गुरु क काम कीजै प्रणाम लागै न दाम हो बलिहारी।
लै ध्यान काम परकाश आम धुनि ठाम ठाम होवै जारी।
सब गुनि के ग्राम सन्मुख में श्याम संघ
सुभग बाम जग हितकारी।४।

४०२ ।। श्री श्वांसा शाह जी ।।

पदः- भक्तौं श्वांसा सार कहावै।
तन से श्वांस बिलग जस होती मुरदा कहि गोहरावैं।
धोय पोंछि कफ़नाय के सब मिलि टिकठी बांधि उठावैं।
मरघट जाय उठाय धरैं तहँ बैठि जाय सुस्थावैं।४।

कोइ गाड़ैं कोइ अगिनि देत हैं कोइ जल मांहि बहावैं।
लौटि आंय फिर निज निज गृह के कारज में लगि जावैं।
इस श्वांसा में राम नाम है सतगुरु करि जो ध्यावै।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रूप सामने छावै।८।

सुर मुनि मिलैं पियै घट अमृत अनहद सुनि हर्षावै।
नागिन जगै चक्र षट बेधैं सातौं कमल फुलावैं।
तुरिया तीत दशा है मानो मुद मंगल कहवावै।
श्वांसा शाह कहैं तन तजि कै चट साकेत सिधावै।१२।

शेरः- स्वामी रामानन्द जी के संख की धुनि जिन सुनी।
जिस हेतु आयो जौन कोई उस हेतु में बनिगो धनी।
कहैं श्वांसा साह मैं तो शिष्य प्रभु का जस भनी।
जिनकी कृपा की थाह नहिं अस्तुति करत नित सुर मुनी।४।

४०३ ।। श्री दंगे शाह जी ।।

पदः- मुरशिद करो खुद जान लो मक्के मदीने की सड़क।
चक्कर से जाना होत है बनि दीन जावोगे तड़क।
छिन छिन में बिजुली चमकती बादल की होती है कड़क।
डंका जुझाऊ बाजता सच्चा नहीं सकता भड़क।४।

पदः- मुरशिद करो पावो पता मक्का मदीना पास है।
धुनि ध्यान लय औ रूप सन्मुख क्या अजब परकास है।
अस्सी पैगम्बर संग रहैं कर गहि कहैं दुख नास है।
सुर मुनि मिलैं उर में लगें बोलैं तू सच्चा दास है।४।

अनहद सुनो अमृत पिओ जो झरत बारह मास है।
नागिन जगै चक्कर चलैं कमलन क होत बिकास है।
तन त्यागि निज पुर को चलो जहं होत भक्तन बास है।
दंगे कहैं सुमिरन करो जब तक ये तन में सांस है।८।

४०४ ।। श्री नंगे शाह जी ।।

पदः- बनिये सत्य भक्त आचारी।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो तन मन हो एक तारी।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि हर शै से हो जारी।
अमृत पियो सुनो घट अनहद सुर मुनि मिलैं पुकारी।
कमल चक्र कुण्डलिनी जागै जो सब बिधि हितकारी।
रामानुज के दर्शन होवैं गोद में लेंय बिठारी।६।

सिर पर कर फेरैं दुलरावैं कहैं भयो भव पारी।
रमा बिष्णु की झाँकी हर दम सन्मुख सकौं निहारी।
तुरिया तीत दशा यह जानो करम रेख को टारी।
सहज समाधि अखण्ड यही है मुद मंगल सुख भारी।
सब के तरन हेतु हम भाखैं जो उर लेवै धारी।
अन्त त्यागि तन निज पुर राजै दोउ दिसि जै जै कारी।१२।

चौपाईः- सतगुरु बिन कोई नहिं जानै। कहत सुनत जोई मन मानै।
भजन के पूरन हों सब अंगा। भीतर बाहर से जो नंगा।
नंगे शाह कहैं यह बानी। पढ़ि सुनि झूठे बनते ज्ञानी।
मत्थे क ज्ञान न हत्थे आवै। बार बार जन्मै दुख पावै।४।

४०५ ।। श्री सुफल शाह जी ।।

पदः- लै कर सतगुरु से उपदेश जियतै काया सुफ़ल बनालो।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रूप सामने छालो।

नागिन जगै चक्र सब बेधैं सातों कमल खिलालो।
अमृत पिओ सुनो घट अनहद सुर मुनि संग बतला लो।४।

सहज समाधि यही है मानो बिधि हरि हर समता लो।
अन्त त्यागि तन चढ़ि सिंहासन निजपुर बैठक जा लो।
चेति पूछि औ घोषि बनै यह अपने हृदय बसालो।
सुफल शाह कहैं जो नहिं मानो चौरासी चकरालो।८।

दोहाः- सहज समाधि अखण्ड है, होय न कबहूँ खण्ड।
सुफल शाह कह जान लो, फूटै भर्म क भंड।।

४०६ ।। श्री रियाज़त शाह जी ।।

पदः- कुधान्य खाय भक्त लूटे जाते।
रज तम से यह धान्य है सानी जम पुर कूटे जाते।
जब बढ़िया कहीं भोजन देखैं लारी घूंटे जाते।
जिन के तन मन राम रमे हैं वै सब छूटे जाते।४।

पदः- गींज गांज की बातें कहि सुनि तन अमोल को नाश किया।
मातु पिता की गई जवानी, बिरथा जग में जन्म लिया।
पाप कमाई कीन अघाई बांधि लीन दोनो गठिया।
अन्त समै जम बांधि के लै गे छोड़ि नर्क में डारि दिया।
हर दम कष्ट एक पल कल नहिं गरिआवैं कहि कहि नठिया।५।

जब नीचे से ऊपर आवै सिर पर लोहे कि दें लठिया।
हाय हाय वहँ पर चिल्लावैं कौन सुनै उनकी बतिया।
कोटिन कल्प वहां पर भोगैं सुमिरन बिन भइ यह गतिया।
कहैं रियाज़ शाह सतगुरु करि चेतो उलटि जाय मतिया।
तब तो सब दिसि वही वही है जब घर की मिलि गइ घटिया।१०।

४०७ ।। श्री गीता मानस दास जी ।।

पदः- गीता मानस पढ़ना सुनना, गीता मानस लिखना धरना।
गीता मानस पूजन करना, गीता मानस हर दम रखना।
गीता मानस कीर्तन करना, गीता मानस चरनन परना।
गीता मानस से करि हवना, वही भस्म लै तन में मलना।

गीता मानस भोग लगाना, बांटि प्रसाद आप फिरि पाना।
गीता मानस सैन कराना, नीचे ऊपर वस्त्र लगाना।६।

गीता मानस फेरि जगाना, नेम टेम का रखिये ध्याना।
गीता मानस जपि तर जाना, कलि प्राणिन हित सेतु महाना।
गीता मानस सुर मुनि माना, या में बसत श्री भगवाना।
गीता मानस सदा कहाना, इन ही ते होवै कल्याना।
गीता मानस दास है नामा, इन ही ते पूरन भा कामा।
यही संग में मेरे सामाँ, जो दोनो दिसि की है थामा।१२।
(शब्दार्थः सामाँ = सामान)

४०८ ।। श्री बाबू लाल जी ।।

पदः- श्री मानस श्री गीता भजन का भौन हैं भाई।
करो सतगुरु पता पाओ बरनने में नहीं आई।
प्रेम औ भाव से भक्तौं मिलै आनन्द सुख दाई।
ध्यान धुनि नूर लै होवै तुरत बिधि लेख कटि जाई।
छटा सिय राम राधे श्याम की सन्मुख रहै छाई।५।

मिलैं सुर मुनि सुनो अनहद पिओ अमृत को हरषाई।
नागिनी जागि सीधी हो लोक सब जाय दिखलाई।
चक्र षट नाचने लागैं खिलैं सब कमल फर्राई।
जियति ही मुक्ति भक्ती लो जो बिधि हरि हर ते है पाई।
अन्त तन त्यागि निज पुर में बैठिये बन के स्थाई।१०।

चौपाईः- सतगुरु करि के उर में धरना। प्रेम भाव से पढ़ना सुनना।
तब होवै जियतै भव तरना। बार बार का छूटै मरना।
खान पान सातुकि ही करना। चन्द रोज यहं पर है रहना।
नहीं तो होवै जग में ढहना। माया का यह भक्तौ गहना।८।

४०९ ।। श्री मुरली धर जी ।।

चौपाईः- गीता मानस गो घृत मक्खन। पावै दर्शै रूप बिलच्छन।।
गीता मानस गो घृत नैनू। पावै तुरत मिलै निज ऐनू।।
गीता मानस गो घृत मसका। पावै मिटै जगत का चसका।।
गीता मानस माखन मिश्री। पावै तुरत जाय घर घुसरी।४।

गीता मानस गो घृत शक्कर। पावै जग का छूटै चक्कर।।
गीता मानस गो घृत हलुआ। पावै भागैं तन से छलुआ।।
गीता मानस गो घृत मेवा। पावै सतगुरु की करि सेवा।।
गीता मानस चारि पदारथ। पावै नहीं तो होय अकारथ।८।

४१० ।। श्री शिव शंकर जी ।।

पदः- हरि नाम में प्रेम नहीं जिनका। माया कसि लूटत है तिनका।।
बटपार कहैं किनका किनका। कर फेरि कहैं इनका इनका।।
अब गर्भ कि याद करो दिनका। जिन गर्भ में प्यार किह्यो उनका।।
फिर बाहर आय भयो झिनका। माता निति सेय किहिसि हिनका।।
तब नारि निहारि बन्यो भिनका। सब भागि बिचारि गयो घिनका।।
ससुरारि पियारि वही पिनका। तन त्यागि के चलि जमपुर भिनका।६।

४११ ।। श्री रामेश्वर जी ।।

दोहाः- लालच बुरी बलाय है जग से जान न देय।
आसक्ती वाकी कठिन, राति दिवस सुधि लेय।।
सतगुरु कृपा से जाय बचि, यही है एक उपाय।
राम नाम सुमिरन करै, प्रेम भाव उर लाय।२।

पदः- है भजन एक बिरती अनेक सब खोपड़ी खोपड़ी में ढारी।
करिके बिचार बनना अचार, यह लीला हरि की है भारी।।
है भजन एक अनुभव अनेक सब जानत नहिं नर तन धारी।
या में बिचार करना बेकार, यह लीला हरि की है भारी।४।

४१२ ।। श्री राम धन जी ।।

पदः- ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रूप मिल्यो भइ सहज समाधी।
सतगुरु बिन यह पद है दुर्लभ या से मिटती सबै उपाधी।
बिधि हरि हर सब सुर मुनि भाख्यो सूरति शब्द में दीजै बांधी।
काह बताय सकौ तब भक्तों प्रेम भाव में जावो रांधी।४।
बीज मंत्र के अन्तरगत सब रं रं रं की चलती आंधी।।
को बिलगाय सकै तब वाको दाल साग जिमि परि गई गांधी।।
शान्ति दीन बनि दास कहावो तब हो श्रेष्ठ बटो यह बाधी।
अन्त त्यागि तन निज पुर जावो राम ब्रह्म तहं लेवैं साधी।८।

४१३ ।। श्री धूर धुरंग शाह जी ।।

दोहाः- लड़िकन को चेला करैं, होवैं जहां जवान।
इन्द्रिन को किमि साधिहैं करते पाप महान।।
आधा गुरु को मिलत है, नर्क परै जब जाय।
चेला पीटैं पकड़ कै, रोये नहीं सेराय।।
कहैं गुरु बनि ठगि लिहेव, लायो नर्क मंझार।
हम सब अब लै लेंयगे वाकी कसर निकारि।३।

जम चेलन की ओर हैं गुरु कि सुनै न कोय।
राखिन पहले ही रहै, बीज पाप का बोय।।
अब पछताने होत का, कर्मन का है खेल।
बिन भोगे को बचि सकै, यह सिद्धान्त अपेल।।
बुद्धिमान वाको कहत जो बनि जावै घूर।
राम नाम गुरु पास ले, भजै जाय ह्वै सूर।६।

पदः- पढ़ ली गीता औ रामायन।
सतगुरु ने जब मोहिं पढ़ायो तन मन प्रेम लगायन।
सुन्दर सब के रूप प्रगट भे निरखि निरखि हरषायन।
भगी अविद्या विद्या आई सुख के आँसू बहायन।
गद गद कंठ रोम सब पुलके मुख से बोलि न पायन।५।

नागिन जगी चक्र सब नाचे सातौं कमल फुलायन।
पिण्ड ब्रह्माण्ड से महक उड़ी तब मस्ती में बर्रायन।
धरनी पर परि बैठेन लोटेन कर पग सीस हिलायन।
अमृत पाय सुना घट अनहद सुर मुनि संग बतलायन।
सिया राम प्रिय श्याम की झाँकी अदभुत सन्मुख छायन।१०।

ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुन्नि हर शै से सुनि पायन।
गीता रामायण की चरचा सब लोकन लखि आयन।
यह दोउ माता सब सुख दाता कर उठाय गोहरायन।
इनही से निस्तार भयो मम या से हृदय बसायन।
अस सुन्दर क्या समय मिला है मानो सत्य सुनायन।
अजर अमर तन भयो हमारा यहि को बांटेन पायन।१६।

४१४ ।। श्री बिशाल शाह जी ।।

पदः- हृदय बिशाल से भजन होत कर नैन जीभ नहिं काम करै।
सतगुरु से जप भेद जानि ले सूरति शब्द पै तौन धरै।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि सन्मुख सीता राम ठरै।
सुर मुनि मिलैं सुनै घट अनहद अमृत पी पी उदर भरै।४।
जियति शरन सोई कहलावै जो आलस तजि जियति मरै।
जियति मरन सोई है जानो जो करतल करि जियति तरै।
कहैं बिशाल शाह यह बानी समझ बूझ कै धैर्य धरै।
अन्त त्यागि तन निज पुर राजै गर्भ बास का दुःख टरै।८।

४१५ ।। श्री बैठे शाह जी ।।

पदः- जीवन के कल्यान हेतु श्री आदि पुरुष ढारी सृष्टी।
लख चौरासी अंश प्रगट करि निज तन से कीन्ही बृष्टी।
कितने प्रभु को ध्याय रहे हैं कितनेन की बुद्धी भ्रष्टी।
कर्मन के चक्कर में नाचत जैसी मति वैसी दृष्टी।४।

चौपाईः- प्रथम गुरु के ध्यान को धरना। प्रेम भाव से सुमिरन करना।
तब ही होय जियति भव तरना। चौरासी का छूटै परना।
बड़ा सहज जग माहिं बिचरना। परै कठिन जब होय निकरना।
या से सुलभ उपाय और ना। बैठि के सुमिरौ तजौ दौरना।
इन बचनो में करो गौरना। तो पावोगे कहीं ठौर ना।
ऐसा कोई बिकट भौंरना। चकरावो मुख होय औरना।६।

पदः- मथु रा को रा को रा को।
मथन कि बिधि सतगुरु करि जानो प्रेम भाव से ताको।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रूप सामने झाँको।
हर दम झाँकी सन्मुख वाँकी अमृत पी कर छाको।
जियतै में जब करतल होवै लिखी करम गति टाँको।५।
सुर मुनि सब जै कार मनावैं तेरे पितु औ मां को।
या से चेति करो नर नारी कौन यहां है का को।
बिनती सब से करूँ जोरि कर बैन मान उर आँको।

अन्त त्यागि तन अचल धाम लो छूटै जग का चाकौ।
जो नहिं मानो कहा हमारा तो फिर फकना फाँकौ।१०।

४१६ ।। श्री कथरी शाह जी ।।

पदः- गीता मानस गुरु करि जाना। ताके खुलि गये आँखी काना।।
ध्यान प्रकाश समाधि भुलाना। राम नाम की मिलि गई ताना।।
सुर मुनि के संघ हरि यश गाना। अनहद सुनि अमृत को पाना।।
नागिन चक्र कमल जग जाना। बिबिधि भाँति की महक उड़ाना।।
अन्त त्यागि तन निज पुर जाना। छूटै चौरासी चकराना।१०।

प्रेम भाव भूखे भगवाना। जै जै जै प्रभु कृपा निधाना।।
सन्मुख रहैं श्री भगवाना। जिन थाप्यौ यह सृष्टि महाना।।
बनि धूर घूर कथरी। तब जाय जीवन सुधरी।।
आसिष औ श्राप रसरी। दे त्यागि खेल बिगरी।।
अनमोल नाम मुन्दरी। पहनो सुफल हो गुदरी।२०।

४१७ ।। श्री राम अधार जी ।।

पदः- जिन गर्भ कि बात पै लात धरी, तन छूटी तब सब जानि परी।
जम आय उठाय धरैं कखरी, तब कौन सिफ़ारिश आय करी।
सतगुरु करि लो यह बात खरी, ह्वै जावो तुरतै यार बरी।
जो चोरन ने धन लूट धरी, कुड़की करि लेव धरी डिगरी।४।

धुनि ध्यान प्रकाश समाधि भरी, जहं सुधि बुधि सारी रहै बिसरी।
सन्मुख श्री राधे संग हरी, सिंगार अजब लहरै झलरी।
जो वैन गहै जियतै में तरी, बनि दीन शांति तब का बिगरी।
नित पावै माखन औ मिश्री, शुभ लोकन आप जाय घुसरी।८।

४१८ ।। श्री वरजिस शाह जी ।।

पदः- सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो खुलि जावैं तब दिब्य केवारी।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि हर शै से सुनिये है जारी।
सुर मुनि मिलैं सुनो बहु बाजा अमृत पियो भरी घटि क्यारी।
नागिन जगै ठीक हों चक्कर कमलन की फूलै फुलवारी।४।

अहिफन के ऊपर हैं नाचत त्रिभुवन पति श्री कृष्ण मुरारी।
यह झाँकी अद्भुत अलबेली मुरली अधर पै राजत प्यारी।
सहज समाधि इसे शिव कहते हर दम सन्मुख टरै न टारी।
वरजिस शाह कहैं तन तजि कै चलि बैठो निज धाम मंझारी।८।

४१९ ।। श्री संतर शाह जी ।।

पदः- सब कछु राम नाम के अन्तर।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो है अमोल यह जंतर।
ध्यान प्रकाश समाधि रूप औ सारे तंतर मंतर।
विधि हरि हर सुर मुनि सब जान्यौ चारौं मोक्ष कि संतर।
या को पाय जीव हों निर्मल लगै न कोई तंतर।
जो नहि मानो बिनय हमारी बिनिहौ कांटे कंकर।६।

दोहाः- राम जानकी कृष्ण राधिका बिष्णु लक्ष्मी रा में।
औ विश्व सब म में देखा फिर समान हैं रा में।।

४२० ।। श्री दीन शाह जी ।।

पदः- भजि लो राम श्याम नारायन।
तीनो देव एक हैं जानो तब हो जीव परायन।
सतगुरु बिन यह पद है दुर्लभ सुर मुनि बांट्यो बायन।
या ते मानो बिनय दीन की सब के हित पद गायन।४।

शेरः- बहुत राह हैं हरि मिलने की। बिना चाव सब हैं सपने की।।

४२१ ।। श्री दरैती शाह जी ।।

पदः- कहैं दरैती, छुटी अनीती, भजन की रीती गुरु बतायो।
धुनि ध्यान लै तेज भा चमाचम प्रिय श्याम आकर सन्मुख में छायो।
बजैं घट बाजा मिलैं नित सुर मुनि चखौं अमी रस हिया जुड़ायो।
जगी है नागिन फिरैं सब चक्कर कमल खिलें क्या सुगन्ध छायो।४।

४२२ ।। श्री खुशाल जोशी जी ।।

पदः- सीता पति राम चन्द्र मेरो दुःख हरौ नाथ।
दीनन के दीना नाथ कीजै मो को सनाथ।

चोरन गहि लीन साथ, मानत नहिं धरे माथ।
चारों दिसि ते अनाथ सिर पर प्रभु धरो हाथ।४।

४२३ ।। श्री दरवा शाह जी ।।

पदः- पकड़ौ राम नाम का सिरवा।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो शांत होंय खट किरवा।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै जो बिधि लेख को चिरवा।
राधा माधो दरशन देवैं पीछे कदम का बिरवा।
वंशी अधर धरे हैं कूकत तन मन हरि ले पिरवा।
सखा सखी सब सुनि के दौड़ें नेक धरत नहिं धिरवा।६।
हिल मिल रास होन तब लागे श्री जमुना के तिरवा।
नाना भाँति की बटै मिठाई दही मही औ क्षिरवा।
माखन मिश्री चाट लगावैं ऊपर ते लें निरवा।
अंतराय तब चट सब होवैं मिलैं न मानो हिरवा।
यह सुख लूटौ भक्तों जूटौ दीन बनो तजि टिरवा।
अन्त त्यागि तन चढ़ि सिंहासन बैठे हरि संघ घिरवा।१२।

४२४ ।। श्री छटे शाह जी ।।

पदः- सतगुरु करि सुमिरौ चट्ट पट्ट। छूटै चोरन की खट्ट पट्ट।
फूटै भ्रम भाड़ा भट्ट भट्ट। तब श्याम प्रिया मिलैं झट्ट झट्ट।
बिधि लेख कटै तब कट्ट कट्ट। धुनि ध्यान नूर लय सट्ट सट्ट।
जे सखुन में समुझें अट्ट सट्ट। रे रं जम पीटैं फट्ट फट्ट।४।

४२५ ।। श्री दुलारे शाह जी।।

पदः- न तुम हमारे न हम तुम्हारे, प्रभू के द्वारे वही सुखारे।
गुरु के मारे सदा सुतारे, विधि लेख टारे वही सुखारे।
धुनि ध्यान धारे लय तेज ढारे लखैं मुरारे वही सुखारे।
नागिन जगा रे चक्कर घुमा रे कमल खिला रे वही सुखारे।४।
अमी पिया रे अनहद सुना रे सुर मुनि भेंटारे वही सुखारे।
जे उर में डारे वही करारे सदा सहारे वही सुखारे।
जिन्हें सकारे उन्हें सुधारे परम पियारे वही सुखारे।
कहैं दुलारे बचन पुकारे जियति लखारे वही सुखारे।८।

४२६ ।। श्री चित्र गुप्त दास उर्फ गुमान सिंह जी ।।

दोहाः- चित्र गुप्त को सिद्ध है, राम नाम सुख सार।
या से सब जीवन लिखैं, मन में जौन बिचार।।

चौपाईः- दूसर रूप धरे भगवाना। लक्ष्मी जी ने कीन्ह बखाना।।
करमन की गति लिखि बतलाना। उस हिसाब से दुख सुख पाना।।
तिल तिल लिखत हिसाब महाना। देखत सुनत सृष्टि का ज्ञाना।।
विधि शारदा शेष शिव जाना। हनुमत गणपति ज्ञान निधाना।८।

सुर मुनि कोइ कोइ इन ते जाना। भेद जानि के मन हरषाना।।
जै जै जै प्रभु कृपा निधाना। अस कह करत सबै गुण गाना।।
सुमिरन करत धरत है ध्याना। धूप दीप नैवेद्य लगाना।।
करि आरती अस्तुती ठाना। करि प्रणाम हों अंतर ध्याना।१६।

दोहाः- चित्र गुप्त की होत है, प्रति दिन सेवा मान।
कह गुमान सिंह सत्य हैं, धरि कै देखौ ध्यान।।

४२७ ।। श्री स्वानासर बारी जी ।।

पदः- यह सब से बिनती करत स्वानासर बारी।
सतगुरु करि सुमिरन सिखौ लेहु मन मारी।
दहिने कर चक्र को लिये खड़े बनवारी।
हर दम सन्मुख रहैं करैं रखवारी।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधि कर्म गति टारी।५।

सुर मुनि नित आवैं मिलन कहैं बलिहारी।
अमृत पी अनहद सुनो मधुर गुमकारी।
नागिनी चक्र और कमल जगैं जयकारी।
तन त्यागि चलौ साकेत जहां सुख भारी।
तब छूटै गर्भ का खेल रहौ चुप धारी।१०।

४२८ ।। श्री जोधा सिंह जी ।।

पदः- सतगुरु करि हरि को भजो लेव मन मारी।
रथ युद्ध में हांकत अरजुन का बनवारी।

हैं ध्वजा पर राजत पवन तनय बलधारी।
रथ पर हैं पारथ बैठि धनुष सर धारी।
क्या घोड़ा चार हैं मचे स्वेत बलधारी।
रथ चमकै चम चम चलै उठै झनकारी।६।

यह कुरूक्षेत्र रण भूमि में युद्ध मचारी।
जो जूझि जांय तहं सूर दिब्य तन धारी।
चढ़ि चलैं यान बैठैं बैकुण्ठ मंझारी।
सुर मुनि नभ ते जै करैं सुमुन बरसारी।
बाजा सब देंय बजाय जीति की बारी।
यह लीला लखि लखि हम हूँ भये सुखारी।१२।

४२९ ।। श्री तरजन शाह जी ।।

पदः- पक्कल केला के खुब बक्कल खायो बिदुर के घर घनश्याम।
धन बिदुरानी प्रेम में सानी सुफ़ल कियो निज चाम।
पीताम्बर हरि ने पहिरायो निज कर ते कटि थाम।
नगन मगन कछु जान न पायो ऐसी भक्ता बाम।४।

भाव के वश हैं त्रिभुवन स्वामी करुणा निधि गुण ग्राम।
मय परिवार के कीन्ह रवाना जो बाजत निज धाम।
तरजन शाह कहैं हे भक्तों चाव से सुमिरौ नाम।
दुर्लभ तन औ स्वांस समय है सारो अपना काम।८।

(२)

चौपाईः- चाव से चबे सुदामा के चाउल। भाव ही में हरि रहते बाउल।।
कर्मा की खिचड़ी नित खायो। भाव जानि प्रभु बिलम्ब न लायो।।
मलूक दास का टुकड़ा पायो। भाव निरखि हरि हृदय लगायो।।
सड़ा भात रघुनाथ का जूठा। छीनि खांय हरि कहैं अनूठा।८।

हैं, ह्वैगे, ह्वै हैं जग माहीं। ऐस भक्त प्रभु के ढिग जाहीं।
भक्तन को पहिचानै सोई। जा पर हरि की किरपा होई।
हरि के रंग में जो रंग जावै। ता को सब दिसि वही दिखावै।
तरजन कहैं गरीबी धारो। सतगुरु करि भव लात से टारौ।१६।

(३)

शेरः- शम्स तबरेज़ की खाल खिंचाई सरमद का सर जुदा किया।
ईसा औ मंसूर को फाँसी दे करके तब बिदा किया।
तेग़ बहादुर का सर काटा बापू के गोली मारी।
डिगे नहीं यह भक्त जक्त में जीति गये भव की पारी।
जिस बिधि से हरि राखैं उसी तरह रहना चहिये।
तब तो दोनों दिसि बलिहारी दुख सुख सम सहना चहिये।६।

धरम ब्याधा की बानी भक्तों लीजै तन मन मानी जी।
हाट बाट औ घाट में बैठे साधू बनि अज्ञानी जी।
जो अपना कल्यान चहै तो इन ढिग जाय न हानी जी।
चोरन के भैरों में हरदम फेरत इनकी घानी जी।
तरजन कहैं करो अब सतगुरु सुमिरौ सारंग पानी जी।
अन्त त्यागि तन निज पुर बैठो राखौ निज कुल कानी जी।१२।

शेरः- बीज पाप के बोकर भाई, स्वर्ग की आशा मत करना।
तरजन कहैं बिना सतगुरु के, भव सागर नहिं हो तरना।।

दोहाः- जो जितना ही बड़ा है उतना ही गंभीर।
तरजन कह दुख सुख सहै हरै पराई पीर।।

४३० ।। श्री गर्जन शाह जी ।।

पदः- सुमिरन का लिखा गरभ पट्टा।
जग में आय भूल कर बैठा लगि गया कुल में बट्टा।
सतगुरु से जप भेद जान लो चलो मगन ह्वै सुख अट्टा।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रूप सामने में सट्टा।४।

अमृत पिओ सुनो घट अनहद सुर मुनि लाय देंय गट्टा।
मुख में धरत, देर नहिं लागै गल जावैं आपै चट्टा।
नागिन जगै चक्र षट बेधैं सातों कमल खिलैं फट्टा।
जो या बिधि ते भजन करै तो, कठिन कुअंक मानहु कट्टा।८।

४३१ ।। श्री पागल शाह जी ।।

पदः- नाम रूप बिन जाने भक्तों चेला कभी बनाना ना।
पढ़ि सुनि गुनि कै चेत करो निज कुल में दाग लगाना ना।

आँखी कान खुलैं नहिं गुरु बिन मिलिहै कहीं ठिकाना ना।
जल भोजन का चेत रहै नित रज तम अन्न को खाना ना।४।

प्रेम भाव से सुमिरन करना मन के कहै पै जाना ना।
यह पाजी ऐसा है काजी गहि रखिना दौराना ना।
कछु दिन बाद होय यह राजी साधन में अलसाना ना।
पागल शाह कहैं चुप रहना सब को भेद बताना ना।८।

दोहाः- गुरु गुरु सब जन कहैं, गुरु मिलब बड़ काम।
अंधकार को नाश कर, दे प्रकाश का धाम।।
सतगुरु सतगुरु सब कहैं, सतगुरु मिलना काम।
जा के आँखी कान हो, वा को सतगुरु नाम।२।

४३२ ।। श्री रहम शाह जी ।।

पदः- राम प्रेम का रूप जानिये भाव सिया महरानी।
हम जब ध्यान में बैठे भक्तों, भई अकाश ते बानी।
श्याम प्रेम का रूप हैं भक्तों, भाव राधिका रानी।
हम जब ध्यान में बैठे भक्तों, भई अकाश ते बानी।४।

बिष्णु प्रेम का रूप हैं भक्तों, भाव रमा गुण खानी।
हम जब ध्यान में बैठे भक्तों, भई अकाश ते बानी।
बिधि हर शेष देव मुनि तब फिर यही कह्यौ मन मानी।
या ते सतगुरु करि के जानो झूठे जग हैरानी।८।

दोहाः- जहां भाव तहं प्रेम है, जहां प्रेम तहं भाव।
सतगुरु बिन पैहो नहीं, पढ़ि सुनि करत चबाव।
अजर अमर दोउ रूप हैं, कैसे हो बिलगाव।
जीवन के कल्यान हित, यह प्रभु रच्यो उपाव।४।

४३३ ।। श्री छबीले शाह जी ।।

पदः- सतगुरु करि नाम नहीं चीन्है सब जक्त में झूठे भक्त कहैं।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधि नहीं सिया राम भला तोहिं कैसे चहैं।
अनहद न सुने, अमृत न पिये, सुर मुनि उर में फिर कैसे गहैं।
नागिन न जगी, नहिं चक्र सुधे, नहिं कमल खिले खुशबू को लहैं।

तन छोड़ि गये साकेत नहीं, फिर बार बार रौ रौ में ढहैं।
यह मानि बिनय जो ले मेरी, सो आदि अन्त का सुक्ख लहैं।६।

४३४ ।। श्री छैल शाह जी ।।

पदः- साधक सुमिरन उर में राखैं। सतगुरु करैं खुलैं श्रुति आंखैं।
हरि जस कहैं कुशब्द न भाखैं। सुनैं गुनैं तन मन नहिं माखैं।
कर्म उठाय धरैं सब ताखैं। फूलि फलैं अनुभव की साखैं।
अनहद सुनै अमी रस चाखैं। अन्त त्यागि तन जग नहिं कांखैं।८।

४३५ ।। श्री खिलाड़ी शाह जी ।।

पदः- सतगुरु करि सुमिरन सिखौ छोड़ि जग मक्कर।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधि में जावो भक्कर।
सन्मुख में श्यामा श्याम लखौ नित हंसि कर।
सुर मुनि सब लायके दिब्य खिलावैं शक्कर।४।
फिर मन्दाकिनी का नीर पिलावैं छक कर।
सातौं फिर जागैं कमल छइउ जो चक्कर।
नागिनी मातु जगि जाय करै को टक्कर।
तन त्यागि चलौ निज धाम न आओ भग कर।८।

४३६ ।। श्री रज़ा शाह जी ।।

पदः- भजन में लौ लगी जिसकी वही जानै मज़ा क्या है।
ध्यान धुनि तेज लय करतल रूप सन्मुख सजा क्या है।
देव मुनि आय नित भेटैं कहैं बोलो गिज़ा क्या है।
नहीं कछु कह सकै प्यारा प्रेम रंग में भिजा क्या है।
छोड़ि तन निज वतन पहुँचा तो अब भक्तों कज़ा क्या है।
रूप रंग हो गया हरि का अजब ढंग से सजा क्या है।६।

४३७ ।। श्री अजब शाह जी ।।

पदः- लखौ नित सन्मुख जनक जमाई।
संग बहू श्री दशरथ जी की शोभा वरनि न जाई।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय सुधि बुधि जहां भुलाई।
अमृत पिओ सुनो घट अनहद बाजत बिमल बधाई।४।

सुर मुनि आय आय उर लावैं संघ में लेंय बिठाई।
नागिन जगै चक्र षट बेधैं सातौं कमल फुलाई।
उड़ै तरंग बोलि नहिं फूटै नैन नीर झरि लाई।
अन्त त्यागि तन निज पुर राजौ अजब शाह कहैं गाई।८।

४३८ ।। श्री बाबा दिग् बिजयी दास जी ।।

दोहाः- सतगुरु बचन से प्रीति हो, पूरन सारे काम।
दिगबिजयी कह गुनै जे, तिनको करूँ प्रणाम।।

पदः- कंठी कसि बांधो मिरदंगी।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो होय शान्त बे ढंगी।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि भन भनाय ज्यों वंगी।
अमृत पिओ सुनो घट अनहद सुर मुनि हों सत संगी।४।

नागिन जगै लोक सब घूमै हैं कल्यान के संगी।
हर दम सन्मुख कृष्ण राधिका क्या झाँकी बहुरंगी।
सूरति शब्द में ऐसे लागै जैसे कोइ भिखमंगी।
कह दिगबिजयी निज पुर बैठो जियति जीति जग जंगी।८।

दोहाः- दिगबिजई कह दिगविजय, जियति करै जो कोय।
सोई वहँ पर अंटि सकै, कर्मन की गति धोय।।
रघुनाथ दास सतगुरु मेरे, जो रघुनाथ का अंश।
जिनकी कृपा कटाक्ष ते दुख का भयो बिध्वंस।।
अवध पुरी से है मिला, सुभग बरहटा ग्राम।
द्विज कुल में मम जन्म भा, दिग विजयी है नाम।३।

४३९ ।। श्री हुरदंगे शाह जी।।

पदः- कण्ठी बांधौ कसि कै गोली।
सतगुरु से सुमिरन बिधि जानो, बातैं छोड़ो पोली।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि हर शै से सुनु बोली।
सुर मुनि मिलैं सुनौ घट अनहद अमृत पिओ ढकोली।४।

नागिन चक्र कमल सब जागैं कर्म जलै जिमि होली।
सिया राम की झाँकी सन्मुख हर दम रहै न डोली।

अन्त त्यागि तन निज पुर राजौ बन बैठो तहँ भोली।
जियतै में सब यह तय होवै जीतै जग जिमि गोली।८।

४४० ।। श्री हुरदंगी माई जी ।।

पदः- बांधौ राम नाम का हीरा।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो जारो भव की पीरा।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि सन्मुख सिय रघुवीरा।
सुर मुनि आय के रोज़ देंय तब खोया खांड़ समीरा।४।

अमृत पिओ सुनो घट अनहद बाजै ड्योढ़ी तीरा।
नागिन जगै चक्र सब बेधैं कमल खिलैं सब तीरा।
अन्त त्यागि तन निज पुर बैठो बनि के हरि सुत बीरा।
हुरदंगी कह जियति न जानै तेहि जम करैं खमीरा।८।

४४१ ।। श्री पचरंगी शाह जी ।।

पदः- करौ मेरे हृदय बासा, श्री मानस श्री गीता।
नहीं अब और कोई आसा, श्री मानस श्री गीता।
नाम का बज रहा तासा, होत है ध्यान परकासा।
समाधी सब करम नासा, रूप सन्मुख रहै खासा।
मिट गई भूख औ प्यासा, सीत औ उष्ण से पासा।
अजर औ अमर नहिं नासा, भयो अनमोल तन श्वांसा।
। श्री मानस श्री गीता।६।

दोहाः- पांच प्राण मिलि एक भे, पंच गब्य भइ जान।
तब अशुद्ध ते शुद्ध हो, सुर मुनि कवी बखान।।

४४२ ।। श्री शाह जी ।।

पदः- सतगुरु करि आंखी कान लेहु, तब जानो को जग कैस अहै।
जियतै में सब करतल करिये, नहिं कोई रहा नहिं कोई रहै।
विश्वास में तन मन को भरिये, सब जांय उलटि भीतर की तहैं।
जो नैन सैन से बैन गुनै, सो काहे जक्त में फेरि बहै।
हरि प्रेम भाव की मूरति हैं, हम सत्य बचन कर जोरि कहैं।
सुर मुनि सब जै जै कार करैं तन त्यागि अचल पुर सुःख लहैं।६।

४४३ ।। श्री फ़कीरे शाह जी ।।

पदः- सतगुरु से सुमिरन बिधि लैकर जियतै काया सुफ़ल बना ले।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि श्याम प्रिया को सन्मुख छाले।
मधुर मधुर अनहद धुनि सुनि सुनि अमृत टपकै गगन से पाले।
सुर मुनि के संग नाना बिधि के, हरि के चरित मनोहर गाले।४।

नागिन जगै चक्र षट बेधैं सातौं कमलन उलटि खिला ले।
पूरन काम होंय दोनो दिसि जै जै कार कि ढोल बजाले।
अन्त त्यागि तन चलि निज धाम में आवागमन के खेल मिटा ले।
कहैं फकीरे शाह फिकिर क्या मन को भक्तों जो अपना ले।८।

दोहाः- स्वामी रामानन्द जी, संख को देंय बजाय।
जो जावै जेहि कार्य हित, सो तुरतै ह्वै जाय।।
ऐसे गुरु का शिष्य मैं, नाम फ़कीरे शाह।
मुसलमान घर जन्म भा, पायो निज पुर राह।२।

४४४ ।। श्री गोरे शाह जी ।।

पदः- भजि लेहु नाम तन मन को जोरि करवावत काहे कुल की खोरि।
सतगुरु करि दीजे शब्द डोरि, छूटै तब मैं-तैं मोरि तोरि।
अनहद सुनि अमृत पान करो, सुर मुनि भेटैं ह्वै थोरि-थोरि।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधी हो, सिया राम को निरखौ श्याम गौरि।४।

४४५ ।। श्री बाबू शाह जी ।।

पदः- है लालच की लफ़री सफ़री सब सुकृति खात नित छोरि छोरि।
जग में बनि दीन रहौ या से नाहीं रहि जहियो कोरि कोरि।
घर घर में फेरी देत रहत करती है परिक्षा फोरि फोरि।
क्या कटा छटा याकी बांकी गावत है तानें तोरि तोरि।४।

सुर मुनि सब या से भय खाते लखि मातु कहैं कर जोरि जोरि।
जो या के संग में भंग भये मल का रंग छिड़के घोरि घोरि।
नैनों से लखौ नहिं बोलि सकौ तन मन को मारयौ बोरि बोरि।
या से सतगुरु करि हरि सुमिरौ बातैं मत करना ढोरि ढोरि।८।

४४६ ।। श्री फाके मस्त शाह जी ।।

पदः- जपि हरि नाम चुकावो बाकी।
बाकी गर्भ का तन मन ढांकी, चलिहै ऊपर जमन की टांकी।
तब तन कोंचैं रुधिर निकारैं, फिरि जावै चट पाकी।
यह बाकी बिधि हरि हर सुर मुनि चुकै अमीरस छाकी।
ध्यान प्रकाश दशा लय पायो कर्मन की गति आंकी।५।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि की सन्मुख रहै झाँकी।
नागिन जगी चक्र सब घूमे खिलि गई कमलन फाँकी।
सतगुरु से जप भेद जान के खेलो नाम की हाकी।
माया चोर होंय सब काबू कौन सकै तब ताकी।
अन्त त्यागि तन निज पुर राजौ जै जै हो पितु मां की।१०।

४४७ ।। श्री आशा शाह जी ।।

पदः- संत साधु जोगी तपसी लामा पोंगी दीगम्बर हैं।
पंडित महात्मा भक्त बौध मत जैन जौन श्वेताम्बर हैं।
दुर्वेश गदा सूफ़ी फ़कीर औलिया पीर पैगम्बर हैं।
मुर्शिद मुरीद मुल्ला काजी मोमिन हाजी टाटाम्बर हैं।
जे नाम को जानि के पास भये सब वाक्य ज्ञान आडम्बर हैं।५।
तन त्यागि चले निज धाम खिले सिंहासन अव्वल नंबर हैं।
श्री रामानन्द गुरु मेरे जो राम ब्रह्म विश्वम्भर हैं।
कहैं आशा शाह रहै सन्मुख आशिष दै दीन्ही अम्बर हैं।
नहिं क्षुदा तृषा नहिं सीत ऊष्ण तन पर बैकुण्ठ पितम्बर हैं।
नहिं कटै फटै नहिं मैल होय जल अगिनि न व्यापै चम्मर हैं।१०।

(२)

पदः- श्री स्वामी रामानन्द क दहिनावर्त संख क्या जंतर है।
जहाँ उठाय के फूँका प्रभु ने खुलि गई चहुँ दिशि संतर है।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रूप औ तंतर मंतर है।
मुद मंगल भा दसौं दिसन में होत न कबहूँ अंतर है।
आशा शाह कहैं जिनका जस जाहिर देस देसान्तर है।
द्वादश महाभागवत चेला जिनके संग भये स्वतंतर हैं।६।

शेरः- संग छिमा नारि संतोष पुत्र सुख शान्ति मिली मन भा काबू।
कहैं आशा शाह श्री गुरु किरपा दोनों दिसि के भे बाबू।।

४४८ ।। श्री मंगल शाह जी ।।

पदः- वेद शास्त्र उपनिषद संहिता औ पुरान बतलाते हैं।
रामायन मानस औ गीता वशिष्ठ योग समुझाते हैं।
पर्व अठारह महाभार्त के वे भी यही सिखाते हैं।
चारों युग बिधि हरि हर सुर मुनि राम नाम रटि लाते हैं।४।
सब लोकन में इसी की चरचा हर शै से सुनि पाते हैं।
तब काहे फिर वाक्य ज्ञान कथि ठगते फिरत ठगाते हैं।
जो कोइ आवै नाम बतावै पढ़ि सुनि बृथा छिपाते हैं।
है अनमोल दाम नहिं लागे, तारें औ तरि जाते हैं।८।
कलि में और उपाय न दूजा बार बार हम गाते हैं।
प्रेम भाव से सुमिरैं जे जन, ते फिर गर्भ न आते हैं।
मंगल शाह कहैं मुद मंगल सब में प्रभू दिखाते हैं।
मेरी तरह जीव सब होवें हर दम यही मनाते हैं।१२।

४४९ ।। श्री अरिष्ट शाह जी ।।

पदः- जिस समय भगवान ने रचना करी इस सृष्टि की।
उस समय निज तन ते अगणित अंस प्रगटे बृष्टि की।
कौन बरनन कर सकै उस सगुन निर्गुन इष्ट की।
कितने लगे सुमिरन में हैं कितनो कि बुद्धी भृष्ट की।
कर्म जिनके जैसे हैं वैसे ही उनकी दृष्टि की।
प्रेम भाव से पार हो यह बिनय शाह अरिष्ट की।६।

(२)

चौपाईः- प्रेम भाव का खेल है न्यारा। प्रेम भाव है हरि का प्यारा।
प्रेम भाव से खुलैं केवारा। प्रेम भाव है मोक्ष क द्वारा।
प्रेम भाव नैनों का तारा। प्रेम भाव आनन्द दुलारा।
प्रेम भाव से मन है हारा। प्रेम भाव से होत दिदारा।
प्रेम भाव से ध्यान को धारा। प्रेम भाव परकास पसारा।५।

प्रेम भाव लय जाय बिठारा। प्रेम भाव बिधि लेख को टारा।
प्रेम भाव विश्वास संवारा। प्रेम भाव साकेत बिठारा।
प्रेम भाव सुर मुनि हिय धारा। प्रेम भाव सब कार्य संभारा।
प्रेम भाव षट चक्र सुधारा। प्रेम भाव नागिनि हुसकारा।
प्रेम भाव सब कमल उलारा। प्रेम भाव अनहद को सारा।१०।

प्रेम भाव अमृत की धारा। प्रेम भाव सब तत्वन गारा।
प्रेम भाव से हो झँकारा। रेफ़ बिन्दु की धुनि रंकारा।
प्रेम भाव सब गुनन में ढारा। प्रेम भाव है सत्य क आरा।
प्रेम भाव की बालि दुधारा। प्रेम भाव सुख शान्ति पनारा।
प्रेम भाव संतोष खरारा। प्रेम भाव ही करत उबारा।१५।

प्रेम भाव है बड़ा सुतारा। जियतै उतर जाव भव पारा।
प्रेम भाव का चरित अपारा। को कहि सकै शेष हिय हारा।
या से मानो बचन हमारा। सुमिरन में लागौ निसि बारा।
सतगुरु करि के नर औ दारा। आलस पर मारो हथियारा।
कहते शाह अरिष्ट पुकारा। प्रेम भाव प्रभु रूप में ढारा।२०।

४५० ।। श्री मोहम्मद हाजी जी ।।

पदः- हे हरि। मोरे घर मौताजी।
चोरन सब धन लीन हमारा, बांधै बैठि नराजी।
हर दम घात लगाये रहते, ऐसे हैं यह पाजी।
मन को हम से फोरि लिहिन हैं, उन्हीं के संग राजी।४।

जौनी बिधि हरि आप बतावो, वा विधि जीतैं बाजी।
इनको जनम कैदि करवावैं खाय कमावैं भाजी।
सब की दौर जाय तब छूटी ह्वै जांय कूकुर भाजी।
तब हम घर को फेरि संभारैं ह्वै जाँय पूरे काजी।८।

सतगुरु देहु बताय कृपा निधि दैहैं वै फिरि साजी।
नाम का हवन जहां करवावैं सब घर जावै मांजी।
सुर मुनि सब के दरशन होवैं जो सतसंग समाजी।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रूप पाय हम गाजी।१२।

यह पद पढ़ि सुनि श्री गुरु चरनन रज लेवैं दृग आंजी
वै सब भक्तों जियतै तरिहैं उन्हीं को ये छाजी।
भोजन हेतु जौन कोइ आवै, प्रेम से दैहैं खाजी।
नेकहु चुकै न बढ़तै जावै, कहैं मोहम्मद हाजी।१६।

४५१ ।। श्री झँझू शाह जी ।।

पदः- सुमिरन बिन जम करैं पिटा पिट्ट। मारैं औ झिटकैं झिटा झिट्ट।।
लातन से रौंदें किटा किट्ट। गहि नर्क में छोड़ैं मिटा मिट्ट।।
आलस में बैठे सिटा सिट्ट। सतगुरु करि चेतौ फिटा फिट्ट।।
सुख सागर में हो गिला गिल्ट। तब फेरि न ह्वै हौ बिला बिल्ट।८।

पदः- करते बिन सुमिरन गिट्ट पिट्ट।
जम ऐहैं तब हो सिट्ट पिट्ट।।

पदः- सतगुरु करि चेतो सट्ट पट्ट।
चोरों की छूटे खट्ट पट्ट।।

पदः- चोरन संग चेति के रहेना। किमि तप धन का लें गहेना।।
कटु बैन सबों के सहेना। बातों में कभी न बहेना।।
दुख आन पड़े मत कहेना। तब होवै पूरा लहेना।।
संसारी वस्तु न चहेना। यह बैन मेरे उर गहेना।।
फिरि होय न जग में ढहेना। हरि हाथ पकड़ि लें दहेना।१०।

४५२ ।। श्री रोवां शाह जी ।।

पदः- रोवां कहैं रोवां तलक नहिं संग तेरे जायगा।
हरि नाम का सुमिरन करौ जो निज वतन पहुँचायगा।
माने तो उसका हो भला नहिं अन्त फिरि पछितायगा।
कसि नर्क में जम छोड़िहैं कल्पौं पड़ा चिल्लायगा।४।

४५३ ।। श्री धावन शाह जी ।।

पदः- संग श्यामा के रूप रंग मनोहर हरि का।
जिसने देखा है वही हो गया प्यारा लरिका।

पदः- चारों अजपा चारों ध्यान। सुर मुनि भक्तन का है प्रान।।
सतगुरु करि जो लेवै जान। ता को आवागमन नसान।।

नाम प्रकास समाधि औ ध्यान। हर दम सन्मुख सिय भगवान।।
बिमल बिमल अनहद की तान। सुनै देव मुनि दें बरदान।।
अमृत टपकै गगन ते जान। मन आनन्द होय करि पान।५।

नागिन जगै चक्र घुमरान। सातों कमलन होंय खिलान।।
उड़ै तरंग न सकै बखान। गद गद कंठ रोम पुलकान।।
तन तजि निज पुर कियो पयान। हरि के रंग रूप भा जान।।
नर नारिन हित करों बखान। पढ़ि सुनि गुनि पावैं कल्यान।९।

४५४ ।। श्री वैराग शाह जी ।।

पदः- वैराग के भक्त जक्त में जे ते आस किसी की नहिं करते।
सब लोग करैं आशा उनसे वै नाम पै मन हर दम धरते।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधि मिली प्रिय्र श्याम सदा सन्मुख रहते।
अमृत पीवैं बाजा सुनते सुर मुनि सब आय आय मिलते।
नागिन सब चक्कर कमल ठीक क्या भांति भांति खुशबू लहते।
तन त्यागि चलैं साकेत रहैं फिरि गर्भ में कबहूँ नहिं ढहते।६।

४५५ ।। श्री किशोर शाह जी।।

पदः- सुमिरन बिन जग रपटी रपटा। जम अन्त करैं झपटी झपटा।।
तन रौंदि करैं खपटी खपटा। गहि बांधि चलैं चपटी चपटा।।
छोड़ैं हौजन दपटी दपटा। हरि भजै नहीं कपटी कपटा।।
तब कहां करौ छपटी छपटा। भोगौ कल्पन नकटी नकटा।।
जो जियति गुनै हपटी हपटा। सो पार होय बकटी बकटा।।
सतगुरु बिन दुःख कटी न कटा। यह सृष्टि क खेल मिटी न मिटा।६।

४५६ ।। श्री बलुवा पासी जी ।।

पदः- राम नाम सुमिरौ कहैं बलुवा। सुर मुनि आय पवावैं हलुवा।।
सन्मुख राजैं जसुदा तलुवा। जो सारी सृष्टि करै पलुवा।।
तन मन से सतगुरु चरन छुआ सुर मुनि चट आयके दीन दुआ।
सब मिलि तब दीन्ह्यौ माल पुआ पायन अदभुत सुख तुरत हुआ।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधि कुआ जहँ सुधि बुधि आय के होत मुआ।
सुमिरन बिन नर तन आन थुआ जम कूटैं सब तन होय घुआ।६।

दोहाः- कढ़िलावत लै कर चलैं हाय हाय चिल्लाव।
बलुवा कह हरि भजन बिन चलै न एकौ दांव।।

४५७ ।। श्री ख़ज़ाना शाह जी ।।

चौपाईः- पंडित संत भये अभिमानी। तब जानौ हैं वाक्य के ज्ञानी।।
पढ़ि सुनि लिखि कर ताना तानी। अन्त नर्क में हो हैरानी।।
तन मन जब तक होय न पानी। तब तक मिलैं न हरि सुखदानी।।
सुर मुनि सब की है यह बानी। गुरु बिन मिलै न पद निर्वानी।४।

पदः- सतगुरु करि मन को नाम पै दो, धरि लेव खज़ाना गेरि गेरि।
तप धन सम कोई धन न और, यह सुर मुनि कहते टेरि टेरि।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधी हो, छूटै तब मैं तैं मेरि तेरि।
अमृत चाखौ घट साज सुनौ, सुर मुनि सब बैठें घेरि घेरि।४।

नागिन सब चक्कर कमल खिलैं, क्या महक उड़ाते फेरि फेरि।
सन्मुख में राधे श्याम रहैं, निरखौ हंसि हर दम हेरि हेरि।
जम काल मृत्यु औ पांच चोर, माया बनि जावे चेरि चेरि।
तन छोड़ि चलौ निज धाम डटौ, तब गर्भ न आवो फेरि फेरि।८।

४५८ ।। श्री मुलायम शाह जी ।।

पदः- सतगुरु करि छोड़ो हम हम हम। धुनि होवै जारी रम रम रम।
सुर मुनि सब बैठे सम सम सम। अनहद धुनि सुनिये टम टम टम।
अमृत घट पीजै थम थम थम। बाजैं तब घुंघरु छम छम छम।
नाचै मुरली धर चम चम चम। गमकें तहँ आवैं गम गम गम।
बैठो चलि निज पुर जम जम जम। फिर जक्त गिरौ नहिं धम धम धम।
तन में है जब तक दम दम दम। तप धन को लूटौ नम नम नम।६।

४५९ ।। श्री कुरबान शाह जी ।।

दोहाः- परमेश्वर के भजन बिन, मिलै न कबहूँ शान्ति।
कुरबान शाह कह हर समय, घेरे रहती भ्रान्ति।।
दाया पापिन पर करैं, भक्तन पर हरि प्रेम।
कुरवान साह कह नारि नर सुमिरौ करि नित नेम।।

झूठा अपना मतलबी, औ दरिद्र कंजूस।
साधक इनका संग करै, तो होवै बनहूस।।
इनकी संगति जो करै, अन्त में नरकै जाय।
नाना भांति के कष्ट तहँ, रोये नहीं सेराय।४।

साधक इनसे अलग हो, तब होवै कल्यान।
कुरबान शाह कह मानिये, सुर मुनि कीन बखान।।
तप धन ज़ाहिर मत करो, या से होती हानि।
कहैं शाह कुरबान सब, सुर मुनि की यह बानि।।
चोर-चूहरी लूट लें, रहै न तप कछु पास।
पहुँचि सकौ नहिं निज वतन करे दोऊ दिसि नास।।
शान्ति दीनता लेहु गहि, सतगुरु बचन को मान।
तब दोनों दिसि जाय बनि, कहैं शाह कुरबान।८।

४६० ।। श्री निछावर शाह जी ।।

दोहाः- राम नाम से तुक नहीं, कैसे होवैं पार।
कहैं निछावर शाह भा दोनों दिसि अंधियार।
जब तक रहै अशान्त मन तब ही तक अंधियार।
शान्ति मिली, उजियार भा कहैं निछावर पार।४।

(२)

दोहाः- सुमिरन बिना गरियाय के जम पीटते फिर बांधते।
कहते निछावर शाह फिर चलि नर्क में हैं रांधते।
सुमिरन बिना बेज़ार होकर तन पे सांटी मारते।
कहते निछावर शाह कूटि के खून तन का गारते।४।

सुमिरन बिना खिसियाय नेकौं बोलते गहि कूटते।
कहते निछावर शाह जैसे गीध शव पर जूटते।
सुमिरन बिना हैं दिक्क पीवैं खून खावैं मास को।
कहते निछावर शाह वहँ पर को तुम्हारी आस को।८।

(३)

पदः- पतोहू दशरथ की बड़ी नीकी।
संग दमाद जनक के सोहैं जलन जाय लखि जी की।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो मन तब कवहूँ न डीकी।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय खाव सुहारी घी की।४।
ऐसा स्वाद बताय सकौ क्या होय न कबहूँ फीकी।
अमृत पिओ सुनो घट बाजा सुर मुनि प्रेम में बीकी।
कमल चक्र शिव शक्ती जागै जैसे चट कोइ छींकी।
अन्त त्यागि तन निज पुर राजौ छूटै सारी टीकी।८।

(४)

पदः- लीजै राम नाम का छाता।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो तब हत्थे में आता।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि हर शै से भन्नाता।
नागिन जगै चक्र षट बेधैं सातौं कमल फुलाता।४।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख में मुसक्याता।
अमृत पिओ सुनो घट अनहद सुर मुनि उर में लाता।
उड़ै तरंग मस्त हो तन मन मुख से बोल न आता।
कहैं निछावर शाह त्यागि तन चलि घर बैठक पाता।८।

४६१ ।। श्री चतुर शाह जी ।।

दोहाः- पक्षी ऐसा एक है, जा के हाड़ न मास।
उड़त लखत कोई नहीं, रहे आस ही पास।
केसन के बस्तर बनै ओढ़ै तौन हुलास।
कवि कोविद औ सुर मुनी, पावैं वा को मास।

सोरठाः- जीव न मारै कोय, मरा मांस लावै नहीं।
गुनी जानिये सोय, बिना मांस आवै नहीं।।

दोहाः- चातुरता या में भरी, समुझै चतुर सुजान।
चतुर शाह कह भजन बिन, मिलै न पद निरवान।।

४६२ ।। श्री प्रेमी शाह जी ।।

पदः- भगवान के भक्त जौन प्रेमी उनका तन मन खुद बनि जाते।
वै हर दम हरि के संग रहैं औ खेल करैं खुब बतलाते।
ध्वनि ध्यान प्रकाश समाधी हो शुभ अशुभ कर्म सब जरि जाते।
अमृत पीवै घट साज सुनै सुर मुनि आवैं हरि यश गाते।४।
नागिन जागै सब चक्र सुधैं सब कमल खिलैं खुशबू पाते।
कोइ दीन भिखारी आय जाय जप भेद उसे हैं सिखलाते।
प्रेमी कहैं अन्त चलैं निजपुर फिर गर्भ बास में नहिं आते।
यह मारग सूरति शब्द का है सतगुरु किरपा निधि बतलाते।८।

४६३ ।। श्री पं. पलक निधि तिवारी जी ।।

पदः- सतगुरु करो हर दम लखो सन्मुख में अदभुत है झलक।
महिजा कहौ चहे भूमिजा रघुबंश मणि रघुकुल तिलक।
बन्द होवैं नैन रसना, कर न हिलने दो हलक।
ध्यान धुनि परकाश लय में जाव मिलि मरतै पलक।
कह पलक निधि तन छोड़ि निज पुर बास लो छूटै गलक।
सुमिरन बिना अनमोल तन दोनो तरफ़ होवै तलक।६।

४६४ ।। श्री पथिक दास जी ।।

पदः- मन चोर चोरन संघ है उसको छुड़ाना चाहिये।
सतगुरु से सुमिरन जान कर संघ में भिड़ाना चाहिये।
धुनि ध्यान तेज समाधि में सुधि बुधि भुलाना चाहिये।
सुर मुनि मिलैं अनहद सुनै अमृत को पाना चाहिये।
नागिन जगै चक्कर चलैं कमलन खिलाना चाहिये।
कहता पथिक निज धाम को चढ़ि यान जाना चाहिये।

४६५ ।। श्री भूलन शाह जी ।।

पदः- भूलन शाह भूलि नहिं सकते। रज तम अन्न कि ओर न तकते।
सूरति को लै सब्द में ठंसते। सारे चोर शांति नहिं खंसते।
गगन ते अमृत झरता चखते। कर्म शुभाशुभ लै में जरते।
सुनत नाम धुनि रूप को लखते। अन्त छोड़ि तन निज पुर बसते।८।

(२)

पदः- शुभ कामन में मन नहिं लागै ते निकाम नर नारी जी।
भूलन शाह कहैं जम पीटैं दै दै भोंडी गारी जी।
किरचिल के किरचिल हैं होते धिक धिक पितु महतारी जी।
मरैं नर्क में पड़ैं जाय के जहँ हर दम दुख भारी जी।४।

पदः- जम गण खोंटी गारी देते। कर जोरैं रोवैं सुनि लेते।।
सतगुरु करि के जे हैं चेते। भूलन कहैं सुखी भे तेते।।

(३)

पदः- कच्ची जवाँ न बोलो नर तन मिला अमोलो।
मन नाम धुनि में धोलो निज नैन कान खोलो।।
फूटै भरम फफोलो जियतै में सुख में सोलो।
भूलन कहैं जगौलो संसार में न डोलो।४।

(४)

पदः- भूल भुलैया में मति भूलौ भूलन शाह कहैं सच बात।
अन्त समै पछितैहौ हर दम जम दें घूँसा लात।
नाते दार मित्र पुर के जन रोवैं माता तात।
बाँधि नर्क में तुमको डारैं कौन बचावन जात।४।

(५)

पदः- सच्चा ज्ञान कहैं बड़ भागी।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जाना तन मन प्रेम में पागी।
अनहद सुनै पियै घट अमृत सुर मुनि कह अनुरागी।
कमल खिलें सब चक्र घूमते कुँडलिनी है जागी।
ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि रूप सामने तागी।
भूलन कहैं अंत निज पुर हो छूटी भव की आगी।६।

(६)

पदः- पढ़ि सुनि ज्ञान कथैं पाखंडी।
प्राण बिहीन ज्ञान अनुभव बिन जैसे गीली कंडी।
सतगुरु बिन कोइ भेद न जानै पकड़ि जकड़ि ले रंडी।
भूलन कहैं अंत तन तजि के पड़िहै नर्क कि मंडी।४।

दोहाः- कागद की किस्ती कभी जल में देत न काम।
भूलन साँचे भजन बिन मिलत न ठीक मुकाम।
माटी की हंडी पकी फूटि गई बेकाम।
भूलन हरि के भजन बिन मिलत नहीं आराम।
काठे का बरतन नहीं देत आगि में काम।
भूलन आतम लखे बिन मिलत नहीं बिश्राम।६।

४६६ ।। अनन्त श्री स्वामी सतगुरु नागा श्री राम दास जी महाराज के बचनामृत उपदेश ।।

दोहाः- पद दोहा औ सोरठा, चौपाई लै रीति।
राम दास नागा कहैं, पढ़ैं सुनै कर प्रीति।।
रेफ़ बिन्दु में मन रमा, जो सबका है प्राण।
राम दास नागा कहैं, सतगुरु से लो जान।।
सब में सब से विलग है, घट में हेरैं सन्त।
राम दास नागा कहैं, बने रूप भगवन्त।।
मन इन्द्री वश में करे, बल शक्ती बढ़ि जाय।
राम दास नागा कहैं, सब में हरि दरशाय।।
सतगुरु के बेधै नहीं, सारे शिष्यन पाप।
राम दास नागा कहैं, गहै नाम की छाप।५।

भोजन जल औ नींद को, साधक देय भुलाय।
राम दास नागा कहैं, राम मिलैं उर लाय।।
आशिरबाद औ श्राप से, साधक जब अलगाय।
राम दास नागा कहैं, प्रभु लें गोद उठाय।।
शंका लघुशंका भई, राम नाम को जान।
राम दास नागा कहैं सुमिरन सब सुख खान।।
बच्चा सच्चा है वही, गच्चा कबहूँ न खाय।
राम दास नागा कहैं, हरि के संग दुलराय।।
साधक सच्चा है वही, भजन करै ह्वै शान्ति।
राम दास नागा कहैं, छूटि जाय सब भ्राँति।१०।

जब तक हरि पर नहिं करै, तन मन धन कुर्बान।
राम दास नागा कहैं, तब ही तक अग्यान।।

साधक सो है जानिये, निज को समझे नीच।
राम दास नागा कहैं, बसे अमरपुर बीच।।
स्तुति में होवे मगन, साधक चकना चूर।
राम दास नागा कहैं, रहै राम से दूर।।
एकै ध्यान से ध्यान सब, एकै नाम से नाम।
एकै तान से तान सब, एकै धाम से धाम।।
राम दास नागा कहैं, सतगुरु बचन जे मान।
तिनके दोनों दिशि बने, अनुभव करि हम जान।१५।

निराकार भगवान हैं, भगतन हित तन धार।
सुर मुनि जिनको भजत हैं, सब में सब से न्यार।।
राम दास नागा कहैं, नर तन है अनमोल।
हरि सुमिरन जे नहिं करैं, अन्त में निकली पोल।।
एक एक चींटी भई, अगणित बार सुरेश।
राम दास नागा कहैं, वरणि सकैं नहिं शेष।।
राम आपने खेल को, आपै जानन हार।
राम दास नागा कहैं, भजन करौ निशिवार।।
विद्या पढ़ना जब फलै, जाय अविद्या छूटि।
राम दास नागा कहैं, यही डारती कूटि।२०।

जब तक हत्थे में नहीं, तब तक चक्कर खाय।
राम दास नागा कहैं, मिलै न ऐसा दांव।।
राम दास नागा कहैं, सतगुरु के ढिग जाव।
सबै पदारथ पास हैं, तन मन प्रेम से ताव।।
सारी पृथ्वी घूमिया, अन्तर ध्यान की चाल।
राम दास नागा कहैं, राम नाम तन ढाल।।
जाको जा पर भाव जस, ताको तस फल होय।
राम दास नागा कहैं, शेष सकत नहिं गोय।।
भाव के वश भगवान औ, सारे सुर मुनि सन्त।
राम दास नागा कहैं, भाव का आदि न अन्त।२५।

प्रेम भाव भगवान हैं, जब बिलगावै दोय।
राम दास नागा कहैं, तब जानै कोइ कोय।।

राम दास नागा कहैं, होय भक्त सो पास।
दया धर्म छोड़ै नहीं, जब तक तन में स्वांस।।
पढ़ब लिखव औ सुनव सब, मत्थे का है ग्यान।
राम दास नागा कहैं, पकड़ै शान औ मान।।
सीना मस्तक सम करौ हृदय हाट की सैर।
राम दास नागा कहैं, बनि जावौ निर्वैर।।
सुमिरन बिन छूटै नहीं, भव सागर की पैर।
राम दास नागा कहैं, बचन गुनो हो खैर।३०।

पढ़ि सुनि कर साधक बनै, जानि न पायो राह।
राम दास नागा कहैं, पड़िहैं नरक अथाह।।
भक्त औ भगवान का, तन मन एकै जान।
राम दास नागा कहैं, सतगुरु बचन प्रमान।।
चुपकै छिपकै भजन करि, जियति लेव सब जान।
राम दास नागा कहैं, तब होवै कल्यान।।
सतगुरु बचन में प्रीति नहिं, भजन करत बेकार।
राम दास नागा कहैं जैहैं नरक मझार।।
किसी की सरबरि मत करौ, नाम से राखौ प्रेम।
राम दास नागा कहैं, यही भक्त का नेम।३५।।

अजर अमर वे सन्त हैं, जिन पायो हरि नाम।
राम दास नागा कहैं, सुफ़ल भयो नर चाम।।
अणू अणू में रमि रहे, राम राम के दास।
राम दास नागा कहैं, सतगुरु करि हो पास।।
भगतन की लीला अकथ, को करि सकै बखान।
राम दास नागा कहैं, शारद शेष चुपान।।
व्यंग बचन सबके सहै, लगै न नेकौं चोट।
राम दास नागा कहैं, सो जानो हरि ओट।।
पूरण किरपा होय जब, साधक होवै सिद्ध।
राम दास नागा कहैं, गुनै नहीं ते गिद्ध।।४०।

निंद्या मल को धोय ले, स्तुति मल ले लादि।
राम दास नागा कहैं, साधक हो बरबाद।।

राम दास नागा कहैं, झूठे बनो न भक्त।
हरि सब कुछ देखैं सुनैं, सारे जग हर वक्त।।
राम दास नागा कहैं, मातु पिता परिवार।
भजन करौ तरि जांय सब, सुर मुनि वेद पुकार।।
राम दास नागा कहैं, सांचा है दरबार।
पहुँचै साधक जब वहां, भजन करै एक तार।।
निंद्या स्तुति से भरा, यह सारा संसार।
राम दास नागा कहैं, भजन करैं सो पार।४५।

राम दास नागा कहैं, निन्दा है बड़ पाप।
जो करिहै सो भोगिहै, बैरी बनो न आप।।
निन्दा करने हार को मिलता आधा पाप।
राम दास नागा कहैं, तपिहै तीनो ताप।।
आँखिन देखी मानना, कानन सुनी न मान।
राम दास नागा कहैं, तबहूँ धरो न ध्यान।।
पढ़ि सुनि कर चेला करैं, बाधा पकड़ै धाय।
राम दास नागा कहैं, नीचे देय गिराय।।
मन तो थिर थिर नाचता, देत फिरत व्याख्यान।
राम दास नागा कहैं, अन्त गहैं यम कान।५०।

सतगुरु बनि चेला करत, जानि न पायो ठौर।
राम दास नागा कहैं, होंय काल का कौर।।
नेम टेम को छोड़ कै, साधक होवै क्रूर।
राम दास नागा कहैं, माया झोंकै धूर।।
जग की ऐश आराम को, साधक तजै सो सूर।
राम दास नागा कहैं, पकड़ सकै नहिं हूर।।
लुच्चा चहुँ दिश घेर के, गुच्चा रहे लगाय।
राम दास नागा कहैं, टुच्चा दिहिन बनाय।।
मौत और भगवान पर, हर दम राखै ख्याल।
राम दास नागा कहैं, सो होवै मतवाल।५५।

जल भोजन हलका करे, साधक सो बन जाय।
राम दास नागा कहैं, शुद्ध धान्य सुख दाय।।

साधक बहुत न बोलही, बहुत चलै नहिं चाल।
राम दास नागा कहैं, नाम पै राखै ख्याल।।
निज तन ते दुख किसी को, साधक देवै नाँहि।
राम दास नागा कहैं, जियतै भव तरि जाँहि।।
साधक सबके कटु बचन, सहै करै नहिं क्रोध।
राम दास नागा कहैं, तब हो पूरा बोध।।
साधक सच्चा है वही, निज को समुझै खाक।
राम दास नागा कहैं, तब होवै वह पाक।६०।

साधक को मारै कोई, वाके जोरे हाथ।
राम दास नागा कहैं, हरि परसैं कर माथ।।
साधक पर कसनी परै नेकहु नहिं घबराय।
राम दास नागा कहैं, आगे बढ़ता जाय।।
जग में जितने दास भे, सेवा के बल जान।
राम दास नागा कहैं, यही ठीक परमान।।
सतगुरु थोड़े जगत में, शिष्यउ थोड़े जान।
राम दास नागा कहैं, सत्य बचन मम मान।।
मन काबू कीन्हे बिना, तीर्थ गये का होय।
राम दास नागा कहैं, रही बासना रोय।६५।

सब मन की नारी बनीं, कहँ लग पूरैं आस।
राम दास नागा कहैं, फँसि भा सत्यानाश।।
साधक नाम के संग रहै, साधक संग रहैं राम।
राम दास नागा कहैं, जियत होंय निष्काम।।
बिन्दू सीता जी भई, रेफ़ राम जी जान।
राम दास नागा कहैं, जो सर्वत्र समान।।
राम राम के दास के, बांचे सुनै चरित्र।
राम दास नागा कहैं, सो होय जाय पवित्र।।
परमारथ परस्वार्थ में, तन मन देय लगाय।
राम दास नागा कहैं, मौनी तौन कहाय।७०।

तरुण अवस्था होय जो, साधक रहै अकेल।
राम दास नागा कहैं, माया लेत सकेल।।

तन से शुभ कारज करे, मन से सुमिरे नाम।
राम दास नागा कहैं, जावें हरि के धाम।।
राम दास नागा कहैं, बहुत हमारे अंश।
जग में आये आइहैं, करिहैं दुःख बिध्वन्स।।
अनुभव बिन जाने नहीं, रहे दिमाग़ लड़ाय।
राम दास नागा कहैं, बार बार चकराय।।
दूध दही घृत मधु अमी, सागर भरे समाम।
राम दास नागा कहैं, पावें भक्त महान।७५।

गूंगे अन्धे औ बहिर, भक्त होंय जो कोय।
राम दास नागा कहैं, पहुँच सकै वहँ सोय।।
पंगुल बनि कछु दिन करै, एकै ठौर मुकाम।
राम दास नागा कहैं, पावै साधक नाम।।
लौ लागै जब नाम ते, भागै चोरन फ़ौज।
राम दास नागा कहैं, तब हो पूरी मौज।।
साधक होय उपदेश ते, करते गान बजान।
राम दास नागा कहैं, ठगते नहीं ठगान।।
सेवा सुमिरन कीरतन, पूजन कथा औ पाठ।
राम दास नागा कहैं, हरि मिलने के ठाठ।८०।

जा को जा से प्रेम हो, सो तामें लग जाय।
राम दास नागा कहैं, तब डिगरी ह्वै जाय।।
सब देवन को सिद्ध है, राम नाम हम जान।
राम दास नागा कहैं, एक को लीजै मान।।
सब तुमको तब जांय मिलि, बोलैं जै जै कार।
राम दास नागा कहैं, आय करैं नित प्यार।।
जा के मन में भरम है, कौन बड़ा को छोट।
राम दास नागा कहैं, पावै जमन की चोट।।
भगतन के कल्याण हित, रूप बहुत हरि केर।
राम दास नागा कहैं, या में कछू न फेर।८५।

निज में सब सृष्टी लखै, सब में निज को मान।
राम दास नागा कहैं, मुक्त भक्त सो जान।।

रसना कर हालै नहीं, सूरत शब्द समान।
राम दास नागा कहैं, अजपा यही महान।।
चारों द्वारा खोल दे, मोक्षन के यह जाय।
राम दास नागा कहैं, निरभय दे पहुँचाय।।
सतगुरु बिन नहिं मिल सकै, रेफ़ बिन्दु का खेल।
राम दास नागा कहैं, यह सिद्धान्त अपेल।।
साधक बैठे ध्यान में, पावै तब सतसंग।
राम दास नागा कहैं, सुर मुनि प्रभु के संग।९०।

हरि को यश सब भाषते, होत नहीं स्वर भंग।
राम दास नागा कहैं, तन मन भरा उमंग।।
इस बिधि को जो जानिले, होवे जियते चंग।
राम दास नागा कहैं, चोर करैं नहिं तंग।।
रहनि गहनि औ सहनि को, साधक ले उर धार।
राम दास नागा कहैं, जियत होय भव पार।९५।

सोरठाः- समय स्वांस तन पाय, राम नाम को जानि ले।
अन्त में निजपुर जाय, सत्य बचन मम मानि ले।।
राम के भक्त अनेक, भजन एक बिरती फरक।
मन को तन में छेंक, भजन करौ छोड़ो तरक।।
प्रभु हैं दीन दयाल, दीन बनो सब जानि लो।
तजि के सबै बवाल, सतगुरु बचन को मानि लो।।
करवावैं भगवान जो लीला जिस भक्त से।
को करि सकै बखान, राम दास नागा कहैं।४।

भीतर बाहर एक, राम दास नागा कहैं।
फरक पड़ै नहिं नेक, हरि हर दम वाको चहैं।।
राम नाम तप बित्त, चित्त चेत के लूटिये।
उत्तब बने व इत्त, राम दास नागा भनैं।।
चन्द रोज की बात, राम दास नागा कहैं।
नाम प्रेम से कात, चलौ राम के पुर रहैं।७।

चौपाईः- निरगुण निराकार भगवाना। भक्तन हित सरगुण बनि आना।।
जोगी जन अनुभव करि जाना। र रंकार ते सब फरिआना।।
पढ़ि सुनि के जो करत बखाना। तिनको जानो वाक्य क ज्ञाना।।
मत्थे से हत्थे में आना। तब भक्तों होवे कल्याना।।
सतगुरु किहे बिना दुख नाना। राम नाम अनमोल महाना।।
कोटिन में कोइ या को जाना। बनिगो मस्त न गस्त लगाना।६।

सत्य प्रेम का बांधो बाना। नागा राम दास मन माना।
सतगुरु करौ भेद तब पावौ। जियतै महा सुखी ह्वै जावौ।।
सूरति शब्द पै अपनी लावो। बैठि उनमनी ध्यान लगावो।।
नाभि नासिका एक मिलावो। चढ़ि के गगन परम पद पावो।।
प्रेम भाव विश्वास बढ़ावो। निरगुण सरगुण भेद मिटावो।।
जियते बिजय पत्र जब पावौ। तब निज कुल की रीति पै आवौ।।
सब में रूप तेज लखि पावौ। नागा राम दास गुण गावो।१३।

पदः- रमाई जो छिमा नारी, वही सन्तोष को पाई।
कहैं नागा जियत जागा, राम का दास कहवाई।
ध्यान धुनि नूर लै होवै, जहां सुधि बुधि को बिसराई।
हर समय राम सीता की, छटा छबि सामने छाई।४।

मिलें सुर मुनि बिहंसि करके, कहैं हरि यश को नित गाई।
पिये अमृत सुनत अनहद, बजै एक तार सुखदाई।
उठै नागिन फिरैं चक्कर, खिलैं सब कमल फर्राई।
अन्त तन त्यागि निज पुर को, चलै फिर जग न चकराई।८।

(२)

पदः- नागा राम दास कहैं भक्तों, सुनिये राम नाम की तान।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो, खुलि जांय आंखी कान।।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय, जहां सुधि बुधि बिसरान।
सिया राम की झाँकी हर दम, सन्मुख में ठहरान।।
नागिन जगै चक्र षट बेधैं, सातों कमल फुलान।
अमृत पियो सुनो घट अनहद, सुर मुनि संग बतलान।।
अन्त त्यागि तन निज पुर राजो, आवागमन नसान।

पढ़ै सुनै औ गुनै जौन कोई, ता को हो कल्यान।।
सहज समाधि यही है जानो, सुर मुनि कियो बखान।
भांति भांति की उड़ैं सुगन्धैं, आनन्द करै उफ़ान।५।

नैनन ते शीतल जल जारी, रोम रोम पुलकान।
गद गद कंठ बोल नहिं फूटैं, प्रेम में डूबो ग्यान।।
इड़ा पिंगला एक होंय तब, सुखमन नाड़ी जान।
सुखमन नाड़ी रहत चित्रणीं, तामें बज्रणीं मान।।
वाके भीतर ब्रह्म नाड़ि है, जा में तेज महान।
सुकुल धुवां सम भाषत जानो, र रंकार भन्नान।।
मान बड़ाई त्यागि के भक्तों, बनि जावो मस्तान।
शान्ति दीनता की गोदी में, करो सदा कुच पान।।
छिमा नारि संग ही संग डोलै, पल भरि नहिं अलगान।
नेक हटै तो माया गटकै, ले बोलाय शैतान।१०।

जब सन्तोष पुत्र हो पैदा, मुद मंगल विज्ञान।
पांच तत्व औ पांचौ मुद्रा, सोधि होहु पहलवान।।
पांच ब्रह्म पांचो देविन संग, करत नाम निज गान।
मन गुण प्राण जीव औ आतम, नागिन संग लै प्रभु में जान।।
सब लोकन से तार है जारी, नीक बेकार बयान।
नाना लीला सन्मुख होवै, निरखैं भक्त महान।१३।

(३)

पदः- जब तक नैन श्रवन नहिं खुलते तब तक किसी को मत उपदेश।
नागा राम दास कहैं भक्तों मिले न अपना देश।।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो दीन बनो हो पेश।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि निरखौ रूप हमेश।।
सुर मुनि आय आय दें आशिष चन्दन मस्तक लेश।
अनहद सुनो पिओ घट अमृत सुफ़ल होंय नर भेष।।
जियतै मुक्ति भक्ति अब मिलगै रह्यो न बाकी रेश।
निरभय औ निरबैर गयो होय चलै न एकौ केश।।
काम क्रोध मद लोभ मोह औ माया सकै न गेश।
अन्त त्यागि तन निज पुर बैठो छूटी भव की ठेश।५।

(४)

पदः- यह भजन अति बारीक है, सब से सुलभ औ ठीक है।
गुरु वाक्य पत्थर लीक है, मानै न सो जग फीक है।।
पढ़ि सुनि बकै सो पीक है, चलि नरक हर दम कीक है।
जानै जियत सो नीक है, छूटी गरभ की हीक है।।
दोनों जहां सिर टीक है, वाके लिये सब सींक है।
नागा कहैं दुख छींक है, जो नाम धन पर बीक है।३।

(५)

पदः- परम पुनीत रकार मकार है, तन मन प्रेम से सुमिरन कीजै।
राम दास नागा कहैं भक्तों, सतगुरु से जप की विधि लीजै।।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय, सन्मुख राम सिया को कीजै।
अमृत पिओ सुनो घट अनहद, सुर मुनि संग नित खेल करीजै।।
कमल चक्र शिव शक्ती जागैं, सब लोकन में फेरी दीजै।
अन्त त्यागि तन चढ़ि सिंहासन, चढ़ि साकेत में बैठक लीजै।३।

(६)

पदः- निरभय पद राम भजन से हो, निरभय पद।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो, बैठो ठीक जतन से हो निरभय पद।१।
सतो गुणी भोजन औ बस्तर, तब बचि जावो पतन से हो निरभय पद।
राम दास नागा कहैं भगतों, जियते मेल वतन से हो निरभय पद।२।

(७)

पदः- अजपा जाप अलेख अकथ औ, अगम अपार अकह जानो।
राम दास नागा कहैं भक्तों, सतगुरु करिके सुख मानो।।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि, रूप सामने में तानो।
अन्त त्यागि तन निज पुर बैठो, छूटै जग को चकरानो।४।

(८)

पदः- साधक नाम से नेह लगावै।
गर्भ में कीन करार जौन है सो जियतै दिखलावै।।
सतगुरु से सुमिरन बिधि जानै, बैठि एकान्त में ध्यावै।

ध्यान धुनी परकाश समाधी, बिधि कर लेख मिटावै।।
सिया राम की झाँकी सन्मुख, हर दम वाके छावै।
अमृत पिये सुनै घट अनहद, सुर मुनि गहि उर लावै।।
नागिन जगै चक्र षट नाचैं, सातों कमल खिलावै।
उड़ै तरंग रोम सब पुलकैं, मुख से बोल न आवै।।
तुरिया तीत दशा यह जानो, सहज समाधि कहावै।
राम दास नागा कहैं तन तजि, चढ़ि विमान घर जावै।५।

(९)

पदः- पहले शंकर भजन बतायो फेरि वही बजरंग।
तिसरी बार गुरु नानक जी लीन उठाय उछंग।।
आँखी कान गये खुलि भक्तों तन मन भरा उमंग।
अमृत छकौं बजैं घट बाजा सुर मुनि रहते संग।।
सिया राम की झाँकी सन्मुख अदभुत शोभा ढंग।
ध्यान धुनी परकाश दशालय जहां रूप नहिं रंग।।
नागिन जगै चक्र सब घूमैं कमलन उड़ै तरंग।
अन्त त्यागि तन निज पुर पहुँचै गर्भ बास भा भंग।।
राम दास नागा कहैं भक्तों भीतर बाहर नंग।
निरभय औ निरबैर वही है जीति गयो जग जंग।५।

पदः- शंकर राम नाम के ज्ञाता।
बिधि के लिखे कुअंक मिटावत ऐसे हैं प्रभु दाता।
चारि पदारथ बांटन हारे राम सिया के ताता।
कर त्रिसूल भक्तन संग रहते, नागा सत्य सुनाता।

दोहाः- सेवा हित सिय राम की धरो रूप हनुमान।
नागा कह सुर मुनि जिन्हें मानत प्राण समान।
भक्तन की रक्षा करें गदा लिये रहें संग।
नागा कह सुमिरन करो बिघ्न न व्यापे अंग।।

४६७ ।। परम पूज्य बाबा नागा राम दास जी महाराज कृत श्री हनुमानाष्टक प्रारम्भ ।।

बन्दौं हनुमन्त जेहि ज्ञान बल अन्त नाहिं,
रुद्र अवतार सरदार बीर वंका है।

पवन के पूत मजबूत हर बातन में,
राम जी के दूत जिन्ह फूँक दीन्ह लंका है।।
भूत प्रेत भंजन सुर सन्त भक्त रंजन कपि,
बाजै बल नाम ज्ञान तीन लोक डंका है।
ऐसे हनुमन्त सन्त दीजै भगवन्त भक्ति,
नागा बलवन्त कीश हरन हार शंका है।१।

(२)

अंजनी कुमार हेम भूधरा समान देह,
रुद्र अवतार सोच संकट निकन्दना।
प्रबल प्रचण्ड रूप महाबीर नाम सुनि,
भूत भागि जात छूटि जात भ्रम फंदना।।
दुष्ट को दलन बीर धीर गदा बज्र धर,
साधु संत हेतु मानो शीतल सो चन्दना।
ऐसो हनुमन्त भगवन्त के सपूत दूत,
हूजिये दयालु नागा दास करैं बन्दना।२।

(३)

मरकटाधीश हनुमान को नाम सुनि,
भूत बैताल सब सोच भागैं।
बीर बजरंग जब गदा और बज्र धर,
लाल लाल नैन कसै पीत पागै।।
कमर लंगोट कसि ताल को ठोंक जब,
बीर बजरंग सों कौन लागै।
जै महावीर कर जोर नागा खड़े,
देहु हरि भक्ति क्या और मांगै।३।

(४)

जहँ मारुत नंदन आप बसैं नित,
राम जन्म की भूमि अवध पुर माँही।
जिनके हिये में धनुबाण लिये,
सिय राम बसैं दिन रैन सदाहीं।।

दोऊ हाथ में बज्र गदा धरि कै,
खल नाश करैं जन लेत बचाहीं।
कहैं दास नगा धन बांके बली,
हनुमान गढ़ी सों गढ़ी कहुँ नाहीं।४।

(५)

शीश पै टोपी लंगोट कसै कटि,
कानन में दुहुँ कुंडल छाजै।
भाल बिशाल जनेऊ गले शुभ,
लोचन मस्तक चन्दन राजै।।
दोउ हाथन बज्र गदा झमकै छवि,
देखत ही दुख दारिद भाजै।
कहैं दास नगा धन बांके बली,
निजनाम गढ़ी मँह बीर बिराजैं।५।

(६)

बजरंग बली अस ना चहिये,
तुम्हरे आछत दुख पावत हौं।
धन धाम कुटुम्ब छुड़ाय दियो,
सब के दरबार फिरावत हौ।।
कोऊ देखि हंसै कोऊ गारी बकै,
सब के मुख थोपि खिलावत हौ।
जब दास नगा के सहायक हौ,
तब काहे न आश पुरावत हौ।६।

(७)

जब भीत गिरे से बचाय लियो,
तब दुष्ट से क्यों न बचावत हौ।
महमारिक रोग निरोग कियो,
खल रोग से क्यों न छुड़ावत हौ।।
जब संकट मोचन नाम सही,
तब क्यों मोहिं कष्ट सहावत हौ।

जब दास नगा के सहायक हो,
तब काहे न आश पुरावत हौ।७।

(८)

हे पवन तनय गुण गावत हौं,
चित दै के कृपा करिये हनुमाना।
दूसर कौन बखान सकै गुण,
राम लला जब आप बखाना।।
भूत पिशाच नगीच न आवत,
जो सुमिरे दुख दूर पराना।
कहैं दास नगा धनि बांके बली,
अब मो पर होहु दयालु सुजाना।८।

दोहाः- यह अष्टक हनुमान की, पढ़ै सुनै जो कोय।
नागा सुख सम्पति लहै, युग युग हरिजन होय।।

।। इति शुभम।।

४६८ ।। श्री पलटू साहब जी ।।

दोहाः- पलटू उधर को पलटिगे उधर इधर भा एक।
सतगुरु से सुमिरन सिखै फरक परै नहिं नेक।१।

चौपाईः- फरक परै नहिं नेक शब्द पै सूरति दीन्हे।
ध्यान धुनी परकास दसा लै रूप को चीन्हे।
सुर मुनि आशिष देंय भये निज कुल परवीने।
पलटू कह तन त्यागि अचलपुर बासा लीन्हे।४।

दोहाः- आपै आप को जानते आपै का सब खेल।
पलटू सतगुरु के बिना ब्रह्म से होय न मेल।१।

चौपाईः- ब्रह्म से होय न मेल कथैं संतन की बानी।
लोग कहैं है सिद्ध राह निज पुर की जानी।२।
जग में खातिर होत अंत में हो हैरानी।
पलटू सतगुरु शरनि बिना अंधे अज्ञानी।३।

चौपाईः- जीवन मुक्त जियति सब जाना। तब हो भक्त रूप भगवाना।।
सतगुरु का प्रथमै करि ध्याना। तब घट भीतर घुस के छाना।।
जो कोइ भजन कि बिधि को जाना। वा से यह सब बात बताना।
शुद्ध धान्य है भजन खजाना। पलटू कह साधक हो दाना।४।

४६९ ।। श्री अन्धे शाह जी महाराज ।।

मुकाम सीता मढ़ी, ज़िला मुज़फ़्फ़रपुर, के बचनामृत उपदेश

।। जीवनी ।।

दोहाः- सिद्धि सदन गणनाय कै बार बार शिर नाय।
अन्धे कह जो हम कहैं सुनिये तन मन लाय।

चौपाईः- जन्म का अन्धा औ अज्ञानी। पढ़ना लिखना केहि बिधि जानी।।
सीता मढ़ी मोर स्थाना। कोइ कहै तुर्क कोई मुसलमाना।।
धुनिया जाति कोइ कहै बेहना। अलग अलग सब जाति क कहना।।
बारह वर्ष बयस जब भयऊ। मात पिता स्वर्ग चलि गयऊ।।
इधर उधर मांगैं औ खावैं। हमें अभागी सब बतलावैं।५।

कोइ कोइ हमको धक्का देवैं। गिरैं उठैं बैठैं दुख सेवैं।।
लागै चोट रुधिर तन आवै। कोई दयावान लखि धावै।।
पोंछै रुधिर देय नहवाई। चोट में देवै तेल लगाई।।
कोइ कोइ नये वस्त्र पहिरावै। कोई छोरि क लै भगि जावै।।
फटे पुराने कोई लावै। पहिरै जाड़ लगै कपि जावै।१०।

या बिधि गुजर करैं दिन काटैं। बहुतेरे निरखैं औ डाटैं।।
संस्कार थे ठीक हमारे। कबहुँ कुपन्थ नहीं पग धारे।।
शान्त दीन ह्वै सब सह लीन्हा। समय पाय प्रभु दाया कीन्हा।।
हर हनुमान से बिनती कीन्हा। राम नाम दोउ स्वामी दीन्हा।।
कछु दिन सुमिरेन हम मन लाई। शिव बजरंग प्रगट भे आई।१५।

सिया मातु से दीन्ह मिलाई। माँगेन जौन तौन दियो माई।।
या बिधि अन्ध सुखी भा भाई। सो सब आप को दीन्ह बताई।।
भजन करै तन मन हरषाई। वाकी सब दिशि भली भलाई।१८।

।। श्री अन्धे शाह जी महाराज ।।

द्वारा लिखित

बिनय श्री आदि शक्ति श्री सीता जी की

पदः- जै राम रानी सुर मुनि बखानी है तेरी महिमा अपार माता।
करो अब दाया निर्मल हो काया सुनो यह मेरी पुकार माता।
जनम का अन्धा न कोई धन्धा जगत में बन्धा निशार माता।
पढ़ा नहीं कछु लढ़ा नहीं कछु गढ़ा नहीं कछु गंवार माता।
यह चोर सारे बड़े करारे हमेशा करते शिकार माता।

है मन यह पाजी उन्हीं से राजी भरा है इसके अहंकार माता।
करे जो नेकी उसी को छेकी यह टेक टेकी बघार माता।
यह पाप गठ्ठा बड़ा है कठ्ठा लगा के चठ्ठा उतार माता।
जगत की बातें न फिर हम कातें यह सब है कूड़ा कबाड़ माता।
यही बकातीं सदा नचातीं बड़ा है इनमें गुबार माता।

बिना भजन के जगत में भिनके है उनका जीना धिक्कार माता।
यह तन के द्वारे नओ निहारे भरा है इनमें बिकार माता।
कहीं से मल और मूत्र जारी कहीं से जारी है लार माता।
यह अर्ज मेरी करो न देरी मैं तो हूँ तेरा कुमार माता।
दे दिब्य लोचन भव ताप मोचन भक्ती का रोचन लिलार माता।

अजर अमर तन बारह बरस बन न शीत ऊषन उदार माता।
न कोई आशा न भूख प्यासा सदा हुलासा संवार माता।
बतादे सन्तर चलूँ निरन्तर परे न अन्तर एक तार माता।
रहे षट झाँकी सन्मुख में बांकी हमेशा टांकी दिदार माता।
कबि कोबिद ज़ानी औ जोगी ध्यानी है तेरा अद्भुद दरबार माता।

जिस हेतु आवे वही सो पावे अटूट तेरा भंडार माता।
दया की सानी तिहारी बानी न जिसने जानी भा ख्वार माता।
अनन्त बिनती करे को गिनती खुद आप सुनती निहार माता।
जो नेमी टेमी भये हैं प्रेमी उन्हीं को यह सब सुतार माता।
थपक थपक कर दे पीठ ऊपर उठा के गोदी बिठार माता।

रहूँ न कच्चा बनूँ मैं सच्चा कहाऊँ बच्चा तुम्हार माता।
खिला ले हंसि हंसि लगा के उर में जरा दे ऊपर उलार माता।
निरख निरख के मजे मे दोउ कर लगा दे गालों चुचकार माता।
लिटा के जाघौं प गुद गुदा दे लगूँ मैं करने किलकार माता।
मुख चूम करके पिला दे अमृत यही है सच्चा दुलार माता।३०।

तरंगैं आवें कहीं न जावें तप धन क है यह सिंगार माता।
अन्तर ह्वै जाऊँ सब लोक धाऊँ करे न कोई तिरस्कार माता।
तव जस को गाऊँ सबन सुनाऊँ सकै न कोई तुकार माता।
धुनि नाम लय तेज हो चमा चम लखूँ मैं अद्‌भुत बहार माता।
खरीदूँ सौदा अनमोल घौदा लगी जो घट में बजार माता।३५।

जो दीन आवें उसे बतावें खुल जाँय उसके किंवार माता।
मिलै उन्हैं फल न जिनमें है छल लगै न नेकौं अबार माता।
कुल हीन दुखिया वही है सुखिया भक्तों में मुखिया ज़रदार माता।
अनमोल नर तन समय औ श्वांसा है देवों को भी दुशवार माता।
इसी से बिगरे इसी से सुधरे इसी से डगरे निज द्वार माता।४०।

जे मन के बस में जगत के रस में धरम को डारा बिगार माता।
नरक में फटकें कसा कसी में न कल है पल भर चिक्कार माता।
बिमुख जे तुम से सुखों को तरसें दुखों को भोगें बिखार माता।
जे मित्र यहँ पर वे शत्रु वहँ पर करावें फ़ौरन गिरफ्तार माता।
नर नारि सुनिहैं पढ़ कर के गुनिहैं तभी तो होगा निस्तार माता।
यह अन्धा द्वारे पड़ा तिहारे सदा सहारे सम्हार माता।४६।

दोहाः- सब इन्द्री तुम्हरी वहाँ नर तन लेवें धार।
जो कछु तुम यहँ पर कियो भाखें नीक बिकार।।
एव मस्तु माता कह्यो कारज भयो तुरन्त।
सुर मुनि सब आये तहाँ देर न लागि जुरन्त।।
साज बजावें गान करि पंखा चँवर ढुरन्त।
स्तुति माता की करैं अनुभव शब्द फुरन्त।।
जै जै कार करैं सबै निज निज करन उठाय।
फूलन की बर्षा तहाँ शोभा वरनि न जाय।।

बलिहारी सतगुरु की जिन यह भेद बताय।
अन्धे कह उनके बिना ठीक ठौर को पाय।५।

सब सुर मुनि अन्तर भये चरनन पर धरि शीश।
माता सब के सिरन कर धरि के दीन असीश।।
सीता मढ़ी में मातु मोहिं दियो यही बकसीश।
अन्धे कह सो हम कहा साखी हैं जगदीश।।
पढ़ै सुनै औ गुनै जो लिखै मनहिं हरषाय।
नाम रूप का फल मिलै अन्त में निजपुर जाय।।
अन्धे शाह कहैं मेरा सीता मढ़ी मुकाम।
षट झाँकी सन्मुख रहै एक तार धुनि नाम।९।

।। श्री हनुमान जी की प्रार्थना ।।

(१)

जै बजरंग भक्त हनुमान।
महावीर रणधीर पवन सुत राम दूत गुणवान।
दिब्य सिंगार बनत है देखत शारद शेष लुभान।
अन्धे शाह कहैं कर जोरे दीजै पद निर्बान।४।

(२)

पवन सुत दुख अब मोर हरो।
जो जन भजन करैं प्रभु तेरो तेहि यम काल डरो।
अन्धे शाह कहैं यह बिनती सुनि उर माँहि धरो।
राम नाम का दान देउ मोहिं भव निधि जियत तरौं।४।

(३)

जै श्री राम दूत बलवान।
बज्र अंग बजरंग कहावत मान हनत हनुमान।
शुभग श्रृंगार अंग अंग भूषन कोटिन भानु समान।
अन्धे शाह करैं निशि बासर मंगल मूरति ध्यान।४।

(४)

जय बजरंग सर्ब गुण आगर।
सुर मुनि सब तुम्हरो यश गावैं राम सिया के चाकर।

काल मृत्यु यम गण सब डरते तोरत भव की साँकर।
अन्धे शाह नाम धन माँगें दीजै दोनो आखर।४।

(५)

हे कपिराज देहु बरदाना।
राम नाम में अटल प्रेम हो जियतै भव तरि जाना।
सुर मुनि वेद शास्त्र युग चारों नित या को जप ठाना।
अंधे शाह अपढ़ की बिनती सुनिये प्रभु धरि ध्याना।४।

(६)

हे बजरंग सम्हारो चोरन।
बज्र गदा तुम्हरे कर सोहत दुष्टन के सर फोरन।
मन को संग सहेज गरजते रहि रहि देत हिलोरन।
अंधे शाह करैं यह बिनती चितओ दृगन की कोरन।४।

(७)

संकट मोचन बजरंग सुनो अब मेरी।
प्रभु कृपा दृष्टि कर देहु शरण मैं तेरी।
चहुँ ओर से दुष्टन गुष्ट कीन्ह लियो घेरी।
करते सब एक दम रार भजन की बेरी।
प्रभु पाहि पाहि निज हाथ शीश दो फेरी।
तब होवैंगे यह शान्त बजै मम भेरी।६।
मन संग में निर्भय भजन होय नहिं देरी।
हौ भक्तन के रखवार कहौं मैं टेरी।
यम काल मृत्यु औ माया उनकी चेरी।
जिन पर तुम दाया कीन्ह सकैं नहिं पेरी।
धर लीन्ह खज़ाना तप धन का उन्ह गेरी।
अंधे कहैं तन तजि गये जहाँ सुख ढेरी।१२।

(८)

जय बजरंग गदा कर धारी।
राम सिया की सेवा करते भक्तन की रखवारी।

सिया राम भीतर औ बाहर शब्द सुनत रंकारी।
कथा कीर्तन प्रेम से जहँ हो वँह पहुँचत दै तारी।
सब सुर मुनि हैं आपको मानत ऐसे भक्त हो भारी।
अंधे कहैं तरैं सो प्राणी जाको देहु निहारी।६।

(९)

हे कपीश कीजै अब दाया।
चापलूस हैं पांच जो तन में खुफ़िया मनहिं बनाया।
इस प्रकार तप धन सब हमरा लूट के सबन छिपाया।
नित प्रति आय तगादा करते देव हमार बकाया।
डारि के फाँस गाँस में राखे मानत नहिं सिर नाया।
अंधे कहैं बचावो इन से शरनि आप की आया।६।

(१०)

हे बजरंग कृपा निधि स्वामी।
मन औ चोर दुःख नित देते ऐसे अधम निकामी।
इनको गदा उठाय के मारो, बन्दौं चरन नमामि नमामी।
भक्तन के संकट हो मेंटत अंधे कहैं सबै दिशि नामी।४।

दोहा:- कार कपट का है बुरा हरि से राखे दूर।
अन्धे कह सच्चे बनो पावो नाम का तूर।
प्रेम का दरजा ऊँच है प्रेम अगम दरियाव।
अंधे कह सतगुरु शरण कोइ कोइ प्रेम को पाव।४।

(११)

जै रणधीर बीर हनुमान।
दासन में तब श्रेष्ट कहावत सुर मुनि कीन बखान।
बल अतौल है अंग बज्र का विद्या बुद्धि निधान।
गदा सदा दहिने कर सोहत सुनत नाम की तान।
राम सिया हर दम रहैं सन्मुख जो सब सुख की खान।
अंधे दोउ कर जोरि के मांगैं मुक्ति भक्ति का दान।६।



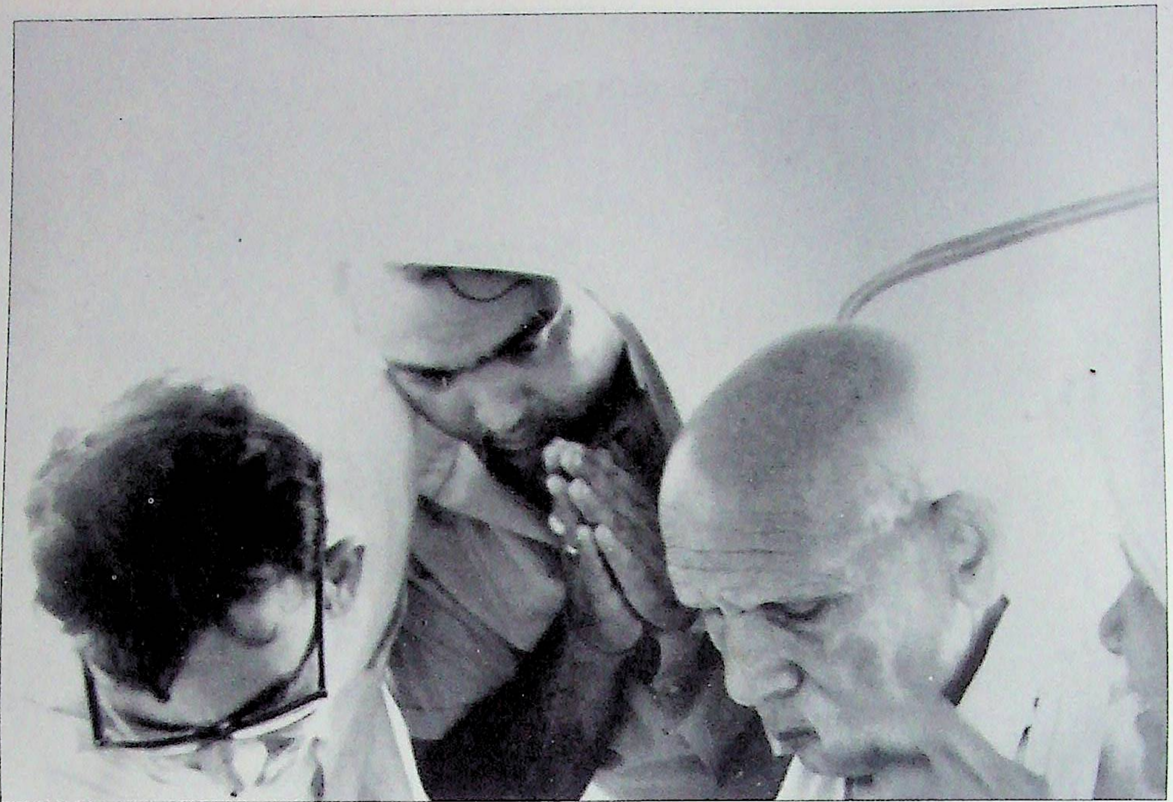
परमपूज्य श्री परमहंस राम मंगल दास जी
गोकुल भवन आश्रम में तखत पर।



श्री गुरुदेव आश्रम में।



श्री परमहंस राम मंगल दास जी
प्रसन्न मुद्रा में।



श्री गुरुदेव बैठे हुये।

।। श्री शंकर जी की प्रार्थना ।।

पदः- हे शिव शिवा हरो दुख मेरो।
महादेव सुर मुनि सब कहते अम्बा मातु को टेरो।
तन में डाकू डाका डारैं मन को कीन्हें चेरो।
सुकृति लूटि नित सब मिलि लेवैं कैसे होय निबेरो।४।
दहिने कर त्रिशूल उठाय के इनको छेद क गेरो।
तब हम तप धन फेरि सम्हारि क करि लेवैं खुब ढेरो।
भक्तन के सर्वस्व आप हौ कृपा दृष्टि ते हेरो।
आसुतोष प्रभु अवढर दानी अन्धा सेवक तेरो।८।

(२)

जय शंकर संकट के हारी।
बायें ओर उमा जी बैठीं सब की हैं हितकारी।
सब सुर आप को महादेव कहैं इन्हें कहैं महतारी।
आप के यश को वरण सकत है राम नाम अधिकारी।
कुसमायुध के प्रभु शरीर को क्षण में दीन्ह्यो जारी।
अंधे कहैं आप की स्वामी सब दिशि जय जय कारी।६।

(३)

हे बम भोला सुनिये मोरी।
सब चोरन मिलि हम से घर में पकड़ लिहिन धन छोरी।
मन को खींचि बनाइन भेदिया बस गया उनकी ओरी।
हम ग़रीब नित भूखन मरते गावत तानें तोरी।४।
आप की जटा में गंग बिराजै पकड़ इन्हें दो बोरी।
होंय अधमरे भागैं कैसे तब यह करैं चिरौरी।
फेरि सांप बीछुन से इनको कटवाओ बरजोरी।
अंधे कहैं संग तब छोड़ैं हम मन लैं धन जोरी।८।

(४)

हर अब बोलो बोलो बोलो।
भैरव बीर भद्र गहि बाँधे इन चोरन को छोलो।

तब सब अंग भंग ह्वै जावें नैन श्रवण मम खोलो।
षट झाँकी हर दम हम ताकैं नाम कि तान अमोलो।
भक्त के रक्षक शिक्षक आपै फोरत भरम फफोलो।
अन्धा आपै का है सेवक खुब कसि कै फिर तौलो।६।

(५)

जय शंकर संकट को टारो।
चार पदारथ बाँटन हारे सुर मुनि सबै पुकारो।
लै त्रिसूल प्रभु सब चोरन को तन से मार निकारो।
अंधे शाह कहैं तब स्वामी भजन करौं एक तारो।४।

(६)

देव देव महादेव कीजै अब दाया।
अंगन प्रति हैं भुजंग, राजत है जटा गंग,
चरचित है भस्म अंग, भाजत लखि माया।
गले सोहैं मुण्डमाल, दुतिया को चन्द्र भाल,
लोचन हैं लाल लाल, काल को हटाया।
बाँधे कटि व्याघ्र चर्म, मखमल सम नर्म नर्म,
निर्भय नहिं शर्म-भर्म, राम नाम भाया।
सन्मुख सिया राम रुप, अद्‌भुत छबि है अनूप,
भूपन में सब के भूप, हर दम है छाया।५।

बांये दिशि उमा राजैं, कर में तिरशूल छाजैं,
डिमक डिमक डमरू बाजैं, भंग ज़हर खाया।
नन्दीश्वर सुकुल सोहैं, गणपति तन लाल सोहैं, बीरभद्र भैरव हैं
षट मुख जी श्याम श्याम, देखत बनि आया।
बट के तर रहै राज, सुर मुनि सुख लें समाज,
बाहन गण गाजि गाजि हरि हर जस गाया।
काशी कैलास बास, सब दिशि हैं सब के पास,
पाप कर्म करत नाश, अजर अमर काया।
वेदन का जौन सार, कहते जेहि ररंकार, निर्गुन औ निराकार,
सोऽहं औ ओंकार जिसने प्रगटाया।१०।

बाजत जो निर्विकार, हद्दौ बेहद्द पार, सब में औ सब से न्यार,
जारी धुनि एक तार, सब पर है साया।
आपै लखि बिमल तात, दीन्ह्यौ है जगत मातु, वाको प्रभु काति काति,
बाँटत हौ दीन जानि, ऐसा मन भाया।
माँगत हौं वही चीज होती जो नहीं छीज, चोरन को देव मींज,
गुदरी अब रही भीज, निपटी किमि बकाया।
करली हरि से करार, गर्भै में बार बार, गावौं मैं जस तुम्हार,
दीजै मोको निसारि, जगत में भुलाया।
झूँठी जो हो करार, जनम मरन बार बार,
जियतै जो ले सुधार, जननि सुत कहाया।१५।

सुनि कै गुनि लेय बैन, त्यागै सब जग के धैन,
सतगुरु के चरन ऐन, हिरदय में बसाया।
वाके सब सरैं काज, जोगिन में जोगिराज,
सन्मुख राजाधिराज त्रिभुवन की छाया।
झाँकी की छबि अपार, शारद औ शेश हार,
निरखत जो एक तार, जीवन फल पाया।
ऐसा दरबार पाय, जाँचन केहि द्वार जाय,
बिनवै जश गाय गाय उर में लपटाया।
अंधे की जो पुकार, सुनिये दानी उदार,
दीजै मोको संभार, चरन शरन आया।२०।

।। श्री दुर्गा जी की प्रार्थना ।।

जय जय जय दुर्गा महरानी।
तानो शक्तिन ते तव उतपति, उमा रमा शारद गुणखानी।
दुष्ट दलन भक्तन की रक्षक सुर मुनि बेद बखानी।
अन्धे शाह कहैं कर जोरे, तुम समान को दानी।४।

।। सुर मुनि शक्ती की प्रार्थना ।।

(१)

सुर मुनि शक्ती मोंहि बचायो।
पांच खबीश रहत तन भीतर मन उन फोरि मिलायो।

सारा धन गृह लूट लीन्ह मम आज लगे जो कमायो।
आप तो सब सिय राम के सेवक ताते बिनय सुनायो।
बीच में जीव चहुँ दिश यह सब बज्र जँजीर बंधायो।
अन्धे कहैं सबै मिलि हेर के इनको मारि भगायो।६।

(२)

जय सब सुर मुनि शक्ती माता। आप तो सब जग हैं बिख्याता।
जानत सब हरि नाम क गाता। पक्का लिखा रजिस्टर खाता।
सब मिलि दया कियो लखि ताता। तब ह्वै गयो हमैं कछु ज्ञाता।
अन्धे कहैं सत्य यह बाता। आर्शिबाद से हो कुशलाता।४।

।। श्री राम जी की प्रार्थना ।।

पदः- जै श्री राम धनुष शर धारी।
बाम भाग में राज रही हैं सिंहासन पर जनक दुलारी।
को वरनै झाँकी की शोभा शारद शेष गये जब हारी।
अंधे कहैं लखै जियते में ताकी दोनों दिशि बलिहारी।४।

।। श्री नारायण जी की प्रार्थना ।।

जै श्री नारायण सुखकारी।
शेष सेज बाँये दिशि राजैं श्री कमला सुकुमारी।
जग पितु मातु करैं नित पालन अद्भुत छबि बरणन ते न्यारी।
क्षीर समुद्र बीच यह झाँकी अंधे कहैं लखै सुख भारी।४।

।। श्री कृष्ण जी की प्रार्थना ।।

जै श्री कृष्ण चन्द्र बलिहारी।
बांये तरफ़ बिराजैं जिनके श्री बृषभानु लली अति प्यारी।
शोभा बरनि सकै को भक्तौं कहत बनत नहिं सकत निहारी।
अन्धे कहैं धन्य वह प्राणी जिन्ह यह प्राप्त कियो सुख भारी।४।

(२)

मोको गारी देवै बनवारी माई रोज़ जी।
सखा संग लै बाट में धावै, मिटुकी सर से चट उतरावै,
कहै हमारे भोज री।

दही को महि के ऊपर नावै चाटै जीभ से हंसि मटिकावै,
बोलै कैसी मौज री।
कहै दान दधि का नहिं देहौ, तो तुम बृज में रहन न पैहो,
नित्य करैं हम खोज री।
सखा सखी के संग दुलरावै, नाना बिधि के खेल दिखावै,
पाप ताप दै गौंज री।
मन को जो कोई लेवै मारी, हर दम निरखै आनन्द भारी,
है यह सारो बोज री। मोको० ।६।

(३)

सुनी थी जैसी सिफ़त मैं बृज की वो बात अपने बचश्म ढारी।
है हुस्न खूबी मलक फलक में श्री कृष्ण राधे की सब से न्यारी।
कदम हैं तिरछे अधर पै मुरली मधुर मधुर धुनि सुनाते प्यारी।
मुस्क्यान ऐसी अजब ग़जब की चमकते दन्दां हैं नूर जारी।४।

इशारा अबरू का कर के मुझ पै चलाया जादू का तीर भारी।
लगा जिगर में तड़फ़ते देखा उठाया चट से जगत बिहारी।
लगा के सीने लिया है बोसा कहैं क्या अंधे जबां है हारी।
ख्याल जिसका जमा है जिस पर वही तो उसको सकै निहारी।८।

।। श्री रामायण व गीता जी की प्रार्थना ।।

पदः- भक्त पढ़ैं रामायण गीता।
ये दोउ माता हैं सुखदाता अति ही परम पुनीता।
सुनि गुनि कै जे पाठ करत हैं छूटि गई अनरीता।
इनते सुर मुनि शक्ती मिलते श्रुति शास्त्रन नवनीता।
राम श्याम नारायण सन्मुख कमला राधे सीता।५।

तुलसी दास ब्यास मुनि जग हित बांध्यो आय सुभीता।
सब लोकन बिख्यात है मानो जानै तुरियातीता।
बज्र का सेतु बंध्यो नहिं टूटै उतरि चलो मन मीता।
अन्धे कहैं जौन नहिं जान्यो जन्म अकारथ बीता।
धन्य धन्य वह जीव धन्य हैं जो इस रस को पीता।१०।

(२)

राम भजन हित मानस गीता।
सब सुर मुनि जा को नित ध्यावत है अति परम पुनीता।
प्रेम से पाठ करेंगे जे जन जियतै भव दुख जीता।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि उनको देंय सुभीता।
चार पदारथ दोउ माता दें ह्वै जावै मन मीता।
अन्धे शाह कहैं उठि चेतो सोवत बहु दिन बीता।६।

दोहाः- पढ़ै सुनै औ लेय गुन दीन बनै गहि शान्ति।
अन्धे कहैं उस जीव की छूटि जाय सब भ्रान्ति।
जा के तन मन भाव है सो पावै कछु जान।
अन्धे शाह कहैं सुखी खुलि जांय आँखी कान।
प्रेम प्रभु का रूप है, प्रेमहि सब का सार।
अन्धे शाह कहैं सुनौ मुक्ति भक्ति का तार।६।

चौपाईः- मन काबू कीन्हे बिन भाई। पाठ जाप का फल किमि पाई।।
खाक पछोरत सूप मँगाई। आँखिन परै देह खिसकाई।।
शान्ति दीनता पकड़ै धाई। मन आपै तब करै मिताई।।
अन्धे शाह कहैं गोहराई। नाम की गति है अति सुखदाई।४।

दोहाः- कथा कीर्तन पाठ जप पूजन सेवा धर्म।
बिना प्रेम के होंय नहिं जग में जितने कर्म।
अन्धे शाह कहैं गुनौ छूट जात सब भर्म।
बिना भाव के किसी को मिलत न या को मर्म।४।

(३)

गीता गीता कहै जौन कोइ त्यागी होवै जियत तरै।
मानस मानस कहै जौन कोइ मन के सारे पाप जरैं।
एकै अर्थ न मानै जो कोइ बैठ एकान्त में ध्यान धरै।
अन्धे शाह कहैं तब भक्तों शान्त दीन बन आप मरै।

पदः- गीता मानस पढ़ै सुनै औ गुनै जौन हो सुख भारी।
जो जो शब्द कढ़ैं निज मुख से बिहँसि बिहँसि देवैं तारी।

अर्थ बतावैं भाव दिखावैं बोलैं तुम्हरी बलिहारी।
प्रकटैं दोउ माता जग विख्याता हर दम निरखौ छबि न्यारी।४।

चट हिये लगावैं थपक सुलावैं चूमैं मुख को चुचकारी।
बिधि लेख को टारैं सदा संभारैं ऐसी मुद मंगल कारी।
मन को जे मारैं वही निहारैं जीत लेंय भव की पारी।
अंधे की बिनती दोउ मां सुनतीं नित प्रति दें सिर कर धारी।८।

।। श्री अंधे शाह जी के वचनामृत उपदेश ।।

पदः- सतगुरु करो मारग मिलै बनि दीन सच्चे दास हो।
दो बजे निशि में उठो साधन में बारह मास हो।
सिद्धांत सब युग का यही तब दुःख भव का नास हो।
अनहद सुनो अमृत पियो धुनि नाम लै परकास हो।४।

नागिनि जगै चक्कर चलैं कमलन क उलटि विकास हो।
सुर मुनि मिलैं उर में लगा बोलैं भजन में पास हो।
खट रूप का तसरीफ लाना सामने में खास हो।
अंधे कहै तन त्यागि कै लो निज वतन में वास हो।८।

पदः- नाम पै मन लगा करके चोर जिन शांति करि डारा।
कहैं अंधे वही जग से जियति ही हो गया न्यारा।
सुनै अनहद छकै अमृत गगन ते बहे रहा धारा।
जगी नागिनि सुधे चक्कर कमल सब फूले एकतारा।४।

महक से छा गई मस्ती बहै नैनों से जल धारा।
रोम पुलकैं कंठ गद गद बदन क्या कांपता सारा।
मिलैं सुर मुनि लिपटि करके विहंसि सब बोलै जैकारा।
ध्यान परकास लै पहुँचा कर्म शुभ असुभ भे छारा।८।

धुनी हरिनाम की होती उठै हर सै से रंकारा।
छटा सिय राम की हर दम सामने होत दीदारा।
छोड़ि तन चढ़ि सिंहासन पर गया साकेत को प्यारा।
भक्त तहं अमित हैं बैठे रूप रंग प्रभु के सुख सारा।१२।

चेति करिके करो सतगुरु भजन में लागो नर दारा।
नहीं तो फेरि पछितैहौ काल के गाल हो चारा।
बड़ा अनमोल नर तन है भजन के हित गया ढारा।
इसे क्यों मुफ्त में खोते मिलै ऐसा न फिरि बारा।१६।

पदः- गुन बनते गृह बनत नहीं हैं बर कन्या के ब्याहन में।
अंधे कहैं करो मति शादी पड़ि हैं दुख अथाहन में।
जैसे जीव निकसि किमि पावै कंटक गाड़े राहन में।
सोचि विचारि लौटि घर आवै सुःख नहीं मन चाहन में।४।

जैसे ऊंचा नीचा कूचा बना जहां तहं पाहन में।
नेक निगाह चूकि जो जावै चोट नीकि हो माहन में।।

सतगुरु करै भजन विधि जानै फिरि न जाय भव दाहन में।
अंत छोड़ि तन अवध में पहुंचै बैठे शांति से साहन में।४।

पदः- जौने रूख के तरे जुड़ाते। उसी की साखैं काटि गिराते।।
पाप ताप में हैं मन माते। अन्त छोड़ि तन नर्क को जाते।।
हरदम हाय हाय चिल्लाते। दोनों दिसि ते ह्वैगे ताते।।
हरि के भजन में जे लगि जाते। अंधे कहैं वही सुख पाते।४।

मन भजन कि विधि में सटा नहीं। विधि लेख भाल से कटा नहीं।।
धुनि तेज समाधि में अंटा नहीं। सनमुख सिय राम कि छटा नहीं।।
जब सान मान तन घटा नहीं। अंधे कहै दोउ दिसि पटा नहीं।।
सतगुरु करि प्रेम से हटा नहीं। सो अजा के हाथसे फटा नहीं।८।

दोहाः- जिस पतरी में खात हैं उसी में करते छेद।
वै पापी घटिहौं बड़े नेक न आवत खेद।
तन मन ते नहिं मानते जाति कुजाति क भेद।
अंधे कह जमपुर बसैं भाषत सुर मुनि बेद।।

पदः- बाहेर सर्प चलत है टेढ़ा, बिल में सीधा जाता है।
दुष्ट नारि नर नेक न मानै उनके मन नहिं भाता है।
अंत छोड़ि तन नर्क जात जहँ रोये नहीं सेराता है।
अंधे कहैं सत्य यह बानी चारौ जुग विख्याता है।४।

पदः- ऊसर बरषा त्रण नहिं जामा। संत हृदय जिमि उपजै न कामा।
सतगुरु से लै राम कनामा। सुमिरन में अर्पौ मन जामा।
ध्यान धुनी परकास तमामा। लय में करो कर्म दोउ खामा।
सनमुष राम सिया वसुजामा। निरखौ संग में सुर मुनि आमा।
अंधे कहैं संग सब सामा। जियति जानि चलिये सुख धामा।
है अनमोल न लागै दामा। सच्चे गाहक का यह कामा।६।

पदः- वेद सात्र उपनिषद संगिता औ पुरान गीता रामायन।
अंधे कहैं बिना अनुभव के पढ़ि सुनि के बांटत हौ बायन।
सतगुरु करि के भेद जान लो जियति जाव ह्वै ब्रह्म परायन।
सुरमुनि सक्ती सब युग वरन्यो वही वाक्य हम सब हित गायन।४।

दोहाः- मन का झोंझ भरै नहीं, लादे पाप का बोझ।
अंधे कहँ सुमिरन बिना, होये नहीं यह सोझ।।

पदः- घुसो तो सूरति लगा के अन्दर मुहीत दरिया हलक रही है।
करम जला कर बढ़ो फिर आगे बिजुल छटा क्या दमक रही है।
मणिन की पृथ्वी वहाँ पर अद्‌भुद चमक चमा चम चमक रही है।
गुलों से गुलशन तमाम गुच्छे अजब तरह से महक रही है।
वहां पर बैठे अनन्त साधू प्रकाश उनकी लपक रही है।
अपार शोभा सिय हरि की वहँ पर अन्धे कहैं मानो टपक रही है।६।

पदः- ग़रीब परवर हमारे स्वामी, नमक हरामी कभी न करना।
बताते अन्धे छुटेंगे फन्दे यही है भक्तों जियत क तरना।
मिलैगा तक़मा उसी में चशमा बहार देखो यही है मरना।
शरन में पक्के रहो न कच्चे, सुरति शबद पर सम्हार धरना।४।

पदः- वैराग भया तब राग कहाँ सुख सागर में बह जाय सना।
सतगुरु की वाक्य क ख्याल रहा मन चोरन को कर दीन फ़ना।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधि मिली सन्मुख सिय राम का रूप तना।
कह अन्ध शाह भा जियत सरन फिर गर्भ बास में नाहिं छना।४।

दोहाः- अन्धे कह पहुँचे वही, मन को लेवै जीत।
नाहीं तो घुल जाय वह, जिम बालू की भीत।
जो शोभा साकेत की वरन सकत नहिं कोय।
अन्धे कहँ देखत बने बुद्धी चौपट होय।४।

ग्यान वहाँ नहिं टिक सकै है विज्ञान क खेल।
अन्धे कह मन रोकिये जीव ब्रह्म से मेल।
मन रोके से ध्यान हो मन से होत समाधि।
मन से कुंडलिनी जगै मन से चक्रन चाल।८।

मन से सब नीरज खिलैं महक करैं मतवाल।
मन से नाम कि धुनि खुलै मन से मिटै उपाधि।
मन से अमृत घट पियो मन से अनहद ताल।
मन से सब सुर मुनि मिलैं संग सिय राम कृपाल।१२।

सब मन ही से होत है जो कुछ नीक बिकार।
अन्धे कहँ मानो सही सुर मुनि बेद पुकार।
मन से सब लोकन लखौ मन से होय प्रकास।
मन से कर्मन गति मिटै अन्त अचल पुर बास।१६।

पदः- मन मस्त नाम के संग भया तब कौन दूसरा काम करे।
सब भूल गया कछु याद नहीं सतगुरु के चरनन शीश धरे।
आनन्द के संग सुगन्ध उड़ैं बस मन्द मन्द मुस्क्यात परे।
अन्धे कहैं ऐसे भक्त धन्य जे जियतै जग में आय तरें।४।

पदः- शरन मरन और तरन को जाना सो साधू भजनानन्दी।
अन्धे कहैं जौन नहिं चेता सो स्वादू भोजनानन्दी।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम औ रूप बिना काया गन्दी।
सतगुरु करि जे चेतत नाहीं कैसे छूटै भव बन्दी।४।

पदः- अहँकारी बना साधू भया जम राज का बीड़ा।
जाय जम नर्क में छोड़ैं जुटै तन खाँय बहु कीड़ा।
हाय रे हाय कह उछरै सहै बहु किस्म की पीड़ा।
खान औ पान कह अन्धे खून औ पीव का सीड़ा।४।

पदः- नाम रूप परकास समाधी सब में चारिउ सामिल।
अंधे कहैं शरनि सतगुरु की जानि लेय तो कामिल।।

पदः- अन्धे कहैं जे सुमिरन करेंगे। सुमिरन करेंगे तो श्रवण देंयगे।।
श्रवण देंयगे तो नैन देंयगे। नैन देंयगे तो दर्श देंयगे।।

दर्श देंयगे तो पास लेंयगे। पास लेंयगे तो बास देंयगे।।
जब बास देंयगे तो गांस लेंयगे। जब गांस लेंयगे तो फांस देंयगे।।
जब फांस देंयगे न सांस लेंयगे। न सांस लेंयगे तो आस देंयगे।।
जब आस देंगे तो खाँस देंगे। जब खांस देंगे तो हांथ लेंगे।१२।

दोहाः- निज स्वरूप सम देंय करि, मौन न होवे गौन।
अन्धे कह सतगुरु करो, सुमिरो लो निज भौन।।

पदः- जब खुटका नेकउ नहीं तब खटका खुलि जाय।
अन्धे कह सतगुरु बचन, ठीक ठौर सो पाय।
खुटका चटका नमक है, बाढ़े खूब पियास।
अन्धे कह सारा बदन, कर दे सत्यानाश।४।

दोहाः- हम हैं अन्धे गर्भ बास के। राम नाम जप भये पास के।।

शेरः- सुमिरन विना नर तन वृथा आखिर में फिर पछिताय तू।
अंधे कहैं सुर मुनि वचन चलि नर्क में सुख पाय तू।।

पदः- नर तन को पाय जग में जब शुभ करम न होगा।
तब तो तुम्हारे दिल में दाया धरम न होगा।
सुमिरन बिना यह मनुवां पावन परम न होगा।
सतगुरु से भेद जानो आवागमन न होगा।४।

सब चोर हों किनारे कोई गरम न होगा।
चुप शांत दीन बनिये फिर तो वरम न होगा।
यह अपने कुल की रीती इस में शरम न होगा।
अन्धे कहैं अब चेतो नेकौ भरम न होगा।८।

दोहाः- एकै रोम के छिद्र ह्वै जीव जात निज धाम।
अंधे कह सो मानिहै जानै राम क नाम।।

पदः- भजन बिन बार बार जग नाचौ।
अब ही तो चित चेतत नाहीं मन की लगड़ी खाँचौ।
पढ़ि सुनि ज्ञान भक्ति की बातैं आँसु बहाइ के बाँचौ।
ठगते नहीं ठगाते घूमत मिलै न कौड़ी काँचौ।४।

सतगुरु करौ भेद तब पावो घट ही में घुस जाँचौ।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै नाम के रंग में रांचौं।
राम सिया हर दम रहैं सन्मुख जो सब में रमै सांचौ।
अंधे कहै अंत निज पुर हो मिटै गर्भ की आंचौ।८।

दोहाः- सान मान में मस्त हैं छूटि सकत नहिं गस्त।
अन्धे कह हरि भजन बिन होंय नर्क में पस्त।।

पदः- करो सतगुरु चलो भक्तों साफ़ साकेत का रस्ता।
ध्यान धुनि नूर लै होवै फटै आलस का तब बस्ता।
प्रेम में राम सीता की छटा सिंगार छबि फंसता।
हर समै सामने राजैं लखै सो हो गया मस्ता।
दीनता शान्ति जो पकड़ै उसे तो है सुगम सस्ता।
कहैं अंधे छोड़ि तन को जगत में फिरि नहीं धंसता।६।

शेरः- न चलता है न हंसता है अटल निज धाम बसता है।
कहैं अंधे बचन सतगुरु के मानै प्रेम फंसता है।।

पदः- बहार बिलकुल ग़लत जहां की यह चन्द दिन में रफ़ा सफ़ा हो।
करो तो सतगुरु भजन को जानो कहैं ये अंधे बड़ी नफ़ा हो।
धुनि नाम लै तेज हो चमा चम सिय राम झाँकी सन्मुख सफ़ा हो।
तन त्यागि करके चलो अवध पुर कभी न तुम पर लगै दफ़ा हो।४।

पदः- सतगुरु करो सुमिरन सिखो दोनों तरफ़ में गुजर हो।
सिय राम के बच्चा बनो अंधे कहैं क्या सुघर हो।
सिंगार छबि अद्‌भुत छटा कोमल बदन हो श्याम तन।
साकेत में बैठो बयस बारह बरस हर दम मगन।
जियतै में तै कर लेय जो सो जान लो तारै सही।
पढ़ि सुनि कथै सो चूकिगा जन्मै मरै सुख हो नहीं।६।

पदः- समय श्वांस तन दुर्लभ पाये सूरति शब्द पै तागु रे।
राम नाम जपु राम नाम जपु राम नाम जपु जागु रे।
सतगुरु करि सब भेद जानि ले चोरन को गहि टाँगु रे।
अनहद सुनो छको घट अमृत सुर मुनि के संग लागु रे।४।

कमल चक्र शिव शक्ती जागै छूटै कुल का दागु रे।
जियति जान कै तरौ औ तारौ मुक्ति भक्ति में पागु रे।
सिय राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख झाँकी तागु रे।
अंधे कहैं अन्त साकेतै चढ़ि सिंहासन भागु रे।८।

दोहाः- जन्म मरन में नाचते रहते सदा अनाथ।
अंधे कह सतगुरु करै सुमिरै होय सनाथ।
करामात सब माथ में करि लेवै जो हाथ।
अंधे कह तारे तरै सन्मुख सिय रघुनाथ।४।

पदः- संसार की बू में फंसे सरकार की खुशबू कहाँ।
अंधे कहैं सच्चे भगत थोड़े लखे हम ने यहां।
ज्ञान मत्थे का कथैं हत्थे में तो है नहिं गहा।
अन्त नर्क में बास हो निज कुल का धरवाया नहा।४।

दोहाः- प्रेम होय जब एक रस खुलि जांय आंखी कान।
अंधे कह बजरंग शिव दीन मोहि यह ज्ञान।।

पदः- पूत मूत से पैदा होकर भये कपूत सपूत नहीं।
पाप करम में माते हर दम सांची कोई सबूत नहीं।
अन्धे कहैं बिना सतगुरु के जाय राम के सूत नहीं।
अन्त छोड़ि तन नर्क को जावै जियति भये मजबूत नहीं।५।

सोरठाः- द्वैत संग में लाग भजन क भोजन लेत करि।
जियति गयो जो जागि अंधे कह सो गयो तरि।।

पदः- सतगुरु करि सुमिरौ राम नाम कोइ ऐसा दूसर ढंग नहीं।
सुर मुनि सब याको ध्याय रहे धुनि सुनै एक रस भंग नहीं।
बनि कै अकेल मग जाव पेल है शांति वहाँ कोइ संग नहीं।
कहैं अन्ध शाह लै तेज रूप पावो कोइ ऐसा रंग नहीं।४।

सोरठाः- तन मन प्रेम में पागु शरनि मरनि औ तरनि हो।
सतगुरु चरन में लागु अंधे कह किमि गिरनि हो।।

पदः- हटा अड़ंगा अब चोरन का सतगुरु दीन नाम का दान।
शांति कृपान से मारि भगायो एकौ नेक नहीं ठहरान।

ध्यान प्रकाश समाधी जाना खुलिगे आँखी कान।
अन्धे कहैं राम सिय सन्मुख छूटा जग दौरान।४।

शेरः- बाकी जमा जोड़ तकशीम। जानि के बनिये ठीक मुनीम।।
अंधे कहैं जुगुति यह जीम। तब तो मस्त बनावै मीम।४।

शेरः- मुरशिद जिनके बड़े हकीम। तिनको देवें नाम अफ़ीम।
चढ़ै अमल फिरि होय न धीम। छूटि जाय सब टाम औ टीम।।

शेरः- अंधे कहैं मन भजन में जो प्रेम से देवै पगा।
पितु मातु उसके हों संग पितु मातु का वह हो सगा।।

पदः- क्या बाटे का बाकी राखे का जोड़े का किहे जमा।
अंधे कहैं बिना हरि सुमिरे तन से भागत नहीं तमा।
सतगुरु करो भेद तब पावो मिलै तुम्हारी नारि छिमा।
जब संतोष तात हो पैदा तब जानो मैं नाम रमा।४।

शेरः- वह न आवैंगे खलक पै रूह के जाने के बाद।
जिसने मुरशिद करके सारी बासना कर दी है खाद।
अंधे कहैं वह धन्य हैं जियतै मिटाया कुल का दाग।
सिय राम ने गोदी बिठाकर भक्ति की सर दी है पाग।४।

शेरः- अंधे कहैं सतगुरु करो तब काम प्यारे नीक हों।
औझड़ लगावो नाम की तब चोर सारे ठीक हों।
तूल करते चोर सारे मन को लीन्हे संग में।
अंधे कहैं सतगुरु करो तब जीति पावो जंग में।
तकरार करते चोर हर दम मन भी उनके साथ है।
अंधे कहैं सतगुरु करो तब तो तुम्हारे हाथ है।६।

शेरः- चौ चन्द करत हैं चोर नित मन को मिलाये घूमते।
अंधे कहैं सतगुरु करो देखो कदम सब चूमते।।

पदः- हरि सुमिरन बिन भयो निकम्मा। पकड़ि लीन चोरन की अम्मा।।
हर दम नाच नाचते गम्मा। सार वस्तु किमि लें निज दम्मा।।
सतगुरु करि सुख दुख में सम्मा। वाके घट पट होवैं चम्मा।।
अंधे कहैं क्या तुम्मा हम्मा। अणू अणू में श्री हरि रम्मा।८।

पदः- हरि नाम बिना सब काम फीक कोइ भव से होवै पार नहीं।
कहैं अंध शाह सतगुरु की सीख संसार असार में सार नहीं।
मन जिनका चोरन संग कीन श्री हरि का हो दीदार नहीं।
लै ध्यान प्रकाश मिलै कैसे धुनि जारी जब रंकार नहीं।४।

जुटि जावौ बनि कै सूर बीर है कर्म भूमि खिलवार नहीं।
जियतै में तै करि लेव यहां तब तुम पर कोइ फटकार नहीं।
तन तजि के अवध में दाखिल हो जहां महा तेज अंधियार नहीं।
उठि के प्रभु आसन देंय तुम्हैं ऐसा कोइ करता प्यार नहीं।८।

सोरठाः- शोहदे भाँड़ ज़रूर हंसी मज़ाक में पूर हैं।
अंधे कह वै सूर राम भजन करि घूर हैं।।

कीर्तनः- जै सिया राम श्री अवध धाम। जै प्रिया श्याम श्री नन्द ग्राम।।
जै उमा शम्भु कैलाश धाम। जै रमा बिष्णु बैकुण्ठ धाम।।
कहैं अंध शाह सब को प्रनाम। हौं तुरुक जाति धुनियां निकाम।।
सब जीवन का जानो गुलाम। श्री सीता मढ़ी में है मुकाम।।

पदः- मत चुनो बुराई किसी की तुम। मत सुनो बुराई किसी की तुम।।
मत गुनो बुराई किसी की तुम। मत धुनो बुराई किसी की तुम।।
अंधे कहैं तब पट खुलि जावें। बस इसी से नीचे गिरे हो तुम।।
सतगुरु करि के सब भेद लेव। हौ कहां से आये को हौ तुम।।
शुभ कामन में साधक जुटते। जो सधता करते रहते गुम।।
धुनि नाम तेज लै रूप पाये। निज धाम गये नहिं गिरते भुम।६।

पदः- भगवान क सुमिरन सही वही जब और न कोई आसा।
तब सारे पाप माफ़ होवैं धुनि नाम समाधि प्रकासा।
सतगुरु बिन मिलै नहीं यह पद सुर शक्ती ऋषि मुनि भाषा।
अंधे कहैं दोनों दिसि राजो श्री जगत मातु पितु पासा।४।

शेरः- अभी तो पापों के शौक करते शुमार इसका नरक में होगा।
कहैं ये अंधे जमन के कन्धे चलोगे जिस दिन खुलैगा ढोंगा।।

पदः- दिल में भरे हजारौं खुटका कैसे खुलै भजन का खटका।
सुमिरन करने जैसे बैठो चोर लगावैं झटका।

मनुवां उनके संग में अटका फिरता पाप करम में भटका।
सतगुरु के ढिग नाम क लटका लै कर फोरो भरम क फटका।
अनहद बाजा सुनिये चटका अमृत जाय गगन में घटका।
नाम कि धुनि परकास समाधी कर्म शुभा शुभ पटका।६।

सुर मुनि मिलैं नागिनी जागै कमल चक्र हों टटका।
सन्मुख हर दम दर्शन लीजै श्याम मनोहर नटका।
मुरली कूकि के गान सुनावै नैन सैन करि मटका।
सखा सखी प्रगटैं संग नाचैं बार बार करि तटका।
भांति भांति के भोग मिलत नित बिहंसि बिहंसि के गटका।
अंधे कहैं अंत निजपुर हो बहुरि न जग में सटका।१२।

पदः- सतगुरु करै गुनै निसि बार। जानि मानि होवै भव पार।
यह मसला कबीर जी क्यार। गदही का बच्चा थाने दार।
सारी रय्यत लेत सम्हार। क्या कर सकते चोर तुम्हार।
सुर मुनि मिलैं करैं जै कार। अब तुम संघी भयो हमार।
सन्मुख राजैं सब औतार। रोम रोम से धुनि रंकार।५।

अमृत पान करो निशि बार। अनहद बजै सदा एक तार।।
छूटि गयो सब जग ब्यवहार। पढ़ि सुनि लिखि बनते हुशियार।।
यह सब जानो झूठा कार। बिना अमल कीन्हे सुखसार।।
कैसे गिरे दुहे बिन धार। अंधे कहैं कटै दुख जार।।
सच्चा ह्वै कर खेल पसार। सो तरि जाय औ देवै तार।१०।

दोहाः- जग के झंझट में फंसे वे माया के तात।
अंधे कह सुमिरन करै ते हरि के ढिग जात।।

पदः- घर में चोर रहत निशि वार।
मन को अपने संग मिलाये कपट में हैं हुशियार।
सारा सुकृत जीव का लूटत करत रहत तकरार।
घाटि करन का पट्टा लीन्हें चट्टा दै लें मार।४।

इनके सट्टा से सो जीतै सतगुरु का ले द्वार।
जे नहिं चेतैं निबुकि न पावैं रोवैं नर्क मंझार।
यह बिनती अंधे की सुनिये सब से करत पुकार।
राम नाम को सुमिरन करिके जियति होहु भव पार।८।

दोहाः- नागिनि जगै चक्र सब नाचैं कैसी हो भनकार।
अंधे कह फूलैं कमल स्वरन ते महक निशार।।

पदः- दर दर में रो रहे हैं हरि नाम जिन न जाना।
अंधे कहैं अब चेतैं सतगुरु से ले परवाना।
सुमिरन में मन पगै जब मिटि जाय आना जाना।
तन त्यागि करि के भक्तों निज धाम हों रवाना।४।

पदः- न हो मुचलका न हो ज़मानत जमा अमानत न नाम की है।
न हो सिफ़ारिश न कोई वारिस अंधे कहैं जेल बद काम की है।।

चौपाईः- हरि चरित्र जे पढ़े पढ़ावैं। सुनैं सुनावैं लिखैं लिखावैं।।
अंधे कहते हरि पुर जावैं। बैठि सिंहासन हिय हर्षावैं।।
सुर मुनि सब के दर्शन पावैं। हब्य अनार मिलै नित खावैं।।
कथा सुनैं औ हरि यश गावैं। बारह बर्ष बयस ह्वै जावैं।४।

भूषन बसन गरुड़ पहिरावैं। बदलैं सो अन्तर ह्वै जावैं।
को बरनै देखत बनि आवै। जो जानै सोई सुख पावै।।
जब चाहैं तब घूमन जावैं। झूला झूलैं औ मुसिक्यावैं।।
सतगुरु के ढिग सिखैं सिखावैं। तब वाकी जियतै बनि जावै।८।

पदः- सर्गुण ब्रह्म की बिनती वेदन रामायण में कीन्हा जी।
बालमीकि तुलसी भे आकर सब लोकन यश लीन्हा जी।
सत्यं शिवं सुन्दरं हर ने वा पर दस्तखत कीन्हा जी।
सब सुर मुनि वा को नित गावत चारि पदारथ दीन्हा जी।
कितने जीव तरें औ तरिहैं बांध्यो स्वर्ग में जीना जी।
अंधे कहैं अन्त हरि पुर हो सिंहासन आसीना जी।६।

पदः- परा से नाम जपत हैं सतयुग पैशन्ती से त्रेता जी।
जपत मध्यमा से हैं द्वापर कलियुग जीह से धेता जी।
अजपा जाप बतायो सतगुरु धन्य भक्त जो सेता जी।
अंधे कहैं अन्त साकेत में बनि बैठा हरि नेता जी।४।

दोहाः- गफ्क़ा राम नाम का पाओ अंधे कहैं भरे तब पेट।
ना मानो तो भूखे हर दम बैठो चलो चहै रहो लेट।।

पदः- पितु मातु के पूत सपूत वही जे सतगुरु करि अवधूत हुए।
निज कुल की है कुल कानि यही दोनो दिसि ते मजबूत हुए।
धुनि नाम प्रकास समाधि लही सिय राम के हर दम सूत हुए।
अंधे कहैं जब नहीं सुकृत सही चलि नर्क पड़े या भूत हुए।४।

पदः- सागु आगु मुख पागु बने हरि सुमिरन बिन हाजम का।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो सो दोनो दिशि गमका।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रूप सामने चमका।
अंधै कहैं शंभु औ हनुमति यही सीख दियो हमका।४।

पदः- चित्र गुप्त औ धर्म राज प्रभु कृपा पात्र इन्साफ़ी।
सारे पाप भजन ते नासैं आलस की नहिं माफ़ी।
सतगुरु करि सुमिरै निशि बासर पावो तप धन काफ़ी।
अंधे कहैं अंत निज पुर हो छूटै गर्भ की हांफी।४।

पदः- न हो जुरमाना न हो रिहाई न हो सुनाई सच्ची अदालत।
कहैं ये अंधे करम हों जैसे वैसी तुम्हारी वहां हो हालत।
उठाये खाता सुनावैं तुमको यहां की सारी कसर निकालत।
अधर्म सब भरा है खाता गुस्साये बोलैं तुझे है लानत।४।

वहां पै जमदूत करैं मरम्मत घसीट करके नरक में डालत।
सहोगे नाना प्रकार के दुख बिना भोगाये नहीं निकालत।
दया की बानी न कोई जानै जगह जगह पर हैं दूत टहलत।
कई तरह के हैं अस्त्र बांधे जो काटि डारैं औ तन को चालत।८।

दोहाः- सिंह श्वान कागा वहां गीध औ बिच्छू सांप।
अंधे कह देखत डरौ सब तन जावै कांप।
निज स्वभाव सम दुःख दें कहँ लगि को कहि पाय।
अँधे कह हरि को भजै सो काहे वहँ जाय।४।

दोहाः- दुखद संदेस कह अंधे सुखद हरि नाम जपि जानो।
करो सतगुरु मिलै मारग नहीं तो होगा पछितानो।।

पदः- शिकार राम नाम जपि खेलो शिकार।
सतगुरु से सब भेद जानि कै चोरन डारो मार। शिकार०।

ध्यान धुनी परकाश समाधी कर्म करै दोउ छार। शिकार०।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सब मुख लो दीदार। शिकार०।
सुर मुनि मिलैं उछंग उठावैं बोलैं जै जै कार। शिकार०।४।
अमृत पियो सुनो घट अनहद बाजत जो एक तार। शिकार०।
नागिनि चक्र कमल सब जागैं महक उड़े निशिवार। शिकार०।
जियतै तरो औ तारो भक्तों निज कुल का यह कार। शिकार०।
अंधे कहैं अंत निज पुर हो बैठि जाव चुप मार। शिकार०।८।

पदः- खाना पीना सोना हगना। शुभ कारज सुनि के चट भगना।
अंत समै जम करि हैं टंगना अंधे कहैं क्वन का ढंगना।।

पदः- हरि सुमिरन में लागो माया के बच्चा।
सतगुरु करो जाप बिधि जानौ चोरन बांधि के टाँगौ। माया०।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रूप सामने तागौ। माया०।
सुर मुनि लाय खिलावैं तुमको दिब्य स्वहारी सागौ। माया०।
अदभुद लीला हर दम होवै तन मन प्रेम से पागौ। माया०।
अंधे कहैं अंत साकेतै चढ़ि बिमान पर भागो। माया०।६।

दोहाः- अंधे कह सतगुरु करो, मिलै न ऐसा दाँव।
राम नाम को जानि कै लुचिई बूरा खाव।।

पदः- तपस्या में जे चूके हैं वही जग राज्य पद पाया।
प्रजा को पुत्र सम पाला तो फिर बैकुंठ को धाया।
न माना नर्क को पहुँचा महा दुख धूप नहिं छाया।
कहैं अंधे सबी सुर मुनि यही सिद्धान्त बतलाया।४।

पदः- सतगुरु करि सुमिरौ राम नाम जा को सुर मुनि सब जपत रोज़।
धुनि खुलै अखण्डित र रंकार घट भीतर घुसि कै करौ खोज।
अमृत पीकर हो सूर बीर अनहद सुनि सुनि कै बढ़ै मौज।
सन्मुख में राजैं सिया राम अंधे कहैं जग सुख चंद रोज।४।

पदः- अन्धे कहैं हर दम मगन जिनकी लगी हरि से लगन।
ध्यान धुनि परकाश लय सन्मुख में रहते नन्द ललन।
मुरली अधर धरि फूँकते क्या छेड़ते सुन्दर भजन।
झुकि झूमि कूदि के नाचते मुस्कयाय मम दिसि करि दृगन।४।

घुंघुरुन में नग कई रंग के चमकैं चमा चम दोउ पगना।
ऐसे छमा छम बाजते सुनि सालिये रोवन रगन।
सतगुरु करो मारग गहौ चलि लेव अब सच्चे ढंगन।
घृत अग्नि बाती के बिना बरता दिया अद्‌भुत गगन।८।

पदः- मौत औ भगवान को डरता नहीं सो दुष्ट है।
पाप करने में समझलो हृदय उसका पुष्ट है।
हर समय मन चोर उसके संग बांधे गुष्टि हैं।
अंधे कहैं सुर मुनि सबी उसके करम पर रुष्ट हैं।
तन त्यागि नर्क में बास ले जम ठोकते कहैं भृष्ट है।
हर समय रोते फटकते घोर निसि अति कष्ट है।६।

पदः- चोर तन में बलबलाते मन भि उनका दोस्त है।
अंधे कहैं मानत नहीं हर वक्त नोचत गोस्त है।
दिल्लगी उनके लिये संकट में बाझे प्राण हैं।
अंधे कहैं सतगुरु करै हरि को भजै कल्याण है।४।

शेरः- खाने पीने सोने का तो नारि नर को ज्ञान है।
दाया धरम हरि भजन में कहते बिहंसि अज्ञान है।
यह जबरदस्ती की बातें पकड़े सान औ मान है।
अंधे कहैं देखत मरत दिन चारि के मेहमान हैं।४।

पदः- जब पाप सारे नाश हों, तब दर्श हरि के पास हों।
जब एक हरि की आस हो, तब तो वह सच्चा दास हो।
जब नाम लय परकाश हो, अंधे कहैं घर बास हो।
सतगुरु के ढिग जब पास हो, छूटै गरभ की फांस हो।४।

दोहाः- जै देवी जै देव सब जै ऋषि मुनि जै भक्त।
अंधे कह जै चर अचर राम रमे सब जक्त।।

शेरः- बैर को निर्बैर करना भक्त ही का काम है।
अंधे कहैं जै कार उसका दोनो दिशि में नाम है।।

पदः- जो तुमरी करै बुराई। तुम वाकी करो भलाई।
अंधे कहैं जग जस छाई। हरि पुर में पहुँचौ जाई।

या की है यही दवाई। जो खाई सो सुख पाई।
नहिं बार बार चकराई। दुख की संग लागी काई।४।

शेरः- भगवान में सब वस्तु है सब वस्तु में भगवान हैं।
अंधे कहैं जानै वही जिनके नैन औ कान हैं।।

पदः- घर में चोर करत फरसाद।
ऐसे त्यौकर मन कियो नौकर क्या इनको मिलता है स्वाद।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानै सब होवैं बरबाद।
सुर मुनि मिलैं छकै घट अमृत बाजै अनहद नाद।४।

राम सिया हर दम रहैं सन्मुख चढ़ि जावै उन्माद।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि पाय होय उस्ताद।
अंधे कहैं अंत निज पुर हो छूटै बाद बिबाद।
जियतै करतल करिये भक्तौं तन की क्या तादाद।८।

पदः- मुदित मन उसका है भक्तौं लखै सिय राम को हरदम।
छटा सिंगार छबि अनुपम कहैं अंधे कथें क्या हम।
नाम की धुनि जो होती है सुनै हर शै से क्या सम सम।
तत्व पाँचौं के रंग दरसैं लम्बे चौड़े गोल चम चम।
करै सतगुरु तरै जियतै शांत ह्वै कर रहै नम नम।
देव मुनि आय कर भेटैं रहै जब तक जगत तन दम।६।

पदः- पूजन भजन देखाऊ करते दया धर्म पर पग नहिं धरते।
ऐसे कोमल बचन उच्चरते सुनि सुनि प्रानी चरनन परते।
भव चक्कर से नेक न डरते पढ़ि सुनि सुन्दर भासन करते।
अंधे कहैं लोभ में बहते सतगुरु करिके नाम न गहते।४।

दोहाः- ऐसी नकल से बगल ह्वै नाम जपै बनि दीन।
अंधे कहैं जियतै तरै नाम रूप लव लीन।।

दोहाः- झापड़ मारो नाम का लापर जावैं भागि।
अंधे कह सतगुरु बचन जियति जाव अब जागि।

पदः- मन की मानी है जबानी ज़िंदगानी नाश हो।
पाप घानी में है सानी नहिं अघानी आश हो।

सतगुरु ज्ञानी को ले जानी तब तो ध्यानी पास हो।
गुन लो बानी अंधे ठानी कुल की कानी दास हो।४।

शेरः- जो उपासना में उपासा रहेता।
अंधे कहैं वह जगत में बहेता।।

पदः- सब शक्ति मान हैं राम कृष्ण श्री बिष्णु कोइ निर्गुन कहते।
अंधे कहैं नाना खेल करैं भक्तन से बिलग नहीं रहते।
सर्गुण लीला मुद मंगल है सुर मुनि सब भाव यही कहते।
जिनको यह आनन्द प्राप्त भयो वे दूसर बात नहीं चहते।
पढ़ि सुनि के ताना तान रहे सतगुरु करि नाम नहीं गहते।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधी हो तन त्यागि जक्त फिरि नहिं ढहते।६।

दोहाः- दया धर्म नहिं जानते करते पूजा पाठ।
अंधे कह बेकार है जैसे सरिगे काठ।।

पदः- फंसि गयो जीव झंझट में मन चोर करत नित झगड़ा।
सतगुरु बिना मिलै नहिं मारग शेर से बनिगो छगड़ा।
पढ़ि सुनि लिखि सुर मुनि की बानी कबहूँ नेक न पकड़ा।
अंधे कहैं अंत जम बांधैं रहि रहि देवैं रगड़ा।४।

पदः- मति करना गुलामी गुलामों के संग।
वो तो हैं अंधे औ बहिरे बोलत बचन भुजंग।
वाकी दारु शान्ति चुप्य है बिष सब होवै भंग।
अंधे कहैं शत्रु औ मित्र में समता रहै सो चंग।४।

पदः- अपिमान को सह कर के सनमान जो करै।
अंधे कहैं सच्चा भगत जियतै में वह तरै।।

दोहाः- रीति बड़ेन की है यही करै जो कोइ अनरीति।
अंधे कह निज रंग में बोरि बनावै मीत।।

पदः- पर पतनी की संगति करि के साधक ह्वै जाते चापर।
बिषय बसना चोर औ मनुवां हर दम मुख दें झापर।
माया अपने रंग ढंग से पाप के देती है पापर।
अंधे कहैं दोऊ दिशि थू थू सुर मुनि बोलैं हा लापर।४।

पदः- सतगुरु से सुमिरन बिधि जानै तन मन प्रेम लगै वापर।
वाकी दोउ दिसि जै जै होवै अजा न हेरि सकै तापर।
बड़ी भाग्य से यह पद पावै राम सिया खुश हों जा पर।
अंधे कहैं चेति सब भक्तौं जियति तरो नहि हो लापर।४।

पदः- महात्मन में जो हो प्रीती तो फिर अब क्या भजन करना।
कहैं अंधे मिला मन जब जियत ही हो गया तरना।
भक्त भगवन्त एकै है वेद युग देव मुनि बरना।
नैन औ श्रवन खुल जावें गहै सतगुरु कि जो शरना।४।

पदः- बे दामन बिकता राम नाम कोई गाहक नहीं दिखाय।
तुलसी दास कही ये बानी अंधे के मन भाय।
है अनमोल अतौल नाम धन जो कोई सकै बचाय।
तब तो हर दम मस्त रहै वह सुनत लखत बनि आय।
ध्यान प्रकाश समाधि धुनी क्या हर शै से भन्नाय।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख दें छबि छाय।६।

अमृत पियै बजै घट अनहद सुर मुनि भेंटैं धाय।
नागिन जगै चक्र षट बेधैं सातों कमल फुलाय।
एक सहस अरतालिस तरह की स्वरन ते महक उड़ाय।
फरकैं अधर रोम सब पुलकैं कंठ बोलि नहिं जाय।
तन कम्पाय मान सब होवै, नैन नीर झरि लाय।
मस्ती छाय गई शिर हालै तन, तजि निज घर पाय।१२।

पदः- सतगुरु करि सुमिरो राम नाम, छोड़ो यह मेरा तेरा है।
या में तो माया खेल करे, या से नहिं होत निबेरा है।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधि रूप, पावे नहिं जग में फेरा है।
अंधे कहैं भक्तों चेत करो, यह चन्द दिनों का डेरा है।४।

शेरः बखेड़ा करने वाले जो तुम्हारे तन में घुसरे हैं।
कहैं अंधे करो सुमिरन तो आपै आप सुधरे हैं।
लगी जिसके है दिल में यह हमारे हैं बहुत चेला।
कहैं अंधे वह है जकड़ा दोऊ दिशि ते गया बेला।४।

दोहाः- दुध बरिया हरि नाम की सतगुरु करि जो खाय।
अन्धे कह जियतै तरा सुर मुनि करत बड़ाय।

पदः- जानो राम नाम की खाँसी।
सतगुरु करो भेद तब पावो, बने बैठ दुख राशी।
हर शै से भन्नाय रही है, रोम रोम सुनि हांसी।
सारे चोरन मारि निकारै, घर में लेय तलाशी।४।

मन जब मेल करै तुम्हरे सँग कौन सकै फिर गांशी।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि जो रहते अविनाशी।
हर दम सब दिशि दरशन देवैं और न दूजा भाशी।
अन्धे कहैं अन्त निज पुर हो छूट गई चौरासी।८।

दोहाः- राम नाम को जानि कै, सतगुरु ह्वैगे राम।
अन्धे कह सुमिरन करो, है अमोल बे दाम।
सतगुरु की महिमा बड़ी, को कर सकत बखान।
अन्धे कह वे तो भये, नाम जानि भगवान।४।

पदः- जानकी जानतीं राम के नाम को।
राम जी जानते जानकी नाम को।।
करते अन्धे बिनय प्राण के प्राण को।
करके सतगुरु सिखा ज्ञान विज्ञान को।२।

दोहाः- राम नाम की निव पड़ी, महल भयो तैयार।
अन्धे कह ता में बसे, राव रँक बट पार।
जब तक तन में सांस है, तब तक सबकी आश।
अन्धे कह जस भै बिलग, तब सब कहते लाश।४।

चौबोलाः तब सब कहते लाश जाय मरघट में फूँकैं।
जरै मांस औ हाँड़ चिराँइधि आवै थूकैं।
दूर खड़े ह्वैं जाँय उठत तहाँ अगिन बबूकैं।
करै कपार की क्रिया बाँस कोंचैं नहिं चूकैं।
निज निज घर फिर जाँय मनै आवै सो पूकैं।
हैं पाले शान औ मान, बैन कूकर सम भूकैं।६।

सतगुरु करि हरि भजै, कहैं अन्धे बनि मूकैं।
ताके सन्मुख श्याम हर समय मुरली कूकैं।
ध्यान धुनी परकाश दशालय में चलि लूकैं।
तीनों गुण ते परे कर्म दोनों गहि बूकैं।
अन्त जांय निज धाम बहुरि जग में नहिं भूकैं।
हरि सुमिरन बिन हाय हाय कर नर्क में हूँकैं।१२।

पदः- हैं कसाई पांच तन में घात करि के मारते।
अंधे कहैं भक्तौं कठिन, बचना है इनकी वार ते।
सतगुरु करै मारै इन्हैं, चट शान्ति की तलवार ते।
धुनि ध्यान लय परकाश हो, मिलि ले सिया सरकार ते।४।

हर समय है तन मन मगन, क्या छटा छबि सिंगार ते।
दशा तुरियातीत भई, पितु मातु के दीदार ते।
तन छोड़ अवध में बास लें फिर जग में पग नहिं धारते।
यह कुल की अपने रीति है, जियतै तरैं औ तारते।८।

पदः- सिपाही उसको कहते हैं, लड़ै सन्मुख न पग टारै।
दाँव उसको देय पहिले हांक देकर के फेरि मारै।
मरै जो सामने कोई, चलै हरि धाम पग धारै।
अस्त्र गिरि जाय धरनी में, हाथ उस पर अगर डारै।
करै वह नर्क में बासा, देव मुनि उसको धिक्कारैं।
सहै दुख हर समय नाना, गिरै फटकै औ चिंघारैं।६।

युद्ध जो धर्म का करते, भला वै किस तरह हारैं।
कहैं अंधे बिजय का हार, हरि उनके गले डारैं।८।

शेरः- बकाया गर्भ के ऋण का मिटा दे सो भगत हरि का।
कहैं अंधे नहीं तो वह रहेगा नहिं किसी दरि का।।

पदः- सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि गिरिजा शंकर का दरबार।
सतगुरु करो भजन बिधि जानो, हर दम हो दीदार।
सुर मुनि सब तब जै जै बोलैं, जियति होहु भव पार।
नाम कि धुनि परकाश समाधी, बिधि गति देवै टार।४।

कमल चक्र शिव शक्ती जागै, अनहद की गुमकार।
अमृत पान करो मन माना, गगन ते जारी धार।
अन्धे कहैं अन्त निज पुर हो, टूटै जग का तार।
सबके हित यह पद हम गाया पढ़ि सुनि लो उर धार।८।

पदः- हरि नैन सैन क्या बैन पैन उर ऐन हमारे कीन्हे।
अद्‌भुत सरूप भूपन के भूप अंधे कहैं हम हंसि चीन्हे।
दोउ कर उठाय सीने लगाय गोदी बिठाय मोहिं लीन्हे।
सतगुरु के लाल सुन्दर बिशाल नहिं होय काल मन दीन्हे।४।

पदः- जो भक्त भजन में माता, वह बहुरि न जग में आता।
घर घर में पीता खाता, नहीं किसी से रखता नाता।
विश्वास से जो ढिग जाता, वह दर्शन का फल पाता।
जो उनसे प्रेम लगाता, सो वैसा ही ह्वै जाता।
उसके सिर प्रभु का छाता, वह आनन्द का है दाता।
पढ़ि सुनि गुनि समुझै बाता, अंधे कहैं सो मम भ्राता।६।

चौपाईः- पढ़ी भागवत राम नाम की। सतगुरु करिके बिना दाम की।
सनमुख झांकी सियाराम की। अंधे कहे ते अवध धाम की।।

पदः- जिस भगत की वासनायें मन से हट कर रो रहीं।
वह तो सीता राम की गोदी में जा कर सो रहीं।
चूमते चुचकारते फिर गुद गुदाई हो रही।
अंधे कहैं सतगुरु करै सच्चा बनै तब तो रही।४।

पदः- सतगुरु करि बैठो साधन में, दुई बजे रात्रि से जागन में।
मन नाम के ऊपर तागन में, सुख शांति मिलै अनुरागन में।
देखौ हरि घर बन बागन में, बनि गयो भक्त बे रागन में।
अन्धे कहैं अवध के आँगन में, बसि गयो न आवत रागन में।४।

पदः- सतगुरु करि जपो नाम जतन ते, भेंट होय सिया राम लखन ते।
अन्धे कह मन कर्म बचन ते, लागि जाव बचि जाव पतन ते।
क्या करने यहँ आये वतन ते, समुझि के निबको जनम मरन ते।
तुलसी दास के शब्द रसन ते, भरे परे मानस में कथन ते।

हर दम रहते जीव मगन ते, लखत छटा अनमोल दृगन ते।
जियतै में भे भक्त शरन ते, राम नाम धुनि सुनत करन ते।६।

पदः- बहुत से पद हैं अनुभव के, पढ़ै जिनके जो हो गौं के।
जियति वे हैं तरे भौ के, जिन्हें शंका न हो जौ के।
ये तन तो एक दिन सौ के, जाय अगनी में धरि धौं के।
छोड़ि जे द्वार गे नौ के, वही सिय राम के भौं के।४।

फिरत जे जन यहां चौंके, उन्हीं के घर परै रौं के।
पाप के फैलि हैं बौ के, काम नहिं देय कोई मौके।
आय जम बांधि लें हौं के, कहैं अन्धे नरक छौं के।
हाय रे हाय के झोंके, भये मल मूत्र के खौं के।८।

पदः- राम नाम जपु राम नाम जपु राम नाम सुखदाई है रे।
सतगुरु से सुमिरन बिधि लै के, सूरति शब्द मिलाई है रे।
ध्यान धुनी परकाश समाधी, बिधि कर लेख मिटाई है रे।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख में छबि छाई है रे।
उमा महेश्वर दिब्य भोग दें नित-प्रति खात अघाई है रे।
सुर मुनि सब ठौरे दें दरशन, सब के शीश नवाई है रे।६।

अमृत पिये सुनै घट अनहद बाजत बिमल बधाई है रे।
राग रागिनी नाच गान करैं, देखत ही बनि आई है रे।
नागिनी जगै चक्र षट बेधैं, सातों कमल फुलाई है रे।
उड़ै तरंग फैलि जाय सब दिशि, मुख से बोलि न जाई है रे।
जियतै में जो तै कर लेवै, वाकी वहां समाई है रे।
अन्धे कहैं त्यागि तन अवध में, बैठि जाय स्थाई हे रे।१२।

पदः- बिना सुमिरन के सुःख तन से मिलै कुछ भी नहीं।
चेति मुरशिद को करो अबहीं दुःख कुछ भी नहीं।
नाम धुनि नूर समाधी व रूप सन्मुख हो।
कर्म की रेख़ मिटी बाकी रहा कुछ भी नहीं।
कहते अन्धे हैं यही सब से बड़ा है सुमिरन।
देव मुनि हम से कहा हमने कहा कुछ भी नहीं।६।

पदः- तन्मयता में सुधि बुधि का कहीं पता नहीं रह जाता है।
कितनौ मार पड़ै तन ऊपर नेकहु नहीं बिसाता है।
मन गुण प्राण जीव औ आतम नागिन संग हरि पाता है।
अन्धे कहैं भया मुद मंगल बरनत नहीं सेराता है।४।

पदः- मिलौ तो सतगुरु से चलि के भक्तौं
बता दें तुमको अन्मोल बतियां।
धुनि नाम लय तेज रूप पाकर
कटा लो जियतै करम की गतियां।
सुनो घट अनहद पिओ अमी रस
मिलैं नित सुर मुनि लगा के छतियां।
कहैं यह अन्धे सुफ़ल हो नर तन
सुधर गईं जब हैं मन कि मतियां।४।

पदः- सुर मुनि जुग वेद पुकार यही भजि लेहु रकार मकार सही।
निर्गुण निराकार अविकार यही भजु लेहु रकार मकार सही।
सब में सब से न्यार यही भजु लेहु रकार मकार सही।
है अकथ अलेख अपार यही भजु लेहु रकार मकार सही।
है अगम अथाह बल दार यही भजु लेहु रकार मकार सही।
सर्गुण सब का आधार यही भजु लेहु रकार मकार सही।६।
सब मंत्रों का पतवार यही भजु लेहु रकार मकार सही।
सब पाप करत है क्षार यही भजु लेहु रकार मकार सही।
सर्वत्र ते हो झुनकार यही भजु लेहु रकार मकार सही।
बिधि लेख को मेटन हार यही भजु लेहु रकार मकार सही।
अन्मोल अमर ज़रदार यही भजु लेहु रकार मकार सही।
लय ध्यान तेज औतार यही भजु लेहु रकार मकार सही।१२।
नागिनी जगावन हार यही भजु लेहु रकार मकार सही।
सब चक्र कमल सुधवार यही भजु लेहु रकार मकार सही।
उत्पति पालन संहार यही भजु लेहु रकार मकार सही।
सिया राम दरश का तार यही भजु लेहु रकार मकार सही।
साकेत में देत बिठार यही भजु लेहु रकार मकार सही।
सब जोगन में सरदार यही भजु लेहु रकार मकार सही।१८।

बिन प्रेम के है दुशवार यही भजु लेहु रकार मकार सही।
सोऽहं रंकार ओंकार यही भजु लेहु रकार मकार सही।
गुनिये प्राणन ते प्यार यही भजु लेहु रकार मकार सही।
सब सुःखों का है सार यही भजु लेहु रकार मकार सही।
सतगुरु करि लेहु सुतार यही भजु लेहु रकार मकार सही।
अंधे कहैं निज कुल कार यही भजु लेहु रकार मकार सही।२४।

दोहाः- परस्वारथ में काम दें बहु जीवन के चाम।
अंधे कह बेकार है सुमिरन बिन नर चाम।।

दोहाः- अपने तन से किसी को देय न कबहूँ कष्ट।
अंधे कह सतगुरु बचन सो नहिं होवै भ्रष्ट।।

चौबौलाः- सो नहिं होवै भ्रष्ट शांति हों तन के तच्छक।
सन्मुख सीता राम हमेशा रहते रच्छक।
माया जम गण काल मृत्यु हारे जो भच्छक।
अंधे कहैं सुनाय भजन बिन कोई न रच्छक।४।

चौपाईः- हरि सुमिरन के बहुत हैं रस्ता। एक को साधो सब हों सस्ता।
सुर मुनि नित्य पवावैं खस्ता। हर दम राम सिया लखि हंसता।
जियतै खोलि के देखो बस्ता। यह तन ना जाने कब नस्ता।
सतगुरु जा को देवैं मसता। अंधे कहैं कटै जग गस्ता।४।

पदः- वाक्य ज्ञान है प्राण बिहीन। अमल करै सो हो परबीन।।
राम नाम में मन रमि जाय। अंधे कहैं सो निज पुर जाय।४।

पदः- अंतह करन भयो नहिं ठीक। पढ़ना सुनना लिखना फीक।।
निकसि गई जब कपट की हीक। अंधे कहैं दोऊ दिसि नीक।४।

पदः- जै सरस्वती शारदा माई।
सर्व गुणन की आप हो आगर, सुर मुनि वेदन गाई।
मम मन हरि सुमिरन में लागै यह आशिष दीजै हर्षाई।
अंधे शाह कि अर्ज यही है बार बार चरनन शिर नाई।४।

पदः- सतगुरु करि हरि को भजो लखौ हरि बोलैं।
सब चोर शांत ह्वै जांय फेरि नहिं छोलैं।

परकास दसा लय होय नाम धुनि खोलैं।
यह सीख दीन बजरंग शंभु अनमोलैं।४।

जे जानि छानि घट लेंय जक्त नहिं डोलैं।
सुर मुनि नित जै जै करैं लिहे संग टोलैं।
अंधे कह धनि धनि भक्त जौन यहि गोलैं ।
दोनों दिसि उनके जस की बाजैं ढोलैं।८।

पदः- मुख को देखत लै कर दर्पन।
आँखी कान खुलैं नहिं जब तक होवै काल को चर्बन।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानै तन मन करके अर्पन।
अन्धे कहैं जियति तरि जावै फेरि न झूलै गर्भन।४।

पदः- अन्धे कहैं जात तन बयसै। सतगुरु करौ मिटै भव रैसै।।
वाक्य ज्ञान से तरिहौ कैसै। रह जइहौ जैसे के तैसै।।
पढ़ि सुनि भाषन करते कैसे। बोलत तोता मैना जैसे।।
यहां तो डरते थोड़ी सै से। छिपिहौ कहां जमन की भय से।८।

पदः- सतगुरु करि के पढ़ो वकालत पेसी नओ जीति लो भाय।
चित्र गुप्त औ धर्म राज लखि कर जोरैं उठि धाय।
सुर मुनि मिलैं कहैं बलिहारी फूलन की झरि लाय।
अमृत पिओ सुनो घट अनहद बाजत बिमल बधाय।
नागिन जगै चक्र सब नाचैं सातौं कमल फुलाय।५।

गमकैं उड़ैं मस्त हो तन मन मुख से बोल न आय।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख दें छबि छाय।
अन्त त्यागि तन चढ़ि सिंहासन निज पुर पहुँचौ जाय।
अंधे कहैं रूप रंग हरि सम आवागमन नशाय।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि कर्मन देय जलाय।१०।

दोहाः- नारायण संग बरै जौन कोइ सात बर्ष की लड़की।
अंधे कहैं चोर औ माया नेक सकत नहिं कड़की।
बारह बर्ष की आयु में कन्या का किह्यो ब्याह।
अंधे कह सतगुरु कृपा पायो सुःख अथाह।४।

पदः- जो पापिन में सिरताज भया सो देखा सिद्ध फ़कीर रहा।
सतगुरु की वाक्य को मानि लीन सारे चोरन गहि चीर रहा।
धुनि नाम प्रकास समाधि पाय हर दम सिया राम के तीर रहा।
कहैं अंध शाह तन छोड़ि गया धनि मातु पिता का बीर रहा।४।

पदः- मौत खड़ी तेरे सर पर नित दिन अपने वह गिनती है।
चोरन को संगै दीन लगा सब सुकृत तिहारे छिनती है।
तन मन से सतगुरु चरन शीश धरि करत जौन जन बिनती हैं।
कहैं अंध शाह सो जियति मुक्त तब भक्तन में भई गिनती है।४।

पदः- गुरु ज्ञान से सान मान छूटै तब शांति दीनता आइ जाय।
धुनि नाम प्रकास समाधी हो सिय राम के संग बतलाय जाय।
सुर मुनि सब जै जै कार करैं सिर कर परसैं उर में लगाय।
कहैं अंध शाह बनि कै गरीब तन त्यागि गयो साकेत पाय।४।

पदः- जब तप धन प्राप्त भया भक्तौं तब आलस नींद भगे तन से।
हर दम उस रंग में मस्त रहै अंधे कहैं मेल भया मन से।
धुनि नाम रूप लै तेज पाय जियतै जीते सब चोरन से।
तन छोड़ि के राम के धाम बसै जग त्यागि गये
रज की कन से।४।

पदः- प्रात समै बोलत भुज कैटा पच्छी सुनिये ठाकुर जी।
अंधे कहै जे चेतत नाहीं ते मरि ह्वै हैं भाकुर जी।।

पदः- बहु गुजरि गये औ गुजरि रहै जग जन्म लेत फिरि गुजरत हैं।
कहैं अंध शाह सतगुरु करते जग जाल से सोई उबरत हैं।
धुनि नाम प्रकास समाधि मिली बिधि लेख भाल से उजरत हैं।
नागिनि जागी सब चक्र चलैं सब कमल उलटि के सुधरत हैं।४।

पदः- पढ़ बेदांत बेदांती बाजत मन में भरी हैं भ्रांती।
अंधे कहैं बिना साधन के मिलत नहीं सुख शांती।।

पदः- बर जोग्य हुई तन पा अब तो चित चेति के भक्तौं ताहि बरौ।
कह अंध शाह सतगुरु हेरौ चट पैरन पर निज शीश धरौ।

धुनि नाम प्रकास समाधी हो सन्मुख में पीतम प्यार करौ।
तन त्यागि चलौ ससुरारि रहौ फिरि नैहर में पग काहे धरौ।४।

दोहाः- अपन भला सब का भला गला मला नहिं जाय।
अंधे कह हरि का लला भला छला किमि जाय।।

पदः- बनिये राम नाम जपि लाटि।
सतगुरु से सब भेद जान लो कर्मन डारो काटि।
ध्यान प्रकाश समाधि धुनी औ रूप सामने साटि।
सुर मुनि मिलैं सुनो घट अनहद अमृत लो नित चाटि।
नागिन जगै चक्र सब बेधैं कमलन लेहु उलाटि।
अंधे कहैं अन्त निज पुर हो जग छूटै जिमि माटि।६।

दोहाः- सीखि लीन तेहरी कला हला पला हरखाय।
अंधे कह करमन दला ढ़ला गर्भ नहिं आय।।

पदः- जब ब्याहि गई तन पा भक्तों तब तो सुख शांति में मस्त भई।
धुनि नाम प्रकास समाधि मिली सारे चोरन गति अस्त भई।
सन्मुख में श्याम प्रिया छाये बिधि लेख कि रेख भी पस्त भई।
कहैं अंध शाह तन त्यागि चली ससुरारि बसी नित नित्य नई।४।

दोहाः- सतगुरु करि करमन तला बला नाम का पाय।
अंधे कह जियतै जला हला सत्य पुर जाय।।

पदः- लटकौ राम नाम की फांसी।
सतगुरु से सब भेद जानि लो तब न होयगी हांसी।
ध्यान प्रकास समाधि धुनी हो सन्मुख में अविनासी।
अमृत पियो सुनो घट अनहद सुर मुनि भेटैं गांसी।
नागिनि जगै चक्र षट नाचैं सातौं कमल बिकासी।
अंधे कहैं अंत निज पुर में बैठो बनि सुखरासी।६।

सोरठाः- तेज समाधि को पाय सनमुख सिय दसरथ लला।
अंधे कह भन्नाय नाम कि धुनि तेहरी कला।।

पदः- तन जरि के ह्वै गो खाक पाक किमि होय नाम नहिं जाने।
सब संग के साथी यहीं रहे उनको वहँ को पहिचाने।

नर्क में कष्ट हर समय सहेते हाय हाय चिल्लाने।
कहैं अंध शाह सतगुरु के लाल ते हरि के संग बतलाने।४।

पदः- पढ़े सुने का ज्ञान है मुरदा जिन्दा ह्वैकर कथते।
अंधे कहैं सार नहिं पावैं विरथा पानी मथते।।

पदः- अनरीति से प्रीति भई जिसकी परतीति गई सुख शांति कहां।
अंधे कहैं नर्क में फर्क नहीं मन गर्क सदा दुख भ्रांति महाँ।
मुख शब्द कढ़त है फूट फूट औ तर्क करत हंसि खूब अहा।
सतगुरु करि सुमिरन कीन जौन सो दोनो दिसि प्रभू पास रहा।४।

दोहाः- अंधे कह ते शाह भे सतगुरु जिनके साह।
नाम कि धुनि परकास लै सनमुख साहन साह।।

पदः- अविद्या जिसकी भागी है। वही ज्ञानी विरागी है।।
कहैं अंधे अभागी है। जो हरि का नहिं अनुरागी है।।

पदः- जग शौक से पेट भरेगो नहीं झूठे पचते फिरते इसमें।
तन मन धन धर्म का नाश हुआ क्या सुःख मिला कहिये जिसमें।
आखिर में नर्क पड़ो चल के तहँ एकौ पल कल नहिं जिसमें।
अंधे कहैं सतगुरु करि सुमिरौ जयकार होय दोनों दिसि में।४।

शेरः- मैं तैं नहीं जहां पर। मिलते प्रभु वहां पर।
अंधे कहैं कहां पर। देखा सभी जहां पर।।

पदः- सुरति हरि चरन लागी है। वही जानो बड़भागी है।
कहैं अंधे वो त्यागी है जो नहि चेतै वो दागी है।।

पदः- मैं खो गया दुख धो गया सुख हो गया लच्चा रहा।
सतगुरु से सुमिरन जान कै पितु मातु का सच्चा रहा।
जियतै में जिसने तय किया हरि गोद का बच्चा रहा।
अंधे कहैं जो चूकिगा सो जान लो कच्चा रहा।४।

पदः- सतगुरु से सुमिरन जान कै जो मन को नाम पै ठांस ली।
अंधे कहैं सो धन्य है जानो वह हरि की आस ली।
चोर सारे भे किनारे नेकहुँ नहिं सांस ली।

ध्यान धुनि परकास लय पा कर्म की गति चांस ली।
सिया राम की अद्भुत छटा सन्मुख में आकर गांस ली।
त्यागि तन निज पुर गई तहँ अटल ह्वै कर बास ली।६।

दोहाः- क्रोध कपट को त्यागि के दया धर्म करि लेय।
अंधे कह सो धन्य है दोनों दिसि जस लेय।
दुष्टन संग नेकी करै उनकी मति बौरान।
अंधे कह वह तो पड़ैं अन्त नर्क की कान।
सब में हरि को जान ले जीवन मुक्त कहाय।
अंधे कह तन त्यागि के राम रूप बनि जाय।६।

चौपाईः- राम नाम की महिमा भक्तौं कोटिन में कोइ पावै।
शारद शेश महेश वेद युग अंधे कह नित ध्यावैं।
सतगुरु के ढिग भेद जानि कै तन मन प्रेम में तावै।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि बिधि की लेख मिटावै।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख में छबि छावैं।५।

नागिनि जगै चक्र षट बेधैं सातौं कमल फुलावै।
अमृत पियै सुनै घट अनहद सुर मुनि संग बतलावै।
सब लोकन से खबर तार में छिन छिन वा ढिग आवै।
दरपन दिब्य खुला सब देखै रहि रहि के मुस्क्यावै।
अन्त त्यागि तन अचल धाम ले राम रूप ह्वै जावै।१०।

दोहाः- बद की संगति जो करै लागि अपधुआ जाय।
अंधे कह नाकिस भयो मन संग पाप कमाय।।

पदः- श्री सतगुरु कृपा भव पार हूँ। सब भक्तों का ताबेदार हूँ।।
षट झाँकिन करत दीदार हूँ। नाम की धुनि सुनत एकतार हूँ।।
सब सुर मुनि क अति ही प्यार हूँ। संग करता खूब खिलवार हूँ।।
नित जाता नित्य दरबार हूँ। जाति धुनियां की अंध गंवार हूँ।८।

पदः- पढ़े सुने औ लिखे से भक्तौ बोध नहीं हो सकता है।
अंधे कहैं करै जो साधन सो जियतै जग जगता है।।

पदः- उपदेशन में उपदेश बड़ा जो खड़ा न हुआ सो पड़ा ही रहा।
कहैं अंध शाह सतगुरु की दया जो कड़ा न हुआ सो बड़ा ही रहा।

है तिरगुण का यह खेल कठिन जो जड़ा न हुआ सो सड़ा ही रहा।
सुमिरन बिन कौन गया घर को जो अंड़ा न हुआ सो छंड़ा ही रहा।४।

पदः- कहैं अंध शाह सतगुरु की शरण जो लढ़ा नहीं वह गढ़ा हुआ।
है वाक्य ज्ञान अभिमान सना जो चढ़ा नहीं वह पढ़ा हुआ।
यह नाटक हरि का है बिचित्र जो मढ़ा नहीं वह बढ़ा हुआ।
या से भक्तों प्रभु नाम जपो जो कढ़ा नहीं जम ढढ़ा हुआ।४।

दोहाः- दर्द दूसरे की नहीं समझें नर औ बाम।
अंधे कह ते हैं पशू पहिरे मानुष चाम।
मन शुभ कारज में लगा जीव का भा कल्यान।
अंधे कह सुर मुनि बचन वेद शास्त्र परमाण।
पाप कर्म में मन रमा जीव नर्क को जाय।
अंधे कह सुर मुनि बचन वेद शास्त्र बतलाय।६।

पदः- मन में बुराई है भरी तन से दुराई हो नहीं।
अंधे कहैं इस सखुन को पढ़ि गुणि के माने को नहीं।
दाया धरम के आचरण जिस में न होंगे सो नहीं।
जग जाल से छूटैगा किमि है श्रवण नैना तो नहीं।४।

पदः- परधी पड़ना है बड़ा पाप कोइ अपना किसी से दुःख कहै।
कहैं अंध शाह यह जग का खेल कोइ तन ते नित भोग चहै।
साधक के लिये यह ठीक नहीं तन त्यागि के जग में फेरि ढहै।
जे मान लें सतगुरु कि बानि ते आदि अंत में सुःख लहैं।४।

पदः- न हो मुचिलका न हो ज़मानत जमा अमानत न नाम की है।
कहैं यह अंधे करम मुताबिक़ सज़ा नरक में बसु-जाम की है।
बग़ैर सुमिरन के मन की नारी मरैगी कैसे जो बद काम की है।
करो तो सतगुरु पता लगै तब मिली यह काया शुभ चाम की है।
धुनि ध्यान लय तेज हो चमाचम सन्मुख में झांकी सिया राम की है।
तन त्यागि करके चलै जहां से जनम कि भूमी सुख धाम की है।६।

पदः- सतगुरु से सुमिरन बिधि जानि कै लखौ नुमाइसि नित्य नई।
ध्वनि परकास दसा लै होवै कर्म रेख को मेटि दई।

सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख झाँकी आय छई।
अंधे कहैं अन्त में निज पुर हो दोऊ दिसि जै जै कार भई।४।

पदः- सतगुरु तै करि मंत्र को लै कर
पाप कि छै कर बंस कि सै कर।
गूंगे ह्वै कर अंधे ह्वै कर
बहिरे होकर कर्म बिजै कर।
दया को गहि कर धर्म कि जै कर
मन संग लै कर नाम पै दै कर।
नेक न भय कर शर्म कि कै कर
अंध कि सुनि कर तन तजि चल घर।४।

दोहाः- दस टेशन तन में बनीं कैसे हो असवार।
अंधे कह सतगुरु बिना टिकट मिलव दुशवार।।

पदः- ध्रू तारा सुखमन में रहेता जोगिराज शिव के पग गहेता।
भक्तन हित अमृत को ढहेता जे पीवैं उनको खुब चहेता।
दुःख सुःख को सम करि रहेता सो जानो फिरि जक्त न बहेता।
अंधे कहैं बचन पे गहेता सो तन तजि हरि पास में रहेता।४।

पदः- मनमति कुमति कि संगति कीन्हा।
सतगुरु से ले जानिं सुमति गति चढ़िये सातौं जीना।
तेज समाधि नाम धुनि होवे र रंकार परवीना।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सिंहासन आसीना।४।

हर दम सन्मुख दरसन देवैं सुर मुनि कहैं कुलीना।
अनहद सुनौ बन्द नहिं होवै अमृत का हो पीना।
नागिन चक्र कमल सब चेतैं महक उड़ैं क्या झीना।
अंधे कहैं त्यागि तन चलिये प्रभु गृह बैठक दीना।८।

पदः- मुनाफ़ा नाम में भारी जपै जो मन लगा करके।
करै सतगुरु बिधी पावै चोर तन से भगा करके।
देव मुनि आय कर भेटैं सुजस श्री हरि का गा करके।
रूप षट सामने राजैं तुम्हैं मानै सगा करके।४।

सुनो अनहद पियो अमृत गगन से नित मंगा करके।
उठै नागिनि सुधैं चक्कर कमल सब को जगा करके।
जियते निर्बैर निर्भय हो कर्म दोनो दगा करके।
कहैं अन्धे चलौ तन तजि भक्त निज रंग रंगा करके।८।

पदः- जग जाल से फुरसत मिली नहीं तब भजन कहां वह ठीक भया।
मन चोर बासना संग लिये दोनों दिसि ते हा फीक भया।
सुर मुनि सब भक्त घिना करते मानो खानी की पीक भया।
अंधे कहैं तन तजि गया नर्क हौजन में पड़ि के हीक भया।४।

दोहाः- पढ़त लिखत औ सुनत हैं गुनत धुनत हैं नाहिं।
अंधे कह कैसे तरैं नीक कहौ रिसियाहिं।
सतगुरु से जप भेद लै तन मन ते जुटि जाहिं।
अंधे कह जियतै तरैं फेरि न जग चकराहिं।४।

पदः- मनुवाँ बड़ा बवाली बनिगा।
चोरन के संग पाप सिखत नित ऐसा उनको हिलिगा।
जीव की नेकौं बस न चलत है दुख चिंता में तलिगा।
अंधे कहैं मिलै जब सतगुरु तब संगै में मिलिगा।४।

पदः- अशुभ कामौं के करने में यह मन दुशमन बड़ा चटका।
इसी से जीव को दुख है पड़ा भव जाल में भटका।
करै सतगुरु भजै ढँग से मिलै तब नाम का लटका।
ध्यान धुनि तेज लै होवै फ़टै तब भर्म का फटका।
मिलैं सुर मुनि सुनै अनहद पियै अमृत न कोइ खटका।५।
जगै नागिन नचैं चक्कर कमल सब फूलि हों टटका।
हर समय सामने देखो रूप क्या साँवरे नट का।
अधर पै है धरे मुरली बिहंसि के भौंह दे मटका।
कहत नहिं बन पड़ै भक्तों महा सुख का लगै घटका।
कहैं अंधे चलै तन तजि गर्भ में जाय नहिं पटका।१०।

दोहाः- गुञ्झा रहस जाना चहौ सतगुरु से लो ज्ञान।
अंधे कह मन बस करो तब होवै कल्यान।।

पदः- भला मानुष जगत में सो भलाई में सदा रहेता।
कहैं अंधे सहै दुख नित कदम पीछे नहीं ढहेता।
चलै तन छोड़ि बैकुण्ठै सिंहासन बैठि सुख लहेता।
कर्म की भूमि है भक्तों उसे दोउ दिसि में सब चहेता।४।

पदः- बुरा मानुष उसे जानो बुराई में सदा रहेता।
नछत्तर में पड़ा उसके यहां करना वही चहेता।
लिखा बिधि का कटै कैसे राम का नाम नहीं गहेता।
कहैं अंधे तजै तन जब जाय के नर्क में ढहेता।४।

पदः- नाम में लागी सुरति जब जिनकी।
दरसैं सिया प्रभु देर न छिनकी।
लै परकास धुनी हो जारी बाकी छूटि गरभ के रिन की।
अँधे कहैं अंत निज पुर हो जै जै कार दोऊ दिसि उनकी।४।

पदः- पहुँच होत श्री अवध में किनकी।
सतगुरु करि सुमिरत हरि तिनकी।
समै श्वांस तन बि़रथा खोवत, बार बार जग भर में भिनकी।
अंधे कहैं परै जब नर्क में, रहि रहि आवैं दुख की पिनकी।४।

पदः- फिरत घर घर में चालाकी। यही है पाप की काकी।।
चलाती हर समै चाकी। पीस कर जात है फांकी।।
चुकै किमि गर्भ की बाकी। हर समै संग में टांकी।।
करै सतगुरु सो ले आंकी। भगै सब चोर संग हांकी।।
धुनी जारी हो रा मा की। छटा सन्मुख में पितु मां की।१०।

उसे को गर्भ में ढाँकी। गया वह प्रेम में पाकी।।
देव मुनि जै कहैं वाकी। मगन आनन्द में छाकी।।
सुरति एक तार हो जाकी। वही यह खेलि है हाकी।।
कहैं अंधे बड़ी बांकी। धन्य जो हर समै ताकी।१८।

पदः- सुरति जो शब्द में साटे। वही बिधि लेख को काटे।।
भये सिय राम के बाटे। जांय नहिं नर्क में साटे।।
गये कोटिन में हैं छांटे। छोड़ि तन अवध पुर आँटे।।
कहैं अंधे नाके घाटे। परे माया के हैं चांटे।८।

चौपाईः- नीमन पुरुष नीमनी नारी। अंधे कहैं न होवै ख्वारी।।
लोना पुरुष औ लोनी नारी। अंधे कहैं न होवै ख्वारी।।

पदः- बिरथा समय जो खोता। वह खाय जग में गोता।।
पढ़ि सुनि बना जो तोता। वह है अजा क पोता।।
मन नाम संग नोता। वह कर्म दोनो जोता।।
जो चेतिगा न सोता। अंधे कहैं वह होता।८।

पदः- मन बच कर्म से जौन बहादर। होत नहीं है भक्तौं कादर।
सतगुरु की गहि बानि लियो है, दोनो दिशि वाको है आदर।
ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि, ओढ़े प्रेम कि है चादर।
अंधे कहैं राम सिय सन्मुख, तन तजि नांघि गयो है छादर।
पांचों बूचड़ हर समय मारत कसि कसि अस्त्र।
अंधे कह सो बचि सकै जेहि ढिग नाम क वस्त्र।६।

पदः- जे सुमिरन में रहत सचेत। तिन से करत प्रभू अति हेत।
सतगुरु करो जियति जाव चेत। हर दम ठीक रहैगी नेत।
नर तन बड़ा अमोल है खेत। राम नाम बोओ फल देत।
मन को धुनि संग जो ले रेत। अंधे कहैं शांति हों प्रेत।४।

पदः- उड़ गया पंच्छी जहां से घोंसला खाली पड़ा।
कौन करता प्रेम उससे कह रहै सब है मरा।
देर गर कछु जाय ह्वै तो बोलते अब तो सड़ा।
दुर्गंधि की लहरैं उठैं चट फूंकि दो या दो गड़ा।
कर्म खोटे आप भोगै अन्त में सब को हड़ा।
अंधे कहैं इस समै पर कोई सूर बीर क पग अड़ा।६।

पदः- चलै न पावै कूद ननांऊ। पढ़ि सुनि लिखि करते बतखाउ।।
आवत नहीं नेकहू भाउ। सतगुरु के ढिग याको दांउ।।
जानि कै भक्तौं चट जुटि जाउ। लय परकास नाम धुनि पाउ।।
सन्मुख राम सिया छबि छाउ। नागिनि जगै चक्र घुमराउ।।
सारे कमलन उलटि खिलाउ। सुर मुनि मिलैं लिपटि उर लाउ।१०।

अनहद सुनि अमृत को खाउ। यह मसला कबीर कर गाउ।।
बिन जाने मति मूँह फैलाउ। यामे अनुभव का फैलाउ।।
ज्ञानी होवै उसे सुनाउ। अज्ञानी से करौ बराउ।।
जाके लागि जाय यह ताउ। सो ह्वै जाई रंक से राउ।।
अन्त छोड़ि तन निज पुर जाउ। अंधे कहैं न जग चकराउ।२०।

पदः- झमेला चोर करते हैं लिये संग मन को यह देखो।
करै क्या जीव डरि बैठा चलै कछु बस न यह देखो।
मिलै जब तक नहीं सतगुरु हरै को कष्ट यह देखो।
कहैं अंधे समै पर सब बनैगा काज यह देखो।४।

पदः- राम भजन को जे जन भूले।
ते सब जन्मत मरत जगत में सान मान में फूले।
हरि सुमिरन में जे हैं लागे कोइ लंगड़े कोइ लूले।
तिनका जस दोनों दिसि छायो गर्भ में फेरि न झूले।
अंधे कहैं धन्य वे भक्तौं सतगुरु के अनकूले।
ध्यान प्रकास समाधि रूप छबि नाम के रंग में घूले।६।

दोहाः- अब ही तो बिजुकत फिरत बने यहाँ पर साँड़।
जमन को लखि बिछुलौ गिरौ मारैं महुरा काँड़।
कौन सहायक वहाँ पर तव हित बाँधै फाँड़।
बाँधि के तुमको लै चलैं त्रिया ह्वै गई राँड़।
कढिलावैं पटकैं गरजि ऐसे हैं वे चाँड़।
अंधे कह गेरें नरक कौन लेय वहँ आँड़।६।

पदः- बचन मानि ले सतगुरु के चाहे कैसा पापी होवै।
सो तौ तरा भरा तन मन रंग मान अपमान को खोवै।
रग रोवन से नाम कि धुनि हो औरन का दुख धोवै।
अंधे कहैं अंत निज पुर हो पाही तलि सुख सोवै।४।

पदः- सतगुरु की मूरति पर सुरति लागि जाय जब भाई।
वाको भजन बिना साधन के खुलि जावै सुखदाई।
अंधे कहैं भक्त कोइ बिरले यहि मारग ठहराई।
अंत छोड़ तन निजपुर राजै दोउ दिसि बजत बधाई।४।

पदः- क्रोध कपट को छोड़ि जो दया धर्म में लाग।
आतम बल वाके भयो जियतै गा वह जाग।
अंधे कह ऐसे भगत तन तजि जग दें त्याग।
अंत धाम बैकुंठ लें धोयो कुल का दाग।४।

पदः- का जग आय कमायो माया के बच्चा।
गर्भ में सुमिरन का किह्यो वादा नेकौ मन न हिलायो माया के बच्चा।
झूठ प्रपंच मसखरी पाप में अपना समै बितायो माया के बच्चा।
अंत समय जम नर्क में डारैं बूड़यो औ उतरायो माया के बच्चा।
हर दम मार पड़ै तहँ ऊपर फटकि फटकि चिल्लायो माया के बच्चा।
अंधे कहैं सड़ौ तहँ कलपन कर्मन का फल पायो माया के बच्चा।६।

पदः- मन लगा हरी से जिसका है। कहते अंधे सुफल तन उसका है।।
जियतै में भया दोऊ दिसि की है। निज धाम गया वही खिसका है।।
सतगुरु करि पायो चिसका है। शुभ काम करत तजि हिसका है।।
फूटा द्वैत क प्याला बिष का है। कहीं पता लगत नहीं रिसि का है।८।

पदः- साधक साधै हरि का नाम। ताको अंधे करैं प्रणाम।।
सतगुरु से लेवै यह काम। जियतै बनि जावै गुण ग्राम।।
सारे चोर लेंय चुप थाम। सन्मुख राजैं सीता राम।।
धुनि परकास दसा लै आम। दोनों कर्म देय करि खाम।८।

सुर मुनि दर्शैं भीड़ तमाम। अमृत छकौ भरा घट जाम।।
चेति के जानि लेव नर बाम। तन मन मगन रहै बसुजाम।।
चन्द रोज़ का है यह चाम। शांति दीन बनि लो बे दाम।।
तन तजि पहुँचि जाव निज धाम। चौरासी का छूट मुकाम।१६।

पदः- आदि शक्ति सीता महरानी। जिनसे प्रकटीं अमित भवानी।।
जो कोइ शक्तिन को नहि मानी। वाकी होय दोऊ दिसि हानी।।
पढ़ि सुनि के बनते जे ज्ञानी। खुले न घट पट हैं अज्ञानी।।
मन मूरख बस जे अभिमानी। उनको सज़ा देंय महरानी।।
सतगुरु करि जिन सुमिरन ठानी। अंधे कहैं मिलैं सुख खानी।१०।

माता की पहुँचे रजधानी। वहां की शोभा कौन बखानी।।
जिनके पति हैं सारंग पानी। सुर मुनि ध्यावत तन मन सानी।।

हठ योगी लै जोगी ध्यानी। आदि अन्त पायो नहिं जानी।।
पालन उत्पति परलै ठानी। सर्वेश्वर सब गुनन के दानी।।
वेद शास्त्र चारों युग बानी। दुःख सुःख तजि होहु अमानी।२०।

पदः- करा दो भोजन पिला दो पानी यही दया की बड़ी निशानी।
इसी को वहँ पर लिखैं बखानी जो हम यहाँ पर कहैं जबानी।
कटैगी जियते नरक निशानी चलाते यहँ पर जो पाप घानी।
देवैंगे हरि पुर दया के दानी कहैं यह अंधे अटल है बानी।४।

दोहाः- केपि खुलैं दुजनी खुलैं तब वह भक्त कहाय।
अंधे कह सो धन्य है सुर मुनि करैं बड़ाय।।

चौपाईः- सतगुरु चरनन में चित्त जोरे। भर्म का भाड़ा जियतै फोरे।।
ऐसे भक्त जक्त में थोरे। जो हरि नाम रूप रंग बोरे।।
जे अधरम रस पीते घोरे। तिनको जम गण नर्क में बोरे।।
अंधे बिनय करैं कर जोरे। जे चेते सिया राम के ढोरे।४।

पदः- जागो जागो लोग लुगाई अंधा बिनवै शीश नवाई।
सतगुरु करो भजन बिधि जानो त्यागो जग औंघाई।
मातु पिता भगनी सुत लड़की नारि पती औ भाई।
नाते दार मित्र पुर के जन कोई संग न जाई।
तव तन निरखैं रहि रहि बिलखैं रोवैं मुँह फैलाई।५।

मानुष तन दुर्लभ प्रभु दीन्ह्यो तिनको दिह्यौ भुलाई।
चित्र गुप्त जब लेखा ले हैं मुख से बोल न आई।
जो बीती सो बीति गई अब सुमिरो तन मन लाई।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रूप सामने छाई।
अन्त त्यागि तन निज पुर राजौ छूटै गर्भ झुलाई।१०।

दोहाः- सुमिरन ऐसा कीजिये और न जानै कोय।
अंधे कह पट जांय खुलि आवागमन न होय।
संसय तो छूटा नहीं पढ़े संसकृत जान।
अंधे कह जन्मै मरै मिले न ठीक ठेकान।४।

पदः- पिता मेरे राम जी माता सीता मय्या।
सतगुरु कृपा से अंधा सुख पय्या।
पिता मेरे श्याम जी माता राधे मय्या।
सतगुरु कृपा से अंधा सुख पय्या।
पिता मेरे विष्णु जी माता रमा मय्या।५।

सतगुरु कृपा से अंधा सुख पय्या।
पिता मेरे भोला नाथ माता उमा मय्या।
सतगुरु कृपा से अंधा सुख पय्या।
पिता मेरे ब्रह्मा जी माता सारद मय्या।
सतगुरु कृपा से अंधा सुख पय्या।१०।

पिता मेरे सुर मुनि सबै सक्ती मय्या।
सतगुरु कृपा से अंधा सुख पय्या।।
पिता मेरे सबै भक्त सबै भक्तिन मय्या।
सतगुरु कृपा से अंधा सुख पय्या।१४।

दोहाः- राम नाम मन से जपै रसना मुख तन सुद्ध।
अंधे कह वह भक्त फिरि कभी न होय असुद्ध।
राम नाम मन से कहै पाप होय सब नास।
अंधे कह उस भक्त को माया सकै न फांस।४।

दोहाः- जाप कंठ से कीजिये रसना हिलै न नेक।
अंधे कह पट जायं खुलि कर्म लिखा दे छेंक।।

पदः- जब ते दरस दिया राधे के पिया। राधे के पिया।
मुरली की धुनि रग रोवन में साली बीच हिया। राधे०।
मन अटको सूरति में प्रभु की ह्वैगो मस्त जिया। राधे०।
ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि जो सब का है बिया। राधे०।
जुगुल रूप अति ही प्रसन्न ह्वै झाँकी सन्मुख किया। राधे०।
अंधे साह कहैं सतगुरु करि जियतै तन फल लिया। राधे०।६।

दोहाः- भजन कि विधि नहि जानत वक्ता झूंठे जान।
अंधे कह पछितायेंगे प्रभु रूठे हैं मान।।

दोहाः- सुर मुनि शक्ती भक्त सब बिनै सुनो यह मोर।
अधे को आसिष मिलै भजन करै मन जोर।।

पदः- जै पिता राम जै सिया मातु। जै पिता श्याम जै प्रिया मातु।।
जै पिता बिष्णु जै रमा मातु। जै पिता संभु जै उमा मातु।।
जै पिता ब्रह्मा जै सारदा मातु। अंधा दीन है तुमरो तातु।६।

पदः- सीता के श्वामी की जै। राधे के श्वामी की जै।।
कमला के श्वामी की जै। गिरिजा के श्वामी की जै।।
सारद के श्वामी की जै। अंधे पर दाया कीजै।६।

दोहाः- सतगुरु राम को जानिगे या से भये महान।
अंधे कह सुर मुनि सबै करत बड़ा सन्मान।।

चौपाईः- करत बड़ा सनमान भजन की बिधि बतलावैं।
ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि रूप लखावैं।
नागिनि चक्र जगाय कमल सारे उलटावैं।
अनहद नाद सुनाय अमी रस पान करावैं।४।

सुर मुनि आवैं मिलन नाम जस संग में गावैं।
गद गद होवै कंठ रोम सारे पुलकावैं।
तन कांपै सर हिलै नैन दोउ जल बरसावैं।
अंधे कह तन त्यागि यान चढ़ि निजपुर जावैं।८।

दोहाः- तन को सोधन कीजिये सतगुरु से विधि जान।
सार वस्तु पासै मिलै अंधे कह लो मान।।

दोहाः- सतगुरु बचन पै जाय तुलि वही कहावै शिष्य।
अंधे कह जियतै तरे छूटी भव की मिष्य।
सतगुरु बचन को लीन गहि ते भे चेला सूर।
अंधे कह तरि मरि गये दोनो दिसि मशहूर।४।

शरनि इसी को कहत हैं जियतै करतल कीन।
अंधे कह सतगुरु कृपा नाम रूप में लीन।
सतगुरु वाक्य पै चलि गये वही कहावै वीर।
अंधे कह हर दम लखै सन्मुख सिय रघुवीर।८।

पदः- मन तो अपने मन का करता।
अंधे कहैं जीव किमि उबरै फिरि फिरि जन्मत मरता।
या की मति ऐसी मलीन है पाप से पेट न भरता।
शुभ कर्मन को सुनै न देखै काटि खाँय अस डरता।
सतगुरु करै भजै निशि वासर सो जियतै में तरता।५।
अमृत पियै सुनै घट अनहद सुर मुनि के पग धरता।
ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि कर्म शुभा शुभ टरता।
नागिनि चक्र कमल सब जागैं चौदह लोक में फिरता।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख झाँकी ठरता।
अंत त्यागि तन जाय अवध पुर फेरि गर्भ नहिं परता।१०।

दोहाः- पढ़त सुनत वेदांत है पाले सान व मान।
अंधे कह छूटै नहीं गर्भ केर लटकान।।

पदः- राम कृष्ण औ विष्णु में रहते शिव लवलीन।
सत्यम शिवम् सुन्दरम मानस पर लिखि दीन।।

सोरठाः अंधे कह यह सत्य सुर मुनि सब हैं मानते।
जे जन कहैं असत्य ते जानौ नहिं जानते।।

पदः- तरिगे तरिहैं श्री राम नाम ध्याय के।
सतगुरु की बानी को पकड़ौ भागैं चोर सबै चिल्लाय के।
दुख सुख को सम समझौ भक्तौं तन मन प्रेम में ताय के।
अंधे शाह कहैं कर जोरे सब के हित पद गाय के।४।

पदः- सतगुरु कि वाक्य प़र चलि साधक कहा रहे हैं।
धुनि ध्यान नूर लय में गोता लगा रहे हैं।
शुभ अशुभ कर्म भक्तौं चेतो जला रहे हैं।
सिय राम उनके हर दम सन्मुख में छा रहे हैं।
जियतै में सिद्धि ह्वैगे सुर मुनि जस गा रहे हैं।
अंधे कहैं तन तजि कै साकेत जा रहे हैं।६।

पदः- लुत्फ उसको मिल गया सुमिरन कि बिधि जो जानता।
ध्यान धुनि परकास लै औ रूप सन्मुख तानता।

सतगुरु बिना कूचा कठिन पढ़ि सुनि कथै अज्ञानता।
अंधे कहैं सुकृती पुरुष कोटिन में कोई मानता।४।

दोहाः- गंगा जल सम जल नहीं राम नाम सम नाम।
तप धन सम कोइ धन नहीं छिमा बाम सम बाम।
नर तन सम कोइ तन नहीं पर स्वारथ सम काम।
अन्न वस्त्र सम दान नहीं अवध धाम सम धाम।
अंधे कह सतगुरु बचन भजन करो बसु जाम।
आना जाना जाय मिटि अंत में अचल मुकाम।६।

पदः- मन किमि ठीक भजन में जमता।
सतगुरु से जप भेद जान ले सब में होवै समता।
अमृत पियै सुनै घट अनहद सुर मुनि मिलैं सुगमता।
कमल चक्र शिव शक्ती जागै भागै जग की ममता।४।

ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि रूप सामने थमता।
पासै कूप भरा परि पूरन जीव प्यास से लंभता।
जे नहिं चेतैं आवैं जावैं छूटैं नहीं अधमता।
अंधे कहैं जियति जे जानै ते नहिं गर्भ में रमता।८।

पदः- खेलैं घुमनी कोड़रैया लाल जसुदा नन्द कुमार।
कटि करधनी पगन में पौटा दोउ हाथन चमकैया लाल।
दौर कूद में छम छम धुनि हो बोलैं हंसि तुतलैया लाल।
रहि रहि तारी खूब बजावैं आँखैं मीचि लेवैया लाल।
पुर के नर नारी बहु आवैं छिन छिन लेंय बलैया लाल।५।

दोउ कर ताल देंय सब बोलैं ता थैया ता थैया लाल।
नाना बिधि के खेल करैं नित सब उर प्रेम पगैया लाल।
को बरनै देखत बनि आवै शारद शेष थकैया लाल।
नभ ते सुर मुनि जै जै बोलैं फूलन की झरि लैया लाल।
भाग्य सराहैं पुर वासिन की मातु पिता जिन पैया लाल।१०।

सतगुरु करे भजन बिधि जानै सन्मुख में छबि छैया लाल।
ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि बिधि का लिखा कटैया लाल।

नागिन जगै चक्र खट बेधैं सातौं कमल फुलैया लाल।
अमृत पियै सुनै घट अनहद बाजत बिमल बधैया लाल।
सुर मुनि आवैं हिये लगावैं लेवैं गोद गुदैया लाल।१५।

अंधे कहैं अंत निज पुर हो छूटै जग चकरैया लाल।
पीत झँगुलिया तन में राजैं चम चम चम चमकैया लाल।
मोर पंख के मुकुट शीश पर फूलन दल गुँथनैया लाल।
इतर फुलेल लगा केशन में महर महर महकैया लाल।
श्याम गौर परकास निकलती लपटि के करैं मिलैया लाल।२०।

तीन बर्ष के श्याम मनोहर पाँच बर्ष बल भैया लाल।
नाक में नासा मणी बिराजै कज्जल दृगन लगैया लाल।२२।

पदः- बन्दौं सतगुरु बन्दी छोर।
जिन निज घर का मार्ग बतायो शांति भये मम चोर।
ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि हर शै से हो शोर।
अंधे कहैं हर समै दरशन छूटी जग से डोर।४।

शेरः- कथा बाचक भयो लोभी तो उसकी गति नहीं होती।
कहैं अंधे ठगा मन ने हर समै बासना रोतीं।।

दोहाः- खान पान सन्मान में जहाँ शुद्ध है अन्न।
अंधे कह वहँ साधकौं चित्त होत परसन्न।
अन्न शुद्ध औ भूमिका तब खुब सुमिरन होय।
अंधे कह सतगुरु बचन छूटि जात चट दोय।४।

पदः- सतगुरु करि जाने घर की गली सो यहाँ भी है औ वहाँ भी है।
धुनि ध्यान प्रकास समाधि मिली सो यहाँ भी है औ वहाँ भी है।
सन्मुख सिय राम की झाँकी खिली सो यहाँ भी है औ वहाँ भी है।
कहैं अंध शाह यह बात दिली सो यहाँ भी है औ वहाँ भी है।४।

शेरः- दिखाऊ भजन श्रद्धा बिन काम अपना नहीं सरता।
कहैं अंधे सुखी किमि हो जगत में जन्मता मरता।।

पदः- विश्वास अटल जब तक न होय तब ही तक चक्कर खाँचौगे।
कहैं अंध शाह तब छुटकारा जब नाम के रंग में राँचौगे।

धुनि ध्यान प्रकास समाधी हो सिय राम सामने टाँचौगे।
अमृत पीकर ह्वै अजर अमर सुर मुनि संग हरि जस बाँचौगे।४।

पदः- राम भजन बिन अन्त में अड़ बड़।
झूँठ पाप औ लोभ आलसै तुम्है दीन करि गड़ बड़।
मन औ चोर शांति किमि होवैं करत हर समै खड़ भड़।
अंधे कहैं करो अब सतगुरु सुमिरौ छूटै भड़ भड़।४।

पदः- सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानौ छूटै तब दुइ तरफ़ी।
ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि रूप अमोल असरफ़ी।
अंधे कहैं पवावैं सुर मुनि लाई चूरा बरफ़ी।
अन्त छोड़ि तन निज पुर राजौ छूटी गर्भ की हरफ़ी।४।

पदः- लीला स्वरूप सिय राम रूप कहैं अंध शाह सुर मुनि गावैं।
जब भाव होय तब हटै दोय विश्वास अटल झट ह्वै जावै।
सतगुरु कि दया सो ठीक भया कोटिन में कोई सुख पावै।
जब भयो मस्त तब कटी गस्त हर दम सन्मुख में छबि छावैं।४।

पदः- जो चित्र बने सब हैं बिचित्र कहैं अंध शाह सुर मुनि मानैं।
मन हो पुनीत तब हो प्रतीत यह बैन भक्त जन सच जानैं।
बोलत हैं चित्र कहि शुभ चरित्र जब कान खुलैं तब सुनि छानैं।
प्रगटैं सन्मुख में छाय जाँय जेहि नैन होंय सो पहिचानैं।४।

पदः- राम नाम में मन जिन मसला।
सतगुरु से जप भेद जानि कै बनिये भक्तौं तसला।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रूप सामने बसला।
अमृत पियो बजै घट बाजा सुर मुनि के संग हंसला।
जियति जानि कै मुक्त भक्त हो छूटै चोरन गंसला।
अंधे शाह कहैं तन तजि कै फेरि न जग में खसला।६।

पदः- अपन मन चंगा कठौती में गंगा।
सतगुरु से सुमिरन बिधि जानै चोरन हटै अड़ंगा।
अमृत पिये सुनै घट अनहद बजै मनोहर ढंगा।
सुर मुनि नित प्रति बसन दिब्य ते झारैं तुमरो अंगा।
नागिन जगै चक्र सब नाचैं कमलन उड़ै तरंगा।५।

ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि पाय होहु एकरंगा।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि हर दम निरखौ संगा।
यह बानी रैदास कि गहि कर जियति जीत जग जंगा।
अंत त्यागि तन निज पुर राजौ छूटै जग से टंगा।
अंधे कहैं भरै तब झोरी दीन होय भिखमंगा।१०।

पदः- गहैं सुमिरन बिना जम गण कहैं तू हरि का बैरी है।
कहैं अंधे खून चूसैं कि जैसे पाकि कैरी है।।

पदः- जै गणपति षट मुख महतारी।
दुष्ट संहारनि भक्त उबारनि सुर मुनि वेद पुकारी।
अंधे शाह बिनय यह करते एक निगाह से देहु निहारी।
राम भजन में मम मन लागै देहु अशीश शीस कर धारी।४।

पदः- कीजै राम नाम संग भौंरी।
सतगुरु से सिखु जाय पतिबृति बनी बैठि क्यों बौरी।
ध्यान प्रकास समाधि धुनी हो रूप पकड़ि ले दौरी।
मुख चूमै औ हिये लगावै धरै शीश पर मौरी।
दिब्य भोग नित लाय पवावै भक्तौ गणपति गौरी।
अंधे कहैं अंत निज पुर हो जग छूटै जिमि झौरी।६।

दोहाः- राम नाम जेहि याद भा जानौ भा कंठस्त।
अंधे कह वह भक्त फिरि करै न जग में गस्त।
राम नाम कंठस्त भा जानो ह्वैगा यादि।
अंधे कह तब भक्त वह कभी न हो बरबादि।४।

चौपाईः- कभी न हो बरबादि मस्त मन नाम में जिनका।
जियतै चुकता कियो मातु के गर्भ से रिन का।
माया जमगण मृत्यु काल को समुझै किनका।
सन्मुख सीता राम रहैं निरखै हंसि तिनका।४।

चेति के सतगुरु करो मिला तन सातै दिन का।
राति दिवस में गयो समै सुमिरन बिन सिन का।
अंधे कहैं सुनाय छोड़ि तन नर्क में भिनका।

वहाँ पै बस नहिं चलै जोर औ शोर औरिन का।८।

शब्दार्थः सिन = उम्र

दोहाः- बिन भजन नर तन बृथा जैसे गाछ है झूर।
अंधे कह अमृत निकट फांकत हर दम धूर।।

पदः- कर दे मेरा प्राण पूर बाघाम्बर वाले।
प्रथमै सिया ने दीन आपको राम नाम का तूर।
वही कृपा करि दीजै मोको मन हो प्रेम में चूर।
बिना नाम के जाने भव का दुःख न होवै दूर।
सतगुरु बिन यह भेद मिलत नहिं रहत जीव मजबूर।
अंधे कहैं जियति नहिं जाना सो भा कायर कूर।६।

पदः- मर गईं सब मन की नारी जिनको कहते बासना।
अंधे कहैं सतगुरु कृपा अब चोर लेते सांस ना।
सतगुरु शरन लीन्हे बिना होता कभी कोई दास ना।
अंधे कहैं पढ़ि सुनि कथै है कानी कौड़ी पास ना।४।

सूरति समानी शब्द में नहिं काल वाको खायगा।
अंधे कहैं तन छोड़ि कै साकेत सीधे जायगा।
नाम के रंग में रंगा जग में न चक्कर खायगा।
अंधे कहैं साकेत में वह अचल बैठक पायगा।८।

पदः- कालै जैहो ससुरे सुख पैहौ।
सतगुरु से सुमिरन बिधि जानि के तन मन प्रेम में तैहौ।
सुर मुनि मिलैं सुनो घट अनहद अमृत पी हरषैहौ।
नागिनि जगै चक्र षट बेधैं सातौं कमल खिलै हौ।
ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि रूप सामने छै हौ।
अंधे कहैं छोड़ि तन भक्तौं फेरि न जग चकरै हौ।६।

पदः- लूटौ राम नाम की मौज।
सतगुरु से जप भेद जानि कै चोरन डारौ गौंज।
सनमुख राम सिया की झांकी संग में सुर मुनि फौज।
अंधै कहैं अंत निजपुर हो छूटै गर्भ क हौज।४।

पदः- तन बिन मन काबू नहीं होता। साध्य बिना साधन नहिं होता।।
बिना शांति के सुख नहिं होता। सतगुरु से जानो यह गोता।।
हीरा गहौ फेंकि कै पोता। पाप बीज जग में है बोता।६।

पढ़त सुनत बोलत जिमि तोता। सूरति शब्द में क्यों नहिं नोता।।
ध्यान धुनी लै तेज है होता। शुभ औ अशुभ कर्म को धोता।।
अंधे कहैं चेतु क्यों सोता। जन्मत मरत फिरत है रोता।१२।

पदः- पढ़ि वेदांत वेदांती बाजत मन में भरी है भ्रांती।
अंधे कहैं बिना साधन के मिलत कहां सुख शांती।।

पदः- मन चंचल किमि साधु कहाया।
जब से सतगुरु दाया कीन्ही चोरन मारि भगाया।
जे सोते ते रोते घूमें ठीक ठौर नहिं पाया।
जे चेतैं ते निज पुर राजैं छूटी गर्भ बकाया।
भक्ति मार्ग औ ज्ञान मार्ग दोउ मन एकाग्र ते पाया।
अंधे कहैं तारि बहु जीवन तरिगा जग जस छाया।६।

पदः- पढ़े सुने का ज्ञान है मुरदा जिंदा ह्वै कर कथते।
अंधे कहैं सार नहिं पावैं विरथा पानी मथते।।

पदः- कर्म धर्म दाया की सीढ़ी साधक एक न काटै जी।
ना मानै सो नीचे गिरिहै नर्क कि चटनी चाटै जी।
सिद्ध भक्त की बात जुदी है उनका सुकृत न घाटै जी।
तन मन तप धन हरि को अर्प्यो अंधे कहैं को बाटै जी।४।

पदः- धन्य भाग्य श्री गीध की निज गोद में बैठाय।
तात की गति दीन ताहि दयालु राघौ राय।
बसुदेव दसरथ नंद जहँ पर पास बैठा जाय।
भूसन बसन सब दिब्य पहिने जान दुति लहराय।४।

मन्द मन्द समीर डोलै महक सुमनन छाय।
कथा कीरतन गान करते देव मुनि नित जाय।
रागिनी औ राग मै परिवार नाचैं गाय।
तुम्बरू गंधर्ब बीना संग मधुर बजाय।८।

परनारायन धाम की शोभा वरनि को पाय।
शेष शारद का वहाँ पर ज्ञान चक्कर खाय।
अंधे कहैं हम ध्यान करि के पहुँचि देखा जाय।
बाँये हाथ क खेल हरि का पल में देत बनाय।१२।

पदः- भजिये राम नाम अनमोल।
सतगुरु से सुमिरन बिधि जानो भागै चोरन गोल।
ध्यान प्रकास समाधि धुनी क्या हर शै से रही बोल।
अमृत पियो बजै घट बाजा सुर मुनि के मिलैं टोल।४।

जागैं कमल चक्र सब नाचैं नागिनि करै किलोल।
सिया राम की झाँकी सन्मुख निरखै आंखी खोल।
अंधे कहैं अंत निज पुर हो बिजै कि बाजै ढोल।
या से चेत करो नर नारी चारि दिवस का चोल।८।

दोहाः- बैर किसी से मति करौ सबमें हैं भगवान।
अंधे कह तन छोड़ि कै हरिपुर करो पयान।।

पदः- पूतना की गति की महिमा कौन सकत बताय।
अंधे कहैं हम ध्यान धरि कै गयन देखा जाय।
देवकी जसुदा कौशिल्या केकई सुमित्राय।
संग सब कै बैठि जान पै हर समय हरषाय।
बैकुँठ चौथा कहत जाको देव मुनि सब गाय।५।

परनारायण के दरस तहँ होत नित सुखदाय।
छटा छबि सिंगार सोभा कहत शेश लजाय।
गोस्वामी तुलसी दास जी ने बिनै में लिखवाय।
मातु की गति दीन ताहि कृपालु जादव राय।
बड़ेन का यह काम है दुख देव देत बड़ाय।१०।

पदः- मुरशिद किया सुमिरन सिखा आनन्द में सोते हैं वह।
अंधे कहैं जे चूकिगे सर पीट कर रोते हैं वह।
समै श्वांसा तन बसर बेकार ही खोते हैं वह।
तुख़्म पापों का जहां में आय के बोते हैं वह।४।

अन्त तन तजि नर्क में पड़ि खा रहे गोते हैं वह।
मूत्र मल औ पीव में हर दम बदन धोते हैं वह।
एक पल की कल नहीं दुख खेत को जोते हैं वह।
अपना किया फल पा रहे जग जन्मि दुख ढोते हैं वह।८।

दोहाः- सूरति शब्द ते होत है भक्ति मार्ग सुनि लेहु।
अंधे कह सतगुरु करो जियतै में गुनि लेहु।।

चौपाईः- मंजारी सुत भक्ती जानो। मर्कट सुत सम ज्ञान है मानो।
अंधे कहैं न झगड़ा ठानो। दोनों मारग ठीक ठेकानो।
भक्ति में लै परकास को जानो। नाम कि धुनि औ रूप बखानो।
अनहद सुनो अमी रस पानो। सुर मुनि के संग हो बतलानो।
नागिनि जगै चक्र घुमरानो। सातौं कमलन उलटि खिलानो।५।

भाँति भाँति की खुशबू जानो। तन मन वा से हो मस्तानो।
अंत त्यागि तन निज पुर जानो। आवागमन क खेल मिटानो।
ग्यान मार्ग परकास महानो। सब लोकन में एकरस जानो।
मन एकाग्र ते होत है ध्यानो। ज्ञान मार्ग का यह परमानो।
द्वैत भाव तन से बिलगानो। आना जाना मिटिगा जानो।१०।

दोहाः- रूप रंग औ रेख नहिं त्रिगुन से है न्यार।
अंधे कह यह ज्ञान है रहत प्रकास अपार।
सीना मस्तक सम रहै कमलासन ले धार।
नेत्र मूँदि मन रोकिये तब मिलिहै सुखसार।४।

पदः- सतगुरु करिकै जो नाम पै मन को लाता।
अंधे कह जियतै मुक्त भक्त ह्वै जाता।
धुनि ध्यान प्रकास समाधि में जाय समाता।
शुभ अशुभ कर्म जरि जाँय द्वैत बिलगाता।४।

सिय राम की झाँकी हर दम सन्मुख छाता।
अनहद क्या घट में बजै सुनै मुसक्याता।
अमृत का नित हो पान ताल उमड़ाता।
नागिनि जागै सब लोकन में फिरि आता।८।

सुर मुनि सब आवैं मिलन हृदय लपटाता।
आर्शीवाद दें भयो नाम के ज्ञाता।
नहिं आवो तन को त्यागि जगत में ताता।
बाँटो दीनन लखि दान कहावो दाता।१२।

यह सूरति शब्द का भजन जगत बिख्याता।
निर्गुण सर्गुन दोउ रूप क बोध कराता।
हरि हर ने मो को दियो भेद बतलाता।
है सहज समाधी यही प्रेम में माता।१६।

पदः- सतगुरु करि जो कोइ चेता सो भया नाम का नेता।
शुभ अशुभ कर्म दोउ रेता, सुर मुनि करते नित हेता।
परकास धुनी लै लेता। सनमुख झाँकी करि लेता।।
अनहद सुनि अमृत पेता। रिन चुक्यो गर्भ क जेता।४।

कुंडलिनी चक्र समेता। कमलन सीधा करि देता।।
तन तजि जहँ कृपा निकेता। सुख शाँति से निजपुर सेता।।
जो बोये पाप क खेता। सो नर्क जाय या प्रेता।।
जो दया धर्म करै जेता। अंधे कहैं फल ले लेता।८।

पदः- राम नाम गुण राम न गाये।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानै तन मन से जो ध्याये।
ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि हर शै से सुनि पाये।
अनहद बजै पियै घट अमृत कूप भरा हहराये।४।

नागिन जगै चक्र षट नाचैं सातौं कमल खिलाये।
सिया राम की झाँकी सन्मुख हर दम वाके छाये।
गद गद कंठ बोल नहिं फूटै रहि रहि शीश हिलाये।
अंधे कहैं अन्त साकेतै चढ़ि विमान पर जाये।८।

पदः- ईश्वर अंश जीव अविनासी। चेतन अमल सहज सुखरासी।
सतगुरु करै भजै तन मन ते सहजै हो सुख रासी।
अनहद सुनै पियै घट अमृत टपकै बारह मासी।
सुर मुनि आवैं हरि जस गावैं बैठैं चहुँ दिसि गांसी।४।

नागिनि जगै चक्र षट घूमैं सातौं कमल बिकासी।
ध्यान धुनी परकास दसा लै रूप सामने भासी।
माया मृत्यु काल औ जम गण चोर सकत नहिं खाँसी।
अंधे कहैं अंत निज पुर हो छूटि गई चौरासी।८।

पदः- दे दिया है तन मन सतगुरु को सो भक्त भि बड़ा बहादुर हो।
अनहद सुनै पियै घट अमृत चमकै दामिनि बे बादर हो।
जगै नागिनि नचैं चक्कर खिलैं सब कमल सादर हो।
मिलै खुशबू मगन होवै फेरि कबहूँ न कादर हो।४।

मिलैं सुर मुनि लिपटि बोलैं हमारे तुम बिरादर हो।
ध्यान धुनि नूर लै होवै करैं सिय राम आदर हो।
कहैं अंधे जियति जानै बिजै की ओढ़ चादर हो।
छोड़ि तन जाय निजपुर को न फिर कबहूँ निरादर हो।८।

पदः- जैसे मरकट का सुत अपनै लपटत अपनी माता को।
धीरे धीरे पुष्ट जात ह्वै पकड़ै गहि फिरि गाता को।।
वैसै सतगुरु हेरि के करिये महा प्रकास के ज्ञाता को।
अंधे कहैं कटै भव बंधन फेरि जगत में आता को।४।

पदः- जैसे बिल्ली लै कर चलती मुख में दाब के बच्चे को।
वैसे श्री हरि गोद में लेते भजन करैया सच्चे को।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो पाटो भव के गच्चे को।
अंधे कहैं अंत निजपुर हो नहिं भरोस इस ढच्चे को।४।

पदः- श्री शुक देव नवो योगेश्वर बाल खिल्य सनकादिक प्यारे।
श्री अवध में नित प्रति आवत श्री दसरथ के द्वारे।
राजा लखि कै चरन परै फिरि लै रनिवास सिधारें।
राम लखन औ भरथ सत्रुहन बाल रूप गभुवारे।
दौरि के सबको लिपटैं हंसि हंसि सब सुन्दर सुकुमारे।५।

चारिउ तरफ़ से सब मिलि बैठैं बीच में शुक बैठारे।
भाँति भाँति पकवान मिठाई माता थार संवारे।
लै कर जाय बीच में धर दें जल जारिन भरवारे।

हिल मिलि कै सब पावन लागैं एक एक मुख डारें।
अमर काक तहँ पर चलि आवैं कों कों करैं दुलारें।१०।

सब मिलि कै पकवान मिठाई उन सन्मुख छितरारें।
कूदि कूदि चूगैं तन मन ते प्रेम के आँसु गिरारे।
जल सब पीवैं उन्हैं पिलावैं स्ववरन बेला धारे।
गुरु वसिष्ट औ रानी राजा ताकि ताकि हुलसारे।
सुर मुनि नभ ते जै जै बोलैं फूलन की झरि ला रे।१५।

भाग्य सराहैं मातु पिता की पुर वासिन बलिहारे।
सतगुरु करैं भजन बिधि जानै कर्म भर्म को मारे।
नाना बिधि की लीला देखै बरनत शेश चुपारे।
यह नर देह सुरन को दुर्लभ युग श्रुति शास्त्र पुकारे।
अंधे कहैं भजै निशि बासर ते सब जग से न्यारे।२०।

पदः- राम कृष्ण नारायण नाम। चारौं युग सब दिशि सरनाम।
कैसौ पापी हो बदनाम। अन्त समै जो सुनि ले नाम।
सीधे जावै हरि के धाम। जम गण दूरि ते करैं प्रणाम।
जो बेहोश सुनै नहिं नाम। तन तजि नर्क पड़ै बे काम।४।

अंधे कहैं भजै बसु जाम। ते तन तजि जावैं निज धाम।
सतगुरु बचन भजन है आम। जे न गुनैं भा बिरथा चाम।
मरत समै पापी ले नाम। सो पावै हरि ढिग बिश्राम।
परम पुनीत राम का नाम। तन मन ते जपिये नर बाम।८।

पदः- नाम रूप परकास समाधी। चारिउ मेटैं सबै उपाधी।
पढ़ि सुनि कै जे बटते बाधी। अंधे कहैं ते हैं बकबाधी।
सतगुरु करिके जो आराधी। सो जानो चारिउ को साधी।
द्वैत भाव की भागी आँधी। शुभ औ अशुभ को जियतै रांधी।
मन को संग में राखै बाँधी। दोनो दिसि महकै जिमि गाँधी।५।

चौपाईः- सतगुरु चरनन में लव लागी। मैं तैं मोर तोरि सब भागी।
सो जानो जियतै गा जागी। नाम रूप का भा अनुरागी।
ध्यान प्रकास समाधि में पागी। कर्म जरें दोउ ब्रह्म कि आगी।
अंधे कहैं वही बड़ भागी। तन तजि जगत बमन सम त्यागी।४।

पदः- सर्वेश्वर नाम आप का है सब से हौ न्यारे औ सब में।
है अकह अलेख अपार अकथ सब खेल आपका पग पग में।
जो भजै तुम्हें सो तरि जावै फिर जनमै मरै न इस जग में।
कहैं अंध शाह सतगुरु किरपा कोइ बिरलै आवै इस मग में।४।

पदः- आतमा को जान लो परकास उसका रूप है।
परमात्मा उस में रमा जो सारी सृष्टि का भूप है।
सतगुरु बिना किमि लखि सकौ श्रुति कहत अगम अनूप है।
अंधे कहैं देखे बिना जन्मौ मरौ जग कूप है।४।

पदः- बहुत नर नारि कम जग में कि जिनके लोभ नहिं मन में।
कहैं अन्धे कृपा सतगुरु जीत जियतै गये रन में।
ध्यान धुनि नूर लै पायो लखै सिय राम कन कन में।
सुनै अनहद पियै अमृत देव मुनि लिपटते तन में।
जगी नागिन चलैं चक्कर खिलैं सब कमल एक छन में।
त्यागि तन पहुँचिगे निजपुर भये रंग रूप हरि पन में।६।

पदः- जानि मारग को सतगुरु से जौन सुमिरन में मन लाये।
वही फिर द्वैत को तजि कर भक्त अद्वैत हो जाय।
ध्यान धुनि तेज औ लय में जाय सुधि बुधि को बिसराये।
सुनै अनहद पियै अमृत देव मुनि उर में लिपटाये।४।

जगै नागिन चलैं चक्कर कमल एक तार उलटाये।
सुगन्धी बहुत बिधि की ले कहत मुख से न बनि आये।
सामने हर समै राजैं राम सीता छटा छाये।
कहैं अन्धे तजौ तन जब चलै निजपुर न जग आये।८।

पदः- द्वैत को छोड़ कर भक्तों जौन अद्वैत हो जाये।
वही सतगुरु का चेला है यहाँ औ वहाँ जस छाये।
लगन उसकी लगी ऐसी जो तन काटौ न चिल्लाये।
कहैं अन्धे जियति तारै जो उनकी शरण में आये।४।

पदः- सिया राम के भजन बिन नर तन बेकाम है।
सतगुरु करो पावो पता अनमोल चाम है।

धुनि ध्यान तेज लय मिलै शुभ अशुभ खाम है।
सुर मुनि तुम्हें आशीश दें हर दम अराम है।४।

दर्शन हो युगुल रूप का हर जाँ मुकाम है।
पीजे अमी को घट में झरता तमाम है।
अन्धे कहैं तन त्यागि चलो नित्य धाम है।
परकाश का वह लोक नहीं शुबह शाम है।८।

पदः- ख्याल राखौ साधकों हर वक्त धुनि औ ध्यान का।
सतगुरु की बानी है यही परदा हटै अज्ञान का।
परकाश लय में जाव मिलि जहँ पर पता नहिं भान का।
देखौ छटा सिंगार छबि श्री जानकी भगवान का।४।

सुर मुनि लिपटि जै जै करैं जैसे बड़े मेहमान का।
दीनता औ प्रेम से स्वागत करैं जल पान का।
शान्ति से सब दे रहे बहु भाँति के पकवान का।
अन्धे कहैं तन तजि चलो साकेत पुर सुख खानि का।८।

पदः- दूत मजबूत हैं जम के न बोलैं बेखता कीन्हें।
लिहे कागज हैं हुलिया का मिला करके उसे चीन्हें।
लात मुक्का तमाचा दें पटकि फिर बैठते सीने।
डाँटते सख्त गाली दै नाम हरि का नहीं लीन्हें।
बाँधि लै जांय निजपुर को काम अपने में परवीने।
कहैं अन्धे नर्क गेरैं करम जिन कीन हैं हीने।६।

शेरः- मिला अन्मोल नर तन क्या सुकृत सब चोर हैं छीने।
श्री सतगुरु के बचनों पर कहैं अन्धे न मन दीने।।

दोहाः- हरि सुमिरन में जाय लगि एक तार जो कोय।
अंधे कह सतगुरु कह्यौ मुक्ति भक्ति ले सोय।।

पदः- बिना भजन के सजन न मिलते भरा है अन्दर बिकार भारी।
कहैं ये अन्धे करो अब सतगुरु नहीं तो हर दम रहौ दुखारी।
लगा के सूरति शब्द पै बैठो लखौ तो सन्मुख रहस बिहारी।
बजाते मुरली मधुर मधुर क्या अधर के ऊपर धरी है प्यारी।

धुनि ध्यान लय तेज हो चमाचम करम भरम औ शरम को टारी।
तन त्यागि करके चलो अवधपुर न फेरि झूलो गरभ मंझारी।६।

पदः- श्री सतगुरु के चरनन शीश धरै, लै मन्त्र राज फिर जाप करै।
धुनि नाम प्रकास समाधि परै, बिधि लेख की रेख पै मेख ठरै।
निज गगन गुफा रस अमी झरै, चाटै सो भक्तौं जियतै तरै।
सन्मुख सिय राम रहैं न टरैं, अन्धे कहैं दीनन दुःख हरै।४।

पदः- पढ़ि के कलमा जग नहीं जलमा, वहीं मुसलमा रब दल मा।
अंधे कहैं छलमा सो दुख मलमा, हर दम रोवै हल चल मा।।

दोहाः- ईमान मुशल्लम होय जब मुशलमान तब होय।
अंधे कह मानो बचन छूटि जायगी दोय।।

पदः- छूटि जायगी दोय रहैम खैरात पै आया।
रब का सुमिरन करै मिटै तब गर्भ बकाया।
तन तजि जावै भिशति जौन यहाँ बिजय कमाया।
अंधे कहैं पुकारि भेद यह सत्य बताया।४।

दोहाः- रुप्या कर्जा देत हैं सूत ते है इनकार।
अंधे कह रब देत है खान पान का भार।
जहां में ऐसे मुशलमां थोड़े परत देखाय।
अंधे कह वे हैं सुखी सांच कमाई खाय।
मन तो काबू है नहीं पढ़ते पांच नमाज।
अंधे कह जम अन्त में पकड़ैं जैसे बाज।६।

दोहाः- मन तो भागत फिरत है रहते रोजा तीस।
अंधे कह पछितांयगे पकड़े अन्त खबीस।
मन तो स्थिर है नहीं कलमा जपते रोज।
अंधे कह जम अन्त में पीटैं निकलै गोज।
बाजा सुनि मिरगा बंधै बीन की धुनि सुनि सांप।
अंधे कह धनि जीव ये प्रेम में तन दें आप।६।

पदः- बन में मरकट बहुत मिलि घुंघचिन क तपता तापते।
विश्वास लाले रंग पर लागै हवा नहिं कांपते।

अंधे कहैं यह बैन सुनि सतगुरु करै हटि पाप ते।
रूप तेज औ नाम धुनि लै पाय छूटै दाप ते।४।

पदः- करै मुरशिद जपै कलमा वही सच्चा मुसलमां है।
कहैं अंधे तजै तन जब जहां में फिर न जनमा है।
ध्यान धुनि नूर लै पायो लखै रब के अदलमा है।
वहां सुख शान्ति में रहता मातु पितु की बगलमा है।४।

पदः- सतगुरु से नाम कि जानि बिधि जो भजा सजा जग बीज बया।
धुनि ध्यान प्रकास समाधि मिली दोनों दिसि में जै कार भया।
सिंगार छटा छबि देखि रहा सिय राम कि भक्तौं नित्य नया।
कहैं अंध शाह तन छोड़ि चला चढ़ि यान पै अपने धाम गया।४।

पदः- सांप ने पकड़ा छँछूदरि मूख में धोखा पड़ा।
छोड़ दे तो नैन फूटैं गटकि ले तो चट मरा।
अंधे कहैं यह हाल जीवन चेतिये अब तो जरा।
सतगुरु करो सुमिरन सिखौ दोनों तरफ़ हो जस खरा।४।

दोहाः- हरि का जौहर देखिये मौहर रहे बजाय।
बन के जीवन धुनि सुनी पहुँचि गये हरषाय।
सब तन मन ते मस्त भे मनहु समाधि लगाय।
प्रभू तब बीन को दीन धरि रहे सबन स्वहराय।
ऐसी तनमैता भई जागत नहीं जगाय।
राम नाम आवाज दे श्याम ने दीन उठाय।६।

सब तुरतै चैतन्य भे रहै संग दुलराय।
कृष्ण प्रीति यह देखि कै नैन नीर झरि लाय।
मोहन सबको बिदा करि निज घर पहुँचे जाय।
अंधे कह ऐसी दया को कर सकत बड़ाय।
सौहर सखियन के बनैं सब संग करैं हंसाय।
अंधे कह मानो बचन द्वैत न मन में लाय।१२।

पदः- द्वैत न मन में लाय करैं हरि पूरन आसा।
निरगुन सरगुन बनैं जानि कै अपना दासा।

अंधे कहैं सुनाय भजौं है सब के पासा।
बिन सतगुरु है कठिन सत्य ये खेल तमासा।४।

पदः- मल्लाह तो अल्लाह है सल्लाह तुम उससे करो।
मुरशिद से कूचा जानि कै मन नाम की धुनि पर धरो।
अंधे कहैं अस्सी पैगम्बर मिलैं नित कदमन परौ।
आवै भिखारी दीन बनि बतलाय उसका दुख हरो।
दुःख सुख में सम रहौ सिद्धौं कि वाक्य से मति टरो।
सच्चा यही समझौ भजन जियतै तरो जियतै मरो।६।

दोहाः- अल्ला तुमरे पास है पल्ला चहुँ दिसि दीन।
अंधे कहैं मुरशिद बिना खोलै को परवीन।
गल्ला पासै में भरा भूखेन मरते लोग।
अंधे कह मुरशिद बिना मिलत नहीं संजोग।
खुद ही आइ के मिलत खोदा कहावै तौन।
अंधे कह मुरशिद करै भजै निरन्तर जौन।६।

शेरः- मालिक को खालिक सम मानै सो है ठीक वजीर।
अंधे कहैं बिना मुरशिद के होय फ़कीर न पीर।

दोहाः- मालिक से सालिस रहै सो है पीर फ़कीर।
अंधे कह मुरशिद करै सीख लेय तदवीर।
मौत कलेवा लेय करि अपने समै पै आय।
अंधे कह सुमिरन बिना चलै न और उपाय।
कान पकरि तोबा करै छोड़ै नहीं अजाब।
अंधे कह दोज़क पड़ै जान्यो नहीं सबाब।६।

पदः- सतगुरु करो सुमिरन सिखो सार्टीफिकेट लो पास का।
अंधे कहैं हो प्रिंशिपल छोड़ो जगत की आस का।
लखि दीन सिखला के सबक धुनि नाम लै परकास का।
खट रूप सन्मुख में लखौ तन तजि वतन लो बास का।
हर समय पितु मातु रखते ख्याल अपने दास का।
गर्भ का कर्जा चुका दुख छूट भव की त्रास का।६।

पदः- अजपा जाप जपा नहीं जाता।
सतगुरु करि के भेद जान लो तब हो वा में ज्ञाता।
दीन शांति बन सुरति जमावो सुनो नाम भन्नाता।
ध्यान प्रकास समाधी होवै जो बिधि लेख मिटाता।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि परमानन्द के दाता।

हर दम सन्मुख राजि रहे हैं जो इस रंग में माता।
अमृत पियै सुनै घट अनहद सुर मुनि के संग खाता।
नागिन जगै चक्र षट नाचैं सातौं कमल खिलाता।
उड़ै तरंग मस्त हो तन मन मुख से बोलि न आता।
गद गद कंठ रोम सब पुलकैं नैन नीर झरि लाता।

तन कम्पायमान ह्वै जावै रहि रहि शीश हिलाता।
तुरियातीत दशा यह भक्तौं बिरलै ही कोई पाता।
भिच्छा हित जो प्रेम से आवै वा को राह बताता।
आलस नींद को जीत लीन है सात्विक अन्न स्वहाता।
गुजर भरे को बसन बदन में अधिक होय बरताता।

रहनी गहनी सहनी वाकी बरनत शेश लजाता।
वाके दर्शन को जो जावै बचन से हिया जुड़ाता।
पीति करै तो अनुभव होवै सारे दुख बिलगाता।
अंधे कहैं जियति जो जागा वाके धनि पितु माता।
अन्त त्यागि तन अवध में पहुँचा फेरि न जग चिल्लाता।

पदः- भजन करके जो मरता है वही सच्चा मरन जानो।
बिना सुमिरन के जो मरता वही कच्चा मरन मानो।
बहुरि के फिर नहीं मरता वही सच्चा मरन मानो।
कहैं अंधे जो फिर मरता वही कच्चा मरन जानो।४।

पदः- भक्तों में सान मान का पता जहां न है।
अंधे कहैं बस जान लो भगवान वहां है।
पितु मातु संग खेलें खान पान वहां है।
परकास लय औ नाम धुनी ध्यान वहां है।४।

सुर मुनि औ शक्ती आवैं लपटान वहां है।
नागिन जगी चक्कर चलैं भन्नान वहाँ है।
कमलन की उड़ैं गमकैं उलटान वहाँ है।
खट झाँकियों कि महिमा का गुन गान वहां है।८।

अनहद सुनै अमृत पियै उफ़नान वहां है।
हर वक्त मस्त रहते नैन कान वहां है।
सतगुरु के ऊपर तन मन कुरबान वहाँ है।
तन त्यागि गे अवध पुर सुख खान वहाँ है।१२।

पदः- रसना भजि ले सीता राम।
यह नर देह मिली बड़े तप से सुमिरन बिन बेकाम।
सुर मुनि वेद शास्त्र सब गावत लागत नहिं कछु दाम।
अंधे कहैं अन्त निज पुर हो जो है अचल मुकाम।४।

पदः- रसना रटि ले राधे श्याम।
बड़े सुकृत ते मिलत है प्यारी यह मानुष को चाम।
भजन करै जियतै तरि जावै कर्म भूमि यह आम।
अंधे कहैं छोड़ि तन चलि कै बैठे हरि के धाम।४।

पदः- रसना भजहु रमा नारायण।
बड़ी भाग्य ते मिलत है नर तन जो मुद मंगल दायन।
मुक्ति भक्ति सुमिरन से होती सुर मुनि ते सुनि आयन।
अंधे कहैं चेतिये सुंदरि सत्य तुम्हैं समुझायन।४।

पदः- फ़ना कहत हैं मरि जाने को फ़िल्ला कहते जी जाना।
ये दोनों जब दस्त में होवैं तब फ़कीर भा मस्ताना।
वा के लिए कछु नहीं मुशिकिल खेल करत है मनमाना।
मुरशिद से सुमिरन बिधि जानि के प्रेम में निज को है साना।४।

अस्सी पैग़म्बर नित लावैं वा के लिए आब दाना।
वाह वाह करि कर उठाय दोऊ कहैं मुरीद पीर छाना।
तन छोड़ि ख़लक से हो रुखसत दें मादर फ़ादर स्थाना।
कहैं अंध शाह ह्वै गयो सही यह गर्भ कौल का नज़राना।८।

दोहाः- सान मान अभिमान ते भक्त रहत हैं दूर।
सतगुरु ते उपदेश लै प्रेम में ह्वै गे चूर।
चोर सबै तन से भगे ह्वै कर कायर कूर।
अंधे कह सिया राम के धन्य पूत भे सूर।४।

दोहाः- शुभ कारज औ बंदगी सुमिरन में सुकुवार।
अंधे कह बद कर्म में झट होवैं अगुवार।।

शेरः- मौत औ भगवान से जो खौफ़ नेकौ नहिं करै।
अंधे कहैं सो बसर सोचो को कहै कैसे तरै।
परिवार के हित हर तरह से पाप की रस्सी बरै।
बीज बोया ज़हर का तब ज़हर ही के फल फरैं।४।

पदः- रसना अधर जपत हरि नाम।
धन्य मुखारबिन्दु हैं प्यारे अंधे करत प्रनाम।
राम शब्द स्वांसा से निकलै नैन लखैं सिया राम।
श्रवन सुनैं धुनि राम नाम की ररंकार बसुजाम।
कर शुभ कारज में हैं तत्पर पग करैं तीरथ धाम।
तन मन की तनमैता ह्वै गई मिलि गो अचल मुकाम।६।

पदः- जरा हरि की तरफ़ झुकिये तो हृदय से लगा लेवैं।
करो सतगुरु गहो मारग चोर सारे भगा देवैं।
ध्यान धुनि नूर लै पावो करम दोनो दगा देवैं।
उठा नागिनि चला चक्कर कमल सातौं जगा देवैं।४।

देव मुनि आय दें दर्शन प्रेम तन मन पगा देवैं।
सुनो अनहद बजै घट में अमी चाखौ मंगा देवैं।
कहैं अन्धे भजन सच्चा यही रंग में रंगा देवैं।
छोड़ि तन अवध में पहुँचै श्याम करि झंगा देवैं।८।

पदः- भजो सिय राम को भक्तौं नहीं तो खावगे धोखा।
कहैं अंधे राम का नाम सब नामों में है चोखा।
इसी के बल से कुम्भज ऋषि जाय सामुद्र को सोखा।
अगम सत्ता भरी या में इसी से काल को मोखा।४।

शेरः- उछलना भूलि जावैगा उबलना हो नरक में जब,
कहैं अन्धे करो सुमिरन न परना हो नरक में तब,
मन तो बड़ा बदमास है बनिगा पसारी पाप को।
अंधे कहैं डरता नहीं सिया राम माई बाप को।।

पदः- बड़ाई नाम की भक्तौं राम जब नहीं सकत गाई।
कह्यो मानस में तुलसी दास सुर मुनि सब रहै ध्याई।
मैं अंधा क्या करूँ वरनन प्रभू हैं पलक दरियाई।
विश्व को करि अणू देवैं अणू से विश्व प्रगटाई।४।

पदः- नाम रूप सब में है राजत नाम की धुनि सब में है गाजत।
अंधे कहैं उन्हें यह छाजत जे सतगुरु करि तन मन मांजत।
अन्त त्यागि तन अवध को भाजत गर्भ बास में फेरि न आवत।
हरदम लखै पलक नहिं भांजत सन्मुख सीता राम बिराजत।४।

पदः- मैं तो प्यारा दुलारा हूँ षट रूपन।
सब सुर मुनि औ शक्तिन के जो भूपन।
कहैं अंधे पछोरो फटकि सूपन।
हरि मिलत हैं तन मन प्रेम धूपन।
बिना सतगुरु परोगे नरक कूपन।
चित चेतो नहीं तो हो थू थू पन।६।

दोहाः- सुमिरन बिना निज धाम में भक्तौं समाई हो नहीं।
अंधे कहैं सतगुरु बचन जब तक कमाई हो नहीं।।

पदः- अंधे नाचैं दोऊ कर दै तारी। बोलो सतगुरु की भक्तौं बलिहारी।
जिन जियतै कियो भव से पारी। लखि काल मृत्यु माया हारी।४।

पदः- अंधे नाचैं मगन तन मन ते हो। करो सतगुरु भरो तप धन ते हो।।
हरि सुमिरन करो नई तनते हो। तन छूटै जाव घर दन ते हो।४।

दोहाः- चलन हार थकि जात है थकत रास्ता नाहिं।
अंधे कह शुभ कर्म बिन कोइ हरि पावत नाहिं।

पदः- झूठ क बाप पाप है भाई। पाप क बाप लोभ दुखदाई।
आलस लोभ क बाप कहावै। शुभ कामन के निकट न जावै।

या से जीव परा चकरावै। सतगुरु बिन भव पार न पावै।
आलस जीति भजै हरि नामा। अंधे कहैं मिलै बिश्रामा।४।

दोहाः- युक्ती से मुक्ती भई, मुक्ती से भई भक्ति।
अंधे कह सतगुरु बचन नर तन में बड़ी शक्ति।।

शेरः- सांप ऐसे फन फनाते शेर ऐसे गर्जते।
अंधे कहैं शुभ कार्य सुनिके दूसरों को बर्जते।
सतगुरु बिना समुझै नहीं हैं लदें गर्भ के कर्ज ते।
तन छोड़ि नर्क में जा गिरैं नहिं कल है दुख की मर्ज ते।
जिसने जपा हरि नाम को उसकी दुराई हो नहीं।
अंधे कहैं भव जाल में भक्तों गिराई हो नहीं।६।

पदः- सतगुरु का चेला वह सांचा। राम नाम रंग में जो रांचा।।
बिधि ने मस्तक में जो खांचा। दीन जलाय भजन की आंचा।।
पारस को समुझत हैं कांचा। जियतै में षट रूप न टांचा।।
पढ़ि सुनि गुनि के जिन पद बांचा। उन का छूट गर्भ का नाचा।।
माया मृत्यु के दीन तमाचा। निकसि भगे तब चोरउ पांचा।।
मानुष तन अनमोल है ढांचा। अंधे कहैं देव मुनि बांचा।६।

कवित्तः- मन की मती सुधारि कै औ पांच को पछारि कै
आप को निहारि कै आनन्द में हंसा करौ।
तन दुःख को बिसारि कै औ दाया धर्म धारि कै
जो काम हो बिचारि कै प्रेम में फंसा करो।
जो अंध कह पुकारि कै न बोलिये तुकारि कै
जबान को संभारि कै समाधि में लसा करो।
बिधि का लिखा बिगारि कै गरीब को उबारि कै
तप कोष को सिहारि कै निज धाम में बसा करो।४।

सोरठाः- द्वैत को देहु निसारि जो सच्ची पदवी चहौ।
अंधे कहैं पुकारि सतगुरु करि जियतै लहौ।।

छंदः- शुभ कार्ज को देखै औ भागै हिरन कैसी चौकड़ी।
आँखों में छाई लालिमा औ भौंह दोनो हैं कड़ी।
मौत का डर है नहीं आखिर में उससे को लड़ी।

अंधे कहैं नहि चेतते यह भूल यारों है बड़ी।४।

सतगुरु करो पावो पता पासै में धन की खौंगड़ी।
धुनि ध्यान लै परकास हो खट रूप की झाँकी खड़ी।
हर समय तब देखा करो टरती नहीं मानो जड़ी।
तन छोड़ि निज पुर को चलै भव जाल में काहे पड़ी।८।

दोहाः- राम नाम के तार पर चढ़ि कै लखौ बहार।
सबै पदारथ हैं भरे अंधे कहैं पुकार।।
फूट कूट औ तर्क में जाको मन रमि जाय।
कोटिन कल्प क नर्क हो अंधे कहैं सुनाय।२।

पदः- अन्धे कहैं सुनाय बिकट यह तीनों नारी।
नर्क देंय पठवाय दीन मन की मति मारी।
जम गन करि करि घात हनैं तन छुरी कटारी।
कर्म किह्यो तस खाव पाप के फल हैं भारी।४।

पदः- गदा गद्द औ भदा भद्द जम मुक्कन मारैं।
पकरि के दोनों हाथ पटकि धरती पर डारैं।
लातन ते तब कांड़ि थूकि मुख दांत उखारैं।
सुधि बुधि जाय हिराय कांध धरि फेरि निहारैं।४।

चित्र गुप्त के पास जाय कर तुमको पारैं।
होश में हो तब वहां रजिस्टर तुरत निकारैं
सुनते जावो सूख बांधि चट नर्क सिधारैं।
फेंकि हौज में देंय कहैं अंधे को टारैं।८।

पदः- चटा चट्ट औ पटा पट्ट जम देहिं तमाचा।
अंधे कहैं पुकारि करै जब अन्त में जांचा।
या से हरि को भजो ढूँढ़ि सतगुरु कोई सांचा।
जियतै तरि मरि जाव लगै भव की नहिं आंचा।४।

दोहाः- सतगुरु से लै मंत्र को किह्यो नहीं अभ्यास।
अंधे कह जन्मौ मरौ भयो न सच्चे दास।।

पदः- ब्रह्म विद्या सीख लो सतगुरु दया की मूर्ती।

अंधे कहैं बनि दीन जावै देयंगे करि पूर्ती।
धुनि नाम लै परकास में रमि जायगी जब सूर्ती।
राम सीता सामने तब फिर न माया घूरती।४।

पदः- बोल बाला उसका आला जिसके दिल में है दया।
अंधे कहैं तन छोड़ि कै हरि धाम को वह तो गया।
सरकार के दरबार में सन्मान होता नित नया।
हौ भक्त बनते मन है अंते नेक नहिं आती हया।४।

पदः- सतगुरु से सुमिरन जानि कै खेलो बसंत आनन्द हो।
धुनि नाम लै परकास सन्मुख रूप परमानन्द हो।
सुर मुनि लिपटि जै जै करैं पितु मातु के फ़रजंद हो।
अंधे कहैं तन छोड़ि निज पुर लो मिटा दुख द्वंद हो।४।

पदः- सतगुरु करौ तन में लखौ हर समै होली हो रही।
धुनि ध्यान लै परकास औ षट रूप बोली हो रही।
दीनता औ शान्ति का कुम कुम अबीर बना वहाँ।
नाम रंग से प्रेम की चोंगी अमोली हो रही।
भक्त सुर मुनि खेलते हरि जस किलोली हो रही।५।

अष्ट सिद्धी नवो निद्धी लखि बचोली हो रही।
बाजा बजै अनहद वहाँ अमृत ढकोली हो रही।
अंधे कहैं अब जागिये यहँ पर बकौली हो रही।
आखिर में फिर पछितावगे जर जर ये चोली हो रही।९।

पदः- त्योहार में ब्योहार सच्चा तब तो होता फ़ायदा।
अंधे कहैं सुर मुनि बचन यह युग युगन्त क कायदा।
प्रेम श्रद्धा मित्रता गहि दीजिये जल पान को।
अंधे कहैं आशिष मिलै भक्तौं तभी तन आन को।
बर्त में जो शर्त होते मन को उन पर दीजिये।
अंधे कहैं जो चोर तन में हैं किनारे कीजिये।६।

दोहाः- मल औ मूत्र के त्याग हित भक्तौं पकड़ो आड़।
अंधे कह जे नहिं गुनैं उनको जानो भाँड़।।

चौबोला:- उनको जानो भाँड़ खांड सम जावैं पीसे।
साधक होय न सिद्ध बोलते शर्म को मीसे।
अंधे कहैं सुनाय बृथा में काढ़त खीसे।
अन्त समै पछिताय गये पड़ि जमन के हीसे।४।

पद:- मन को काबू लेय कर अंधे कहैं यह जोग है।
ब्रह्म सुख अनुभवहिं तब यह शांति सुख का भोग है।
त्यागि तन निजपुर चलै भव का मिटा सब रोग है।
सतगुरु बिना मिलता नहीं पढ़ि सुनि के करते सोंग है।४।

पद:- नित प्रति करो भजन की चरचा।
सतगुरु से जप भेद जान लो लगै न नेकौं खरचा।
मन मतंग तब संग में लागै पाप छोड़ि ह्वै फरचा।
तब फिर करन लगै तुमरे संग हरि बंदन औ अरचा।४।

ध्यान प्रकास समाधि में पहुँचौ नाम रूप लो परचा।
राम भजन बिन नर तन भक्तौं है हुक्के का नरचा।
टूट फूट करुवान लगा अस कासी बाल जिमि मरचा।
अँधे कहैं धन्य वह प्राणी जो यह जानै चरचा।८।

पद:- कहीं दुःख पड़ा कहीं सुःख खड़ा दुःख सुःख को भक्तौं देव हड़ा।
अंधे कहैं नाम पै जौन जड़ा निज धाम गयो बनि बैठि बड़ा।
तन मन ते कड़ा किमि होय खड़ा चलि नर्क पड़ा बहु कल्प सड़ा।
जमदूत अड़ा गहि बाँह लड़ा तहँ कौन छाँड़ा गयो होस उड़ा।४।

पद:- अंधे कहैं नाम पै जौन चढ़ा सो पढ़ा औ गढ़ा औ लढ़ा औ मढ़ा।
धुनि ध्यान प्रकास समाधि मिली सन्मुख सिय राम क रूप कढ़ा।।

दोहा:- मानुष का तन है घड़ा ठोकर लागै फूट।
अंधे कह सुमिरन करै नेक सकै नहिं टूट।।

पद:- राम नाम को जपते जाव। खाते पीते चलते जाव।।
बैठे ठाढ़े लेटे गाव। अंधे कहैं मिला क्या दांव।।
तन मन में जब आवै भाव। पल में करै रंक ते राव।।
अन्त त्यागि तन निज पुर धाव। सिया राम ढिग बैठक पाव।८।

पदः- नर नारिन पर बड़ा दुख भारी।
मन दुष्टन के संग भा भर्मित मति वाकी हत्यारी।
जीव अकेल बिकल ह्वै रोवत एक हाथ बाजत नहिं तारी।
अंधे कहैं बिना सतगुरु के को भव पार उतारी।४।

पगा झगा नहि अंधा घोड़ा। सिर्फ़ लंगोटी का हो जोड़ा।
सतगुरु से लै नाम क कोड़ा। सारे चोरन क मुख मोड़ा।
तेज समाधि कर्म गति गोड़ा। अंधे कहैं फूटि भ्रम फोड़ा।
धुनि औ रूप का मिलिगा तोड़ा। आवा गमन कि संगति छोड़ा।८।

दोहाः- चिट्टी गिट्टी काम दे बिट्टी लिट्टी खाँय।
अंधे कह हरि भजन बिन मिट्टी मिट्टी जाय।।

पदः- मन तुम पापिन में जर दार। पापिन में सरदार।।
पापिन में हुशियार। पापिन में चटक्वार।।
पापिन में बलदार। पापिन में दलदार।।
पापिन मं बटपार। पापिन में बरवार।।
पापिन में घटवार। पापिन में मतवार।।
पापिन में खभुवार।
अंधे कहैं शांति ह्वै बैठो जीव होय भवपार।१२।

दोहाः- तन जर्जर खोखल भयो मास हांड़ गे सूख।
अंधे कह तबहूँ बनी सान मान की भूख।।

पदः- मन मानै तस अर्थ छपावै। मन मानै तस कहि समुझावै।।
अपनी काव्य में नेह लगावै। औरन की सुनि भेद बतावै।।
कथा कीर्तन में जहँ जावै। देखा देखी सुनै सुनावै।।
द्वैत भाव को नहिं बिलगावै। अंधे कहैं पार किमि पावै।८।

दोहाः- सतगुरु के ढिग जाय के भजन कि बिधि ले सीख।
अंधे कह तन मन कसै मिलै नाम की भीख।।

पदः- मिलै नाम की भीख लखि सम चोर जांय मर।
अंधे कहैं सुनाय जाय तब जियतै में तर।

सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि हैं समुहे पर।
अन्त त्यागि तन चलै जाय चट बैठै निज घर।४।

पदः- राम नाम के संग में जो भक्त है माता हुआ।
अंधे कहैं सो धन्य है पितु मातु का काता हुआ।
नागिनि जगा चक्कर नचा कमलन को उलटाता हुआ।
दस से अरतालिस किसिम की गमकैं उड़वाता हुआ।४।

हर समै स्वरन से निकलतीं तन मन से हरषाता हुआ।
अनहद सुनै अमृत पियै सुर मुनि से बतलाता हुआ।
ध्यान धुनि परकास लै बिधि लेख कटवाता हुआ।
राम सीता की छटा छबि सामने छाता हुआ।८।

सतगुरु से मारग जानि कै आनन्द का दाता हुआ।
उस की सर वरि को करै सब वस्तु का ज्ञाता हुआ।
दीनता औ शांति गहि सरवत्र विख्याता हुआ।
जल चर थल चर नभ चर जितने सब के मन भाता हुआ।१२।

तन त्यागि गा निज धाम को फिरि जग से क्या नाता हुआ।
जिसने न जाना जियति में वह दोनों दिसि ताता हुआ।
अनमोल नर तन खो दिया आलस के फल खाता हुआ।
नर्क में जा कर गिरा पल भर न कल पाता हुआ।१६।

शेरः- भजन में जाय पक्का ह्वै रिटायर जियत सो होवै।
कहैं अंधे न फिर कबहूँ गरभ में आय के रोवै।।
लूटेरे लूटते यारों तुम्हारे पास जो धन है।
कहैं अंधे बचै कैसे उन्हीं के संग में मन है।।
करो सतगुरु पता पावो चन्द ही रोज़ का पन है।
अन्त में बोल नहिं फूटै बड़े बिकराल जम गन हैं।३।

पदः- भक्तौं निज घर को है चलना।
चन्द रोज की पाही यहँ पर भूलि न वाही बनना।
सतगुरु से जप भेद जान कै बैठि एकांत में करना।
ध्यान धुनी परकास दसा लै बिधि का लिखा कतरना।
अमृत पियो सुनो घट अनहद सुर मुनि को पग धरना।५।

छबि सिंगार छटा क्या बांकी झाँकी सन्मुख ठरना।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि जिनके सब जग शरना।
नागिन जगै चक्र हों चालू कमलन होंय पसरना।
अंधे कहैं भजन यह सांचा सब के हित हम बरना।
जे चेतैं ते मुक्त भक्त हों जग नहिं होय बिचरना।१०।

पदः- सातौं दिवस औ बारह मास। चौबिस घंटा रुप प्रकास।
नाम कि धुनि हर शै से खास। देखै सुनै राम का दास।
अंधे कहैं भयो सुख रास। सतगुरु करि पायो सब पास।
आने जाने का दुख नास। मिलिगा अवध धाम में बास।४।

दोहाः- तबालत भजन करने में तो लानत ज़िन्दगी को है।
कहैं अंधे तरै कैसे न करता बंदगी को है।
नवो ग्रह शान्ति हों उसके जो नौ द्वारेन को तै कर ले।
कहैं अंधे वही भक्तौं भजन के सुख को बै कर ले।४।

पदः- दिन तिथि मास महूर्त रासि ग्रह औ नक्षत्र सब जाने।
दसौ दिसा औ समै जोग पल दंड नाम सुख साने।
जौन कार्य सौंप्यो प्रभु जा को सो सिर धरि के ठाने।
अंधे कहैं बचन सतगुरु के सुनि हम भेद बखाने।४।

पदः- मन से लड़ौ जबरदस्ती से।
सतगुरु से सब दांव जानि कै मारि देव दस्ती से।
हारि जाय तब संग में लागै भजन करौ मस्ती से।
अंधे कहैं अंत निजपुर हो छूटौ दुख बस्ती से।४।

पदः- गर्भ की बाकी पड़ी किस्ती तो उसकी कीजिये।
अंधे कहैं सतगुरु से सुमिरन जान कर फिर दीजिये।
नाम की धुनि हो रही इस तार पर चढ़ि रीझिये।
परकास ध्यान समाधि सन्मुख रूप सिया हरि लीजिये।
अनहद सुनौ सुर मुनि मिलैं अमृत गगन में पीजिये।
जियतै में भक्तौं जानि कै इस रंग में तौ भीजिये।६।

पदः- सतगुरु से सुमिरन जानि कै जियतै में करलो फैसला।
अंधे कहैं चेतौ नहीं तो दाबिहै माया गला।

नाम धुनि परकास लै में कर्म दोनो हैं तला।
अमृत पियै अनहद सुनै सुर मुनि सभी कहते भला।४।

षट रूप सन्मुख में रहै जिनका सभी जां झल झला।
छोड़ि तन श्री अवध गा जो सब से ऊँचा है टिला।
भक्त सच्चा पहुँचता जिसने सिखा तेहरी कला।
सूरति शबद का मार्ग ये कोटिन में पावै कोइ लला।८।

पदः- भक्तौं डारौ रैनि में डाका।
बारह पर दुइ बजैं बैठि जाव ध्यान करौ अजपा का।
रेफ़ बिन्दु की धुनि हो जारी बिजै होंय नौ नाका।
त्रिकुटी पर आ ऊ म बैठे खोलैं फाटक बाँका।
तिरबेनी असनान लेव करि देखौ खेल वहां का।
अमृत पिऔ सुनौ घट अनहद सुर मुनि कहैं पितु माका।६।

तेज होय चलि जाव दसा लै रूप न रंग सनाका।
उतरौ सन्मुख हर दम सोहैं बरनौ किमि जस छाका।
सतगुरु बिना मिलै नहिं मारग करौ चहै तै फाँका।
जतन पाय कर पतन न होवै मुक्ति भक्ति को ताका।
उत्पति पालन परलै करतल सत्य बचन अंधरा का।
अन्त त्यागि तन पहुँचि बिराजौ जन्म स्थान जहाँ का।१२।

दोहाः- जीभ नैन कर हिलैं नहिं मन समाय जाय नाम।
अंधे कह अजपा यही मिलै जियति निज धाम।।

सोरठाः- तन में घुसि लो हेर राज जोग यह है सही।
जग में गिरौ न फेरि अंधे कह मानो कही।।

दोहाः- मरैं सबै जब कल्पना जियति होहु कृत कृत्य।
अंधे कह हर दम मगन तन नहिं होय अनित्य।
मन तो भया बिरक्त नहिं धरे बिरक्त क भेष।
अंधे कह जनमै मरै मिटै न कर्म कि रेष।४।

पदः- जब कज़ा भई तब मज़ा कहां कहें अन्धे शाह हरि भजा नहीं।
सतगुरु न किह्यो तब गिजा कहाँ तन मन को प्रेम में मंजा नहीं।

जिन जियत लखा भे हरि के सखा उनको गहि पायो अजा नहीं।
बिन शान्ति दीनता के पकड़े षट रूप की होती रज़ा नहीं।४।

शेरः- सतगुरु से मारग जानि के मन को जगा लो सुःख हो।
अंधे कहैं चेतो नहीं दोनो जहां में दुःख हो।।

पदः- भक्तौं कीजै निसि में चोरी।
दुइबन्दु जस बजैं चेति उठि बैठो ध्यान धरौ मन जोरी।
रेफ़ बिन्दु की धुनि खुलि जावै भर्म का भाँड़ा फोरी।
सब सुर मुनि नित दर्शन देवैं हरि गुन गावैं ढोरी।४।

सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि जिन यह सृष्टि रचोरी।
हर दम तुमरे सन्मुख राजैं त्रिभुवन की छबि छोरी।
सतगुरु करो भजन बिधि जानो बातैं छोड़ो कोरी।
अंधे कहैं अन्त निज पुर हो छूटै जग से डोरी।८।

दोहाः- नैन जीभ कर बन्द हों, सूरति शब्द समान।
अन्धे कह अजपा यही खोले आंखी कान।।

सोरठाः- निर्विकल्प यह ध्यान, राजयोग या को कहत।
अंधे कह लो मान, बिरले कोइ या को लहत।।

पदः- डाकू पांच कठिन हैं तन के। हर दम कान फूँकते मन के।
अंधे कहैं रहत सब सनके। सुकृत लूटि लेत छन छन के।
सतगुरु करि सुमिरैं ते रन के। निज पुर पहुँचि जाँय बनि धन के।
भव दुख में फिरि जाँय न हन के। सदा रहैं सियराम कि पन के।४।

शेरः- बाइबिल कुरान पढ़ि सुनि मन को नहीं जगाया।
अंधे कहैं बसर तन अनमोल हा गँवाया।।

पदः- धन्य जीह जो हरि गुण गावैं। धन्य नैन हरि दर्शन पावैं।।
धन्य श्रवन हरि यश को सुनते। धन्य हाथ शुभ कारज चुनते।।
धन्य पाँव जो तीरथ करते। धन्य शरीर गंगा तट मरते।।
अन्धे कहैं धन्य ते प्रानी। जे सतगुरु हरि को पहिचानी।४।

दोहाः- अन्न वस्त्र फल दूध जल, तन रक्षा हित देत।
अंधे कह ऐसे प्रभू, हर दम तब सुधि लेत।।

नर तन पाय के हरि भज्यो, ते जियते गे चेत
अंधे कह जे जग फँसे, नर्क जाँय की प्रेत।२।

चौपाईः- धन्य नासिका स्वांसा रोकै। धन्य स्वांस चलि लय में ठोंकै।
धन्य प्राण लै सुधि बुधि खोवै। धन्य जीव तहँ मुक्ती होवै।
धन्य मुक्ति भक्ती को पावै। धन्य भक्त हरि रंग बनि जावै।
धन्य जुक्ति सतगुरु बतलावै। अंधे कहैं नाम धुनि पावै।४।

चौपाईः- हरि चरित जे गाते हैं जी। हरि चरित लिखवाते हैं जी।
हरि चरित बतलाते हैं जी। हरि चरित समुझाते हैं जी।
हरि चरित सुनवाते हैं जी। हरि चरित सिखलाते हैं जी।
हरि चरित पर माते हैं जी। हरि चरित में आते हैं जी।
हरि चरित कह खाते हैं जी। हरि चरित मन लाते हैं जी।
हरि चरित पढ़ि जाते हैं जी। अंधे के मन भाते हैं जी।६।

पदः- सतगुरु करि नाम पै जुट्टि जाव। निंद्या औ स्तुति घुट्टि जाव।
सुर मुनि की नित प्रति गुष्टि जाव। अमृत को पी कर पुष्टि जाव।
तन तजि के निज पुर बुट्टि जाव। अंधे कहें फेरि न श्रृष्टि आव।
सुनि बैन न मानो रुष्टि जाव। सब योनिन जन्मौ भृष्टि जाव।४।

पदः- भजन में मन तुम काहे न लागौ।
का हमते तुमते है झगड़ा इधर उधर जो भागौ।
चोर चलाकन की संगति में निज मति को है पागौ।
आखिर का परिनाम बुरा है नर्क में हमको टांगौ।४।

सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानै छूटै मम कुल दागौ।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रूप सामने तागौ।
अन्धे कहैं अन्त निज पुर हो जब जियतै में जागौ।
यह बिनती गिनती में लावो बार बार मैं मागौं।८।

पदः- चौबिसै घंटे के भीतर शुभ अशुभ का फैसला।
अन्धे कहैं यह धर्म राज औ चित्रगुप्त की है सला।
पाप कर्म जे जीव करते उनका यम घोटते गला।
जाय नर्क में छोड़ दें चिल्लाय उछरैं करि कला।

शुभ कर्म करने वाले जीवों का करैं खुश ह्वै भला।
दोनों जहां जैकार उनकी पाप ताप को है मला।६।

पदः- जल भोजन को रोज भकोस। खाली पेट करै मन रोस।।
ऐसा यामें भरा ढकोस। राम भजन का कर तन होस।।
या में भक्तों किसका दोस। मन के पास पाप का कोस।।
अंधे कहैं त्यागि के जोस। दीन बनै पावै सर पोस।८।

दोहाः- जन्म मरन ते छूटि गये ते सतगुरु के सच्चे।
अन्धे कहैं जौन नहिं छूटे ते कच्चे के हैं कच्चे।।

पदः- सुतार राम नाम है बड़ा सुतार।
चारि पदारथ या के भीतर अन्धे कहत पुकार।
या को दान लेय सतगुरु से जियति होय भव पार।
तन छूटै साकेत बिराजै दोनो दिसि जैकार।४।

पदः- बलिहार सतगुरु की बोलो बलिहार।
राम नाम का भेद दीन जिन जीव भयो मतवार।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि सन्मुख सिय सरकार।
अंधे कहैं छोड़ि तन निज पुर बैठो जय जय कार।४।

पदः- हरि सुमिरन में लागु अकेले।
सतगुरु से सब भेद जानि कै मन को संग सकेले।
माया मृत्यु काल जम गण सब चोर जांय बनि चेले।
ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि राम सिया संग खेले।४।

सुर मुनि सब उर में गहि गहि कहैं कर्म रेख को बेलै।
भाँति भांति के फूलन माला गले में हँसि हँसि मेलें।
अंधे कहैं अन्त निज पुर में चढ़ि सिंहासन पेलें।
तिरगुन के यह परे भजन है बहुरि गर्भ नहि झेले।८।

पदः- सुख शान्ति गर लेना चहौ हर दम भजौ हरि नाम को।
धुनि ध्यान लय परकास सन्मुख लखो सीता राम को।
सतगुरु करो मारग गहो जो मिल रहा बेदाम को।
अंधे कहैं उपदेश यह हम दे रहे नर बाम को।४।

पदः- राम नाम सब सुख का नगर है। सतगुरु करि जो गहत डगर है।।
हर दम सन्मुख वाके लंगर है। श्याम स्वरूप अनूप सुघर है।।
मुरली सोहत जा के अधर है। अन्धे कह दोउ दिसन गुजर है।६।

पदः- राम को हेरन जात कहाँ को वै तो पास बिराजत हैं जी।
सतगुरु से जप भेद जानि कै तन मन को जे मांजत हैं जी।
सुर मुनि नित प्रति मिलन को आवैं अनहद घट में बाजत है जी।
नाम की धुनि परकास समाधी कर्म रेख को रांजत है जी।
निज कुल की मर्याद यही है और कछु नहीं छाजत है जी।
अंधे कहैं अन्त निज पुर हो फेरि गर्भ नहिं भाजत है जी।६।

पदः- मन लगा नाम में किसका हो। सतगुरु है सच्चा जिसका हो।।
शुभ कर्मन में कर तन किसका हो। कहिं पता नहीं मिलै रिसि का हो।।
सब छूटे जगत के चिरका हो। कहैं अन्धे भया दोउ दिशि का हो।३।

दोहाः- अन्धे कह सतगुरु करै देवै भेद बताय।
राम नाम में मन रमै चोरन नहीं बिसाय।।

पदः- इस देस से छूटा चहो उपदेश ऊपर का गुनौ।
अन्धे कहैं सतगुरु करौ बस नाम की धुनि को सुनौ।
ध्यान तेज समाधि हो सब बासनाओं को भुनौ।
देव मुनि आवैं मिलन षट रूप सन्मुख में चुनौ।४।

शेरः- इज्ज़त चहौ हुज्जत तजो सतगुरु करो हरि नाम लो।
अन्धे कहैं लज्ज़त वही सब सुख की भक्तों खान लो।।

पदः- अजल खड़ी सिर गजल सुनाती नाच दिखाती भाव बताती।
सतगुरु करौ भजौ दिन राती बार बार है यही चेताती।
हरि सुमिरन बिन हम लै जाती जन्म मरन की छुटै न लाती।
अन्धे कहैं प्रेम रस माती वाकी हटी द्वैत की गाती।४।

पदः- पावो राम नाम गुलगुला। कैसा सुन्दर लगै पुलपुला।।
सारे चोरन देत भुल भुला। भूख न मारै मरै चुल चुला।।
भूलि गया सब केर झुल झुला। सतगुरु करि मग जौन तुल तुला।।
सो नहिं गर्भ का बनै बुल बुला। अपने कुल का भया कुल कुला।।

नाम रूप रंग जो घुल घुला। अन्धे कहैं बचन छुल छुला।।
सच्चा हरि दरबार खुल खुला। दीन शान्ति बनि जाय फुल फुला।१२।

पदः- सतगुरु से सुमिरन बिधि लै के तन मन प्रेम में माजैं।
ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि रूप सामने राजैं।
सुर मुनि लाय खिलावैं नित प्रति खीर औ दिब्य रसा जैं।
अमृत पियै सुनै घट अनहद मधुर मधुर क्या बाजै।
अंधे कहैं भक्त जो सांचे वाको यह सुख छाजै।
अन्त त्यागि तन निज पुर बैठे अमित भानु दुति लाजैं।६।

पदः- सिय राघो रहत हैं पास हो। तुम लीन्हे जगत की आस हो।।
करो सतगुरु दीन बनि दास हो। कहैं अंधे छुटै जम त्रास हो।।
मिलैं सुर मुनि तुम्हें नित गास हो। अमी चाखो झरत बारो मास हो।।
जगै नागिन चक्र चलैं खास हो। सब कमल क होय बिकास हो।।
लय ध्यान धुनी परकाश हो। जहाँ रवि शशि न बारि बतास हो।।
निज धाम सब सुख रासि हो। तन तजि के अचल लो बास हो।१२।

पदः- राम नाम की खा लोन बरिया। कैसी लगै बिचित्र सुन्दरिया।।
सतगुरु के चरनन सिर धरिया। सो यह पावै सुख की सरिया।।
सन्मुख लाला नन्द महरिया। अधर पै जाके धरी मुरलिया।।
छम छम नाचै करै नजरिया। धुनि परकास समाधि में परिया।।
दोनों करम होंय जरि छरिया। साँचे भक्तन केरि डगरिया।।
अन्धे कहैं जियति जे तरिया। सो नहिं आवें लौटि नगरिया।१२।

दोहाः- सतगुरु के चेला बने, बचन पै नहिं विश्वास।
अन्धे कह वे सब गिरैं, ह्वै गे सत्यानाश।
सतगुरु करि चेला भये, वाक्य पै नहिं पतियांय।
अंधे कह वे भ्रष्ट भे, बार बार चकरांय।
सतगुरु के बनि शिष्य गे, कीन्हे पाप महान।
अन्धे कह वे तरि गये, बचन लीन जिन मान।६।

पदः- बिना भजन के अनमोल काया कहैं ये अंधे बे काम की है।
जगत के सुख सब दुखों में साने न आस पूरी नर बाम की है।
करैं जे सतगुरु मन रोक लेवें आनन्द उनको बसुजाम की है।

लय ध्यान औ तेज हो लपा लप अखन्ड धुनि होत हरि नाम की है।
अदभुद छटा छबि अलबेली जोड़ी सन्मुख में हर दम प्रिय श्याम की है।
तन छोड़ि कर के चढ़े सिंहासन डगर खुली साफ़ निज धाम की है।६।

पदः- मन मुन्सी मानत नहीं पांच सिपाही संग।
झूठी लिखत रिपोर्ट नित जीव होत है तंग।
जीव होत है तंग छोड़ि तन नर्क को जावै।
ऐसा नमक हराम दया नेकौ नहिं आवै।
शुभ कामन पर लीक मारि कहि फीक भगावै।
सतगुरु बिनु कह अन्ध शाह को बस करि पावै।६।

पदः- सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि में भक्तों कोई भेद नहीं।
सुर मुनि वेद शास्त्र युग वरन्यो नेक कियो कोई खेद नहीं।
सब में षट झाँकी परि पूरन देखि परत कोई छेद नहीं।
अंधे कहैं नैन श्रुति खुलते तब सब कहत लवेद नहीं।४।

पदः- गीता रामायण का अर्थ। जानि जाय नहिं होय अनर्थ।
ज्ञान भक्ति बिन नर तन व्यर्थ। अंधे कहैं कह्यो जड़ भर्थ।।

दोहाः- राम कृष्ण और विष्णु संग जौन भक्त बतलाय।
सीता राधे औ रमा, दें नित हब्य पवाय।
हरि सुमिरन जे करते भक्तौं वे सब पहुँचें ऊंचे।
अंधे कहैं जे चेतत नाही ते सब जावें कूचे।४।

पदः- आना औ जाना लगा रहा तब भजन कहाँ वह जेल हुआ।
कहैं अन्धे शाह सतगुरु से शब्द लै गया लागि नहिं फेल हुआ।
अनहद सुनता अमृत पीता सुर मुनि के सँग सुख खेल हुआ।
धुनि नाम प्रकास समाधि जानि सिय राम से हर दम मेल हुआ।
बनि शान्ति दीन विश्वास गहा मन उसका आपै तेल हुआ।
सर्वत्र उसे मुद मंगल है तप धन का रेला रेल हुआ।६।

पदः- राम हित उठै बिरह की पीर। कहैं अंधे हर दम रहै तीर।
करौ सतगुरु हिरदै धरि धरि। शांति मन आपै होवै कीर।
जाव तब जियते में बनि बीर। भागि जाय चोरन की तब भीर।
ध्यान परकास धुनी गंभीर। दसा लै काटै कर्म लकीर।

पवावें सुर मुनि पूरी खीर। पिलावें श्री गंगा का नीर।
करै जो जियति यही तदबीर। होय बे फ़िकिर के तौन फ़कीर।६।

पदः- सतगुरु से सुमिरन जानि कै मन ठीक करना सीख लो।
अंधे कहैं बनि दीन जावो शांति से यह भीख लो।
सुर मुनि मिलैं अनहद सुनो अमृत गगन से चीख लो।
नाम धुनि परकास लै सिय राम सन्मुख दीख लो।४।

सोरठाः- सतगुरु से बिधि सीख सुमिरो भक्तों नेम से।
मिलै नाम की भीख, रहौ सदा तब छेम से।।
सुर मुनि देवैं ईख, चूसौ तन मन प्रेम से।
अंधे कह लो दीख, होय भेंट नहिं मेम से।२।

पदः- श्याम की मुरली की धुनि भक्तों जहां मन में बसी।
अंधे कहैं सतगुरु कृपा जग जाल जियतै तजि हँसी।
नाम तान औ तेज लय में जाय कर वह तो लसी।
जोड़ी युगुल सन्मुख लखै तन त्यागि जग में नहिं खसी।४।

पदः- सतगुरु कृपा निधि मंत्र तारक दहिने कान में फूँक दो।
सुर मुनि सबै दरसन लगैं मन की मती करि मूक दो।
चोर सारे हों किनारे बासनायें बूँक दो।
अंधे कहैं हर दम मगन प्रभु गर्भ बास पै टूक दो।४।

पदः- अंधे कहैं मम बिनय सुन कर के कृपा निधि पूक दो।
सुमिरन में मैं आलस करूँ तो डांटि करके भूँक दो।
जब न आवैं राह पर तब मुख पर आकर थूँक दो।
बासना सारी जरै तब नाम की बन्दूक दो।
तप धन धरन हित दीनता औ शांति की सन्दूक दो।
प्रेम की मस्ती चढ़ै दुलराय कान में कूक दो।६।

पदः- राम नाम पहिले दियो, शान्ति भयो मन जान।
अंधे कह तब फिर दियो, षट अक्षर का दान।।

पदः- षट अक्षर का दान धुनी षट परे सुनाई।
जग मग जग मग जोति जलत तहँ परत देखाई।

बदलि जोत भा तेज लोक सब लीन छिपाई।
मन बानी गुण वहाँ पहुँचि नहिं सकत बताई।

बदलि दृष्टि फिर गई शून्य में गया समाई।५।
सुधि बुधि गई हेराय घोर निद्रा जिमि आई।
सतगुरु कृपा ते चेत आय तन में हर्षाई।
अंधे कहैं सुनाय रूप षट सन्मुख छाई।८।

दोहाः- राज योग सुख सार है, सतगुरु से सिख लेव।
अंधे कहैं मानो बचन, तब पावो कछु भेव।।

पदः- अंधे कहैं नाम जपो वाह वाह वाह।
सतगुरु से जानि खपो वाह वाह वाह।
जग में तब काहे टपो वाह वाह वाह।
तन मन से खूब लपौ वाह वाह वाह।४।

पदः- श्याम सुन्दर बाँसुरी मुझ को जरा सिखलाइये।
निज कर से धरि के अधर पै दोउ करन ते पकराइये।
कूक की बिधि को बता अँगुरी स्वरन फेरवाइये।
ताल तान औ ध्वनि सुनैं तन मन को प्रेम पगाइये।
छा राग छत्तिस रागिनी प्रगटैं दरश करवाइये।
अंधे कहैं मुझ दीन को भव जाल से छुटवाइये।६।

दोहाः- राम नाम शिव ने भरा, मुरली में भगवान।
अंधे कह सो दीजिये, आप हैं कृपा निधान।।

पदः- राम हैं धरनी धरे अंधे कहें देखो तरे।
राम सब से हैं परे राम सब से हैं खरे।
राम जपि के जो मरे ते राम धाम से नहिं हटे।
राम सब में हैं भरे सतगुरु से जानै तप फरे।४।

दोहाः- राम भजन में पेंच है, सतगुरु के ढिग जान।
अंधे कह मानो बचन, छूटि जाय अज्ञान।।

पदः- छूटि जाय अज्ञान ज्ञान हिरदय में आवै।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय कर्म मिटावै।

सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख छावै।
अदभुद छबि सिंगार छटा देखे मुसकावै।४।

सुर मुनि आवैं मिलन दिब्य नित भोग पवावैं।
पाय मस्त अस होय स्वाद का भेद न पावै।
अन्त समै तन त्यागि यान चढ़ि निज पुर जावै।।
अंधे कहैं सुनाय मुक्त ह्वै भक्ति को पावै।८।

पदः- जियति जल जाओगे भक्तों तो दोनो दिसि में महकोगे।
करौ सतगुरु सिखौ सुमिरन कभी नेकौ न बहँकोगे।
समाधी सहज हो हासिल किसी से फिर न डँहकोगे।
कहैं अंधे छुटै तन जब यान चढ़ि घर में ठहकोगे।४।

दोहाः- शुभ कारज हित नातवाँ, अशुभ के हित बलदार।
अंधे कह जानौ उन्हें, पापिन में हत्यार।।

दोहाः- ध्यान से नाम की धुनि खुलै, ध्यान से होत प्रकास।
ध्यान से हरि के दर्श हों, ध्यान से शून्य में बास।।
ध्यान से अनहद घट सुनो, ध्यान से अमृत पान।
ध्यान से सब सुर मुनि मिलैं, प्रगटै ब्रह्म ज्ञान।।
ध्यान से षट चक्कर सुधैं, सातों कमल फुलाँय।
ध्यान से जागै नागिनी, सब लोकन लै जाय।।
ध्यान से तन मन जात जुरि, अन्धे कहैं सुनाय।
सतगुरु करि सब जानिये, मुक्ति भक्ति मिल जाय।४।

पदः- सतगुरु दाया के सागर हैं। सुर मुनिन सरूप उजागर हैं।।
अंधे कहैं सब गुण आगर हैं। श्री राम विष्णु नटनागर हैं।।

पदः- नाम की कुँडी मन का सोटा। सारे चोरन को गहि घोटा।।
पीकर मस्त होय बनि छोटा। सो जानो सिय राम क ढोटा।।
सतगुरु के चरनन पर लोटा। अन्धे कहैं परै नहिं टोटा।।
चेते नहीं सो होवै खोटा। अन्त समै यम पकरैं घोंटा।८।

दोहाः- यहाँ पै करते जिद्दि हो, मानत बचन को झूठ।
अंधे कह जम पकड़ि कै, लै चलिहैं जिमि ठूँठ।।

शेरः- जियति में जायगा जल जो वही महकै दोऊ दिसि का।
कहैं अन्धे शरन सतगुरु जगत में फिरि नहीं खिसका।।

शेरः- अंधे कहैं सतगुरु शरनि बनि दीन शांति से जो गया।
अज्ञान का परदा हटा चट रैनि का दिन हो गया।।

पदः- सतगुरु से जप जतन जानि कै जीवन अपना जौन सुधारी।
अंधे कहैं वही सुख सागर हर दम रहिहै बिधि गति टारी।
नाम की धुनि परकास दसा लै सन्मुख सीता राम निहारी।
सुर मुनि सब नित सँग में बैठैं राम भजन की चरचा जारी।४।
अन्त त्यागि तन चढ़ि सिंहासन बैठै चलि साकेत मँझारी।
उत्तम सहजा बृत्य यही है सूरति शब्द में जावै ढारी।
तब सब जियतै करतल होवै सारद शेष महेश पुकारी।
स्वाँसा समै शरीर अमोल है सुमिरन में लागौ नर नारी।८।

शेरः- भजन सब से बड़ा भक्तों यही बिधि शेष शिव करते।
कहैं अंधे जे नहिं चेतैं वही फिरि जन्मते मरते।।

पदः- सतगुरु करु देरी देरी ना। हरि सुमिरौ फेरी फेरी ना।।
काया यह तेरी तेरी ना। अंधे कहैं टेरी टेरी ना।४।

पदः- सतगुरु करु अबहीं अबेरी ना। सुमिरौ हरि जग में फेरी ना।।
घट में घुसि जिन ने हेरी ना। अंधे कहैं तेहि सुख ढेरी ना।४।

पदः- सतगुरु करि सुमिरौ देरी ना। माया अब तुम को घेरी ना।।
तप धन वै पावत गेरी ना। अंधे कहैं आलस पेरी ना।४।

पदः- दुनियां यह तेरी तेरी ना। भजिते हरि फेरी फेरी ना।।
जे मानत मेरी मेरी ना। अंधे कहैं देरी देरी ना।४।

दोहाः- नेम टेम तब ही तलक जब तक प्रेम न होय।
प्रेम भया जब नाम से नेम टेम गे खोय।।

पदः- नेम टेम गे खोय भयो मुद मंगल भारी।
जगत पिता श्री राम सिया जग जननि निहारी।
हर दम सन्मुख रहैं छटा छबि अनुपम प्यारी।
समै स्वांस तन है अमोल चेतो नर नारी।४।

सतगुरु करि सुनि लेहु नाम धुनि होत करारी।
हर शै में है रमी रहत सब से है न्यारी।
ध्यान प्रकास समाधि देव मुनि दर्शें झारी।
मुक्ति भक्ति भई जियति कहैं अंधे बलिहारी।८।

शेरः- सत्य का रास्ता पकड़े दुःख हो सहन करि जावै।
कहै अंधे वही भक्तौं बिला शक मुक्ति को पावै।।

पदः- अंधे कह साधक हो सिद्धि। जल भोजन हलका है निद्धि।।
नाम खुलै अनुभव की बृद्धि। सतगुरु बिना होत नहिं सिद्धि।।

पदः- खेलत राम डफैय्या हो सरजू जल भीतर।
बारह सहस सखा संग सोहैं भरथ लखन रिपुहन तीनो भैय्या हो
सरजू जल भीतर।
दोनो कर जल पर सब थपकत आँखैं मीचि लेवैय्या हो सरजू जल भीतर।
सब पर सब जल चुल्लुन फेंकत हँसि ऊपर उछरैय्या हो सरजू जल भीतर।
सीधे उलटा ठाढ़े पैरत बुड्डी मारि लुकैय्या हो सरजू जल भीतर।५।

प्रभु को कोई ढूँढ़ि न पावै थकि सब बैठि स्वचैय्या हो सरजू जल भीतर।
निकसैं प्रभु तब सब प्रसन्न हों जै जै कार करैय्या हो सरजू जल भीतर।
सुर सब नभ ते लखि हरषावैं फूलन की झरि लैय्या हो सरजू जल भीतर।
पुरवासी नृप दसरथ रानी गुरु वसिष्ठ सुखदैय्या हो सरजू जल भीतर।
देखैं खेल प्रेम में गद गद मुख से बोलि न पैय्या हो सरजू जल भीतर।१०।

सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानै निरखै तौन सदैय्या हो सरजू जल भीतर।
ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि रूप सामने छैय्या हो सरजू जल भीतर।
नागिनि जगै चक्र षट नाचैं सातों कमल खिलैय्या हो सरजू जल भीतर।
अमृत पियै देव मुनि भेटैं अनहद सुनै बधैय्या हो सरजू जल भीतर।
अन्त त्यागि तन अवध में राजै छूटै जग चकरैय्या हो सरजू जल भीतर।
अंधे कहैं धन्य सो प्राणी जो यह पदवी पैय्या हो सरजू जल भीतर।१६।

शेरः- संसार के सुःखों में बाझा हरि भजन में नहिं लसा।
अंधे कहैं तन छोड़ि कै चलि नर्क के दुख में फँसा।।

पदः- पावो राम नाम की ऊँबी।
सतगुरु करि सब भेद जानि कै चोरन लीजै तूँबी।

सन्मुख राम सिया रहैं हर दम दुलरावैं मुख चूँबी।
अंधे कहैं अन्त निज पुर हो दोनों दिशि में खूबी।४।

दोहाः- गुन औगुन ते भरा है नर नारिन मन जान।
अंधे कह गुन को गहौ औगुन धरो न ध्यान।

चौबोलाः- औगुन धरो न ध्यान तभी सुख शाँति पै आवो।
अंधे कहैं सुनाय न मानो जग चकरावो।
हरि सुमिरन करि लेव गर्भ का कर्ज चुकावो।
सतगुरु हेरि के करो जियति ही तन फल पावो।४।

दोहाः- राम का नाम अनादि है राम क रूप अनादि।
शिव ब्रह्मा शारद जपत गणपति काक फणादि।।
चन्द्र सूर्य लोमस जपत श्री शुक औ सनकादि।
अंधे कह जे नहिं जपैं अन्त में होवैं बादि।२।

पदः- ठुमुकि हंसि खेलत चारिउ भैया।
राम भरथ औ लखन शत्रुहन जननी लेंय बलैया।
सुर मुनि भेष बदलि नित आवैं गोद में लै दुलरैया।
गुरु वशिष्ट नृप पुर वासी सब अनुपम सुःख लुटैया।४।

ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि बिधि का लिखा कटैया।
नाम के तार बँध्यो जब मनुवाँ छूटी सबै कुदैया।
अंधे कहैं लखै सो हरदम सतगुरु बचन मनैया।
अन्त त्यागि तन निज पुर राजै फेरि न गर्भ परैया।८।

शेरः- बजाय सुःख के मिलैग दुख ही भजन में प्रभु के न मन लगाया।
कहैं ये अंधे समैं व श्वांसा अनमोल नर तन बृथा गँवाया।।

पदः- मन अब तुम मेरे मेरे हो। हमहूँ तब तेरे तेरे हों।
सतगुरु करि चेरे चेरे हो। अंधे कहैं टेरे टेरे हो।
फिरि चोरन घेरे घेरे हो। जम गण नहिं पेरे पेरे हो।
तप धन खुब गेरे गेरे हो। छूटै जग फेरे फेरे हो।
सिय राम हैं नेरे नेरे हो। हर दम तब हेरे हेरे हो।
सुमिरन बिन एरे एरे हो। घूमत क्यों डेरे डेरे हो।६।

दोहाः- लकड़ी को घुन घुनि रहा कर दे छेद अनेक।
ऐसे हरि सुमिरन करो बनि जावो तब नेक।
सारी लकड़ी घुनि गई कैसी कीन्ही टेक।
अंधे कह छुट्टी भई कौन सकै तेंहि छेक।४।

शेरः- खुश खुर्रम रहना चहौ भजौ राम का नाम।
अंधे कह सुमिरन बिना मिलै नहीं आराम।।

चौबोला :- मिलै नहीं आराम करत हौ निज मन माना।
अंधे कहैं सुनाय न छूटै आना जाना।
अन्त समै पछिताव लै आवै जम परवाना।
बाँधि नर्क लै जाँय जहाँ है दुःख महाना।४।

पदः- संवलिया को मन से जहाँ जो पुकारा।
वहीं पर प्रगट ह्वै हरा दुःख सारा।।
बड़ा है दयालू बड़ा ही उदारा।
सदा भक्त सन्मुख में करते दिदारा।।
तजो जग की आशा उसी का सहारा।
तभी घट के चट से खुलैंगे किंवारा।।
कहैं अंधे सब में सबों से है न्यारा।
करो चेति सतगुरु मिलै तब गुजारा।४।

पदः- हमारा तुम्हारा नहीं सब में ढारा।
किया प्रेम जिसने उसी ने निहारा।।
श्री सतगुरु बानी हृदय में जो धारा।
उसी का हुवा शाँति भव जाल भारा।।
ये अनमोल तन है मिला सुख का सारा।
भजन में निरंतर लगो एक तारा।।
कहैं अंधे पितु मातु का सो दुलारा।
जो जियते में करतल किया यह शिकारा।४।

दोहाः- सुखी दोऊ दिसि सो रहै जपै निरंतर नाम।
अंधे कह हरि भजन बिन मिलत नहीं निज धाम।।

चौबोला:- मिलत नहीं निज धाम राम सर्वत्र में रहते।
परदा द्वैत क लगा इसी से तुम्हैं न चहते।
शांति दीनता गहौ बनो साँचे को गहते।
अंधे कहैं सुनाय देव मुनि सब यह कहते।४।

पद:- हरि सुमिरन में भक्तौं अपार सुख शाँति।।
बिबिधि भाँति के अनुभव हों नित नासि भई मन भ्राँति। हरि सुमिरन०।।
राम नाम का खेल अगम है जोगी जन कछु जांति। हरि सुमिरन०।।
जियतै मुक्त भक्त जो होवै सिया राम तेही माँति। हरि सुमिरन०।४।

सतगुरु से जप की बिधि जानि के जो घट में घुसि छान्ति।
हरि सुमिरन०।।
वह तो पूत सपूत गयो ह्वै नाम क ताना तान्ति। हरि सुमिरन०।।
सुर मुनि मिलते जै जै करते सब को वह पहिचान्ति। हरि सुमिरन०।।
अंधे कहैं छोड़ि तन निज पुर बनि बैठे प्रभु काँन्ति। हरि सुमिरन०।८।

शेर:- इत्तला नाम का करिये तो हो दरबार में जाना।
कहैं अंधे न चेतोगे तो जग में होग चकराना।।
मन साफ जिसका हो गया बस लैन डोरी गड़ गई।
अंधे कहैं धुनि नाम पर चट मोहर भक्तौं पड़ गई।।
यह मार्ग सूरति शब्द का निर्गुण सगुण का बोध हो।
अंधे कहैं धनि भक्त सो जो लेत या को सोध हो।३।

पद:- रामहिं भक्तौं प्रेम पियारा।
तुलसी दास कह्यौ मानस में सत्य बचन सुख सारा।
सतगुरु से सब भेद जानि कै लागि जाय एक तारा।
सारे चोर शांति ह्वै जावैं मानौ जरि भे छारा।
नाम की धुनि परकास समाधी बिधि का लिखा बिगारा।५।

अमृत पियो सुनो घट बाजा मधुर मधुर निसि बारा।
नागिनि जगै चक्र षट नाचैं सातौं कमल पसारा।
उड़ै तरंग मस्त हो तन मन नैन बहै जल धारा।
हालै शीश बोल नहिं फूटै रोम रोम झनकारा।
सिया राम की झाँकी सन्मुख हरदम हो दीदारा।१०।

ऐसी दसा बसा सो निज पुर फेरि न जग पग धारा।
सुर मुनि सब नित दरसन देवैं बोलैं जै जै कारा।
भाग्य सराहैं मातु पिता की पुरवासिन परिवारा।
जिन पाल्यो औ गोद खेलायो हँसि हँसि कीन्ह दुलारा।
उनके सुकृत वरनि को पावै शेष सहस मुख हारा।१५।

नाते दार प्यार जिन कीन्ह्यो छूटि गये दुख भारा।
जहाँ जाय तहँ बसुधा शुभ हो खुशी होंय नर दारा।
लोक भुवन औ खण्ड दीप सब जल चर थल चर प्यारा।
धरती अगिनि अकास पवन जल सेवा हित तन धारा।
अंधे कहैं धन्य सो प्रानी जियति तरा औ तारा।२०।

पदः- कीजै नाम के संग बिवाह।
सतगुरु से जप भेद जान लो सब हों चोर तबाह।
ध्यान प्रकास समाधी होवै सन्मुख साहनसाह।
अमृत पियो सुनो घट अनहद सुर मुनि बोलैं वाह।
हर शै से धुनि रेफ़ बिन्दु की सुनि बाढ़ै उत्साह।
अन्त त्यागि तन निज पुर राजौ अंधे शाह गवाह।६।

शेरः- पढ़ि सुनि के ज्ञान देना उसमें जान नहीं है।
अंधे कहैं वह हरि पुर कुरबान नहीं है।।

पदः- श्रवन न सुनते नैन न लखते रसना मुख नहिं बोलत चाम।
अन्धे कहैं सुनत औ देखत बोलत आपै राम।
अनुभव बिना खुलैं नहिं घट पट सतगुरु करि पथ थाम।
ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि सन्मुख सीता राम।४।

नागिनि चक्र कमल सब जागैं गमकैं लो बसुयाम।
अनहद बजै अमी रस चाखौ सुर मुनि मिलैं तमाम।
अन्त त्यागि तन निज पुर राजौ जो है अचल मुकाम।
सब में रमें बिलग हैं सबसे सब आपै का काम।८।

पदः- सतगुरु की शरनि जे जन तन मन से जाँयगे।
अंधे कहैं ते मुक्त ह्वै भक्ती को पाँयगे।

सुर मुनि मिलैं उन्हें नित हरि जस सुनायँगे।
तन छोड़ि लेंय निजपुर जग में न आँयगे।४।

अमृत पिये अनहद सुनै मन में सिंहायगे।
नागिनि जगै चक्कर चलैं कमलन खिलाँयगे।
धुनि नाम तेज लै चलैं कर्मन कटाँयगे।
सिया राम की अद्भुद छटा सन्मुख में छाँयगे।८।

पदः- कमा लिया है कमाना जो था। जमा किया है खज़ाना जो था।।
लुटा दिया है लुटाना जो था। बचा लिया है बचाना जो था।।
चुका लिया है चुकाना जो था। मिला लिया है मिलाना जो था।।
चेता दिया है चेताना जो था। लिखा दिया है लिखाना जो था।।
भगा दिया है भगाना जो था। बसा लिया है बसाना जो था।।
सतगुरु किया है मन माना जो था। अंधे कहा है सुनाना जो था।१२।

पदः- सिफ़ारस नाम की हलिहै। जो सतगुरु के बचन पलिहै।।
कहैं अंधे न फिरि खलिहै। त्यागि तन निज वतन चलिहै।४।

पदः- भक्तौं श्याम बड़ा अलबेला।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानौ बनिकै सच्चे चेला।
देखौ नाना चरित मनोहर सुर मनि के संग मेला।
दूध दही माखन औ मिश्री देवैं भरि भरि बेला।
खाते बनै स्वाद को बरनै अजा जोर भे फ़ेला।५।

अनहद सुनो अमी रस पावो गगन ते बरसत रेला।
कमल चक्र शिव शक्ती जागै सब लोकन चलि पेला।
नाम कि धुनि परकास दसा लै कर्म शुभा शुभ ठेला।
अन्त त्यागि तन निज पुर बैठौ छूटै जग का खेला।
अंधे कहैं जौन नहिं चेतै होय बाट का ढेला।१०।

पदः- बीरु पीवो नाम की भव का रोग नशाय।
अंधे कह तन छोड़ि कै बैठौ निज पुर जाय।
बैठो निज पुर जाय वहीं है देश तुम्हारा।
वेद शास्त्र युग देव मुनी सब कीन पुकारा।

अंधे कहैं सुनाय जाय कोइ बिरलै प्यारा।
भक्तन हित सिय राम धाम अनमोल सँवारा।६।

अकह अलेख अटूट है बे अधार साकेत।
अंधे कह पहुँचै वही जो सतगुरु करि चेत।
जो सतगुरु करि चेत प्रेत सब भये किनारे।
अंधे कहैं सुनाय देव मुनि हैं रखवारे।
नाम तान परकास दसा लै कर्मन टारे।
सन्मुख सीता राम भक्त हर वक्त निहारे।१२।

दोहाः- तिकड़म को मन छोड़ि कै राम नाम में लागु।
अंधे कह सिकरम चढ़ो नित्य धाम को भागु।।
नित्य धाम को भागु जागु जियतै में प्यारे।
अंधे कहैं सुनाय जाँय सतगुरु रखवारे।।
तहँ पर सन्त अनन्त रूप रंग हरि का ढारे।
राम सिया का अमित तेज सुख सांति सदारे।३।

पदः- चोरन संग चौपट कीन हमैं। मन आती दाया नहीं तुम्हैं।।
अंधे कहैं नाम पै कौन जमै। सतगुरु बिन मन केहि भाँति थमै।४।

दोहाः- मन को जो पकड़ा चहै सांति दीन बनि जाय।
अंधे कह तब यह सही पग साधै गो आय।१।

चौपाईः- ठग किरचिल औ चोर जुवारी। इनसे भक्तौं गंगा हारी।
इनको साधक जो पतियावै। सो तन तजि जम पुर को जावै।
बार बार चौरासी नाचै। जब तक हरि रंग में नहिं रांचैं।
अंधे शाह कहैं हर्षाई। राम नाम श्रुति सार कहाई।४।

पदः- जानौ नाम कि कार रवाई।
सतगुरु से सब भेद सीख लो तब भक्तौं फरियाई।
ध्यान प्रकास समाधी होवै र रंकार भन्नाई।
सिया राम की झाँकी सन्मुख हर दम निरखौ छाई।
सारे चोर भागि जाँय तन से रोवैं निज मुख बाई।
अँधे कहैं अन्त श्री अवध में बैठो चलि अस्थाई।६।

पदः- मन तुम चहौ तो हम हों जोगी।
सतगुरु से सुमिरन बिधि लेकर सदा ब्रह्म सुख भोगी।
अंधे कहैं अन्त निज पुर हो होय न कबहूँ रोगी।
यह पद सुनै पढ़ैं औ मानै सच्चे लांवा पोंगी।४।

दोहाः- खुरपेंची मन देव तजि भजौ राम का नाम।
अंधे कह तब हो मगन अंत मिलै निज धाम।।

पदः- मन को मारि चलो निज धामे।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जाने सारे सुःख तुम्हारे सामे।
पढ़ि सुनि लिखि कै अमल करै जो वाके जियति होंय सब का।
अंधे शाह कहैं सो प्राणी बार बार जग में नहिं भामे।४।

पदः- मन भजिये सीता राम को। हम पावैं अपने धाम को।
अंधे कहैं ऐसे नाम को। सब सुर मुनि ध्यावत काम को।
धनि धनि धनि नर औ बाम को। जे सुनत लखत बसुजाम को।
जै जै जै मानुष चाम को। जिन पायो अचल मुकाम को।४।

पदः- मन से नौ गृह गये रिसाय। हरि सुमिरन सुनि चलत पराय।
या से जीव पड़ा बिल्लाय। अंधे कहैं न चलत उपाय।
सतगुरु मिलै सबै दुख जाय। तारै तरै दीनता आय।
जियति तजै सब मान बड़ाय। शरनि मरन औ तरनि को पाय।४।

शेरः- दूसरों की बुराई में भलाई हो नहीं सकती।
कहैं अंधे दुश्मनी हो रिहाई हो नहीं सकती।।

पदः- राम नाम है जुम्मेदार।
सतगुरु से जप भेद लेव लै होय न बाँको बार।
सुर मुनि मिलैं सुनो घट अनहद पिओ अमी की धार।
नागिनि जगै चक्र सब नाचैं कमल खिलैं एक तार।४।

ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि रोम रोम रंकार।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख हों निशि बार।
भाँति भाँति की गमकैं आवैं तन मन हो मतवार।
अन्त त्यागि तन अवध में राजौ अंधे कहैं पुकार।८।

पदः- न तात के हैं न मात के हैं। सुमिरन बिना कुल की घात के हैं।।
कहैं यह अंधे उतपात के हैं। चौरासी में परि जिन्नात के हैं।।
सतगुरु करै अपनी जात के हैं। ले मुक्ति भक्ती करामात के हैं।।
दोनों तरफ़ भे बिख्यात के हैं। न मैं तैं उनमें दिन रात के हैं।८।

पदः- मन अब छोड़ो तुम धुरताई।
राम क नाम भजो हरषाई।
सतगुरु से सुमिरन बिधि जानो पावो जियति भलाई।
सारे चोर शांति ह्वै बैठें चलो गगन को धाई।४।

लै परकास ध्यान धुनि होवै र रंकार भन्नाई।
कर्म शुभा शुभ नाश जांय ह्वै सब में वही देखाई।
अन्त छोड़ि तन निज पुर राजौ छूटै जग चकराई।
अंधे कहैं चेतिये भक्तौं सब के हित पद गाई।८।

शेरः- जियतै में हरि को जान ले सो तो है जीता जागता।
अंधे कहैं तन छोड़ि कै निज धाम को है भागता।।

पदः- जियतै में हरि को जान ले सो तो है जीता जागता।
अंधे कहैं तन छोड़ि कै निज धाम को है भागता।।

पदः- भक्तौं राम नाम में लपटौ।
सतगुरु से जप भेद जानि कै सारे चोरन डपटौ।
शांति दीन बनि बैठि जाय जब तब आगे को झपटौ।
अमृत पियो सुनो घट अनहद सुर मुनि को गहि चपटौ।
अन्त छोड़ि तन निज पुर राजौ गर्भ में फेरि न रपटौ।
जानि अजान बनौ कहै अंधे भेद न खोलो छपटौ।६।

शेरः- चलते बैठे नारि नर यह सब मुरदा जान।
अंधे कह सुमिरन बिना बार बार चकरान।।

पदः- जियतै में दाया धर्म को जिसने कभी जाना नहीं।
नर तन बृथा निश्चर है वह अपने को पहिचाना नहीं।
सतगुरु बिना भटकत फिरै घट में बिचरि छाना नहीं।
तन मन कि करके एकता हा प्रेम में साना नहीं।४।

जो चेतिगा सो पार है फिरि गर्भ में आना नहीं।
अंधे कहैं आलस तजौ यह मर्द का बाना नहीं।
नर्क में रोवोगे चलि जहँ आब औ दाना नहीं।
गन्दी चीज़ों के सिवा वहँ पर कोई खाना नहीं।८।

पदः- शिव बजरंग भक्त प्रतिपालक।
गदा त्रिशूल लिये दहिने कर दुष्टन के कुल घालक।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानै जो तन मन संचालक।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि मेटैं लिखा जो भालक।४।

सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि संग सुर मुनि बृन्दालक।
हर दम सन्मुख दर्शन देवैं पायो अपने मालक।
अंधे कहैं त्यागि तन निज पुर बनि बैठो हरि बालक।
या से चेति के सुमिरन करिये नहिं भरोस इस खालक।८।

पदः- बहुत पढ़ब औ बहुत सुनब औ बहुत लिखब नुकसान करै।
अंधे कहैं शान्त ह्वै बैठे सतगुरु करि नित ध्यान धरै।
वाकी दोनों दिशि बलिहारी सुर मुनि जै जै कार करैं।
अन्त त्यागि तन निज पुर पहुँचै चौरासी का दुःख टरै।४।

पदः- पढ़ना सुनना धुनना गुनना राम भजन की जहँ चरचा।
बिना सार की बातौं में मत करना अपन समै खरचा।
गर्भ क कर्ज़ चुकाओ जियतै लिख्यौ जौन हरि को परचा।
अंधे कहैं साधकौं सतगुरु रामै की पूजा अरचा।४।

पदः- कर्म भूमि पर आय के भक्तों बालि को मारयौ राम।
एकै बाण से प्राण छूटिगै पठयौ हरि के धाम।
द्वापर युग में आय भील भा बदला दीन्ह्यौं श्याम।
नर देही धरि भोग दिखायो ऐसे प्रभु सुख धाम।
जिनका यह सब खेल पसारा कर्मन मान्यौ आम।
जो जस करै तैस फल लेवै अन्धे कह नर बाम।६।

पदः- ईसा वास्य मिदं सर्वम् का भेद जानि सतगुरु से।
बैठि एकान्त में ध्यान लगाओ पहुँचि जाओ तब सर से।
भीतर बाहर वही वही है और न कोई दरसे।

सुर मुनि नित प्रति लाय खिलावैं भक्तौं दिब्य अंदरसे।
धुनी नाम की तेज दशालय कर्म शुभाशुभ झरसै।
अंधे कहैं अन्त निज पुर हो पढ़ि सुनि कितने तरसें।६।

पदः- हर ठौर में हरि हर वक्त रहैं भग कर के कौन कहाँ जाई।
जब चित्र गुप्त लेखा लेहैं तब झूँठी साँची बिलगाई।
जे सतगुरु करके भजन करैं ते जियति लखैं आनन्द आई।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधी हो औ षट झाँकी सन्मुख छाई।४।
सब सुर मुनि आय आय भेटैं जय कार करैं तव जस गाई।
अनहद क्या घट में बाजि रही अमृत नित पान करौ भाई।
नागिन औ चक्कर कमल जगै महकैं निकलैं मस्ती छाई।
कहैं अन्ध शाह तन छोड़ि चलौ निज पुर में बैठो स्थाई।८।

पदः- सतगुरु से साधक पास ले, जग की न कोई आस ले।
मन नाम धुनि पर ठांस ले, तब प्रेम आई के गांस ले।
तन त्यागि निज पुर बास ले, अंधे कहैं नहिं सांस ले।
ऐसे भगत हरि खास लें, उर में लगा कह दास लें।४।

पदः- सतगुरु के ढिग मंजूर हो, बनि जाव दीन औ घूर हो।
तब तो भगत तुम सूर हो, सब दिश लखो हरि पूर हो।
सुनि सुनि के नाम क तूर हो, संधै चमकता नूर हो।
अंधे कहैं तन धूर हो, सुमिरो न कायर कूर हो।४।

पदः- अनमोल समै तन सुमिरन में जो बनि कै दीन लगा देवै।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधी हो औ रूप सामने छा लेवै।
अमृत पियै सुनै घट अनहद सुर मुनि सँग बतला लेवै।
अन्धे कहैं जियति ही यह चिक सतगुरु पास भँजा लेवै।४।

पदः- लीजै राम नाम की हुण्डी।
सतगुरु करि सब भेद जान ले होंय बासना डुंडी।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि खुलै बज्र की कुंडी।
हर दम षट झाँकी रहैं सनमुख जग छूटा जिमि घुंडी।४।
अजर अमर जियतै ह्वै जाओ जैसे काक भुशुंडी।
सुर मुनि नित मिलने को आवैं गणपति सिर फेरैं शुंडी।

अंधे कहैं भजो नहिं हरि को पकड़ि जकड़ि लेगी गुंडी।
फेरि उपाय नहीं कछु चलिहै तीखे काँटन की झुंडी।८।

दोहाः- अंधे कह हरि भजन बिन मिलत नहीं निज धाम।
जैसे औषधि चखे बिन छूटत नहिं सरसाम।
एक सर्त औ एक ब्रत एकै अर्थ ते काम।
अंधे कह साधक वही सुनै नाम संग राम।४।

पदः- पैसा की गर्मी छावै, सो सारे काम नसावै।
चलि यमपुर में चिल्लावै, जहँ पल भर कल नहिं पावै।
जो धर्म में धन को लावै, सो हरि पुर बैठक पावै।
अन्धा यह बिनय सुनावै, जो मानै सो हर्षावै।४।

पदः- झगड़ा से है होत अकाज, गरमावै तन और मिजाज़।
बुद्धी भृष्ट होय सुख भाज, चोरन की भइ पूरी राज।।

पदः- जिस भक्त के अभिमान है, वो जान लो शैतान है।
दिन चार का मेहमान है, जम दस्त से कुरबान है।
अंधे कहैं जेहि ज्ञान है, वाके न नेकौ शान है।
सुनता वो नाम की तान है, मिट्‌टी समझता मान है।४।

पदः- भक्तों राम नाम गुन गावो।
सतगुरु से सब भेद जानि कै तन मन प्रेम लगावो।
नाम रूप परकाश हर जगह देखो सुनो बतावो।
तब पूरे ज्ञानी बनि जैहौ किसी का दिल न दुखावो।
अंत त्यागि तन चढ़ि सिंहासन निज पुर बैठक पावो।
अंधे शाह कहैं धनि वाको, दोनों दिशि जस छावो।६।

दोहाः- नाम रूप की बासना अंधे कहैं बिलाय।
नाम कि धुनि एक तार हो रूप सामने छाय।।

शेरः- परकाश नाम औ रूप भक्तौं हर जगह में है भरा।
अंधे कहैं जानै सोई सतगुरु के जो चरनन परा।

दोहाः- हरि के ढिग सो जाइहै, जाके पास में खर्च।
अंधे कह सतगुरु बचन जियते होवै फर्च।।

अपनी वस्तु बचावते औरन की लै लेत।
ऐसे जीवन पर वहाँ चलै हर समय बेंत।।
चालाकी का फल यही पावैं नाना कष्ट।
अंधे कह वे तो हुए दोनों दिशि ते भ्रष्ट।३।

पदः- लीजै राम नाम की नोट।
सतगुरु करि तन मन को अर्पो, रहौ सदा हरि ओट।
तब सब माल बचैगा भक्तों करै न कोई चोट।
अंधे कहैं दीन बनि बैठो सब के चरनन लोट।४।

दोहाः- नाम कि धुनि खुलि जाय जब, तब जानो आरम्भ।
अंधे कह सतगुरु कृपा, भयो सत्य का खम्भ।।
कुकरम को त्यागै नहीं, बने धर्म के थम्ह।
अंधे कह अन्धे बहुत, उन्हैं कहै हैं ब्रह्म।।
सच्चा सतगुरु है वही देय शब्द का भेद।
अंधे कह जो लेय गहि भागै द्वैत क भेद।३।

शेरः- पेन्सन जियति में जाय मिलि ऐसा भजन करो।
अंधे कहैं सतगुरु बचन मन नाम पर धरो।।

दोहाः- मन को मीत बनाइले साधक जानै नाम।
अंधे कह सतगुरु बचन संघै डोलैं राम।।

पदः- त्रिभुवन पति गिरिधर मुरली घर। अंधे शाह परत चरनन पर।।
आप कि कृपा ते गै अगणित तर। मुक्ति भक्ति का दीजै प्रभु वर।४।

दोहाः- सतगुरु छानि के कीजिये, पानी पीजै जान।
अन्धे कह गहि दीनता, लीजै आँखी कान।।

चौपाईः- तीन बर्ष तक संग हमारा। श्री कबीर का भा निशिबारा।
दस बरसै हम उनसे छोटे। नित्य प्रति हम चरनन पर लोटे।
बिहँसि बिहँसि मोहि हृदयँ लगाये। रहनि, गहनि औ सहनि बताये।
हरि औ हरि दासन गुन गाये। सुनि सुनि तन मन आनन्द आये।४।

दोहाः- भक्तन की महिमा बड़ी जानहिं श्री भगवान।
अंधे कहैं जिन पर किये तन मन निज कुरबान।।

चौपाईः- हिन्दू मुसलमान सब जाती। राम भजन बिन हों कुल घाती।
सतगुरु के चरनन जो माती। राम नाम सो पावै काती।
हर दम मन मनात रहे तांती। हर शै से धुनि सुनै सुनाती।
सन्मुख राम सिया छबि छाती। जियतै तरै जुड़ावै छाती।
प्रेम कि ऐसी सुन्दर गाती। भजन के सांगोपांग जुहाती।५।

सुनि चित चेति भजै दिन राती। ब्रह्म अगिनि घट बारै बाती।
हरि ढिग पहुँचि सकै तब पाती। चातक सम जो नेह लगाती।
आशा से नित समै बिताती। कब बरसैगा मम जल स्वाँती।
इस बिधि से वह प्राण बचाती। समुझौ भक्तौं सबन चेताती।
नीचे से है ऊँच बनाती। छोड़ो कपटी पोता नाती।१०।

अन्त समै कोइ काम न आती। जिन हित ठगत फिरत बहुँ भाँती।
जमगण धरैं पेट पर लाती। हवा खुलै औ निकसै आंती।
बोलि न फूटै बंधि जांय दांती। आँसुन की जारी हो पांती।
कोइ बैठी कोई औंघाती। कोइ रोवैं कोई पीटैं छाती।
कोइ दुख मांहि गिरैं उठिधाती। कोइ लट खोलि परी बिल्लाती।१५।

कोइ फटकैं कोई चिल्लाती। कोई बिलखैं पैर हिलाती।
या बिधि घर सब सोक भे माती। तन तजि गये कहां संघाती।
मिट्टी तुमरी चिता पै जाती। जारि भूँजि के खाक बनाती।
दसवां तेरहीं तक बतलातीं। थे हमार अब मिलै न लाती।
जाय के काहे न पता लगातीं। निज स्वारथ हित भाव दिखातीं।२०।

कछु दिन बीते गाना गातीं। हँसि हँसि के गृह कार्य बनातीं।
सुमिरन बिन तन ओस क जाती। या से भजन करो हो सांती।
हरि की सन्मुख होवै क्राँती। छूटि जाय तब सारी भ्राँती।
नीक कहैं तो सुनत पिराती। अंधे कहैं अन्त हो ताती।२४।
शब्दार्थः उठिधाती = उठकर दौड़ना

दोहाः- अंधे कह कँह तक कहैं, यह संसार क हाल।
हरि सुमिरन बिन सब बृथा, यह सारा जंजाल।।

पदः- राम नाम की खाव मलाई।
ऐसा स्वाद न पैहौ भक्तौं सुर मुनि सब बतलाई।

या को पाय अमर ह्वै जैहौ कबहूँ न भूख सताई।
सिया राम प्रिय श्याम हरि लेंय उछंग उठाई।४।

मुख चूमैं औ हिये लगावैं बार बार दुलराई।
अन्त त्यागि तन चढ़ि सिंहासन बैठो निज पुर जाई।
कोटिन जन्म की होय कमाई सो नर का तन पाई।
अंधे कहैं बिना सतगुरु के फिरि फिरि चक्कर खाई।८।

पदः- राम नाम का तार अगम है। सुर मुनि गावत निगमागम है।।
सतगुरु शरनि ते होत सुगम है। सुमिरन करिये जब तक दम है।।
एक दिन चमकी चम चम चम है। जब तक तन मन हम हम हम है।।
तब तक जानो धम धम धम है। अंधरा गुना न धुना अधम है।८।

पदः- चिंता करना है बेकार। या से बिगड़त सारे कार।
तन भीतर बाहर हो छार। बुद्धी भ्रष्ट बढ़ै सर भार।
माया की यह बेटी यार। याके तो हैं पांच भतार।
निसि दिन लेवै खून तुम्हार। उन सब के मुख देवै डार।८।

जल भोजन सब का यह प्यार। हंसि हंसि सब संग करत दुलार।
जीव अकेल बैठ चुप मार। मन उन्हीं के संग हत्यार।
शुभ कामन को देत बिगार। केहि बिधि जीव का हो निस्तार।
अंधे कहैं भजो निशिबार। सतगुरु करौ मिलै सुख सार।१६।

पदः- मुरली तुम्हारी मोहन जिसको सुना रही है।
उसका मुकद्दर जागा तन मन लुभा रही है।
जिसने जियति न जाना उसको रुला रही है।
हर दम उसे है सदमा नश्तर चला रही है।४।

मरने के बाद भक्तों दर दर फिरा रही है।
जागो करो अब सतगुरु सबको चेता रही है।
मूरति है सामने में सूरत समा रही है।
अंधे करैं क्या बरनन छिन छिन बुला रही है।८।

पदः- सतगुरु से जानो भजन की जुक्ती। कहै ये अंधे आयू है चुकती।।
सूरति सबद पर जिसकी न रुकती। उसी के मुख पर अजा है थुकती।।

दया धरम की तरफ जो झुकती। उसे निरखि के कभी न भुकती।
जियति में जिसकी भई है मुकती। उसी को जानो मिली है भक्ती।८।

दोहाः- अधर मधुर धुनि बाजती, नेक स्वरन सों जान।
अंधे कह सुर मुनिन की, प्यारी प्राण समान।।
कबहूँ अधर पै राजती, कबहूँ कर में जान।
कबहूँ फेटा में लगी, हरी हरी लहरान।।
बंसी सब गुण आगरी, प्रेम में लेवै फांस।
अंधे कह तन मन मगन, ऐसी वा में गांस।३।

पदः- सतगुरु से जिसने मांगा वह पायो नाम बागा।
धुनि नूर लै में पागा, कर्मन को बांधि टांगा।
सन्मुख में रूप तागा, कबहूँ न होगा नागा।
सुर मुनि के संग लागा, कौसर चखै न खाँगा।
जियतै न जौन जागा, मर कर हुआ अभागा।
टूटा न द्वैत धागा, अंधे कहैं सो कागा।६।

शेरः चारों पदारथ जाँय मिलि सेवा करो विस्वास से।
अंधे कहैं सतगुरु बचन हरि देत हैं खुद पास से।।

पदः- सतगुरु से सुमिरन बिधि जान, होवें दोनों दिशि कल्यान,
सारे सुख की है यह खानि अहा हा हा, हा हा हा हा, हा हा हा हा,
हा हा हा हा।

बैठि एकान्त में कीजै ध्यान, खुल जावे तब नाम की तान,
चमकै चम चम तेज महान, अहा हा हा, हा हा हा हा, हा हा हा हा,
हा हा हा हा।

लै में जाओ रहै न ज्ञान, शुभ औ अशुभ का होय उड़ान,
सन्मुख षट झाँकी ठहरान, अहा हा हा, हा हा हा हा, हा हा हा हा,
हा हा हा हा।

अनहद सुनो मधुर चटकान, अमृत का नित कीजै पान,
सुर मुनि करैं आय लपटान, आ हा हा हा, हा हा हा हा, हा हा हा हा,
हा हा हा हा।

नागिन जगै चक्र घुमरान, सारे कमलन होंय फुलान,
खुशबू से तन मन मस्तान, आ हा हा हा, हा हा हा हा, हा हा हा हा,
हा हा हा हा।
तन तजि बैठि के चलो बिमान, निज पुर में पावो बैठान,
अन्धे कहैं सुनो दै कान, आ हा हा हा, हा हा हा हा, हा हा हा हा,
हा हा हा हा।६।

पदः- भक्त कि कविता लट पट। प्रेम लपेटी अट पट।।
मुख से शब्द कढ़त है चटपट। अंधे कहैं मिटि गई खटपट।४।

पदः- जग में जब से हुए कम करम औ धरम,
हम को आना पड़ा और जाना पड़ा।
दीनता शान्ति बिन गैल मिलती नहीं,
बात खाना पड़ा औ खवाना पड़ा।
सतगुरु के बचन गहि के बनिगे जे नम,
उनको छाना पड़ा औ छवाना पड़ा।
कहते अंधे सुनौ औ गुनो लेव धुनि,
बात मानना पड़ा औ मनाना पड़ा।

पदः- जिन हरि सुमिरन को नहिं जाना, उनको मिले डगरिया ना।
जन्मैं मरैं मिटैं किमि चक्कर गहै बकरिया ना।
सतगुरु बिन यह भेद मिले किमि बन्द खबरिया ना।
अंधे कहैं चेतिये भक्तौं, अबहीं अबेरिया ना।४।

पदः- कीजै राम नाम ते नालिश।
सतगुरु से जप भेद जानि कै जौन आलसै बालिस।
सारे चोर चुप्प ह्वै बैठें मिट गई उनकी पालिस।
तब मन आय जीव संग मिलगा करन लगो नित मालिश।४।

हर दम संग हटै नहिं नेकौं ऐसा ह्वैगा सालिस।
तन मन की तन्मयता ह्वै गई जीव भया तन खालिस।
अंधे कहैं पुकार भई जब हाज़िर भयो न हालिस।
हुकुम सुनाय दीन्ह डिगरी का कैसी सच्ची नालिश।८।

पदः- वेद शास्त्र उपनिषद संहिता औ पुराण गीता मानस।
सब में नाम रूप है ब्यापक अंधे कहैं तजो आलस।
पढ़ौ सुनौ औ गुनौ धुनौ जब सतगुरु से जानो खालिस।
बिन जुगती के इस छिछोर को आज तलक कोई नहिं घालिस।४।

पदः- सुनो नाम धुनि लखौ राम सिय जब चाहो तब संग दुलराओ।
संगै खान पान हो भक्तों यह आनन्द वरन किमि पावो।
बैठि गोद में कबहूँ ताको कबहूँ कांधे पर चढ़ि जाओ।
कबहूँ ओढ़ पीताम्बर लेटौ मात पिता से पैर चपाओ।
सुर मुनि लखि लखि जय जय बोलैं जियतै नर तन का फल पाओ।
अंधे कहैं करो अब सतगुरु समय स्वाँस बिरथा न गँवाओ।६।

पदः- मन वज़ीर बनिगो बे पीर।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो तब धरिहै यह धीर।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि सन्मुख सिय रघुबीर।
अनहद सुनौ पियौ घट अमृत कुँड भरा गम्भीर।
सुर मुनि नित प्रति आवैं भेटैं कहैं भयो अब बीर।
अंधे कहैं अन्त लो निज पुर बैठो प्रभु के तीर।६।

पदः- गरभ ऋण को भक्तों चुकाना पड़ेगा।
कहैं अंधे चेतो नहीं तो हड़ैगा।
बिना सतगुरु कीन्हे को आगे बढ़ेगा।
धुनी तेज लै रूप सन्मुख लढ़ेगा।४।

वही मातु पितु का दुलारा कढ़ैगा।
रहनि औ गहनि औ सहनि में मढ़ैगा।
रहै एक रस फिर न बातें कढ़ैगा।
सदा संत भगवन्त कीरति पढ़ैगा।८।

पदः- मन दिवान ह्वै गो खपकान।
सतगुरु करि जप भेद जान लो तब होवै कल्यान।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि सन्मुख सिया-भगवान।
सुर मुनि मिलैं बजै घट बाजा करैं अमी रस पान।
नागिन जगै चक्र षट नाचैं सातौं कमल फुलान।
अंधे कहैं अन्त निज पुर हो आवागमन नसान।६।

चौपाईः- चिंता चोरन की है भगिनी। करि व्यभिचार गई बन पतिनी।
सब को संग नचावत नटिनी। ऐसी कठिन बनी है ठगिनी।
धधकाये तन में रहे अगिनी। जरत नहीं संगै रहै नगिनी।
बज्र फाँस कर में लिए ढँगिनी। अंधे कहैं फँसाय के टँगिनी।४।

पदः- चिंता माया की है बिटिया। वाके संग रहत छः नटिया।।
जीव को पीटत लै कर सँटिया। नेकउ रहम नहीं जिमि बटिया।।
डाटैं कहैं बड़ा तू झँटिया। करि ले नीक काम अब घटिया।।
चौतरफ़ा से डारे खटिया। पहरा कड़ा कहां को हटिया।८।

दोहाः- सतगुरु से बिधि जान लें, ते उबरैं नर नारि।
अंधे कहैं जे चूकिगे, तिन्हैं लेयगी मारि।।

पदः- नन्द क ढोटा नाचत छम छम।
सखा सखी संग में सब राजत भूसन बसन बदल हो चम चम।
ताल गान का भाव बतावत मुरली बाजत थम थम।
सतगुरु करि निरखौ निशिवासर, अंधे कहैं छूटि जाय हम हम।४।

पदः- मन तुम कैसी करत किसानी।
नीक करत तो जीव सुखी हो नागा ते हैरानी।
चारि पदारथ पास धरे हैं कर्म हीन किमि जानी।
अंधे कहैं शान्ति ह्वै बैठो छोड़ो ऐंचा तानी।४।

पदः- धरती अगिनि अकास पवन औ मिले एक में पानी।
यह आश्चर्य की बात नहीं है तिर्गुन की सैलानी।
सार वस्तु का अनुभव भक्तों कोटिन में कोइ जानी।
अंधे कहैं बिना सतगुरु के पहुँचै को रजधानी।४।

दोहाः- रवि की सोभा दिवस की निसि की सोभा चन्द्र।
अंधे कह मन हरि भजै जीव होय निरद्वन्द।।

पदः- यह तन भक्तों बेकार है हरि नाम बिना जाने से।
बिना श्रद्धा के धिक्कार है पढ़ि सुनि ताना ताने से।
मन फिरता खात पछार है शुभ कामन पर जाने से।
अंधे कहैं गिरत गँवार है, सतगुरु के बिन पाने से।४।

पदः- हमरे बनिकै गुनिये भक्तों हमरी बदनामी करावति हौ।
अनरीति से हम नहिं हैं तुम्हरे क्यों मुख में मसी लगावति हौ।
निज कुल की रीति को भूलि गये ढोंगिन के संग ठगावति हौ।
सतगुरु बिन कैसे राह मिलै पढ़ि सुनि औरन समुझावति हौ।४।

है वाक्य ज्ञान में जंग लगा बेकार में वक्त बितावति हौ।
पछितैहौ अन्त समै चेतो जमराज के मुख की दावति हौ।
मत्थे से हत्थे में करिये तब जियतै में तरि जावति हौ।
कहैं अन्ध शाह यह भजन ठीक मन नाम के उपर लावति हौ।८।

पदः- सन्मुख में प्रिय हरि नाचते।
मन्द हँसनि क्या तिरछी चितवन, छम छम घुंघरु बाजते।
मुरली अधर पर बाज रही है, धुनि सुनि सुर मुनि गाजते।
जियतै करतल वै करि लेवैं नाम के संग मन माँजते।४।

मानुष का तन पाय न सुमिरो वाको जम हैं गाँजते।
कहैं भोगिये अपनी करनी दंड देंय हम आजते।
अच्छे करम कियो नहिं कबहूँ हम ही को तुम छाजते।
गरियावें पटकें कढ़िलावें सीस औंटि दृग आँजते।८।

नाना कष्ट एक फल कल नहीं बिलग हौ राजाधिराज ते।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जाने वे सब साज को साजते।
जिनके सुकृति उदय हैं भक्तों वे आवत शुभ काजते।
अंधे कहैं त्याग तन निजपुर चढ़ि सिहाँसन भाजते।१२।

पदः- माया गुण गोपार कहावत युग औ वेद शास्त्र जस गावत।
निराकार सरगुन बनि आवत भक्तन के संग खेल मचावत।
मुख चूमें गोफ़ा गले लावत। भाँति भाँति के भोग खिलावत।
साफ़ सुगन्धित नीर पियावत मुख पोछैं फिर थपकि सुलावत।४।

पग चापैं तन तेल लगावत साज ताल धुनि बोल बतावत।
नाच गाय क्या भाव दिखावत, नभ से सुर मुनि फूल गिरावत।
मुरली मधुर सुनाय रिझावत, गद गद कंठ रोम पुलकावत।
जै जै कार करैं हर्षावत, अपने अपने वाद्य बजावत।८।

दिब्य आरती साज के धावत, निज निज करन ते फेर दिखावत।
दोउ कर जोरि के बिनय सुनावत, प्रेम के आँसु नैन झरिलावत।
पांचौं पैकरमा करि आवत, चरनन परि अन्तर ह्वै जावत।
अंधे शाह सदा सिर नावत, अनुपम रूप के दरसन पावत।१२।

पदः- ब्रज चौरासी कोस में राजत अणु अणु में राधे श्याम।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो निरखौ आठौं जाम।
चम चम चम चम चमकत देखा हँसि हँसि कीन्ह प्रणाम।
जीवन मुक्त भये बिन कोई होत नहीं निष्काम।
अंधे कहैं लूटिये तप धन चारि दिना का चाम।
अन्त समय पछितैहौ रोइहौ जब यम लैहैं थाम।६।

पदः- जब फिकिर नहीं तब जिकिर कहां न इधर के हुए न उधर के हुए।
कहैं अंध शाह सतगुरु ने कहा न इधर के हुए न उधर के हुए।
चट काल अचानक आय गहा न इधर के हुए न उधर के हुए।
तन मानुष का अनमोल ढहा न इधर के हुए न उधर के हुए।४।

पदः- मन है मलीन ऐसा कमीन सुमिरन में बाधा डाल रहा।
आलस की पालिस जीव पै दे अनमोल समय को टाल रहा।
संग दुष्ट लिए अधरम करता फिरता हंसि हंसि किलकार रहा।
हम बोलैं तो नाखुस होवै गहि झिटिक पटकि फटकारि रहा।४।

छिन छिन में आवै खबरि लेन डरि गयो जीव चुप मारि रहा।
बैठारि दखल दिखलावै नकल अब होहु बगल तन जारि रहा।
सतगुरु करके जिन संग लीन जियते भव पार उतारि रहा।
कहैं अंधशाह बनि सूर बीर तरि गयो औ तुमको तारि रहा।८।

पदः- मनुआँ जीव को करता कायल।
जैसे हर दम पानी बरसे होति नहीं है बायल।
कितने जीव मरैं औ जनमैं कितने होते घायल।
सतगुरु सरन बिना कहैं अंधे मानत नहिं समुझायल।४।

पदः- राम नाम भक्तौं है सार सतगुरु करि सुमिरौ निशि बार
रेफ़ बिन्दु का बाजै तार आ हा हा हा, हा हा हा हा,
हो हो हो हो, हो हो हो हो।

ज्योति ते होय बड़ा उजियार, लय दे करम शुभाशुभ जार
होवे षट झाँकी दीदार आ हा हा हा, हा हा हा हा,
हो हो हो हो, हो हो हो हो।
पीजै अमी की जारी धार, घट में अनहद की गुमकार सुर मुनि करैं
आय नित प्यार आ हा हा हा, हा हा हा हा,
हो हो हो हो, हो हो हो हो।
नागिन चक्र कमल एक तार जागै करै अपन सब कार
अंधे कहैं भये मतवार आ हा हा हा हा हा हा हा,
हो हो हो हो, हो हो हो हो।४।

पदः- भक्तौं सतगुरु के ढिग जाना, तन मन प्रेम से शीश नवाना,
सुमिरन की बिधि लेकर आना आ हा हा हा, हा हा हा हा,
हा हा हा हा, हा हा हा हा।
कर औ जीभ न नैन हिलाना, चुपके बैठ के ध्यान लगाना खुलिहै नाम
का क्या तर्राना आ हा हा हा, हा हा हा हा,
हा हा हा हा, हा हा हा हा।
चमक के फैले तेज महाना, लय में सुधि बुधि सबै भुलाना
बिधि के लिखे कुअंक कटाना आ हा हा हा, हा हा हा हा,
हा हा हा हा, हा हा हा हा।
नागिन जगै चक्र घुमराना, सारे कमलन उलटि खिलाना,
खुशबू भाँति भाँति की पाना, आ हा हा हा, हा हा हा हा,
हा हा हा हा हा हा हा हा।४।

अमृत गगन से झरता पाना अनहद बाजा सुनि हर्षाना,
सुर मुनि के संग हरि यश गाना, आ हा हा हा, हा हा हा हा,
हा हा हा हा हा हा हा हा।
सन्मुख षट झाँकी छबि छाना, कैसा मन्द मन्द मुसकाना,
तन तज चढ़ि बिमान घर जाना आ हा हा हा, हा हा हा हा,
हा हा हा हा, हा हा हा हा।
जब तक खुलैं न आँखी काना, तब तक किसी को मत बतलाना,
या से मिले न ठीक ठिकाना आ हा हा हा, हा हा हा हा,
हा हा हा हा, हा हा हा हा।

अंधे शाह कहैं यह गाना, पढ़ि सुनि गुनि उर मांहि बसाना,
तब तो होवेगा कल्याना आ हा हा हा, हा हा हा हा,
हा हा हा हा, हा हा हा हा।८।

पदः- श्याम सुन्दर नाचते मुरली बजाते हो तुम्हीं।
नित सखा सखियन संग में खाते खिलाते हो तुम्हीं।
दधि दूध माखन लूटते गाली सुनाते हो तुम्हीं।
घर घर में गोपिन निरखते सोते जगाते हो तुम्हीं।
नैनों में जादू है भरा तन मन लुभाते हो तुम्हीं।५।

सब प्रेम में रहते मगन सुधि बुधि भुलाते हो तुम्हीं।
पाप करने वालों पर पल में दयाते हो तुम्हीं।
दीनता आई जहां उर में लगाते हो तुम्हीं।
सर्वत्र आप का नाम है सब में दिखाते हो तुम्हीं।
अंधे कहैं निज भक्त को निज पुर पठाते हो तुम्हीं।१०।

दोहाः- करूँ मुखारी नीम की मुख का मल हर लेत।
वैसे सतगुरु बचन गहि शान्त करो मन प्रेत।।
नाँदा में पानी नहीं सानी किस बिधि होय।
मनवा तो मानी नहीं घानी लेवै टोय।।
सूख खाय धर ले गला फटके निकलैं प्राण।
अंधे कह मन मिले बिन मिलत नहीं भगवान।३।

पदः- सतगुरु करि के बिधि सिखि लीजै, अजपा जाप में मन को दीजै
बिरथा आयू सारी छीजै अ ह ह ह, ह ह ह ह,
ह ह ह ह, ह ह ह ह।
बैठि के नैन बन्द करि लीजै, कर औ जीभ हिलन नहिं दीजै,
गाना राम नाम सुनि लीजै अ ह ह ह, ह ह ह ह,
ह ह ह ह, ह ह ह ह।
अनहद बाजि रहा सुधि कीजै, अमृत गगन से झरता पीजै,
सुर मुनि के उर में उर दीजै अ ह ह ह, ह ह ह ह,
ह ह ह ह, ह ह ह ह।

चमकै तेज रूप लखि लीजै हर दम टरै न सन्मुख कीजै,
अंधे कहैं जियति तरि लीजै अ ह ह ह, ह ह ह ह,
ह ह ह ह, ह ह ह ह।४।

चौपाईः- नागिनि चक्र पदुम सब जागैं। सतगुरु बचन पै निज को पागै।।
अमृत पियै सुनै घट बाजा। सुर मुनि की संग जुरै समाजा।।
ध्यान प्रकाश समाधि में जावै। बिधि का लिखा जियति कटवावे।।
नाम की धुनि हर शै से जानै। सनमुख षट झाँकी छबि तानै।।
तन तजि पहुँचि जाय निज धामा। हरि रंग रूप होय तहँ जामा।।
यह अध्यात्म ज्ञान सुख दाई। अंधे कहैं रहै स्थाई।१२।

दोहाः- तन मन डाँका डारि कै लूटि लेत मुसक्याय।
ऐसी चितवनि श्याम की अंधे कहैं सुनाय।।

पदः- हरि नन्द के आँगन खेलैं।
बाल रूप धरि सुर शक्ती संग खेलत होत झमेलैं।
भाँति भाँति पकवान मिठाई सब के मुख प्रभु मेलैं।
निज कर से जल सबन पिलावैं छोड़ैं सिरन फुलैलैं।४।

गमक पाय ब्रज बासी दौरैं जसुमति के घर पेलैं।
देखैं बाल बिनोद वहाँ पर आनन्द हिये सकेलैं।
अंधे कहैं लखैं जे प्राणी पाप ताप को ठेलैं।
अन्त त्यागि तन निज पुर राजैं गर्भ बास नहिं झेलैं।८।

दोहाः- सीता कूप क जल पियैं नित्य नेम करि प्रेम।
रोग दोष सब शांति हों रहैं सदा तन छेम।२।

सोरठाः- सुर मुनि की यह बानि अंधे कह अनुभव किया।
सारे सुख की खानि त्रिभुवन की माता सिया।४।

दोहाः- नेम टेम औ प्रेम से सीता कुँड नहाय।
पाँचौं पैकरमा करै रोग भोग कटि जाय।
जब जल कुण्ड में होय नहिं रज मुख में लें डारि।
अंधे कह सुर मुनि कह्यो हम से बैन पुकारि।८।

दोहाः- सब तीर्थन का जल परा भरथ कूप में जान।
लाय के निज घर में धरै रोज करै कछु पान।२।

सोरठाः सारे तीर्थ नहान फल ठौरे बैठे से मिलै।
अंधे करत बखान अन्त में हरि के पुर चलैं।
भाव से तरता जीव सुर मुनि सबहुन है कही।
जीव से होवै शीव अन्धे कह मानो सही।६।

दोहाः- जिनको अनुभव है नहीं उन्हैं न हो विश्वास।
अंधे कह संसार में कड़ी द्वैत की फाँस।८।

पदः- केहि का सुनावों भक्तों केहि समुझावों।
नर नारी बहु धन्धे कह लौं उन्हैं मनावो।
मुश्किल से आवै कोई द्वैत है समावो।
अंधे कहैं आपुइ बैठे हरि को रिझावो।४।

पदः- खंभ फारि हरि नरहरि तन धरि हिरनाकश्यप उदर बिदारा।
दिब्य रूप धरि चढ़ि सिंहासन हिरनाकुश हरि धाम सिधारा।
महाघोर गर्जना भई तहँ सब लोकन गा हा हा कारा।
कमठ वराह कपैं सब दिग्गज शेष कि भूलि गई शुशकारा।
भँग समाधि भई जोगिनि की जो अखण्ड नहिं टूटन हारा।५।

सुर मुनि दूर खड़े कर जोरे पास न जाय सकैं हिय हारा।
लक्षिमी जी के होस उड़ाने नेत्र बन्द करिके चुप मारा।
श्री प्रहलाद गये प्रभु के ढिग कर गहि कै चट गोद बिठारा।
हर दम नाना खेल लखै सो जो हरि पर तन मन को वारा।
अंधे शाह कहैं सतगुरु करि सुमिरौ नाम होहु भव पारा।१०।

चौपाईः- सुकृत से भिड़त ठीक संयोग। सतगुरु बचन मिटै भव रोग।
प्रेम के आगे ज्ञान न जोग। अन्धे कहैं सुनो सब लोग।।

पदः- शुभ कर्म किया बैकुंठ भया सुमिरन बिन अवध को कौन गया।
बनि भक्त गये नहिं आती हया तन मन से फेंक्यो धर्म दया।
आडम्बर का है ज्ञान छया मन नाम के संग में नाहिं तया।
सतगुरु की वाक्य पै जौन नया अंधे कहैं सो सुख बीज गया।४।

पदः- सुमिरन खुलिगा ते जागे हैं, सुभ असुभ तीनि गुण तागे हैं।
जे सतगुरु वाक्य में तागे हैं अंधे कहैं ते सब आगे हैं।।

पदः- ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रूप सामने छायल।
अमृत पियो सुनो घट अनहद सुर मुनि संग बतलायल।
नागिन जगै चक्र षट बेधैं सातों कमल फुलायल।
उड़ै तरंग मस्त हो भक्तों मुख से बोल न जायल।४।

गद गद कंठ रोम सब पुलकें नैनन आँसु बहायल।
तन कम्पायमान सब होवे रहि रहि सीस हिलायल।
भीतर बाहर एक भयो है तुरियातीत कहायल।
अंधे कहैं त्यागि तन निज पुर चढ़ि सिंहासन छायल।८।

पदः- सतगुरु से सुमिरन जानि के बिधि लेख को आँका करो।
सुर मुनि मिलैं अनहद सुनो अमृत को नित छाका करो।
धुनि नाम की लय तेज हो बस प्रेम में पाका करो।
अंधे कहैं इस रंग में दीनौं को लखि बाँका करो।४।

तन त्यागि के निज पुर चलौ तहँ दर्श पितु माँ का करो।
सुखसार का दीदार हो मन संग लै ताका करो।
नागिनि कमल चक्कर जगैं सब लोक भी झाँका करो।
जम काल माया मृत्यु सारे दुष्टों पर नाका करो।८।

पदः- प्रेम में डूबा हुआ भगवान का जो भक्त है।
अंधे कहैं उसके लिए आनन्द ही हर वक्त है।
ध्यान धुनि परकास लै औ रूप सारे जक्त हैं।
तन त्यागि निजपुर को गया बैठा सिंहासन मस्त है।४।

पदः- शंख चक्र गदा पदुम मुरली औ धनुषवान।
तीनों नाथ संग सोहैं शक्तीन के समान।
निरखै औ सुनै शब्द जिनके हैं नैन कान।
सतगुरु बिन अगम पन्थ अंधे कहैं सत्य मान।४।

पदः- हरि सुमिरन में लागे चित्त, अंधे कहैं सो होय सुचित्त।
सुमिरन सम कोई और न बित्त, चेतो यह तन होय अनित्त।

जीतै जान लेव क्या नित्त, बनि जावै तब उत्तौ इत्त।
चोरन के संग घूमत कित्य, आखिर में सब होवैं पित्त।४।

पदः- नाम कि धुनि पर राखौ ख्याल।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो, गले न चोरन दाल।
ध्यान प्रकाश समाधी होवे, सन्मुख प्रिय नन्द लाल।
जगत ब्रह्म अरु शब्द ब्रह्म का, भेद मिटै तब हाल।४।

सुर मुनि भेटैं जय जय बोलैं, जियतै भयो निहाल।
अमृत पियो भरा घट सागर, सुनिये अनहद ताल।
नागिन चक्र कमल सब जागैं, गमकैं उड़ैं विशाल।
अंधे कहैं अन्त निजपुर में बन के बैठु अकाल।८।

पदः- शब्द का भक्त जौन पतियाई।
लोक वेद में अरझ सकै नहिं, सतगुरु भेद बताई।
रेफ़ बिन्दु की धुनि को सुनता तेज समाधि में जाई।
अमृत पिये बजै घट बाजा सुर मुनि लें उर लाई।४।

नागिन चक्र कमल सब जागैं महक स्वरनि से आई।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख दें छबि छाई।
अन्धे कहैं त्यागि तन निज पुर चढ़ि सिंहासन धाई।
यह पद पढ़ि सुनि गुनि नर नारी भजन करो मन लाई।८।

पदः- राम, भरत औ लखन शत्रुहन, अवध में आये हैं।
कौशिल्या कैकयी सुमित्रा के जन्माये हैं।
बारह सहस सखा संग प्रगटे परम सुहाये हैं।
ब्राह्मण छत्री वैश्य जाति के पुत्र कहाये हैं।
हम जोली सबकी है एकै सांति सुभाये हैं।५।

श्री गुरु महाराज शोधि के नाम धराये हैं।
घर घर में उत्सव नित होवें बजत बधाये हैं।
पट भूषन धन जाचक पावत मंगल गाये हैं।
को वरनै श्री अवध की शोभा आनन्द छाये हैं।
जल चर थल चर नभ चर प्रमुदित शेष चुपाये हैं।१०।

मन एकाग्र करत जोगी जन तब दरशाये हैं।
हाट बाट औ घाट द्वार गृह सबन लुभाये हैं।
बाल खेलि नित नूतन करते सुख उमड़ाये हैं।
गुरु वशिष्ठ नृप रानी पुर जन हिय हुलसाये हैं।
सुर शक्ती नर नारी बनि बनि देखन धाये हैं।१५।

प्रेम में मस्त लखैं सब ठाढ़े बोलि न पाये हैं।
नैनन ते शीतल जल जारी तन कम्पाये हैं।
गद गद कण्ठ रोम सब पुलकैं शीश हिलाये हैं।
सतगुरु करै भजै निशिवासर सन्मुख छाये हैं।
ध्यान धुनी परकाश दशा लै करम जलाये हैं।२०।

नागिन चक्र कमल सब जागैं महक उड़ाये हैं।
अन्त त्यागि तन निज पुर राजैं, गर्भ न जाये हैं।
शांति दीनता धारन करि जे तन मन ताये हैं।
उन्हीं का जयकार दोऊ दिश सब बतलाये हैं।
साका सब जुग जारी उनकी जश बरसाये हैं।
अंधे कहैं सत्य पद भक्तौं तुम्हें सुनाये हैं।२६।

दोहाः- सूरति शब्द की जाप से निर्गुन सर्गुन बोध।
अंधे कह सतगुरु शरन तन मन लीजै सोध।

पदः- सुमिरन में मन खात पछार। अधरम में रहता चट क्वार।।
तन तजि पड़िहै नरक मँझार। जम पीटैं रोवैं डिण्डकार।।
तब लागेगा कौन गुहार। जाय न सकैं मित्र परिवार।।
झूठे सब हैं नाते दार। अपने मतलब का व्यवहार।।
सतगुरु करो मिलै सुख सार। आलस कियो तुम्हें सुकवार।१०।

ध्यान प्रकाश धुनी एक तार। हर दम सुनो होत रंकार।।
देय समाधि कर्म दोउ जार। सन्मुख षट झाँकी छबि न्यार।।
सुर मुनि मिलैं करैं जयकार। अनहद सुनो उठत गुमकार।।
अमृत पीकर हो मतवार। नागिन जगै चक्र भन्कार।।
कमलन का होवै फुलवार। उड़ै तरंग बनो मतवार।२०।

गद गद कंठ नैन जल धार। पुलकैं रोम न पलकैं मार।।
बोल न फूटै सकौ निहार। भई बासना सब जरि छार।।
छूट गये आचार विचार। अब विज्ञान दशा भई यार।।
जान के भक्तों बनो गँवार। तब बच करके होगे पार।।
चहुँ दिशि लागे वज्र किंवार। सारी सिद्धी दीजै टार।।
अंधे कहैं यही लें मार।३१।

पदः- होशियारी जे बघारते हैं, वे सब किनारे पुकारते हैं।
जे निज को जियते सम्हारते हैं, वे हर दम हरि को निहारते हैं।
जे धर्म कारज सँवारते हैं, वे दूसरों को सुधारते हैं।
जे दूसरों को बिगारते हैं, अंधे कहैं जम शिकारते हैं।४।

पदः- इन्द्रीजीत मूत्र को रोकै, भजन करै होवै जोगी।
अंधे कहैं मलै जो रोकै, सो ह्वै जावेगा रोगी।
मूत्र के रोके धातु कड़ी हो, बल देवें सब नस पोंगी।
भोजन सतोगुणी नित पावैं, नहीं तो होवैगा ढोंगी।४।

पदः- मल औ मूत्र के बेग को गृही कभी न रोकै ले मानी।
नैनन की रोशनी बिगड़िहै धातु जायगी ह्वै पानी।
राम भजन औ घर के कारज दोनों बिगड़ैं हो हानी।
अंधे शाह की विनय जौन कोइ समझेगा सो शुभ प्रानी।४।

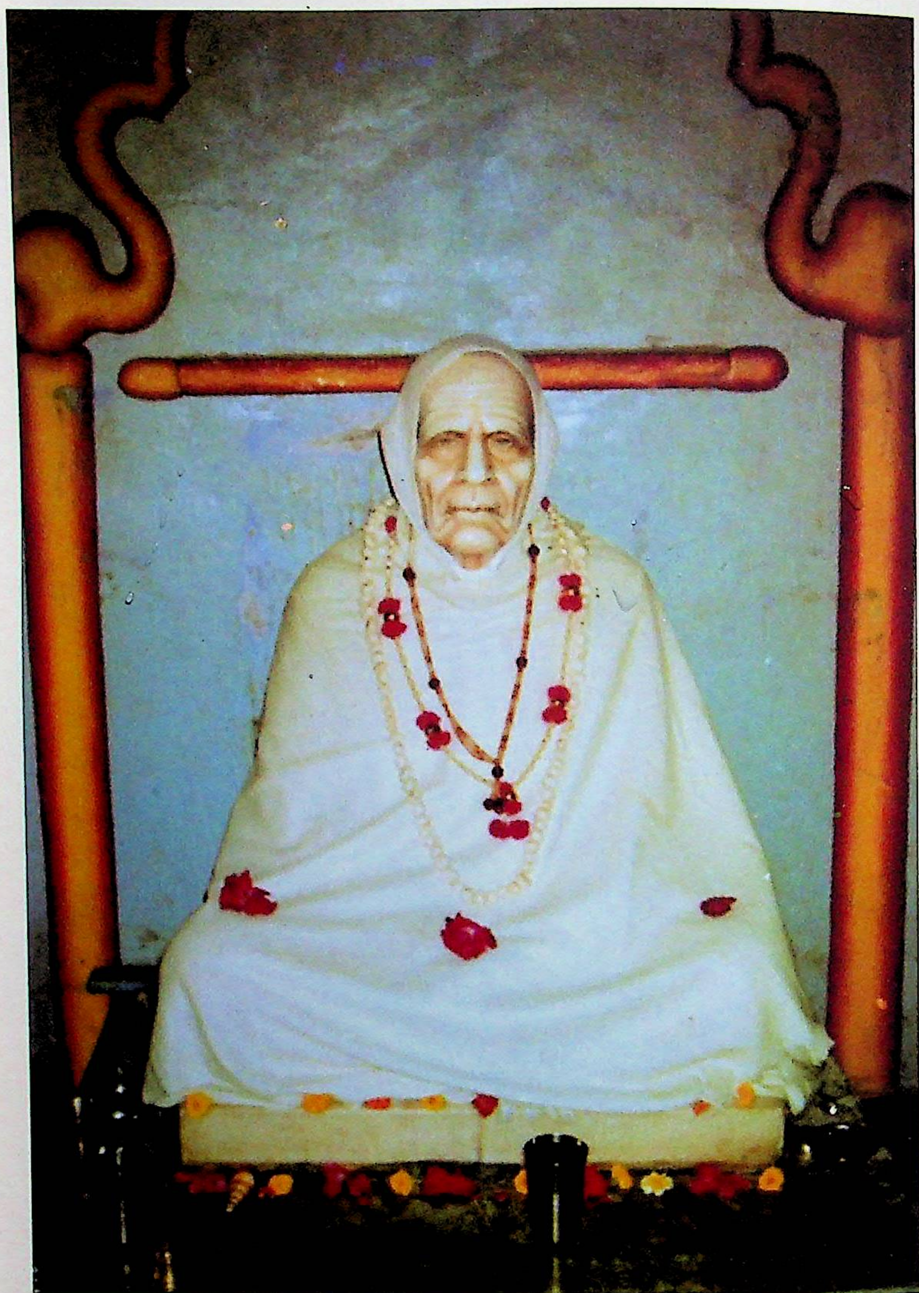
पदः- अगणित वस्तुन का कारबार भगवान तुम्हारे नैनों में।
बनि दीन जाय सतगुरु की शरन मन लावे उनके बैनों में।
धुनि नाम प्रकाश समाधि रूप हर दम तब रहिहै चैनों में।
अमृत पावौ घट साज सुनो सुर मुनि के घूमैं अयनों में।
नागिन जागै सब चक्र चलैं सब कमल खिलैं निज टहनों में।
अंधे कहैं तन को छोड़ जाय फिर पड़ै न जग के धैनों में।६।

पदः- एक सैन से हो पालना औ तारना संसार का।
नहिं शेष शारद जानते क्या खेल है सरकार का।
विश्वास सतगुरु बचन पर सो हो गया दरबार का।
अंधे कहैं प्रेमी को नित भोजन मिलै भण्डार का।४।



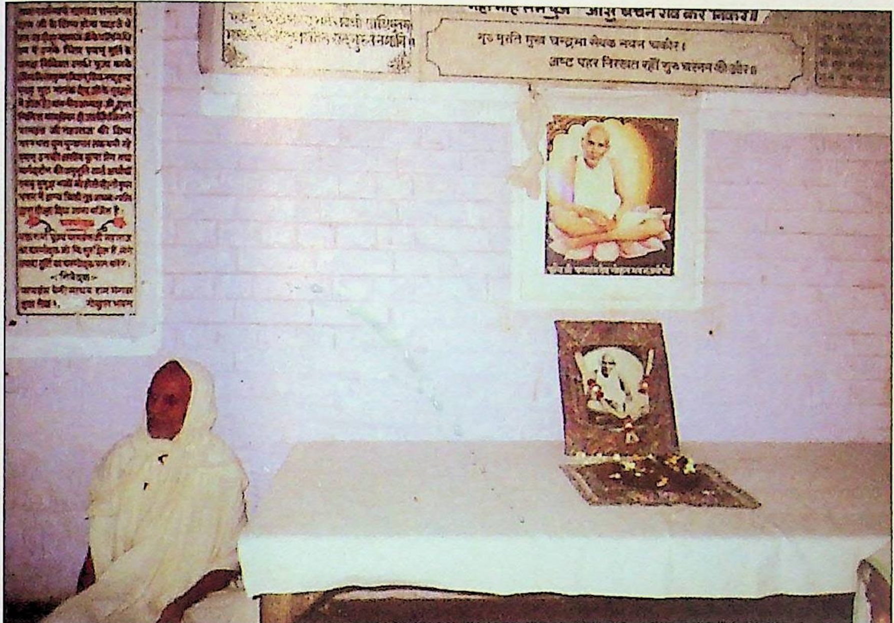
"गुरु गादी"

गोकुल भवन आश्रम में श्री परमहंस राम मंगल दास जी का विशाल चित्र।



"गुरु गादी"

गोकुल भवन आश्रम में गुरुदेव श्री परमहंस
राम मंगल दास जी की मूर्ति।



गोकुल भवन आश्रम में गुरुदेव श्री परमहंस राम मंगल दास जी के तखत पर सुशोभित उनका चित्र। तखत के बगल में बैठे हैं गुरुदेव के शिष्य श्री राम सेवक दास जी जो गोकुल भवन आश्रम का श्री गुरुदेव के उपदेशानुसार संचालन कर रहे हैं।



श्री गुरुदेव सदा सबके साथ हैं।

पदः- तन मन प्रेम से पढ़ै सुनै जो बाल्मीकी रामायन जी।
राम सिया सन्मुख में राजैं जे मुद मंगल दायन जी।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि हर शै से सुनि पायन जी।
अमृत पिओ सुनो घट अनहद सुर मुनि संग बतलायन जी।
नागिन जगी चक्र षट बेधें सातौं कमल फुलायन जी।
अंधे कहैं अन्त निज पुर हो आवागमन मिटायन जी।६।

पदः- जै भैरव भक्तन रखवारे।
दण्ड चक्र तिरशूल लिहे कर दैत्य दलन संहारे।
भजन में बिघ्न करत मन ठगवा इनको करहु किनारे।
अंधे शाह करैं यह बिनती चरन कमल सिर धारे।४।

पदः- जै काली किरपाली माई।
भक्तन के संकट चट मेटत नैन कि कोर फिराई।।
मन चोरन का शोर मिटावो भजन करौ हर्षाई।
अंधे शाह पुकार करत हैं बार बार सिर नाई।४।

पदः- जै जै जै जै जै गणनायक।
भक्तन के प्रभु हो बलदायक।
मन औ चोर भजन के बैरी अति ही हैं नालायक।
अंधे शाह को साह बनावो मुद मंगल वर दायक।४।

दोहाः- रेफ विंदु में रमन करि जियति होहु भवपार।
अंधे कह सतगुरु वचन यही है सब का सार।।

पदः- भक्तन के चोर गुलाम हुए, तुम भक्तन के न गुलाम हुए।
जग जन्म पाय बदनाम हुए, हा गुलामन के हौ गुलाम हुए।
चलि नर्क पड़े बेकाम हुए, दोनों दिशि से अब खाम हुए।
सतगुरु करि जे निष्काम हुए, अंधे कहैं ते गुण ग्राम हुए।४।

पदः- ज्ञानी से होवै विज्ञानी।
साँगोपांग जानि सतगुरु से संजम से हो ध्यानी।
तब आगे बढ़ि जैहौ भक्तों तन मन होवे पानी।
सार असार विचारि में आवै ताको कहते ज्ञानी।
दृष्टि अदृष्टि एक जब हो गई तब जानो विज्ञानी।५।

भिक्षा पाय न इच्छा रह गई शिक्षा देत न बानी।
बाल भाव सब के संग ऐका खेलत खात अमानी।
कर्म धर्म नहिं शर्म भर्म है दोनों दिश रजधानी।
बड़ी भाग्य से यह पद पावत कोटिन में कोई प्रानी।
अंधे शाह कहैं सतगुरु को तन मन दे सो जानी।१०।

पदः- हर दम राजि रहे हैं भक्तों अवध में देखो दशरथनन्दन।
बाल रूप में खेल करत क्या कबहूँ करुणा क्रन्दन।
सुर मुनि नित दरशन को आवैं करैं जोरि कर बन्दन।
इतर फुलेल लगा जो तन में मन हो मस्त तरंगन।
अवध के बासी आनन्द लूटैं गद्गद कण्ठ उमंगन।
अंधे कहैं बनत है निरखत दुति छबि सब के अंगन।६।

दोहाः- सतगुरु से बिधि जानि कै, जपै मन्त्र मन लाय।
तब फिर बैठे ध्यान में, महा मन्त्र खुलि जाय।

चौपाईः- महामन्त्र खुलि जाय तान सर्वत्र से आवै।
चलि समाधि में जाय लेख कर्मन कटवावै।
उतर आय तन माँहि आलसै पता न पावै।
ज्यों का त्यों बल रहे जानि हिरदय हरषावै।
सियाराम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख छावै।५।

अद्भुत छबि सिंगार छटा को वरनि बतावै।
एकटक ताकत रहै बोल मुख से नहिं आवै।
गद गद होवै कंठ रोम सारे पुलकावैं।
टपकै नैनन नीर तेज चम चम चमकावै।
तन होवै कम्पायमान अस मस्ती आवै।१०।

सुर मुनि आवैं मिलन नाम जस कहि कहि गावै।
निज कुल में अस भक्त मनै मन सबै सिहावै।
जो इस रंग में फंसा गंसा सो बसा कहावै।
सरनि मरनि औ तरनि मुक्ति भक्ती बतलावै।
सो जियतै ह्वै जात बात यह एक कहावै।
अंधे कह तन त्यागि यान चढ़ि निज पुर जावै।१६।

पदः- सार वस्तु का अनुभव करना महा कठिन है खेल नहीं।
अंधे कहैं बिना सतगुरु कोइ खोलि किंवारा पेल नहीं।
जब तक मन मतंग यह भक्तों पिस के होता तेल नहीं।
शांति दीनता प्रेम न आवै जीव ब्रह्म से मेल नहीं।४।

पदः- हरि जसुमति गृह खेल मचावैं।
बाल रूप के सखा सखी सब निज निज घरन से आवैं।
लै लै बिविधि भाँति के भोजन खाँय औ सबै खिलावैं।
यमुना जी का नीर धरा है पियें औ सबन पियावैं।
माता से कहैं कर मुख सब के पोंछो हँसि दुलरावैं।

माता सब के कर मुख पोछैं खड़े करैं हरषावैं।
आप दौरि के मातु के लपटैं जूंठे कर मुख नावैं।
कर निकारि मुख पर मुख रगरैं भीतर जीभ चलावैं।
कर मुख फिर सारी में पोछैं न धोवैं न धोवावैं।
माता हँसैं लोटि जाँय महि पर हरि ऊपर चढ़ि जावैं।

थूकैं मुख पर आँखी मूँदें हँसैं औ पैर हिलावैं।
दौरि आय बलिराम पकरि लें माता तब उठि पावैं।
गुदगुदाय बलिराम को श्री हरि आँगन में कढ़िलावैं।
सखा सखी सब हरि को घेरैं बलि उठि के भगि जावैं।
सब के संग फेरि खुब खेलैं कूदैं सबन कुदावैं।

नाना बिधि के खेल करैं जो बरनत नहीं सेरावैं।
दौरि जसुमति हरि को साधैं नन्द बैठि मुसकावैं।
कर उठाय के श्री हरि बोलैं हम गोदी में आवैं।
पीछे से दोउ आँखी मीचैं रहि रहि मूड़ हिलावैं।
नन्द आय तहँ ठाढ़े होवैं दौरि के पकरि बिठावैं।

माता गोदी में लै लेवैं हरि मुख दूध में लावैं।
दूध पियैं औ उगिलैं महि पर थू थू करैं बकावैं।
माता की गोदी से सरकैं हँसैं औ मुँह मटकावैं।
कहैं मातु यह दूध है खट्टा अब हम कबहूँ न पावैं।
ब्रज जन बैठे लीला देखैं मुख से बोलि न पावैं।

सुर मुनि नभ से जय जय बोलैं फूलन की झरि लावैं।
ऊपर ते आरती उतारें अस्तुति करि गुन गावैं।
नन्द जसोमति पुर के बासिनि सुर मुनि नित सिर नावैं।
धनि धनि कहैं दोऊ कर जोरैं नैनन नीर बहावैं।
प्रेम में हरि के हैं सब पागे जो नित देखन आवैं।३०।

इनके सुकृत से हम सब हरि के दरशन पाय जुड़ावैं।
अंधे कहैं भजो सतगुरु करि आप के सन्मुख छावैं।३२।

पदः- लौ हर दम जिसकी लगी रहै मुरशिद का मुरीद सो प्यारा है।
नहिं मार सकै कोई उसको वह जियतै जग से न्यारा है।
जब चाहैं खेल समेट लेंय जब चाहैं उसे पसारा है।
अंधे कहैं ऐसे भक्त धन्य जिन सब करतल करि डारा है।४।

दोहाः- मीठा जल में जब अधिक तब तो अधिक मिठाय।
अंधे कह ऐसे भजन करै ते जावै पाय।।

पदः- अलकैं कुल्लैं जुलुफ कहैं कोइ काक पच्छ सच मानो।
बोली देस देस की भक्तौं कहँ लगि कौन बखानो।
भँवर नागिनी कोइ मिसाल दे काले केशन जानो।
अंधे कहैं फेरि किमि बरने सुर मुनि सब यह ठानो।४।

पदः- मोहन नाचत क्या रीति पर।
चार ताल का राग प्रिया जी गाय बतावैं नीति पर।
सखा सखी ब्रज जन सब देखें राधेश्याम की धीति पर।
मुरली में सब बोल बजावैं सुर मुनि मोहैं गीति पर।४।

समै स्वांस तन पाय के भक्तों मति चलना अनरीति पर।
खोटे करम सुःख किमि पैहौ चढ़ि बालू की भीति पर।
हर दम शुभ कामन में रहना ह्वै सवार मन मीत पर।
अंधे शाह कहैं हरि मिलते शान्ति दीनता प्रीति पर।८।

पदः- जिन रोम रोम में पाप भरा। हरि सुमिरन करिके दीन जरा।।
जियतै भव सागर तौन तरा। अंधे कहैं सतगुरु चरन परा।४।

पदः- कदम कदम पर हैं जीव मरते कहां तलक कोई निहारि सकता।
करौ भजन तो मिलैगी माफ़ी नहीं तो होगा कभी न चुकता।
है कर्म भूमी बनाई हरि की, किया है जिसने उसी ने भुगता।
कहैं ये अन्धे मनुष्य का तन मिला है भक्तों अनमोल मुक्ता।४।

पदः- राम नाम में मन नहिं लागत।
जिनसे कहत फिरत हौ भक्तौं वे क्या करिहैं स्वागत।
अन्त समै जम ले खाले हैं बांधि खम्भ में टांगत।
हर दम ऊपर परै पिटाई तब मन काहे न भागत।
भोजन वसन विषय छल नाटक या में तो खुब पागत।
अंधे कहैं सुखी वे जानो जे सुमिरन में तागत।६।

दोहाः- अंधे कह साधक वही कोई कैसौ होय।
जथा शक्ति सेवा करै मन में रहै न दोय।।

पदः- स्वराज्य उसको मिलैगि भाई जो हरि से हर दम मोहब्बत लाई।
सतगुरु से चल कर सबक को पढ़ लो तभी तो होगी भली भलाई।
गोहत्या आपै कराते गुनिये ये मन तुम्हारा बड़ा कसाई।
चौधारा छूरी है उसके कर में बचै वो कैसे कहो तो आई।
उसे अगर तुम काबू में कर लो तो काम पूरा वो दे बनाई।५।

धुनि ध्यान लै नूर होय हासिल सिय राम झाँकी सन्मुख में छाई।
सुर मुनि के संग नित जमाव होगा प्रभू की कीरति कहैं वो गाई।
अमी पियो घट बजै क्या अनहद मधुर मधुर धुनि रहै सदाई।
जगैगी नागिन चलैंगे चक्कर कमल पलटि के सबै फुलाई।
तन त्यागि करके चले वतन में अंधे कहैं वह जगत न आई।१०।

दोहाः- मालिक की कुदरत अजब जानि सकै कछु सोय।
अँधे कहें सुमिरन करे मन को लेवै नोय।।

दोहाः- ठीक रहे रफ़तार जब होय नहीं गिरफ़्तार।
अँधे कह हर दम मगन देखै अजब बहार।।
मसलि कुचलि डारै वही सारे पापन झुंड।
अंधे कह हर दम रहै बना सुंड औ मुंड।२।

पदः- भोजन सतोगुण का करो रज तम गटकना छोड़ दो।
सतगुरु से जप-बिधि जानि कै तुम मन को नाम पै जोड़ दो।
धुनि ध्यान लै परकाश हो शुभ अशुभ कर्मन गोड़ दो।
षट रूप सनमुख में रहै उनहीं से नाता जोड़ दो।
आवै जो कोई दीन बनि दै भीख भांड़ा फोड़ दो।
अंधे कहैं यह सुख मिले जब जग से मुख को मोड़ दो।६।

पदः- लखौ तुमसे औ दुष्टन से हर समै हो रहा बगड़ा।
नहीं अब जीति पावो तुम हुवा मन उनके संग तगड़ा।
शेर सम गरजते सारे बनाया तुम को है छगड़ा।
करो सतगुरु मिले रस्ता अभी कछु है नहीं बिगड़ा।४।

अटल विश्वास करि बैठो लगा कर नाम का रगड़ा।
तब तो वै बोल नहिं पावैं श्री हरि उनको लें पकड़ा।
करै मन आय सेवकाई जौन फिरता रहै अकड़ा।
कहैं अंधे नहीं चेतै वही भव जाल में जकड़ा।८।

पदः- कटिहौ राम भजन बिन चक्कर।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जान्यो करत फिरत हो मक्कर।
अन्त समै जम ताल ठोकिहैं किसि बिधि करिहौ टक्कर।
जाय नर्क में गेरैं तुमको रोवो भक्कर भक्कर।४।

जल भोजन मल मूत्र क देवैं कहैं खाव पियो शक्कर।
अंधे कहैं होय जब मुरछा पड़े रहौ जिमि लक्कर।
आँखी रांजी ठेठर लटकै देखि सकत नहिं टक्कर।
मन ही मन पछितावै फटकै भूलि गई सब अक्कर।८।

पदः- मन क्यों आये संग में डाहन।
हम ही तुम्हें दिवान बनायन अब दुष्टन के बाहन।
उनका संग छोड़ि अब दीजै चलिये नीकी राहन।
पाप कमाई तुम्हैं सुहाई हम पड़े नर्क अथाहन।४।

गदहा खात खेत में देखत पीटत लोग ज्वलाहन।
यह मसला कबीर जी का है मानै नहिं ते पाहन।
नमक हलाल बनो हरि सुमिरो छूटै हम भव धाहन।
अंधे कहैं चुकावो बाकी तब मिटिहै उर दाहन।८।

दोहाः- एक बचन से बहु बचन, बहु से होवै एक।
अंधे कह सुमिरन करो नाम पै मन को टेक।।
जग के ऐश अराम को मन से दीजै फेंक।
तन से सब बरतत रहो कर्म लिखा दो छेक।।
बार बार हम का कहैं मिलै न ऐसा बार।
अंधे कह सुमिरन करो जियति होहु भव पार।।
संजम से तन ठीक हो संजम से मन ठीक।
संजम से सुमिरन बनै बिन संजम हो फीक।४।

जाके पास में कछु नहीं वह सुमिरै नित नाम।
अंधे कह हरि संजमी संजम का दे धाम।।
ऐसा संजम और क्या जाके रच्छक राम।
भूखे प्यासे हरि भजै अंधे कह बसु जाम।।
मन को पागे नाम संग सतगुरु से बिधि जान।
अँधे कह हर दम मगन जो सब सुख की खान।७।

पदः- नेम टेम विश्वास अटल करि जो हरि नाम में लागौगे।
सतगुरु से जप भेद जानि के तन मन प्रेम में पागौगे।
वही भक्त इस जक्त में मानो चोरन को गहि टाँगौगे।
अंधे कहैं त्यागि तन निज पुर चढ़ि बिमान चट भागौगे।४।

पदः- जानो राम नाम की टक्कर।
सतगुरु करि सुमिरन में लागो छूटै भव का चक्कर।
सुर मुनि शक्ती तुम्हैं खिलावैं सानि के घी औ शक्कर।
अंधे कहैं अन्त निज पुर हो लूटौ आनन्द छक्कर।४।

पदः- मन नहिं मानत अपनी तानत।
है निर्लज्ज कपटी अति पापी अशुभ को शुभ ही जानत।
बड़ा प्रपंच पास है कीन्हे सुर मुनि वेद बखानत।
अंधे कहैं करे जो सतगुरु सुमिरन विधिवत ठानत।
वे या को बस में करि पावैं नाम रूप पहिचानत।
प्रेम से अगम सुगम ह्वै जावै घट में घुसि जे छानत।६।

पदः- मन तुम काहे घूमत नाचत।
चोरन के संग दागी ह्वै के पाप करम में पाचत।
जीव अकेल सुकृत किमि जोरै दुख से लगड़ी खाँचत।
राम नाम सतगुरु से लेकर धुनि के रंग जो राँचत।
सोई तुम को बसि करि पावै ठीक हिसाब को जाँचत।
अंधे कहैं नूर लै पाय के रूप सामने टाँचत।६।

पदः- सुमिरन बिधि लै कर सतगुरु से अब सौदा अपना ठीक करो।
तन भीतर घुस करके भक्तों सब चोर बांधि के फीक करो।
मन आय के तुम को खुद मिलिहै चुपकार के अपना दास करो।
अंधे कह जियतै पार होहु तन मन से नाम की आस करो।४।

दोहाः- पर स्वारथ औ भजन बिन, आगे जाय न कोय।
अँधे कह सतगुरु बचन, पाप ताप दे धोय।१।
सेवा से पट जांय खुल, असली मेवा जान।
अंधे कह सतगुरु कह्यो सुर मुनि बेद बखान।२।

पदः- कौवा रोर मचा है तन में मुनुवा चोरन संग झिक्की।
सतगुरु किहे बिना अब भक्तौं लागि नहीं सकती टिक्की।
तन मन प्रेम लगाय जौन कोइ नाम तान पर चलि बिक्की।
वही सूर दुख धूरि मिलावैं शान्ति होंय पांचौं दिक्की।४।

छमा दीनता धारन करिहै कभी किसी से नहिं किक्की।
हरि सुमिरन बिन मानव जीवन दोनों दिसि ते भा फिक्की।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रूप सामने में ठिक्की।
अंधे कहैं भया मुद मंगल छूटी गर्भ केरि हिक्की।८।

पदः- रोचक भयानक छोड़ दो अब पद जथारथ को गहौ।
सतगुरु करो पावो पता कटु बैन नित सबके सहौ।
धुनि ध्यान लै परकाश सन्मुख रूप गर लेना चहौ।
अँधे कहैं मानो बचन फिरि गर्भ में काहे ढहौ।४।

पदः- अंधे कहैं हम जक्त में आये नहीं गये।
हनुमान हर ने कूचा बताये नहीं गये।
सिय मातु की असीस को पाये नहीं गये।

इस तन को अजर अमर कराये नहीं गये।
सीत ऊश्न भूख प्यास हटाये नहीं गये।५।

बैकुण्ठ चारि घूमि फिरि आये नहीं गये।
साकेत कृष्ण लोक मँझाये नहीं गये।
कैलास अमर काक के धाये नहीं गये।
सुर शक्ती सिद्धि लोक ह्वै आये नहीं गये।
नीचे के लोक देख सब आये नहीं गये।१०।

षट झाँकी सामने में छाये नहीं गये।
धुनि ध्यान तेज लै में समाये नहीं गये।
सुर मुनि के संग कीर्तन कराये नहीं गये।
अनहद को सुनि के अमृत पाये नहीं गये।
नागिन को जगा चक्र नचाये नहीं गये।१५।

कमलों को उलटि झट से खिलाये नहीं गये।
खुशबू तरह तरह की उड़ाये नहीं गये।
निर्बैर निर्भय निज को बनाये नहीं गये।
तन मन को एक तार लगाये नहीं गये।
जियते में परमानन्द हम पाये नहीं गये।२०।

विधि के लिखे पै मेख मराये नहीं गये।
दीनों को पाय करके चेताये नहीं गये।
पितु मातु की बलिहार मनाये नहीं गये।
सतगुरु की जय जय कार नित गाये नहीं गये।२४।

दोहाः- तुरियातीत भयी दशा अंधे कहैं सुनाय।
बिन जाने को मानिहै जाने सो हर्षाय।।
महा सुखी भी कहत हैं कहते सहज समाधि।
अंधे कहैं जाको मिले छूटै सभी उपाधि।२।

पदः- पीजै राम नाम का पालो।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानौ षट बिकार को बालौ।
ध्यान धुनी परकास दशा लै कर्मन की गति टालौ।

अमृत पियो देव मुनि भेटैं बाजै अनहद तालौ।
षट झाँकी हर दम रहै सन्मुख बिहँसि बिहँसि के हालौ।५।

नागिन जगै चक्र षट नाचैं सातौं कमल फुला लौ।
जीभ नैन कर भये रिटायर घट में घूमत मालो।
समै श्वांस तन दुर्लभ भक्तों जियतै यहाँ कमालो।
अंधे कहैं अन्त निजपुर को चढ़ि सिंहासन धालो।
जहां जाय कोई लौटत नाहीं ऐसा देश है आलो।१०।

पदः- तप का धन खूब जमा करना। कटु बैन सुनो औ छिमा करना।।
सत अन्न से रोज उदर भरना। कोइ मारै तौ न तमा करना।।
तन भीतर खूब रमा करना। सतगुरु के रोज़ चरन परना।।
तब जियतै में होवै तरना। भव जाल में फेरि नहीं परना।।
यह जियते का मरना सरना। अंधे कहैं छिप करके रहना।१०।

दोहाः- उथल विथल मन होत है जीव शीव किमि होय।
अंधे कह मन मीत हो छूटि जाय तब दोय।।
सतगुरु शरनि में जाइये चोर भगैं सब रोय।
अंधे कह मन आप ही ह्वै जावे तब तोय।२।

दोहाः- सब नर नारिन हित कहा जो कछु समझ में आय।
भूल चूक मम छिमा करि देख के लेंय बनाय।।
अंधे कह सबकी करौं बार बार परनाम।
आपै सब की दया से पूरन भा मम काम।।
इस अहैतुकी कृपा का कौन करौं सन्मान।
अंधे कह हरि को भजौ इसी से हो कल्यान।३।

पदः- लगा के तन मन करो नित सुमिरन यही है तप धन सबौं क भाई।
यही है युक्ती इसी से मुक्ती इसी में भक्ती सदा समाई।
इसी को सुर मुनि जपैं रहे गुनि यही बड़ी धुनि हर शै में छाई।
कहे क अंधरा वही है सुधरा जो दीन बन कर रहैं सदाई।४।

पदः- चाखो राम नाम की रबड़ी।
पांचों चोर संग लै भागें बोलि सकैं नहि हबड़ी।

मन तब तुम्हरा साथ देय तो सुर मुनि संग हो गबड़ी।
तप धन बिन नहिं मिलै ठिकाना पास नहीं एक दमड़ी।
जब जमदूत आय के घेरैं तूरैं तन जिमि लकड़ी।
अंधे शाह कहैं चित चेतो जियति सुफ़ल हो चमड़ी।६।

पदः- मन लागो सदा हरि नाम में। मति जाओ कभी बुरे काम में।।
है शक्ती बड़ी नर चाम में। कहैं अंधे चलो निज धाम में।४।

पदः- सतगुरु तुम्हारी शरन पड़ा हूँ वतन क कूचा बताव हमन को।
तेरी बदौलत तरे हैं अगणित बहार देखैं सदा चमन को।
यह चोर धमकैं लखैं औ चमकैं हमारे संग से लिये हैं मन को।
तेरे इसारे से हो किनारे तभी तो अंधे करै रमन को।४।

शेरः- हिफ़ाज़त से लियाकत हो। नजाकत से फराकत हो।।
कहैं अंधे सिफ़ारिस हो। मुहब्बत से तो वारिस हो।।

पदः- मन फंसा चूतिया चक्कर में। लपटा है पाप कि शक्कर में।।
अंधे कहै जमन कि टक्कर में। बंधि जाय जीव जिमि लक्कर में।।

दोहाः- मुवा मुवा सब कहत हैं अर्थ न जानै कोय।
हरि सुमिरन करि जो मुवै बहुरि न आवै सोय।।
हरि का रंग औ रूप बनि बैठे अचल मुकाम।
अंधे कह इस बिधि मरै ताको करूँ प्रनाम।।
आना जाना छूटिगा मौन भयो निष्काम।
अंधे कह हैं भक्त सो पहुँचि गये निज धाम।३।

दोहाः- सांचे सीधे जग रहौ धरो न झूठा भेस।
अंधे कह हरि भजन बिन होय न कोई पेस।।
मूड़ मुड़ाये का मिलै का रखवाये केस।
अंधे कह सुमिरन बिना कौन गयो निज देस।।
अंधे कह जियतै बनो सिया राम के नेक।
जैसे घर ही में भये जनक औ राजा केक।।
ऊपर से बरतत रहे भीतर ते उपरान्त।
अंधे कह या बिधि भगै तन मन की सब भ्रांति।४।

पदः- लीजै राम नाम का चिसका।
सतगुरु से सुमिरन बिधि जानि के छोड़ो सारे हिसका।
शान्त दीन ह्वै भजो निरन्तर मारो द्वैत के बिषका।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि तरसि रहे बहु जिसका।
हर दम सन्मुख दरसन देवैं निर्भय डर है किसका।५।

सुर मुनि लाय चटावैं निज कर दिब्य खांड औ मसका।
कैसौ कसनी पड़ै लेव सहि उठै उबाल न रिसिका।
ऐसा भजन मगन करि देवै यहां कौन है किसका।
अन्त त्यागि तन पहुँचे भक्तौं नित्य धाम है उसका।
अंधे कहैं जौन नहिं जानै बार बार जग सिसका।१०।
शब्दार्थः मसका = नैनू

पदः- जीव जब होवै नमक हलाल।
सतगुरु से सुमिरन बिधि जानै वापै राखै ख्याल।
ध्यान धुनी परकाश दसा लै मिटै करम गति भाल।
सन्मुख राम सिया की झाँकी अद्‌भुत रूप विशाल।४।

सुर मुनि आय करैं पैकरमा गले में डारैं माल।
अमृत पियै सुनै घट बाजा उठत मधुर क्या ताल।
राग रागिनी नाचैं गावैं दोउ कर देवैं ताल।
अंधे कहैं त्यागि तन निज पुर बैठे माला माल।८।

पदः- घट में चिराग बारे साधक सो है सुखारे।
मुरली अधर पर धारे श्री राधिका के प्यारे।
सन्मुख रहें सदा रे जो सब में सब से न्यारे।
नैनों के सैन डारे मुसकान तान मारे।४।

भूषन वसन सँवारे गले मोती की माल डारे।
प्रानों के प्रान प्यारे निरखैं जो मन को मारे।
अगणित युगों से तारे साधक भगत नकारे।
अंधे कहैं पुकारे हम तन मन हरि पै वारे।८।

पदः- चार पदारथ तुम्हरे सूत सतगुरु करो देंय वे कूत।
नाम की धुनि में हो मजबूत राम सिया के तब हो पूत।

जिनकी बनै ठीक करतूत उनकी रसना बने न तूति।
अंधे कहैं हटी जग छूति निज पुर बास करो बनि मूर्ति।४।

चौपाईः- जहर खाय या डसै भुजंगा। आवे जावे हो बेढंगा।
सतगुरु काटे हो एक रंगा। सदा रहै भगवान के संगा।
सोई साधक जानो चंगा। जीत लेय जियतै जग जंगा।
भीतर बाहर जब हो नंगा। वाके लिए सभी जल गंगा।
दीन दयाल का सो भिखमंगा। दीन होय तब मिलै तरंगा।
अंधे शाह कहैं सब तंगा। टूट गये को करै अड़ंगा।६।

पदः- बचन सतगुरु के जिन पाला वही खोला अपन ताला।
फिरा मन का जहां माला भया सिय राम का लाला।
ध्यान परकास लै ढाला कटा भव का लिखा भाला।
कहैं अंधे जगत जाला छूट पहुँचा है सुख साला।४।

पदः- नयन जीभ कर हिले नहिं सूरत लागै शब्द।
अंधे का अजपा यही करै करम गति रद्द।।
सतगुरु से बिधि लीन सिखि तिन्हैं मिली यह मद्द।
अंधे कह जे चूकिगे दोनों दिशि भयी मद्द।२।

शेरः- मन अजाब करता फिरै जीव को होवै कष्ट।
अंधे कह सतसंग बिन बुद्धि ह्वै गई भ्रष्ट।।

पदः- जब जीव हो गया गुनहगार, तब मनुवाँ हँसि हँसि कहै यार।
यह लट संगति का कारबार, जब कज़ा आय करिहै पुकार।
तब कौन करोगे वापै वार, तब हो तकान लेवेगि मार।
अंधे कह सुमिरौ होउ पार, फिर गर्भ न आवौगे बार बार।४।

पदः- अंधे कह सुमिरौ हौ कमाल, कटि जावै जितना है अमाल।
आलस करि डारयो है पलाल, या से नहिं छूटत है बवाल।।

पदः- सूरति सबद मारग सतगुरु से जानि सिख ले।
धुनि ध्यान नूर लै हो सियराम सनमुख लखि ले।
तन छोड़ि ले अचलपुर फिर जक्त में न खसिले।
अंधे कहें वचन मम हिरदय में अपने लिखिले।४।

पदः- मन चोरन के संग घूमै। सब सुकृत जीव का तूमै।।
बोलै तो गूमन गूमै। मतवालो ऐसा झूमै।।
सिया राम के कदम जो चूमै। कर जोरि गिरै चट भूमै।।
पूछौ तो बोलै हू मैं। तप धन मांगो कहै दूमैं।।
अंधे कहैं ऐसा सूमै। हंसि के दिखलावै रूमै।१०।

दोहाः- अन्त काल के समय का ख्याल करे जो कोय।
अंधे कह सो धन्य है सुकृत बीज ले बोय।।
नशा नाम का है सही सारे नशा खराब।
अंधे कह क्या ज़िन्दगी बूढ़े करत खिजाब।२।

पदः- मन चोरन के संग काहे गये। बदमाशी करि बदमाश भये।।
जे अपने घर के नाहिं भये। ते दुसरे घर चलि पेलि गये।।
जे सतगुरु से उपदेश लये। ते जियतै भव निधि पार भये।।
जे सुमिरन में मन नाहिं दये। अंधे कहैं नर्क के बीज बये।८।

सोरठाः- गणनायक महराज प्रथम तुम्हैं सुमिरन करौं।
सारौ भक्तन काज अंधा ह्वै चरनन परौं।।

पदः- श्री गणेश गजवदन गजानन शंकर सुवन भवानी नन्दन।
वक्रतुंड गणपति गिरजासुत पारवतीसुत दुःख निकन्दन।
सैलसुतासुत जगदंबासुत श्री उमा सुत दुति छवि अंगन।
मुक्ति भक्ति के दाता स्वामी अंधा बार बार करै वंदन।

दोहाः- विघ्नहरन मंगलकरन लम्बोदर गजदंत।
हरि सुमिरन में मन रहै अंधा यही भनंत।।

दोहाः- जीव न मारै मरि सकै अजर अमर है जान।
अंधे कह सो जानिहै जा के आँखी कान।
सब तत्वैं होवैं बिलग फेरि एक ह्वै जाँय।
अंधे कह हरि का चरित बरनत नहीं सेराय।
आपै सब कुछ हैं बने आपै खेलत खेल।
अंधे कह घट में लखो खोलि किवारी पेल।६।

दोहाः- आंलस ऊसर जानिये बीज जमन नहिं देय।
अंधे कह सतगुरु कह्यौ भक्त न याको लेय।
चोरन सब धन छीन के जबरन जीव से लीन।
अंग भंग मन को कियो संग में अपने कीन।
जीव अकेलो क्या करै भयो हीन औ खीन।
अंधे कह धन सब मिलै भजै नाम ह्वै दीन।६।

चौपाईः- तन में रहत पांच हैं भूत। मन को फोरि बनाइन दूत।।
जो गुनि रहै राम का पूत। वाको कबहुं सकत नहिं कूत।।
उनके संग खबीसिन छूत। निरखि पकड़ि ऊपर दे मूत।।
जे जन भये राम के सूत। उनके संग सकत नहिं सूत।।
सतगुरु जिनके हैं अवधूत। उनके शिष्य होत मज़बूत।।
अंधे कहैं देय सिर जूत। पकड़ि लेंय खावें जिमि तूत।१२।

दोहाः- जे सतगुरु के बचन गहि भजन करत हैं आज।
अंधे कह वे होंयगे भक्तन में सिरताज।।

सोरठाः- सुर मुनि कहैं महराज भक्तन के सिरताज को।
अंधे कहैं दुख भाज सुनिके मधुर अवाज को।।

पदः- जिस भगत का हर समय सतगुरु बचन पर ख्याल हो।
उसकी बिगड़ी जाय बन नेकौं न बाँका बाल हो।
सुर मुनि मिलैं अनहद सुनै अमृत पिये भरे ताल हो।
नागिन जगै चक्कर चलैं फूलैं कमल सब डाल हो।४।

धुनि ध्यान लै परकास सन्मुख में प्रिया नन्दलाल हो।
दूरि ते लखि भाजते जम मृत्यु माया काल हो।
नर नारि यहि सुनि के गुनैं मेटैं करम गति भाल हो।
अंधे कहैं निज पुर बसैं पावैं बिजय का माल हो।८।

दोहाः- हरि सुमिरन जे नहिं करैं, मुरही धरि धरि खाय।
अंधे कहैं नर नारि अब, चेत करो दुख जाय।।
मानुष का तन पाय के बिरथा रहे गँवाय।
अन्त समै पछितावगे जब जम घेरैं आय।२।

पदः- खाता कटा पड़ा सरकार में जो कछु भाव बिना तुम कीन।
यह चालाकी डारिस फाकी भयो न कबहूँ दीन।
जगत रिझायो क्या फल पायो चोरन सब ठगि लीन।
अन्त समै जब नर्क में पड़िहौ तब को कहै प्रवीन।
तलफि तलफि कै भोगो वहँ पर जैसे जल बिन मीन।
बड़ी गंधि तहँ घोर अँधेरा कोई सकत न चीन्ह।६।

जमन क सूझि परै सब देखैं बड़े बड़े रूप मलीन।
मन को मारि करैं जो सुमिरन जियतै होंय कुलीन।
ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि काटि देय गुण तीन।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सिंहासन आसीन।
हर दम सन्मुख राजि रहै हैं जिन यह सृष्टी कीन।
अंधे शाह कहैं अब जागो सुमिरि होहु लव लीन।१२।

पदः- जेहि नाम क तार मिला भक्तों वाकी सब दुबिधा भाग गई।
अंधे कहैं हर दम देखि रहा सब दिसि है छाई राम मई।
मन अपना रोंकि के ठीक कीन सुर मुनि सब आसिष आय दई।
तन छोड़ि गया साकेत चला दोनों दिसि जै जै कार भई।४।

पदः- जपि हरि नाम मगन ह्वै बैठो।
सब जीवन में राम रमें हैं किसी से कबहूँ न ऐंठो।
अंधे शाह कहैं जियतै में छूटि गयो सब ठैंठो।
अन्त त्यागि तन चढ़ि सिंहासन चलि साकेत में बैठो।४।

पदः- दीनता शान्ति बिन पकड़े कभी कोई नाम पाया है।
कहैं अंधे सुनो भक्तों मुझे सुर मुनि बताया है।
ध्यान धुनि नूर लै होवै जहां सुधि बुधि भुलाया है।
हर समै राम सीता की छटा सन्मुख में छाया है।४।

पिया अमृत सुना अनहद देव मुनि उर में लाया है।
जगा नागिन घुमा चक्कर कमल सातौं खिलाया है।
महक से मस्त किमि बोलैं बिहंसि के सर हिलाया है।
छोड़ि तन चढ़ि सिंहासन पर वतन अपने को धाया है।८।

दोहाः- सतगुरु चरन की रज धरै लेवै दृगि नित आंजि।
अंधे शाह कहैं वही पाप ताप दें गांजि।
तन मन होवै एक रस ऐसा जावै मांजि।
जैसे बरतन साफ़ हो मलि कै देखो कांजि।४।

प्रेम भाव होवै अटल सतगुरु में जेहि केरि।
अंधे कह सो पाइहै परै न कबहूं फेर।
जब तक ये बातैं नहीं तब तक लागै देर।
अंधे कह तब कौन बिधि सकौं नाम धन गेर।८।

पदः- अन्धे अन्धे अन्धे हम हैं सदा के अन्धे अन्धे।
नाम जपन की बिधि को जाना बैठे सुख के कन्धे।
निर्भय औ निर्बैर गयन ह्वै छूटे सारे धन्धे।
जे नहिं सुमिरन करैं प्रेम से ते सब जग में बन्धे।४।

चौपाईः- कसनी परै सहै नहिं हारै। दया धरम ते मन नहिं टारै।।
निरछल रहै सो निर्मल होवै। अन्धे कहैं सदा सुख सोवै।४।

चौपाईः- गैर हाजिरी का वह खाता। चलि देख्यो यह बने बिधाता।
तोता मैना तूती बनना। पढ़ि सुनि लिखि कंठाग्र क करना।
इधर उधर चलि ताना तनना। निज मन मति पर ध्यान न धरना।
वाक्य ज्ञान से होय न तरना। वाकी आडम्बर में गणना।४।

सतगुरु के चरनन में परना। शान्त दीन बनि धीरज धरना।
निन्दा अस्तुति में मति परना। वासे कबहुँ न होय उबरना।
सुर मुनि संतन सब युग वरना। जियतै तरना मरना शरना।
अंधे कहैं सबन हित वरना। बालक जानि छिमा सब करना।८।

दोहाः- कहैं अन्धे सुनो ऐसी, छिमा बिन साधुता कैसी।
कहै जैसी सुनो तैसी, मिलैगी राह तब वैसी।।

पदः- चरनोदक परसाद का लेना भाव बिना कछु होई नहीं।
सुर मुनि की यह बानी भक्तौं अंधा बीच में पोई नहीं।
मेहतरि सब को जूठा पावै पाप सकत निज धोई नहीं।
सच्चा बनै रहै नहिं कच्चा सो जग आय क रोई नहीं।

पदः- सुनिये रमा विष्णु किरपाल।
इस तन भीतर दुष्ट पुष्ट अति रहत पांच चण्डाल।
नाना विघ्न भजन में डारैं छिन छिन करत बवाल।
मन सब का ब्यवहारी बनिगा हमसे बांधि मलाल।
आप तो जग पितु मातु कहावत मैं आपै को बाल।
अंधे कहैं विनय यह मेरी मेटौ दुख की जाल।६।

पदः- सुनिये श्यामा श्याम दयाल।
इस तन भीतर रहत निरंतर पक्के पांच दलाल।
भजन करन जब बैठें धावैं देवैं निज निज ताल।
बुरी बासना गावैं गाना दै दै खूब उछाल।४।
मन को अपना मित्र बनाये ताकत मोहिं जिमि काल।
आपइ के ये चाकर बाजत ऐसे कठिन कराल।
तान सुनाय बाँसुरी की हरि इनहिं करहु मतवाल।
अंधे कहैं होंय तब राजी छूटै सकल बवाल।८।

दोहाः- तन मन रंग हरि नाम में बस्तर रंगब न ठीक।
अंधे कह यह ढोंग है दोनों दिसि ते फीक।।
साधक सिद्धि कहैं उसे जो कोइ आवै छार।
जो माँगै निज पास हो देवै करै न वार।।
बीर बिक्रमादित्य औ करन रंक सरदार।
मोरध्वज हरिचन्द्र जी अम्बरीष दातार।।
हैं औ ह्वै हैं ह्वै गये लगा रहै यह तार।
अंधे कह वै भक्त हैं सदा संग करतार।४।
मुक्त कहत हैं उसी को जो जियतै सब जान।
अंधे कह तब भक्त भा रंग रूप भगवान।
सारे जक्त में आप हैं आप में सारा जक्त।
अंधे कह सो मुक्त है धन्य धन्य वह भक्त।
न्यारा भी सब से रहै मिला रहै नहिं दोय।
अंधे कह ऐसे भगत बिरलै कोइ कोइ होय।।
सतगुरु के जे बैन गहि नाम बीज लियो बोय।
अंधे कह जियतै तरे आवागमन न होय।८।

शेरः- भगवान के दरबार से खाली नहीं सो लौटता।
अंधे कहैं सतगुरु को करि तन मन को प्रेम में औंटता।।

दोहाः- भीतर बाहर कछु नहीं बांधे मूरख टोल।
अंधे कह जाहिर नहीं मन है डामाडोल।
अंधे कह पछितॉयगे छूटि जाय जब चोल।
जम पीटैं नित नर्क में मुख से कढ़ै न बोल।

सोरठाः- नाम रूप अनमोल, वाको झोल बतावहीं।
मन में भरे किलोल, औरन को समुझावहीं।।
अंधे कहैं अतौल जहर के मोदक पावहीं।
तब को करै मखौल जब जम बाधिक धावहीं।।
मल औ मूत्र ढकोल अस कहि मुख में नावहीं।
जाय गला सब छोल उलटि गिरै बिल्लावहीं।३।

चौपाईः- आलस तन मन कीन पलाल। कैसे मिलैं तुम्हैं किरपाल।।
हील भयो सब सुकृत क टाल। बिरथा फिरत बजावत गाल।।
अन्त समै आवै जम काल। उनसे लड़ै को ठोकै ताल।।
वहाँ पै किसी की गलै न दाल। जम पीटैं क्या रूप कराल।।
फटकि फटकि के हो बेहाल। मूर्छा जागै करौ उछाल।।
दूत पकड़ि फिरि खींचै खाल। अंधे कहैं लिखाये भाल।६।

पदः- भजि हरि नाम होहु मतवाला।
सतगुरु से सुमिरन बिधि जानो, मिलै विहंग की चाला।
सूरति शब्द में जब मिलि जावे कर जिह्वा नहिं हाला
अजपा जाप यही है भक्तों बैठि करो चुप ख्याला।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि कर्म रेख को टाला।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि निरखौ रूप विसाला।६।

हर दम सन्मुख रहैं तुम्हारे मन्द मन्द मुसक्याला।
यह षट झाँकी अद्भुत बाँकी देखत ही बनि आला।
सुर मुनि सबै रूप रस लोभी तन मन प्रेम में घाला।
बैठे ठाढ़े परे उताने एकै रंग में ढाला।

अन्धे कहैं वही है साधू जियति मिला सुख साला।
अन्त त्यागि तन निज पुर पहुँचा मातु पिता का लाला।१२।

पदः- बताओ भक्तौं कहाँ को चलिहौ भरी है तन मन जगत की आशा।
फिकिर नहीं तुमको अपने घर की ये तन को मानो जल का बताशा।
गरभ में कैसी करार कीन्ही यहाँ पै बैठे बने निराशा।
उठो अब चट पट सतगुरु से मिल लो बता दें मारग मिलै सुपासा।४।

चलावो चरखा नचे तब तेकुवा बनावो तागा धरी कपासा।
धुनि रेफ़ बिन्दु कि जर्रा जर्रा से होत रं रं लखौ तमासा।
सियराम सन्मुख प्रकास चहुँ दिसि समाधि दोनों करम का नाशा।
तन त्यागि करके चलो जहां से अंधे कहैं लो निजधाम बासा।८।

दोहाः- मन खजूर के तरेगा, चाहत लेंय जुड़ाय।
कहाँ पेड़ कहँ छाँह है अंधे कह पछिताय।।
गोता मारो पास में भरा अगम दरियाव।
अंधे कह जियतै तरो मिलै न ऐसा दाँव।।
कुकरम का फल है बुरा सुकरम का है नीक।
अंधे कह हरि-भजन बिन मिटै न कर्म की लीक।३।

दोहाः- य़ह शरीर बेकार है जो हरि नाम न पाव।
अंधे कह सतगुरु करो बैठि एकान्त में ध्याव।।
सनै सनै साधन करो परि जावै तब दाव।
अंधे कहैं मन दोस्त ह्वै संग रहै हरसाव।।
बैठे ठाढ़े लेटि कै चलते नाम पै ध्यान।
अंधे कह तब आइकै लपटि मिलैं भगवान।।
जल भोजन हलका करो शांति दीन बनि जाव।
अंधे कह यह भजन बिधि और न ऐस उपाव।४।

ब्रह्म महूरत दो बजै लागत निसि में जान।
अंधे कह सतगुरु सुमिरि सुनै नाम की तान।।
इसी तान से लोक जुग सुर मुनि आवैं पास।
अंधे कह जै जै करैं भयो दुःख सब नास।।

या बिधि जग में बसर करि अन्त चलो निज धाम।
अंधे कह तन भा सुफल मिलिगा अचल मुकाम।७।

पदः- भजन करै संग लगी मजाक। समुझि जाव हैं बड़े कजाक।।
इस दिल्लगी से होय सुजाक। तब कैसे होंगे बेबाक।।
मन को मारि करो जब खाक। भगै बासना सकै न ताक।।
जे न भजैं ते नर्क में पाक। अंधे कहैं कटी कुल नाक।४।

पदः- सब कछु नाम प्रताप में पायो।।
सुर मुनि सक्ती जेहि बिधि ध्यावत सो सतगुरु ने बतायो।।
अंधे कहैं टूट भ्रम फाटक परमानन्द है छायो।।
जे मदान्ध मद में हैं माते तिनहिं काल धरि खायो।४।

पदः- खेलो राम नाम का सट्टा।
सतगुरु से सब ठीक सीख कर जियतै लै लो पट्टा।
तब फिर चोर ठगन नहिं पावैं लेहु जमा करि चट्टा।
अंधे कहैं चूकि जे जावै दोनो दिसि भे खट्टा।४।

पदः- हरि सुमिरन में जाय सटि मन को संग मिलोय।
अंधे कह सच्चा वही सत्य प्राप्त कियो सोय।
नाना नारिन लिहे मन लादे सिर पर भार।
बृच्छ कहौ कैसे बढ़ै कटी परीं सब डार।४।

कहत जिन्हैं हैं बासना सुर मुनि शास्त्र पुकार।
उनके संग नाचत फिरै जीव होय किमि पार।
बिन सुमिरन छूटै नहीं यह माया का भार।
अंधे कह विश्वास करि जुटौ होय जरि छार।८।

जब मन आवै पास में नाम पै देय लगाय।
जिस दिन गोता मारिहै तब नहिं अन्तै जाय।
पावै नाम औ रूप जब हर्ष न हृदयँ समाय।
तब सच्चा दीवान बनि करै खूब सेवकाय।१२।

इस बिधि ते मन होय बस याकी यही उपाय।
अंधे कह मानो बचन ठीक दीन बतलाय।

भागा भागा मन फिरै जीव अभागा होय।
अंधे कह जब संग रहै तब किमि नागा होय।१६।

पदः- बनि गयो यहां नालायक हो। जमपुर में कौन सहायक हो।।
सतगुरु करि अब सुख दायक हो। अंधे कहैं जियतै लायक हो।।

दोहाः- साधक के लगि जाय जब नाम कि धुनि की चोट।
अंधे कह मानो भयो राम श्याम की ओट।।
राम नाम सतगुरु दियो जप्यो न तन मन लाय।
अंधे कह वै जीव जग बार बार चकराय।।
पुर जन नाते दार सब मित्र सकल परिवार।
सब मतलब के जानिये यह असार संसार।।
जब तक चीकन चाम है धन कमाय ठगि लाय।
तबही तक सब हैं भले, अन्त संग को जाय।४।

स्वांसा बाहेर जस भई, भौन से दें बिलगाय।
अब कोई नहिं है सगा, लेय अचार बनाय।।
सरिगा सरिगा सब कहैं, देर होय गन्धाय।
काढ़ौ बाहेर ले चलो, फूंकि देव दुख जाय।।
की धरती में गाड़िये, की जल देव बहाय।
की मैदान में डारिये, गीध श्वान लें खाय।।
अंधे कह सब वहां पर, यही रहे बतलाय।
निज कानन ते हम सुना, सत्य मानिये भाय।८।

पदः- पकड़ौ राम-भजन की गल्ली।
सतगुरु करिके भेद जानि लो तब दिल होय तसल्ली।
सुर मुनि आवैं तन हरषावैं, रहि रहि करै उछल्ली।
लै परकास धुनी क्या होवै, हाँड़ रोम रग नल्ली।
सन्मुख कौशल्या के नंदन, संग सुनैना लल्ली।
मुक्ति भक्ति जियतै में मिलिगै, अंधे कह घर चल्ली।६।

शेरः- खुदी छोड़ो खुदा पासै, बिना मुरशिद के नहिं भासै।
कहैं अंधे जगत आसै, पकड़ि के तुमको फिर नासै।

दोहाः- ऐसी लगन लगाइये जैसे लासा जान।
अंधे कह चिड़ियां फँसै छूटि सकत नहिं मान।।

पदः- मन मक्कर करता काहे।
गर्भ में कीन करार भजन का सो काहे न निबाहे।
सारो खेल हमार बिगारा ऐसा बे परवाहे।
कुवाँ ताल सरिता गिरि सागर थाहे और अथाहे।४।

छिन भर में तू वहाँ जात है जहाँ न कोइ राहे।
ऐसा तू बलवान चलैया लम्बे पग औ बाहैं।
नीक जीव तुझे नहिं मानत खाली च्वरवा चाहैं।
अंधे कहैं भजो सतगुरु करि तब यह रहै पनाहे।८।

पदः- मन बनि जा मेरा संगी।
चोरन की संगति मति करना वै सब हैं बहुरंगी।
पाप-पलीति में तोहि लेथारि के करि दे पूरा भंगी।
या से बड़ी हानि हो मेरी यह बातैं बेढंगी।४।

सतगुरु करि हम तुम हरि सुमिरैं चाल चलैं एकरंगी।
तब सब चोर पिंडोर जाय ह्वै नाम कि बाजै बंगी।
अंधे शाह कहैं जियतै में जीत लेंय जग जंगी।
शांति भगौती ढाल दीनता हर दम है सतसंगी।८।

पदः- राम नाम धुनि रं रं कार भक्तौं जब मिलि जावैगी।
तब सब चोर शोर नहिं करिहैं मन को तुम्हैं मिलावेगी।
ध्यान प्रकास समाधि होय औ सिय पिय सन्मुख छावैगी।
नागिनि चक्र कमल सब उलटैं महर महर महकावैगी।
अमृत देय सुनावै बाजा सुर मुनि दरश करावैगी।
अंधे कहैं शरीर छुटाय के नित्य धाम पहुँचावैगी।६।

दोहाः- मन कायल करता रहै, भक्त न कायल होय।
अंधे कह सतगुरु कृपा, मन भी घायल होय।।
सतगुरु काटे जात मरि, सर्प के काटे जन्म।
अंधे कह गुनि लेहु मन, तब पाओ यह मर्म।।

नाम कि पावै चोट जो, सो नहिं जीवै लाल।
अंधे कह निज पुर बसै, बनि के रूप विशाल।३।

पदः- आतसबाजी नाम कि खेलो।
सतगुरु से सब भेद जानिकै तब दरबार में पेलो।
सुर मुनि प्रभु संग खेलि रहे हैं तन मन प्रेम में मेलो।
अंधे कहैं बताय सकै सो जो ह्वै जाय अकेलो।४।

पदः- पांच पंच तन में रहैं संग एक सरपंच।
अंधे कह सूझत नहीं मन तो करत प्रपंच।
अंधे कह जियतै तरो सूझे तब सतपंच।
सतगुरु करि सुमिरन करो मन को लीजै टंच।४।

पदः- गुनि लीजै पत्थर घिसत मलो जहँ लोटा।
मन नेकौ घिसता नहीं कैस है खोटा।
इसको अपने संग चोरन लै कर पोटा।
क्या संग रंग से बना पाप का ढोटा।४।

पल पल में करता ऐब पायगा कोटा।
क्या मान सान का लीले रहता गोटा।
या से नहिं काबू होत बना है मोटा।
सतगुरु करि नाम क लेय भक्त जों सोटा।८।

तब पकड़ै याको झपटि लेय गहि झोंटा।
काबू तब हो बदमास परै नहिं टोटा।
जो दीन शांति ह्वै प्रेम के संग में औटा।
अंधे कहैं वाको दीन मित्र बनि बौटा।१२।

दोहाः- जौन अधौटा रह गया, नर्क में औटा जाय।
अंधे कह फिर जगत में, बार बार चकराय।।

दोहाः- करै बंदगी प्रेम से पावै आशिरबाद।
अंधे कह वह फिर कभी होत नहीं बरबाद।
शुभ कारज सब राम के करै करावै जौन।
अंधे कह वह फिर कभी होत नहीं बरबाद।

शुभ कारज सब राम के करै करावै जौन।
अंधे कह हरि पुर बसै सत्य मानिये तौन।६।

पदः- ठगवा सब लूटत मोर महल।
मन को संग लीन्हे कीन दहल।
चौतरफ़ा नक़ब लगाये हैं उनहीं की हरदम चहल-पहल।
अंधे कहैं केहि बिधि जीव बचै, रोवै सर पीटै टहल टहल।४।

पदः- मन बदन के संग बदनाम हुआ, सब मिलि वाको कहते बद्दू।
वै पांच अकेल करैं अब क्या, सब का वह कहन लगा दद्दू।
तब ठगवा मिल के गौर कीन, इस के सर पाप खूब लद्दू।
तन छूटै जीव को जम पकड़ैं, कहैं काह कमाय धरे भद्दू।४।

तब बोल न आवै डाट सुनावैं, पकरि के झिटिकि करैं रद्दू।
ले नर्क में डारि देंय बोलैं, अब पहुँचि गये अपनी हद्दू।
मन काहे काबू नहीं किहे, अब कलपन सरु सारे पद्दू।
अन्धे कहैं भालन मारु देंय, छेदैं जैसे पक्का कद्दू।८।

दोहाः- मन काबू बिन यह दसा, हाय हाय चिल्लाय।
एकौ पल कल नहिं मिलै, अन्धे कहत सुनाय।।

पदः- नहीं है ताकत किसी में ऐसी जो चोरों से मन निसार लेवै।
बिना भजन का सहारा पाये हम अपने को खुद बिगार लेवैं।
जो सन्त सच्चे हैं सुनिये भाई वै आलस तन से निकार देवैं।
तो चोर सारे रहैं किनारे वै कार अपना खुद टार लेवैं।
धुनि नाम लै तेज पाय करके सिय राम सन्मुख निहार लेवैं।
पियै अमी रस मिलैं सब सुर मुनि अनहद कि प्यारी गुमकार लेवै।६।

जगा के नागिन घुमा षट चक्कर कमल भि सातों उलार लेवै।
खुशबू के मारे दिमाग तर हो स्वरूप अपना संभार लेवै।
तवाफ़ कर ले सब लोकों का चलि चिराग़ घट में भी बार लेवैं।
सतगुरु से सीखै सुमिरन कि बिधि को जुटै मगन हो बहार लेवैं।
फिर वै तो पक्के ह्वै मल्ह जावैं जम मृत्यु का लै पछार लेवैं।
तन त्यागि अन्धे कहैं चलै घर लखि उनको उठ कर सरकार लेवैं।१२।

दोहाः- चलि बैठे निज धाम में, राम रूप ह्वै जाय।
अंधे कह फिर जगत में, कभी न चक्कर खाय।।

पदः- हैं कोढ़ी अंधे जगत में कितने जो नाम लेकर के मांग खावैं।
जो हट्टे कट्टे लखैं शुभ कारज बजाय तारी हंसी उड़ावैं।
दया तो हम को है आती इन पर परै नरक चलि तो को छुटावै।
कहैं यह अंधे धनि हरि की माया कहां तलक हम तुम्हें लिखावैं।४।

दोहाः- जैसे जाके कर्म हैं वैसे दुख सुख पाय।
कोइ सिंहासन चढ़ि चलै कोइ घसीटे जाय।।
अंधे कह इस खेल को कहँ लगि को कहि पाय।
हरि की लीला अगम है सुमिरौ सब मन लाय।२।

पदः- सतगुरु को मन देकर भक्तौं, उनहीं का फिरि ध्यान करै।
सो जानो जियतै तरि जावै, सुर मुनि सब सनमान करैं।
सनमुख राम सिया छबि छावैं नाम प्रकास समाधि परै।
अँधे शाह कहैं तन त्यागौ फेरि जक्त नहिं पैर धरै।४।

पदः- सतगुरु के चरनन जो परता, सो भक्तों जियतै में तरता।
दया धर्म से अनुभव फुरता, राम नाम में मन है जुरता।
निश्चय लागि जाय जब सुरता, तन्मयता हो नेक न दुरता।
त्यागो कपट ककार निठुरता, अन्धे कहैं होय तब पुरता।४।

पदः- करो सतगुरु भजो हरि का। यहाँ कोई न तेरी लरिका।।
बन्द चारौं तरफ़ फरिका। जाय जो होंय उस दरिका।।
ध्यान धुनि नूर लै सरिका। रूप सन्मुख में श्री हरि का।।
देव मुनि देंय नित खरिका। कहैं अंधे करैं अरिका।८।

पदः- श्री गीता श्री रामायणजी। मुद मंगल की हैं दायन जी।।
सुर मुनि सबके मन भायन जी। नित नेम से करते गायन जी।।
हरि कृपा से बटिगो वायन जी। सब लोकन में जस छायन जी।।
धरि ध्यान गयन लखि आयन जी। अंधे कहैं सत्य सुनायन जी।४।

पदः- सतगुरु शरन सतगुरु बचन सतगुरु चरन में प्रीति हो।
अंधे कहैं जियतै तरा वासे न फिरि अनरीति हो।

सन्मुख लखैं प्रिय श्याम को बाजा बजै क्या गीत हों।
सुर मुनि लिपटि कर भेटते बोलैं भई अब धीति हो।
नागिन जगै चक्कर चलैं फूलैं कमल सब रीति हो।
अमृत पियें तन तजि चलै यह अपने कुल की नीति हो।६।

दोहाः- चुगलन में माहिल बने, भजन में काहिल जान।
अंधे कह वै होयँगे, जम गण के सन्तान।।

पदः- सुमिरन बिना नर तन गये जे खोय खोय खोय।
ते सब पड़ैं नरक में रहे रोय रोय रोय।
पापों के बीज जग में खूब बोय बोय बोय।
अँधे कहैं पछिताने अब क्या होय होय होय।४।

पदः- सतगुरु करो जगत में रहे सोय सोय सोय।
चेतौ उठौ भजन करौ मुख धोय धोय धोय।
सुर मुनि पिलावैं तुमको मीठा तोय तोय तोय।
अन्धे कहैं हरि पास तजो दोय दोय दोय।४।

पदः- मन दिवान जो रहा हमारा।
जाय मेल दुष्टन से कीन्हे हमको चहत निकारा।
छिन छिन पाप करम है करता ऐसा है हत्यारा।
बोलैं तो चट उत्तर देवैं हमरे हैं बहु दारा।४।

हमको उनकी फिकिर लगी है और कौन दे चारा।
ऐसी मति मलीन भइ वाकी लीन्हें तेग दुधारा।
अब हम सतगुरु से सिख आवैं राम नाम रंकारा।
अंधे कहैं भागि कहां जैहौ पीटब खोलि केंवारा।८।

पदः- साधक कूदि परै अगिनी में जैसे गिरत पतिंगी है।
अंधे कहैं वही सतगुरु का पूरा हरि का संगी है।
जैसे कीट ले आय बनावत निज स्वरूप में भृंगी है।
कैसा सुन्दर शब्द सुनावत भनभनात जिमि बंगी है।
अपने प्रभु के नाम कि धुनि जो र रंकार अति चंगी है।
हर दम ख्याल रहै जब वा पर करती तब एक रंगी है।६।

पदः- विश्वास करै सतगुरु के बचन तब देख परैं रघुबर सीता।
परकास समाधी ध्यान नाम ह्वै गयो जियति तुरियातीता।।
सुर मुनि नित आवैं हिये लगावैं कहैं भयो अब मम मीता।
बिमल बिमल अनहद धुनि सुनते भांति भांति के संग गीता।
जिन हरि भजन को जान्यो नाहीं जन्म अकारथ है बीता।
अंधे कहैं नर्क में रोवै त्यागि दिहिनि कुल की रीता।६।

पदः- राखौ गर्भ के कर्ज क ख्याल।
सतगुरु करि जप भेद जानि के करो इकट्ठा माल।
सब श्री हरि को सौंपति जावो होय न बाँका बाल।
अंधे कहैं साधकौं सुनि कर जुटिये ठोंकि के ताल।४।

पदः- देखो लंगर माई दधि मोरी खाय डारी।
चोली मसकाय डारी चुनरी को फारि डारी।
मटकी को फोरि डारी बहियाँ मरोर डारी।
बोलै तो कहत दारी चुप चुप चुप सारी।
सुर मुनि जै जै कारी बोलैं कहैं बलिहारी।
तन मन दीन्हें वारी ब्रज की है लीला न्यारी।६।

प्रेम में पगी हैं प्यारी हरि की बड़ी दुलारी।
सतगुरु किरपा भारी सकते सोई निहारी।
ध्यान धुनि उजियारी लै में सुधि बुधि बिसारी।
सन्मुख बनवारी सखा सखी राधा प्यारी।
ऊपर ते कहैं हारी भीतर ते एक तारी।
अंधे कहैं सुकुमारी जीतैं सबै दोनो पारी।१२।

दोहाः- सारे गृह तब शान्ति हों जब पावै हरि नाम।
अंधे कह छूटै दुई सब में सीता राम।।
सुर मुनि सब नित प्रति कहत अनुचित उचित जो बात।
अंधे कह जो हम कहा बुरा न मानै भ्रात।२।

पदः- तन गुदरी भीजत गरुवाई।
दिन दिन आयू छीजत जावै जानत हौं न उपाई।
जगत मिठाई में करुवाई, मनुवाँ रह्यो बकाई।

अन्त समै चलि नर्क में परिहौ हर दम परै पिटाई।
हाय हाय हर दम तहँ बोलो को इन सकत छुटाई।
या से चेति करो अब सतगुरु देवैं राह बताई।६।
करि हरि भजन मगन ह्वै जावो बिधि कर लेख मिटाई।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख दें छबि छाई।
अमृत पियो सुनो घट बाजा सुर मुनि लें उर लाई।
नागिनि जगै चक्र षट नाचैं सातों कमल फुलाई।
उड़ै तरंग रोम सब पुलकैं गद्गद कंठ बोलि नहिं जाई।
अंधे कहैं चलो साकेतै बनि बैठो अस्थाई।१२।

दोहा:- यह पद पढ़ि सुनि गुनि भगत लेवैं उर में धार।
अंधे कह हरि भजन बिन होत नहीं निस्तार।।

पद:- राम नाम का मिलिगा टाल। निर्भय रहौ ठोंकि कै ताल।।
छूटि गयो जग का जंजाल। आनन्द हर दम करै उछाल।।
जियतै में जो करै कमाल। सोई होगा माला माल।।
है अमोल यह नर की खाल। चूकै जावै काल के गाल।८।
सतगुरु शरनि से मिटै बवाल। शान्ति दीन बनि धैर्य संभाल।
प्रेम लपटि कै करै निहाल। मुक्ति भक्ति का मिटा सवाल।।
अंधे कहैं करो नित ख्याल। हर दम सन्मुख दीन दयाल।।
नैन जीभ कर सकैं न हाल। राम नाम अनमोल है लाल।१६।

पद:- शुभ कारज करना फलै नहीं, जब बुरी वासना मन में हैं।
अंधे कहैं भक्तों चेत करो आनन्द बड़ी तप धन में है।
सतगुरु बिन भटकत इधर उधर अनमोल पदारथ तन में है।
धुनि नाम प्रकास समाधि हो षट रूप लखौ कन कन में हैं।४।

दोहा:- सतगुरु दीन्हों सब्द को सूरति दीन्ह लगाय।
सालि रह्यो हर दम नशा अंधे कह सुखदाय।।
संगति दुष्टन की परै सहै सो सूर कहाय।
अंधे कह तन छोड़ि जग लात मारि घर जाय।२।

पद:- सतगुरु किरपाल दयाल प्रभू हमको एक आस तुमारी है।
तुमरे सम दूसर और नहीं कोउ पतितन को हितकारी है।

तुम बंधन भव का काटि देत जियतै सुखमय नरनारी है।
अंधे कहैं सनमुख छाय रही झांकी तुमरी बलि हारी है।४।

पदः- सीता मढ़ी है अति सुख गढ़ी। नाम बिना जाने को चढ़ी।।
मन को मारि बनावै कढ़ी। सो साधक वाको चट लढ़ी।।
सतगुरु से सुनि गुनि जो पढ़ी। सो दिन दिन आगे को बढ़ी।।
अंधे कहैं नाम धुनि मढ़ी। सन्मुख अदभुत झाँकी कढ़ी।८।

दोहाः- रीति नीति सब जगत हित प्रभु ने दीन बताय।
अंधे कह जो मानि ले वाकी भली भलाय।
रीति नीति पर चले बिना दोनो दिसि ते दूरि।
अंधे कह सतगुरु बचन करै तो हो मंजूर।
शांति दीन मज़दूर बनि मन से सुमिरै नाम।
अंधे कह सतगुरु बचन संधै डोलैं राम।६।

पदः- सब नाथों के हरि नाथ हैं। क्या धनुष बाण लिए हाथ हैं।।
प्रेमिन के हर दम साथ हैं। दीनन के दीना नाथ हैं।।
जे चरनन धरते माथ हैं। पापन को डारत पाथ हैं।।
अंधे कहैं करत सनाथ हैं। हरि के पुर जात अनाथ हैं।८।

शेरः- दुलारे प्यारे सियराम के हैं जे ख़्याल हरदम जमाये रहेते।
कहैं यह अंधे गरभ न झूलैं निज धाम उनको बिठाये रहेते।
कैद से फुरसत मिली जब गर्भ का रिन चुक गया।
अंधे कहैं सुनि गुनि भजौ आना व जाना रुक गया।
न तुम हममें न हम तुममें, तो तुम हमसे कहौगे क्या।
कहैं अंधे बिना सुमिरन के तन मन से लहौगे क्या।६।

पदः- सतगुरु बचन का लै तिरसूल। मन को मारि करो अनुकूल।।
तब नहिं होवै यह प्रतिकूल। राम नाम को कभी न भूल।।
किसी जीव से करो न तूल। सुर मुनि तुम पर फेंकैं फूल।।
चारि दिनों की है यह भूल। अंधे कहैं नाम सुख मूल।८।

दोहाः- बिन धीरज के भटकते, नर नारी जग माहिं।
अंधे कह धीरज धरो, सब पदार्थ घट माहिं।।

पदः- सतगुरु बचन कि लै किरपान, चोरन काटि करौ खरिहान।
तब मन आपै होहि सुजान, संगै लै सुमिरौ भगवान।
जब जमि जावै भक्तौं ध्यान, तब खुलि जावैं आंखी कान।
अंधे कहैं भयो कल्यान, तन तजि निज पुर करौ पयान।४।

दोहाः- जैसे पय उफ़नात है, छिरकि देहु कछु नीर।
या अग्नी से लो हटा, आपै धरिहै धीर।।
वैसे मन के बेग को, रोकै सो गंभीर।
अंधे कह सो धन्य है, हरै पराई पीर।।
अंधे कहैं यह युक्ति है, रहै अगिनि के तीर।
ना जारे न जरन दे, होय भक्त सो बीर।।
मन का सारा खेल है मन है मरकट कीर।
अंधे कहैं मन रोकिये, सबै पदारथ तीर।४।

पदः- सब कछु राम नाम के भीतर।
सतगुरु से जप की बिधि जानो मनै बनायो पीतर।
लोहे की तब स्वान होति है, साफ़ हो बाहर भीतर।
जैसे पढ़ि सुनि कंठ लिह्यो करि, बोलत जैसे तीतर।
अन्त समय यम तन सब कूटैं, मारि के कर दें चीथर।
अँधे कहैं नर्क परि रोवो, बहै आँसु संग चीपर।६।
शब्दार्थः स्वान = सुवर्ण

पदः- कुड़की राम नाम संग लावै।
सतगुरु से जप भेद जानि कै, निश्चय नेह लगावै।
सारे चोरन को कसि बांधे, तन से दूरि पठावै।
धुनि परकास दशा लै होवै, करम की रेख मिटावै।४।

सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि, सन्मुख में छबि छावैं।
सुर मुनि के संग बैठक होवै, हरि यश सुनै सुनावैं।
जियते में सब करतल करि ले, बिजय की ढोल बजावै।
अंधे कहैं अन्त तन तजि कै, चढ़ि बिमान घर जावै।८।

दोहाः- राम नाम को जानि ले, पेंशन वाकी ठीक।
हर दम वा को मिलत है, परे न कबहूँ लीक।।

पदः- लीजै राम नाम का फंड।
सतगुरु करि जपि की बिधि जानो, छूटै गर्भ का दण्ड।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि, राजत अद्‌भुत खण्ड।
सुर मुनि दिब्य देंय नित भोजन, ढोरैं मुर्छल झंड।
अंधे कहैं जे सुमिरत नाहीं, ते होवें बरबंड।
मौका परे काम नहिं देवे, जैसे गीला कंड।६।

पदः- कह्यो सतगुरु जौन हम से, वही हम कह रहे तुमसे।
करै झगड़ा जो कोइ तुमसे, लड़ो मत तुम कभी उनसे।
करो खातिर खुशी मन से, होय वह शान्ति तब गम से।३।

दोहाः- हरि सुमिरन जे नहि करैं, हबड़ी के संग चोर।
रबड़ी मल की लिहे कर मुख में देवै घोर।
अन्त समै जमदूत आ गबड़ी खेलैं तोर।
चमड़ी से कर दें विलग ऐसे है बरजोर।
दमड़ी तक नहिं नाम की, पीटैं करि करि सोर।
अंधे कह फिरि नर्क में जाय के देवैं बोर।६।

पदः- सतगुरु ढिग नाम का तार हो। लै सुमिरौ तौ सुखसार हो।।
सन्मुख में नन्द कुमार हो। सब में जो सब से न्यार हो।।
भक्तन संग करता प्यार हो। अधमन को देता तार हो।।
सुर मुनि करते जयकार हो। सब दिसि वाकी बलिहार हो।८।

सरदारों में सरदार हो। ज़रदारों में ज़रदार हो।
करतारों में करतार हो। सुखसारों में सुखसार हो।
निर्गुण औ निर्विकार हो। भक्ती करती साकार हो।
युक्ती मुक्ती का कार हो। नाचै छम छम चमकार हो।१६।

बाजैं घुंघरू झनकार हो। बाजन की क्या गुमकार हो।
मुरली की तान सँभार हो। कूकैं सब जग मतवार हो।
अंधे के प्राण अधार हो। नित करत संग खेलवार हो।
दीनन को सदा सुतार हो। वरना वह अगम अपार हो।२४।

दोहाः- मन ही से सब कछु बनै, या बिन बिगड़त जाय।
अंधे कहैं हम जा रहे, सीता मढ़ी सोहाय।।

पदः- भक्तौं आवै जाय सो माया।
चौरासी का चक्कर जब तक गर्भ बकाया।
सतगुरु करो भजन विधि जानो सोधन होवै काया।
सारे चोर सांति ह्वै बैठे मन उनसे हरशाया।
नाम के संग रंगै फिरि ढंग से मुंद मंगल दरसाया।५।

अमृत पियो सुनौ घट बाजा मधुर मधुर चटकाया।
सुर मुनि मिलै उछंग उठावैं जय जय कहि गुन गाया।
नागिनि जागि लोक चौदह में सुख से तुम्है घुमाया।
षट चक्कर तब चलै हर समै सातौ कमल फुलाया।
अद्‌भुद महक स्वरन से जारी रोम रोम पुलकाया।१०।

कंठ रुंधि जाय बोल न फूटें नैन नीर झरि लाया।
हालै शीश बदन थर्रावै पलक भांजि नहि पाया।
लै परकास नाम धुनि जारी हर सै से भन्नाया।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सनमुख में छवि छाया।
तुरियातीत दशा यह जानो सहज समाधि कहायो।
अंधे कहै अंत साकेतै चढ़ि सिंहासन धाया।१६।

पदः- देखत सुनत है आत्मा, कोइ कहै आंखी कान।
अंधे कह सतगुरु बिना, छूटत नहिं अज्ञान।।
आपै बने हैं आत्मा, आपै सब में जान।
अंधे कह सतगुरु बचन, यह वेदान्त क ज्ञान।।
जहां से वेद का अन्त है, ताहि कहैं वेदान्त।
अंधे कह सतगुरु कह्यो, यही सही सिद्धान्त।३।

समुझाये समुझत नहीं, ऐसे खोटे कर्म।
माया के परपंच में, जकड़े सब बे मर्म।।
या से अपनी ही धुनै, सदा रहत है गर्म।
अंधे कह सतगुरु बिना, मिलै न नाम का मर्म।।
हरि सुमिरै मन बच करम, आपै होवै नर्म।
अँधे कह डंडा गहै, दोनों दाया धर्म।६।

दोहाः- तोड़ा थैली बहुत हैं, तप धन की तब पास।
अंधे कहैं सतगुरु बिना, मिलत न फिरौ उदास।।
जैसे बीजा बन्द है, वा में पेड़ कपास।
अंधे कह बोये बिना, जामें कैसे खास।।
वैसे बिन कर्तव्य के, हब्य मिले नहिं खान।
अंधे कह सतगुरु कह्यो, सब से बड़ी प्रमान।३।

चौपाईः- देवासुर संग्राम जो ठाना। महाभार्थ तन में लखि जाना।
सोरह सहस दैत्य बलवाना। घेरे हैं सुर मुनि को थाना।
सब माया करने में दाना। मरैं नाम का फेरैं बाना।
जिन सतगुरु करि के जप ठाना। ते बनि बैठि गये मरदाना।
शान्ति दीनता में जो साना। अंधे कहैं सदा हर्षाना।
ध्यान प्रकास धुनी लै जाना। सन्मुख राम सिया छबि छाना।६।

पदः- लीजै राम नाम का पास।
सतगुरु से जप भेद जान लो, छोड़ो जग की आस।
ध्यान धुनी परकास दसा लै, कर्म दोउ नास।
अनहद सुनौ अमी रस चाखौ, बरसत बारह मास।
नागिन जगै चक्र सब घूमैं, कमलन होय बिकास।५।

सुर मुनि आय आय नित भेटैं बैठें चहुँ दिसि गांस।
जै जै कार करैं दे तारी कहैं भयो हरि दास।
षट झाँकी की शोभा बाँकी हर दम सन्मुख भास।
रवि ससि तारे वहां नहीं हैं ना वहँ बारि बतास।
अंधे कहैं देस वह ऐसा अगणित भानु प्रकास।१०।

पदः- ततेरे बाजी को छोड़ करके ईमान अपना मुसल्लम करिये।
तभी तो मुरशिद की होगी किरपा बतावैं जप तो उसी में भरिये।
न आना जाना मिलै ठिकाना धुनि नूर लै रूप सन्मुख में ठरिये।
अंधे कहैं कछु रहा न बाकी इसी तरह चलि जियति में तरिये।४।

पदः- सब में राम नाम परधान।
सतगुरु करि जप भेद जानि के बैठि लगाओ ध्यान।

हर शै से तब धुनि हो जारी को कर सकै बखान।
तेज समाधि रूप षट दरसै सुर मुनि दें बरदान।४।

जो चाहो सो करतल करि लो या में कोस महान।
अंत समै में नाम कढ़ै मुख या परि जावै कान।
सीधे वै हरि पुर को जावैं बैठि के दिब्य बिमान।
अंधे कहैं भागि जांय जम गण ऐसा है बलवान।८।

दोहाः- राम कृष्ण अवतार लै सतगुरु सेवा कीन।
उनसे को ह्वै है बड़ो जिनके विश्व-अधीन।।
कुल की रीति दिखाइगै कैसे बनि के दीन।
अंधे कह पढ़ि सुनि गुनै ते जानो परवीन।२।

पदः- मौत औ भगवान को जे जन भुलाये घूमते।
आखिर कहां को जांयगे अब ही तो मद में झूमते।
जमराज आ कर के गहैं लातन औ गूमन गूमते।
मित्र औ परिवार नातेदार देखैं धूमते।
आँसू गिरैं रोवैं सभी बोलैं नहीं मुख चूमते।
अंधे कहैं मरते लखैं तब बसन भूषन तूमते।६।

पदः- राम श्याम नारायण ईश्वर पार ब्रह्म परमात्मा स्वामी।
अजर अमर सर्वत्र बिराजत शक्तिन सहित नमामी।
को दैखै को कहै सुनै को आप कृपानिधि अन्तरजामी।
अलख निरंजन निराकार अविकार अगोचर स्वामी।४।

उत्पति पालन परलय करतल तव समान को नामी।
सब सुर मुनि नित प्रित हैं ध्यावत जै जै जै बल धामी।
आरति होय अधम जस भक्तौं पापन करते ख़ामी।
अन्धा सुत यह विनय करै प्रभु आपै को अनुगामी।८।

पदः- हरवा राम नाम का कीजै दरबा खुलै पहुँचि घर जाउ।
सतगुरु से जप भेद जान के चोरन करबि बहाउ।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रूप सामने छाउ।
अमृत पियो सुनो घट बाजा सुर मुनि गहि उर लाउ।
नागिनि जगै चक्र षट बेधैं सातों कमल खिलाउ।

अंधे कहैं चेतिये भक्तों मिलै न ऐसा दाँउ।६।

(शब्दार्थः करबि = काटकर)

पदः- कजरीः मुरली मधुर मधुर क्या बाजै झूलैं जुगुल रूप सरकार।
मन्द हंसनि क्या चितवति बांकी जीवन प्राण अधार।
छबि सिंगार छटा को बरनै फणपति शारद हार।
सुर मुनि शक्ती सबै झुलावैं बोलैं जै जै कार।
ब्रज के कोई जानि न पावै आधी राति मंझार।५।

सबन सोवाय देत करुना निधि जिन यह सृष्टि पसार।
दुइ जस बजैं होंय सब अन्तर नित प्रति का यहकार।
दिब्य दृष्टि जाको प्रभु देवैं सो पावै दीदार।
अंधे कहैं चेति नर नारी सतगुरु करि हो पार।
यह नर देह अमोल मिली है इसी से हो निस्तार।१०।

पदः- हरि सुमिरन का मजा लै ले मनुवां।
सतगुरु से जप भेद जान कर घट भीतर घुस छनुआ।
ध्यान धुनी परकाश समाधी सन्मुख नन्द ललनुआ।
अंधे कहैं अन्त निज पुर हो छूटै गर्भ झुलनुआ।४।

पदः- मन मोहन से करौ पहिचान सदा तन ना रहिहै।
सतगुरु से सुमिरन बिधि लेकर जियति लेव सब जान। सदा तन०।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि निज कुल की कुल कान। सदा तन०।
अंधे कहैं अन्त निज पुर हो सुर मुनि की यह बानि। सदा तन०।४।

ठुमरीः- श्री कृष्ण चन्द सुख कन्द संग, श्री राधे प्यारी झूलैं।
सब गोपी ग्वाल मिलि देत ढार, छिन छिन में बोलैं जय जय कार
तन मन छबि लखि फूलैं।
है बिमल प्रीति गे जियति जीत किमि नाम रूप को भूलैं।
अंधे कहैं बृज के जीव जौन तन तजि के पहुँचे हरि के भौन
छूटी भव जाल के शूलैं।४।

दोहाः- गान में बैजू बावरे, तान सेन सरनाम।
सुर मुनि सब के दर्श भे, अन्त गये हरि धाम।
देव गान बैकुण्ठ में जाय के देय बिठाय।
बुरा गान अन्धे कहैं नरक को देय पठाय।४।

शेरः- ध्यान तिरगुण के परे है राम नाम का।
अन्धे कहैं मारग मिलत साकेत धाम का।।

पदः- मन सतगुरु बचन पै लाये, ते राम नाम धन पाये।
परकाश ध्यान लय धाये, बिधि लेख को धोय बहाये।
षट रूप सामने छाये, लखि मन्द मन्द मुसकाये।
अनहद सुनि अमृत खाये, सुर मुनि पग सीस नवाये।४।

नागिनि औ चक्र जगाये, सब कमलन उलट खिलाये।
तन छोड़ि वतन को धाये, अन्धे कह गर्भ न आये।
जे समुझत नहिं क्या गाये, ते फिरत जगत मुँह बाये।७।

पदः- सतगुरु से नाता राखौ, तब नाम रूप रस चाखौ।
कटु बैन सुनौ मत माखौ, हरि सुमिरौ नेक न भाखौ।
तब द्वैत धरौ गहि ताखौ, खुलि जांय कान औ आँखौ।
गहि दया धरम की साखौ, अन्धे कह गर्भ न काँखौ।४।

पदः- चहुँ दिसि उमड़ि के घिरने लागे, कैसे बादल काले काले,
सावन भादों की बरसात कौंधा लपक नैन चौंध्यात
बहते सरिता ताल औ नाले।
बोलत झींगुर दादुरि मोर, कैसा उठत सुहावन शोर,
मानहु मन को संग में ढाले।
सतगुरु करो होय कल्यान, अन्धे कहैं बचन लो मान,
जियतै नर तन का फल पाले।४।

शेरः- दुनियां से मेल करत घूमत, भगवान से मेल नहीं करते।
यह मेल तुम्हें कर देय फेल, अन्धे कहैं चेत नहीं करते।।

पदः- सब खेल दिमाग़ से जारी हो तुम मन को जहां लगावोगे।
सतगुरु से जप बिधि जानि जुटो चक्कर से ऊपर जावोगे।
है नदी एक राहैं अनेक पहुँचे बिन किमि लखि पावोगे।
यह कबीर दास जी की बानी जानी जिन तिन में आवोगे।
धुनि ध्यान प्रकास समाधी हो बिधि लेख की रेख मिटावोगे।
अनहद सुनके अमृत चखिये सुर मुनि के संग गुन गावोगे।६।

नागिनि जागै षट चक्र चलैं सातों फिर कमल खिलावोगे।
क्या उड़ैं तरंगें बिबिधि भांति उस सुख में बोलि न पावोगे।
हो कण्ठ बन्द रोमांच होत नैनन से नीर बहावोगे।
सिय राम की झाँकी क्या बाँकी निज सन्मुख में छबि छावोगे।
यह सहज समाधी है भक्तों पितु मातु के लाल कहावोगे।
तन त्यागि अवध में पहुँचि जाव अंधे कहैं गर्भ न धावोगे।१२।

पदः- झूला झूलत जगत बिहारी मुरली बाजत प्यारी जी।
बाम भाग में राधे सोहैं कर को गले में डारी जी।
सखा सखी सब ढारे देवैं निज निज पारी जी।
सुर मुनि नभ ते जै जै बोलैं दे कर तारी जी।
सुवन बहावैं अस्तुति गावैं छबि उर धारी जी।
बरनि सकै सिंगार छटा को रसना हारी जी।६।

धनि बृज बासी सब सुख रासी नित्त निहारी जी।
सतगुरु करो भजन बिधि जानो बढ़ौ अगारी जी।
नाम में मन जब पागि जाय तब चढ़ो अटारी जी।
अमर नगर के पास जाव चट खुलें केंवारी जी।
महा प्रकाश बास तहँ भक्तन आनन्द भारी जी।
अंधे कहैं छूटिगा आना गर्भ मंझारी जी।१२।

पदः- पाप कमाई कीन अघाई मरन के दिन रहे थोरे जी।
गीता मानस बैठि पढ़त हैं मानहु जन्म के भोरे जी।
आइ दीनता तन मन व्यापी पाप ताप गहि बोरे जी।
अन्धे कहैं धन्य हरि लीला चट बन्धन ते छोरे जी।४।

पदः- सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो सन्मुख हर दम त्रिभुवन सांई।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि कर्म शुभाशुभ देत जलाई।
अमृत पियो सुनो घट अनहद सुर मुनि आय मिलें बरियाई।
नागिन जगै चक्र षट नाचैं सातों कमल खिलैं फर्राई।
गमकैं उड़ैं मस्त हो तन मन क्या बरनों मुख बोल न आई।
अंधे कहैं अन्त निजपुर हो प्रभु उठि कर गहि लेंय बिठाई।६।

पदः- मम कुल राम भजन रोजिगार।
सतगुरु करि जप भेद जान लो आलस देव निकार।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि हर शै से रंकार।
खुलैं केंवारी चढ़ौ अटारी देखो अजब बहार।४।

सन्मुख में षट रूप बिराजै अद्‌भुत छबि सिंगार।
सुर मुनि आय आय कर भेटैं बोलैं जै जै कार।
ऐसा भजन जियति करि लेवे दोनों दिसि बलिहार।
अन्धे कहैं अन्त निजपुर हो छूटै गर्भ क भार।८।

पदः- मम कुल राम भजन का पेसा।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो छूटै चोरन रैसा।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख रहैं हमेशा।
राम नाम की धुनि खुलि जावै सुनिये रेसा रेसा।
जियतै में तय करिये भक्तों बीती जात है बैसा।
अंधे कहैं छोड़ि तन चलि के पहुँचि जाव निज देसा।६।

पदः- राखो ख्याल नाम धुनि धन पर।
तप धन सम कोइ और नहीं धन सतगुरु बचन बैठि गयो मन पर।
नेम टेम से साधन करना संयम ठीक रहे तन मन पर।
यह सिद्धान्त अटल है भक्तों जियतै बिजय पत्र लो रन पर।४।

सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख रहैं लखो कण कण पर।
सब लोकन से तार आइहै नागा नीक सुनो छन छन पर।
अन्धे कहैं प्रेम एक रस भा माया मृत्यु काल यम गण पर।
अन्त छोड़ि तन चढ़ि सिंहासन पहुँचौ जाय वतन पर।८।

पदः- अविनाशी स्वराज्य देते सरकार।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो जियतै हो मतवार।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय कर्म करै दोउ छार।
अमृत पिओ सुनो घट अनहद सुर मुनि करैं नित प्यार।४।

नागिनि जगै चक्र षट बेधैं सातौं कमल फुलार।
राम सिया हर दम रहैं सन्मुख सबमें सबसे न्यार।

जिनका यह सब खेल पसारा अकथ अलेख अपार।
अन्धे कहैं मृत्यु का भक्तों, छूटि गयो अधिकार।८।

पदः- खामोश रहौ खामोशी से खामोश लखौ खामोश खड़ा।
अद्‌भुद सिंगार छटा छबि है मन मोह लीन दिल बीच गड़ा।
मुरली धरि अधर पै कूकि देत नाचै छम छम क्या नैन लड़ा।
अन्धे कहैं मुरशिद बैन गहो फाटै परदा जो द्वैत पड़ा।४।

दोहाः- द्वैत बना जब तक रहै, खुलैं न आँखी कान।
अन्धे कह सतगुरु बचन ग्यान ध्यान विज्ञान।।

दोहाः- सतगुरु करो भागौ तमा, शिव रूप है तव आतमा।
अंधे कहैं परमातमा सब में लखौ दिन रात मा।४।

पदः- पता लो सतगुरु मिला लो मन को बना लो निज को अन्धा पुकारी।
भगा लो चोरन बचा लो तप धन बुला लो सुर मुनि मिलैं जुहारी।
जगा लो नागिनि चला लो चक्कर खिला लो कमलन सुगंध जारी।
लड़ा लो नैनां भिड़ा लो सीने बिठा लो दिल में रहस बिहारी।
हंसा लो प्रेमिन बता लो नेमिन सुना लो टेमिन समय निहारी।
कटा लो टीकट हटा लो खिड़की बसा लो जीवहिं भवन मंझारी।६।

~~अ र र र मैय्या भले कबीर। भला सुर मुनि औ सबकी कहैं सही।~~

दोहाः- राम भजन में मन रम्यो अंत सकै नहिं जाय।
अंधे कह धुनि नाम लै तेज रूप दरसाय।

पदः- हमैं मन अपनी मति दे दो सतगुरु करिके आवैं हम।
नाम धुनि तेज लै पाकर रूप सन्मुख में छावैं हम।
सुनैं अनहद पियैं अमृत देव मुनि संग बतलावैं हम।
जगै नागिनि चलैं चक्कर कमल सातौं खिलावैं हम।४।

अन्त तन त्यागि निजपुर को सिंहासन चढ़ि के जावैं हम।
सभी तीरथ करैं मज्जन सभी लोकन मंझावैं हम।
अरध औ उर्ध में झूला पड़ा हंसि हंसि झुलावैं हम।
कहैं अन्धे गरभ रिन को जियत ही में चुकावैं हम।८।

पदः- बिसरत पल एक नाहिं सतगुरु अविनाशी।
जिनकी किरपा से भया अन्धरा सुख राशी।
ध्यान धुनी लय प्रकाश सन्मुख षट रूप खास कटि गई भव फांसी।
अनहद की सुनो तान, अमृत का करो पान,
सुर मुनि सब मिलैं नित्य चारों दिसि गाँसी।
नागिनि औ चक्र कमल जागैं ह्वै जाँय बिमल गमक उड़ै खासी।
या से नर नारि चेति, सतगुरु से करो हेत, जियतै सब भासी।६।

दोहाः- घट घट के बासी मिलैं सुमिरौ तन मन लाय।
अन्धे कह सतगुरु बचन अति ही सुलभ उपाय।।

पदः- अन्धे कहैं जग सुख वृथा निज कुल में सुमिरन की प्रथा।
सतगुरु से जप बिधि जानि के काया को जिसने है मथा।
वह देखता सुनता मगन सुर मुनि कहैं हरि की कथा।
जुटि जाव भक्तों प्रेम से जिसको जहां तक हो तथा।
कल्यान का यह मार्ग है युग वेद कहते हैं जथा।
जिसने न जाना जियति में वह घूमता जग में नथा।६।

पदः- अन्धे कहैं क्या लै आये तुम क्या यहां कमाने आये तुम।
क्या यहां पढ़ाने आये तुम क्या यहां सुनाने आये तुम।
क्या यहां लिखाने आये तुम क्या यहां सिखाने आये तुम।
क्या यहां लखाने आये तुम क्या यहां भषाने आये तुम।४।

क्या यहां हटाने आये तुम क्या यहां लुटाने आये तुम।
क्या यहां खिलाने आये तुम क्या यहां पिलाने आये तुम।
क्या यहां छिपाने आये तुम क्या यहां चेताने आये तुम।
क्या यहां घटाने आये तुम क्या यहां बढ़ाने आये तुम।८।

पदः- नाम कि धुनि परकास लै रूप भयो जब संग।
अंधे कह उस भक्त को हर दम ही हर गंग।।

पदः- राम नाम को सुमिरौ गिल्लो।
डारन डारन घूमत फिरती पकड़ लेय बिल्लो।
सतगुरु से करि मेल जाव जुटि बैठौ छोड़ि के हिल्लो।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रूप सामने खिल्लो।४।

अमृत पियौ सुनौ घट अनहद सुर मुनि के उर मिल्लो।
नागिनि चक्र कमल सब जागैं कर्म शुभाशुभ किल्लो।
तुरियातीत दशा भई जियतै कौन करै अब ढिल्लो।
अंधे कहैं अन्त लो निज पुर सब से ऊँचा टिल्लो।८।

दोहाः- राम नाम को खाय के लेय चाय सो पास।
अंधे कह भव सीत को कर दे जियतै नास।
निज तन मन को एकल करि राम नाम में देय।
अंधे कह संकल्प भा दोनों दिसि सुख लेय।४।

दोहाः- अनुभव की यह बात है सतगुरु शरनि ते जान।
अंधे कह ते मानिहैं जिन के आंखी कान।।

दोहाः- राम नाम की ध्वनि सुनै हर सै से दिन रात।
उत्रायन तब भानु हों अंधे कह यह बात।।

दोहाः- रं रं रं रं होत है एक तार भन्नात।
अंधे कह जे नारि नर सुनै जियति तरि जात।

दोहाः- मन इन्द्री बस में भई वाको भा गोदान।
अंधे कह तन त्यागि कै निजपुर कीन पयान।।

दोहाः- राम नाम में तुलि गयो तुला दान भा जान।
अंधे कह तन छोड़ि कै निजपुर कीन पयान।।

दोहाः- दादुर की चरबी गरम गरम श्वान का मास।
अंधे कह जे खात हैं सीत न आवै पास।।

चौपाईः- सीत न आवै पास चलै सब बदन पसीना।
पंखा से लें पौन पूस औ माह महीना।
निसि में खूब नहांय हंसै औ तानैं सीना।
अंधे कह नर नारि कहैं को इसुर बसि कीन्हा।४।

दोहाः- कितने बिष सेवन करैं सीत न अंग समाय।
नर नारी देखैं कहैं इनमें है सिध्दाय।।

दोहाः- कितने साधन लीन करि सीत घाम नहिं लाग।
अंधे कह हरि भजन बिन तन से मन रहै भाग।।

दोहाः- कितने अंतर ध्यान विधि सिखि घूमत संसार।
अंधे कह सुमिरन बिना पावत नहिं सुखसार।।

दोहाः- कितने वायू पियति हैं जल भोजन कछु नाहिं।
अंधे कह सुमिरन बिना बार बार चकराहिं।।

दोहाः- नाना खेल दिखाय के ठगत नहीं ठगि जांहिं।
अंधे कह जन्मै मरैं चौरासी के माहिं।।

पदः- राम नाम सुमिरौ नर नारी।
सतगुरु से सब भेद जानि कै चोरन लेहु संभारी।
युग औ लोक वेद हैं जपते सुर मुनि सक्ती झारी।
लै परकास धुनी हो हर दम हर शै से रंकारी।
सब से बिलग मिली है सब में सब से लघु औ भारी।५।

सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सब के पितु महतारी।
सन्मुख रहैं न अन्तर होवैं मन्द हंसनि अति प्यारी।
छबि सिंगार छटा की शोभा है मुद मंगल कारी।
जियतै में जो तै करि लेवै सो बिधि लेख को टारी।
अंधे कहैं अन्त साकेत में चलि बैठे चुप मारी।१०।

पाप करम करते फिरत कहत बड़ी है मौज।
अंधे कह तन छोड़ि कै पड़ै नर्क के हौज।१।

औरेन को हैं देत चुनौती पकड़ौ हमैं तुम्है जानी।
हम को झूठै पाप लगावत बोलि रह्यौ अनुचित बानी।
ऐसी बातैं करत अधरमी उनकी मन मति बौरानी।
अंधे कहैं अन्त जम पीटैं जाय नर्क में दें सानी।४।

खिल्ली करते और की आप पाप के रूप।
अंधे कह तन त्यागि कै जाय परैं भव कूप।।
चोरी करि लै आवते औरेन की जो चीज़।
अंधे कह चलि नर्क में रोवैं दोउ कर मींज।२।

डाकू बनि के डाका मारैं। बहु जीवन के प्राण निकारैं।।
अबलन की आबरु बिगाड़ैं। रोकैं जे तब उन्हैं पछारैं।।
पाप करम में कभी न हारैं। नेकौ दया नहीं उर धारैं।।
अन्त त्यागि तन नर्क सिधारैं। अन्धे कह तब कौन उबारैं।८।

अहेला खेलती माया कहैं अन्धे घर मग बन में।
करो सतगुरु भजन जानो न लागै दाग तप धन में।।
करो सतगुरु भजौ हरि को मुस्तकिल जियति हो जग में।
कहैं अंधे तजौ तन जब तो चलि साकेत सुख पावो।२।

पदः- मगन वै भक्त हर दम हैं जे साधन कर लिया पहले।
जानि मारग को सतगुरु से चोर सब कस लिया पहले।
सुना अनहद मधुर घट में अमी रस चख लिया पहले।
देव मुनि संग हरि चरचा सुनी आशिष लिया पहले।४।

जगी नागिनि चले चक्कर कमल सब तै किया पहले।
नाम धुनि तेज लै जाकर करम दोउ हत किया पहले।
रूप षट सामने रहते प्रेम में बस किया पहले।
कहैं अंधे जियत ही में वतन निज लख लिया पहले।८।

दोहाः- करुई कटिया सेरि औ क्वंड़रा खेलौ नाम।
अंधे कह सतगुरु करौ चोर सकौ तब थाम।।

दोहाः- सतगुरु करौ मारग मिलै उस पर कदम तो रक्खौ।।
अंधे कहैं देखौ सुनौ अनुपम अमी को चक्खौ।।

दोहाः- किसी के खुलते श्रवन हैं किसी के खुलते नैन।
नैन श्रवन खुलि जाँय जब अंधे कह तब चैन।।

चौबोलाः- अंधे कह तब चैन नारि नर मुक्त भक्त हैं।
नाना अनुभव लखै सुनै हर वक्त मस्त हैं।
सुर मुनि आवैं मिलन बिँहसि फिर गहत दस्त हैं।
अन्त जाँय निज धाम जक्त नहिं करत गस्त हैं।४।

पदः- न पल भर कल बिना देखै भक्त प्रेमी जो हरि का है।
कहैं अंधे वही सच्चा दुलारा प्रभु का लड़िका है।

देव मुनि नित करैं जै जै धन्य जो उसकी सरिका है।
अन्त तन त्यागि निज पुर ले वहाँ सब की कदरि का है।४।

दोहाः- मैन पैन हरि भजन में वाके सुनिये बैन।
अंधे कह सतगुरु बचन तब होवै जिय चैन।
तब होवै जिय चैन लखौ षट रूप की झाँकी।
नाम कि धुनि परकास दसा लै कर्मन आँकी।
अंधे कह चुकि गई जियति ही गर्भ कि बाकी।
अन्त त्यागि तन जाय गोद बैठौ पितु मां की।५।

दोहाः- प्रेम भया एक तार जब तब जानो है खैर।
अंधे कह हर दम रहौ निर्भय औ निर्बैर।।

दोहाः- भगत जाते उसी जाँ पर जहाँ सिय राम रजधानी।
किया सतगुरु मिला मारग हटी चोरन परेशानी।
कहैं साकेत पुर उसको महा परकास सुख खानी।
ध्यान परकास लै जाना धुनी रंकार भन्नानी।४।

जुगुल सरकार सन्मुख में दृष्टि से दृष्टि है तानी।
मन्द मुशकानि को बरनै जौन देखै सोई जानी।
देव मुनि कर रहै जै जै कर्म दोनो भये फ़ानी।
सुरति औ शब्द का साधन कहैं अंधे बड़ा छानी।८।

दोहाः- अंधे कह सतगुरु सरनि निर्मल हो मन धोय।
मानी जानी जौन कोइ ध्यानी ज्ञानी होय।।
दानी पानी सम रहै हानी कानी सोय।
अग्यानी मानी नहीं तानी छानी जोय।२।

पदः- राम भजन बिन आठ़ा बाठा।
फटिगा दूध चुरत अगिनी पर ठीक बंधत नहिं आँठा।
वाको मथे ते भला बतावो अच्छा किमि हो माठा।
बंधन बंधत नहीं है नेकौ जैसे धुनिगा राठा।४।

सतगुरु करै भेद सब जानै भागैं चोरन ठाठा।
तब मन संग रंग पै आवै बना फिरत है पाठा।

नाम कि धुनि परकास समाधि रूप सामने गांठा।
अंधे कहैं अन्त निजपुर हो आना जाना भाठा।८।

पदः- सतगुरु राम नाम हैं देते जपने वाले थोरे जी।
हर शै से धुनि ररंकार हो सुनने वाले थोरे जी।
राम सिया सर्वत्र बिराजत लखने वाले थोरे जी।
अंधे कहैं अन्त साकेतै चलने वाले थोरे जी।४।

दोहाः- राम नाम श्रुति सार है सतगुरु से लो जान।
अंधे कह जियतै तरौ खुलि जाँय आँखी कान।।
राम नाम सुमिरत नहीं जमन कि डिटी लागी।
अंधे कह पछितावगे अन्त समै लें टांगि।।
राम नाम सुमिरत नहीं जम हैं पहरेदार।
अन्त समै अंधे कहैं डारैं नर्क मंझार।।
जम निगरानी करत हैं राम भजत जे नाहिं।
अंधे कह तन छूट जस बांधि नर्क लै जाहिं।।
कहरा गोरिन का सुनो नर्क में जम रहे गाय
अंधे कह बहु कष्ट दे जीव परे चिल्लाय।५।

पदः- जानौ राम नाम का पहरा।
सतगुरु से सब भेद लेव लै शांत करौ मन महरा।
ध्यान प्रकास समाधि धुनि हो रूप सामने पहरा।
नागिनि चक्र कमल सब जागैं उड़ैं स्वगंध के लहरा।
सुर मुनि मिलैं शीश कर फेरैं करि जै जैकार क हहरा।५।
अनहद बजै अमी रस पीजैं गगन भरा है डहरा।
अंधे कहैं धन्य सो प्रानी जो इस मारग ठहरा।
जियतै मुक्त भक्त बनि बैठा दोनो दिसि जस छहरा।
अन्त छोड़ि तन अवध में पहुँचा छूटि गया जग कहरा।
सुलभ तरीका बड़ा दीन हित अभिमानी को गहरा।१०।

पदः- कायम मुकाम तब हो सतगुरु से भजन सीखौ।
अंधे कहैं न मानौ चलि कै नरक मे चीखौ।।

पदः- छेना टिपणी कुँडली जन्म पत्र तेहि ठीक।
अंधे कह हरि भजन रंग जाको लागै नीक।।

पदः- वेदन की बानी पढ़त कहत पढ़त हम वेद।
वेद तो सरगुण रूप हैं अंधे कह यह भेद।।
जे जानहिं ते मानिहैं नेक करैं नहिं खेद।
अंधे कह हनुमान हर हमैं बतायो भेद।२।

पदः- राम नाम है हा हा हूती। वाके अन्दर सकल विभूती।
अंधे कहैं अकथ मजबूती। सुर मुनि कोई सकत न कूती।३।

पदः- राखत राम भक्त की आरि। अंधे कहैं बिहंसि चुचकारि।।
तन मन प्रेम में दीन्ह्यो बारि। सुर मुनि सब करते बलिहारि।४।

पदः- चोर तन में बसे कट्टर जीव को तंग करते हैं।
संग उनके मिला मन है भजन में विघ्न डरते हैं।
सुकृत सब लूट लें छिन में वो अपना ढंग पसरते हैं।
करै सतगुरु भजन जानै कहैं अंधे तब टरते हैं।४।

पदः- जम मारैं गरियावैं जीवन फेरि चिढ़ावैं टिलि लिली लिली लिली।
सतगुरु किहे न हरि को सुमिरे भोगौ कलपन टि०।
नर तन पाय नर्क को आयो मेरे दुशमन टि०।
अंधे कहैं भजन में लागौ सारा दोष देत सब कर्मन टि०।४।

पदः- जिनके खुले न आँखी कान। वै जग चक्कर में लपटान।
पांचौ चोर संग शैतान। हर दम करत रहत हैरान।
चहुँ दिशि ते गांसे अज्ञान। कहते कहां रहत भगवान।
हम कमाई करैं खान औ पान। झूठे लोग कथत हैं ज्ञान।
जौन बात मन में लें ठान। वैसे वापर राखत ध्यान।
अंधे कहैं तजैं जब प्रान। नर्क पड़ैं जँह कष्ट महान।६।

दोहाः- हरि के कालिज के बनो प्रोफेसर जपि नाम।
अंधे कह पेन्सन मिलै बसैं राम के धाम।।

शेरः- सुझाई दे सुनाई दे समाही हो पलै में जब।
कहैं अंधे बिदाई हो बधाई देंय सुर मुनि सब।।

पदः- सतगुरु करो कुल रीति ते अनरीति ते कबहूँ नहीं।
प्रभु रीझते हैं प्रीति ते बिपरीति ते कबहूँ नहीं।
दुष्ट हर दम पीटते तुम जीतते कबहूँ नहीं।
चोर पर धन झीटते पर छींकते कबहूँ नहीं।५।

भजन साधन सीखते वे हींचते कबहूँ नहीं।
नाम रंग में भीजते वे छीजते कबहूँ नहीं।
वंचित जे हरि दर भीख ते वै ठीकते कबहूँ नहीं।
पढ़ि सुनि के जे जन डीकते वै दीखते कबहूँ नहीं।
माते जे आलस नींद ते वे ठीक ते कबहूँ नहीं।
अंधे कहैं जे खीजते वै सीखते कबहूँ नहीं।११।

शेरः- अंधे कहैं परतीति ते बस में कियो मन मीत ते।
छूटे जगत की सीत ते तन तजि गये भे ठीक ते।।

दोहाः- सतगुरु बिन हिचकत फिरैं मिलै न घर की लीक।
अंधे कह दोउ दिसि घिना ज्यों खानी की पीक।।

चौबोलाः- ज्यों खानी की पीक जीव थूके से मरते।
पाप कमाते रोज नहीं ईश्वर से डरते।।
अन्त छोड़ि तन जाय नर्क रौ रौ में परते।
अंधे कहैं सुनाय भजन करते ते तरते।२।

पदः- अवध प्रभाव जान सोइ प्रानी। जब उर बसहिं राम धनु पानी।
सतगुरु से सुमिरन बिधि जानी। मन को नाम में देवै सानी।
ध्यान प्रकास दसा लै जानी। हर शै से धुनि नाम सुनानी।
कर्म रेख की मिटी निशानी। सन्मुख राम सिया महरानी।४।

मुक्त भक्त जियतै भा ज्ञानी। सुर मुनि कीरति कहत बखानी।
तुलसी दास ने गुप्त बखानी। रामायण सब सुख की खानी।
प्रेम से पाठ करै हो ध्यानी। अनुभव होंय न सकै बखानी।
अंधा क्या वरनै अज्ञानी। सतगुरु कह्यौ लीन मन मानी।८।

पदः- राम नाम जप की विधी सतगुरु से ले जान।
अंधे कह जियतै लखौ पावो पद निर्बान।।

प्रेम से अति ही सुलभ है, नेम टेम क्या चीज़।
अंधे कह सतगुरु कह्यो सब का मालिक बीज।२।

शेरः- छटा सिंगार छबि अनुपम राम सीता कि जिन देखी।
कहैं अंधे लखै एक टक भूलि गई शान औ शेखी।।

पदः- तन मन में भरी मुराही, वह दोनो दिसि ते वाही।
घर नर्क में यहाँ तो पाही, वहाँ देवै को न गवाही।
सतगुरु जब मिलैं सिपाही, तब जावै भाग तबाही।
अंधे कहैं बैन सराही, सियराम नाम की छाही।४।

दोहाः- सतगुरु की महिमा अगम कौन सकै बतलाय।
अंधे कह सुर मुनि कह्यो वेद शास्त्र गोहराय।।

पदः- सिया मातु मेरी। करो अब न देरी। भई है अबेरी। रहा मैं दहेरी।।
लखौ नैन फेरी। कटे पाप बेरी। गहै फिर न छेरी। उसे दो खदेरी।।
धुनी नाम केरी। सुनौं मैं घनेरी। सदा रूप षट सामने हो महेरी।।
तपौ धन कि ढेरी। धरों खूब गेरी। शरनि अंधा तेरी। हंसै दै के थेरी।८।

पदः- भजु मन नाम रामानंद।
जिनहिं सुमिरे पाप नासत मिटत गर्भ का फंद।
शिष्य द्वादस जो रहे हर समै परमानंद।
अंधे कहैं प्रभु सहित हमसे कह्यो करहु आनंद।४।

पदः- अंधे कह सुमिरन बिना पड़ी भंवर में नाव।
सतगुरु बिन भरमत फिरै चलै न एकौ दांव।।
अंधे कह सुमिरन बिना नाव डूबि मंझदार।
सतगुरु बिन बस नहिं चले केहि बिधि होवै पार।२।

पदः- सतगुरु करो सोते हो क्यों जागौ तो फल नर तन क लो।
धुनि नाम लै परकास सन्मुख रूप जीवन धन क लो।
सुर मुनि मिलैं अनहद सुनो अमृत गगन ते छन क लो।
नागिनि जगै चक्कर चलैं गमकैं खिले कमलन क लो।
मुक्ति भक्ती ज्ञान जियतै दीनता से बन क लो।
अंधे कहैं तन तजि चलो निजपुर सिंहासन मन क लो।६।

पदः- मंजन फल देखिये ततकाला। काक होहिं पिक बकहु मराला।
सतगुरु करि फेरो मन माला। सारे चोरन हटै वबाला।
लै परकास धुनी हो आला। सन्मुख श्री सिय दसरथ लाला।
सुर मुनि मिलैं बिहंसि कहैं हाला। चौरासी से भयो बहाला।
नागिनि चक्र कमल जगि जाला। महक से तन मन हो मतवाला।५।

अमृत पियो सुनो घट ताला। मधुर मधुर हर दम चट काला।
इस विधि मंजन करि नर बाला। कितने पहुँचि गये सुख साला।
काक से चातक होत विशाला। बक से होते सुघर मराला।
सदा एक रस राखै ख्याला। अंधे कहैं खुलै तब ताला।९।

पदः- श्री सतगुरु के चरनन पर लो। तन मन प्रेम से सुमिरन कर लो।।
लै परकास नाम धुनि जर लो। सन्मुख राम सिया को ठर लो।।
शांति दीन बनि जियतै तर लो। अंधे कहैं त्यागि तन घर लो।६।

पदः- सतगुरु के मकतब में पढ़ि के बनौ मास्टर जब पक्के।
लै परकास नाम धुनि होवै चोर न देवैं तब धक्के।
सुर मुनि मिलैं सुनो घट अनहद अमृत पियो खूब छक्के।
नागिनि जगै चलैं सब चक्कर कमल के बिकसैं फंक्के।४।

जियतै में तै करौ यहाँ तब बिधि के लिखे कटैं अंक्के।
सन्मुख राम सिया रहैं हर दम प्रेम में तुमरे तब टंक्के।
आवै तार तबक चौदह से देहु जवाब बिहंसि ठक्के।
अंधे कहैं अन्त निजपुर लो इस प्रकार से हो हक्के।८।

पदः- अल्ला तुमरे पास है, परदा द्वैत क लाग।
अंधे कह मुरशिद करो जियति जाव तब जाग।।
खुदा तुम्हरे पास हैं पल्ला खुदी क दीन।
अंधे कह मुरशिद करौ जियति लेव तब चीन्ह।।
लै परकास औ नाम धुनि सिया राम से मेल।
अंधे कह सतगुरु कह्यो लव सतसंग का खेल।।
भक्त में आई दीनता पाप भयो सब नास।
अंधे कह तन छोड़ि कै पायो निज पुर बास।४।

पदः- सतगुरु से सुमिरन जानि कै जो मन को नाम पै नो गया।
चोर सारे शांति भे सब पाप ताप को धो गया।
नाम धुनि परकास लै में जाय करके सो गया।
सिया राम की अद्भुद छटा हर वक्त सन्मुख हो गया।
सुर मुनि मिलैं जै जै करैं बोलें करम गति खो गया।
अंधे कहैं तन त्यागि कै साकेत दाखिल हो गया।६।

पदः- श्री सीता राम कहौ प्यारे। श्री राधे श्याम कहौ प्यारे।
श्री कमला बिष्णु कहौ प्यारे।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानौ मन से नाम महौ प्यारे।
अमृत पियौ सुनौ घट अनहद सुर मुनि चरन गहौ प्यारे।
नागिनि चक्र कमल सब जागैं गमकैं खूब लहौ प्यारे।४।
नाम कि धुनि परकास दसा लै कर्मन काटि बहौ प्यारे।
सन्मुख षट झाँकी छबि छावै हर दम मस्त रहौ प्यारे।
शांति दीनता से जग डोलौ कसनी पड़ै सहौ प्यारे।
अंधे कहैं अन्त निज पुर हो फेरि न गर्भ ढहौ प्यारे।८।
(शब्दार्थ: महौ = मथना)

दोहाः- जी दम जब तक जगत में राम भजन करि लेहु।
अंधे कह तन छोड़ि कै अचल धाम को लेहु।।
रसिया दोऊ झूलते ब्रज में आनन्द कन्द।
अंधे कह जो निरखते छूट गयो दुख द्वन्द।।
प्रीतम प्यारी झूलतीं ब्रज में सुःख महान।
अंधे कह जे लखि रहे उनके आँखी कान।।
भत्ता मिलता भक्त को सब लोकन में जाय।
भांति भांति पकवान फल हव्य खाय हर्षाय।।
महंगी वाके हित नहीं नाम रूप गयो पाय।
अंधे कह सुर मुनि सबै निसि दिन करैं बड़ाय।५।

पदः- चारौं नैना झरोखा बाँके।
षट दर्शन इन में हैं राजत सतगुरु शरनि ते ताके।
माया चोर शांत ह्वै बैठैं फेर न कबहूँ झाँके।

सुर मुनि मिलैं शीश कर फेरैं जै जै कार मनाके।
नाम कि धुनि परकास समाधि कर्म शुभाशुभ आँके।५।

बिमल बिमल अनहद घट बाजै अमृत रस को छाँके।
नागिनि उठै चक्र सब डोलैं कमलन के खिलैं फाँके।
हिय के खुले कपार के खुलिगे प्रेम भाव में पांके।
दिब्य दृष्टि या को हैं कहते युग श्रुति संत सुनाके।
अंधे कहैं अन्त साकेत में बनि बैठो पितु मां के।१०।

दोहाः- साधक श्रद्धावान हो वासे कहिये गाय।
अंधे कह विश्वास करि अमल करै बनि जाय।।

पदः- सब से बड़ा भजन का दर्जा।
सतगुरु करि सुमिरन में लागो समय करत क्यों हर्जा।
गर्भ में कौल कियो जो हरि से पटवौ वाको कर्जा।
नाम रूप परकास समाधी पाय जियत ही तरिजा।
अन्त त्यागि तन चढ़ि सिंहासन निर्भय अपने घर जा।
अन्धे कहैं भूल में पड़िकै राव से ह्वै गयो परजा।६।

दोहाः- सखरी वस्तु को खाइये मुख छाला पड़ि जाँय।
जो कुधान्य भक्षन करौ मन कुपंथ पर जाय।।

कजरीः- कीजै गर्भ कौल की सुधिया बुधिया काहे गई हेराय।।
वहाँ पै हरि से सुमिरन सखरे यहाँ पै दिहे भुलाय।।
अन्त समय जम नर्क में डारैं रोये नहीं सेराय।।
अन्धे कहैं भजौ सतगुरु करि आवागमन नसाय।४।

दोहाः- वंदगी से सिद्ध गति व जिन्दगी होवै सुफ़ल।
अन्धे कहैं नहिं गंदगी दोनो तरफ़ से हो बिफ़ल।।

पदः- सिया राम को भक्तौं तब हिलिहौ।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो मन को लै घट में पिलिहौ।
अमृत पियो सुनो क्या अनहद बिहंसि लिपटि सुर मुनि मिलि हौ।
अन्धे कहैं अन्त साकेतै चढ़ि सिंहासन पर चलिहौ।४।

पदः- विश्वास भाव जब होय अटल सो भक्त राम का कहवावै।
अन्धे कहैं भजन देखाऊ है तो चौरासी में चकरावै।।

पदः- जग बैर से खैर भई किसकी वाको परिणाम बुरा ही हुआ।
कानौं से सुना नैनों से लखा तन छोड़ि के नर्क ढुराही हुआ।
जग जन्म पाय निर्बैर रहै सो दोनो जहाँ में फुराही हुआ।
अन्धे कहैं ऐसा भक्त धन्य हरि भजन के प्रेम चुराही हुआ।४।

पदः- है शांति दीन इस तरफ़ में जो वह भक्त उस तरफ़ जाता है।
हर दम सियराम के पास रहै वा के धनि धनि पितु माता है।
प्रभु रंग रूप सो भा अनूप को बरनै शेश लजाता है।
अन्धे कहैं सतगुरु वाक्य सही बिरलै कोइ यह पद पाता है।४।

पदः- वेद शास्त्र उपनिषद संहिता औ पुरान पढ़ि सन्न न्हिं मारयो।
पंडित कहाँ भयो अब षंडित बिरथा मानुष का तन धारयो।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो आप तरो औरेन को तारयो।
अन्धे कहैं भयो मुद मंगल तन छूटै साकेत सिधारयो।४।

दोहाः- तूल किसी से मत करो सब में हैं भगवान।
अन्धे कह तन त्यागि कै हरि पुर करो पयान।।

चौबोलाः- हरि पुर करो पयान जहां है सुख अति भारी।
राम रूप सब भक्त बैठ वँह पर चुप मारी।।
सतगुरु करि लखि लेहु ध्यान करि मनहिं संभारी।
अन्धे कहैं सुनाय न मानो होवै ख्वारी।२।

पदः- जब कछु काल करिय सतसंगा। तब यँह होय मोह भ्रम भंगा।।
सतगुरु से लै नाम को रंगा। सारे चोरन करौ अपंगा।।
लै धुनि तेज रूप हो संगा। जियतै जीति जाव जग जंगा।।
भीतर बाहर ह्वै गयो नंगा। सुर मुनि आय के कहैं मलंगा।।
अन्धे कहैं भजन का ढंगा। पढ़ि सुनि गुनि कै होवै चंगा।।
राम भजन बिन पड़ा अड़ंगा। आना जाना होय न भंगा।६।

पदः- सिया राम का सुमिरन करो तब सब तुम्हारा काम हो।
अन्धे कहैं हर दम मगन दोनो जहाँ में नाम हो।

चेतो अभी सतगुरु करो नाहीं तो फिर बदनाम हो।
तन छोड़ के नर्के चलो जो सारे दुख का ग्राम हो।४।

शेरः- अन्धे कहैं बनि दीन जावो द्वैत तब होवै फना।
परकास का वह धाम है जहँ शांति साम्याना तना।
जियति में दीदार कर लो प्रेम में तन मन सना।
यह सखुन सुर मुनि ने कहा आना व जाना हो मना।४।

पदः- अंड बंड में धन है जाता। अंड बंड का भोजन खाता।।
अंड बंड का गाना गाता। अंड बंड का भाव बताता।।
अंड बंड की बात सुनाता। अंड बंड से जोड़े नाता।।
अंड बंड बिन और न भाता। हरदम अंड बंड में माता।।
तन तजि अंड बंड में जाता। तन फिरि अंड बंड का पाता।।
सुमिरन बिन न होय कुशलाता। अन्धे कह सुर मुनि कह्यो बाता।६।

पदः- अल्ल बल्ल खाते औ पीते अल्ल बल्ल ही बतलाते।
अंधे कहैं छोड़ि तन नर्क में हाय हाय करि चिल्लाते।।

पदः- हज्ज कीन कहते सब हाजी। मन जीते बिन पाजी।
अंधे कहैं अंत हो दोज़क अल्ला भये न राजी।
मुरसिद करै भजन विधि जानै जियतै जीतै बाजी।
ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि रूप सामने साजी।४।

पदः- मुझ पै निगाह फेंको मुरली सुनाने वाले।
नैनों क करि इशारा भृकुटी फिराने वाले।
मुसक्यान क्या रसीली तन मन लुभाने वाले।
आँखैं अजब कटीली जादू चलाने वाले।४।

सखियाँ सखा हठीली संग में नचाने वाले।
पापिन पै करि के दाया हरि पुर पठाने वाले।
भक्तों में प्रेम पाया पासै बिठाने वाले।
अन्धा शरनि में आया गोदी उठाने वाले।८।

पदः- ब्रह्म गायत्री त्रगुणातीत। र रं की धुनि सुनिये मीत।
सतगुरु वचन पै करि परतीत। जियतै मन को लीजै जीत।

अंधे कहैं यही कुल रीत। छूटि जाय तन मन की सीत।
सबके हित गायन यह गीत। जिन गुनै ते दोउ दिसि तीत।४।

पदः- जाको प्रेम है सब्द में सो वामें मिलि जाय।
जाको प्रेम प्रकास में सो प्रकास ह्वै जाय।
जाको लै में प्रेम है सो लै में मिलि जाय।
जाको रूप में प्रेम है सो रूपै ह्वै जाय।४।

जे चारिउ को जानिगे ते हर दम हरसाँय।
अंधे कह तन छोड़ि के सत्यलोक गे पाय।
अंधे कह सतगुरु कह्यो मम मन गयो समाय।
जे सतगुरु के लाल हैं ते इस भेद को पाय।८।

दोहाः- झूंठे ज्ञानी हैं बने मानत नाम न रूप।
अंधे कह बेकार हैं जैसे टूटा सूप।।
पढ़ि सुनि कै उपदेश दें खुले न आँखी कान।
अंधे कह तन छोड़ि कै जमपुर करैं पयान।२।

दोहाः- नाम रूप परकास लै जियति लेय जो जान।
अंधे कह सो मुक्त है पायो भक्ति औ ज्ञान।।

दोहाः- अंधे कहैं प्रभु का सगा। तन छोड़ि निजपुर जगमगा।

शुभम् सम्पूर्णम्

।। जै श्री सतगुरु महाराज जी की ।।

संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति

। संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति

संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री

संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री

संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री

संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री

संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत

ंत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत

त भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत

त भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत

भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत

भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत

भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भग

भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगव

भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगव

भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्

श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त कीरति श्री संत भगवन्त

श्री परमहंस राममंगल दास जी सभी धर्मों को मानते थे। उनके भक्त हर धर्म व जाति के थे। कोई भेद भाव नहीं था। हिन्दुओं को देवी-देवताओं के मंत्र, मुसलमानों को कलमा व नमाज पढ़ना, सिख्खों को उनकी गुरु-परम्परा के अनुसार उपदेश व ईसाइयों को उनके धर्म के अनुरूप मार्ग बताते थे। वे कहते थे कि भगवान भाव व प्रेम के भूखे हैं आडम्बर के नहीं।

उनका मुख्य उपदेश था : ''सादा भोजन, सादा कपड़ा, अपनी सच्ची कमाई का अन्न तथा अपने को सबसे नीचा मान लेना। कोई बेखता बेकसूर गाली दे, धक्का दे उसके हाथ जोड़ देना।'' वे कहते थे ''मान अपमान फूंक दो तब भगवान की गोद में जाकर बैठ जाओगे। जो भगवान को सब कुछ सौंप देता है, भगवान उससे बड़े खुश रहते हैं। जिसको भगवान का सच्चा भरोसा है उसे तकलीफ कैसे हो सकती है।''

''सेवा धर्म से बड़ा कोई धर्म नहीं है। बिना बुलाये जाकर सेवा कर आओ, जितनी शक्ति हो, बस भजन हो गया। बुलाकर जाने से सब कट जाता है।''



संत शिरोमणि

अनन्त श्री परमहंस राम मंगल दास जी

(12.2.1893 - 31.12.1984)

श्री परमहंस राम मंगल दास जी ने सन् 1933 ई० से सब देवी-देवताओं तथा हर धर्म के [illegible] सन्तों द्वारा ध्यान में तथा प्रत्यक्ष प्रकट होकर लिखवाये आध्यात्मिक पदों को चार दिव्य-ग्रन्थों में संग्र[illegible] किया। लगभग 50 वर्षों से ये दिव्य ग्रन्थ उनके गोकुल भवन आश्रम में परम पूज्य रूप से सुरक्षित र[illegible] हैं। इनके कुछ अंश ही छपे परन्तु सम्पूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन भगवत्कृपा से अब हो रहा है।

दिव्य ग्रन्थ-1 जिसका नामकरण दिव्य रूप से श्री गुरु वशिष्ठ जी ने किया "श्री राम-[illegible] लीला भक्तामृत चरितावली" उसके प्रथम भाग का प्रकाशन श्री वशिष्ठ जी की आज्ञा व कृपा से सन् [illegible] में हुआ। इसी दिव्य ग्रन्थ-1 के द्वितीय भाग तथा दिव्य ग्रन्थ-2 "श्री भक्त भगवन्त चरितामृत सु[illegible]सर" का प्रकाशन श्री गुरुकृपा से 2002 ई० में हुआ। इसी श्रंखला का दिव्य ग्रन्थ-3 "श्री संत [illegible]वन्त कीरति" सर्व जगत कल्याण के लिये अब प्रकाशित किया जा रहा है।

संसार के इन अलौकिक ग्रन्थों में भगवान के नाम की महिमा, सद्गुरु महिमा, सुरति शब्द योग, भगवान को पाने के अनेक मार्ग, इनमें आने वाली स्थितियाँ व अनुभव, ध्यान की विधियाँ, विभिन्न अनहद नाद, पूजन की विधियाँ, सब कमलों, चक्रों व नाड़ियों का वर्णन है। भगवान, देवी देवताओं के स्वरूप तथा सब लोकों का वर्णन किया गया है। हर धर्म, जाति व पेशे (व्यवसाय) के संत पुरुष व संत स्त्रियों ने लिखवाया है कि जीवन में कैसा आचार विचार होना चाहिये तथा उन्होंने किस प्रकार के कार्य किये जिनसे उन्हें भगवान का धाम प्राप्त हुआ। विभिन्न दुष्कर्मों व कुकर्मों के करने से किस भयावह नर्क में सजा मिलती है उसका वर्णन किया है। निंदा करने वाले को आधा पाप मिलता है।

प्रस्तुत दिव्य ग्रन्थ-3 में श्री परमहंस राम मंगल दास जी को दर्शन देकर जिन्होंने दिव्य आध्यात्मिक पद लिखवाये हैं, संक्षिप्त रूप में वे इस प्रकार हैं :-

- श्री विराट भगवान जी, श्री पर नारायण जी
- श्री विन्ध्यवासिनी देवी जी, श्री अष्टभुजा माता जी, श्री थमसा माता जी
- भगवान राम जी के मुकुट, धनुष व बाण; भगवान कृष्ण जी की मुरली व कुण्डल; भगवान विष्णु के शंख, गदा व पद्म
- भगवान शंकर जी का त्रिशूल, डमरू व झोरी
- श्री सीता जी, राधा जी, लक्ष्मी जी की चन्द्रिका
- ऐसे सन्त जिनके सामने हर समय विभिन्न देवी-देवताओं की छटा रहती है
- श्री नाभा राम दास जी, श्री पलटू जी
- श्री अंधे शाह जी

इन दिव्य ग्रन्थों में सब धर्मों का सार, उनकी एकता, विश्व-बंधुत्व, सबमें प्रेम व्यवहार, सद्भाव, दीनता व सेवा भाव का उपदेश दिया गया है। श्री गुरुदेव परमहंस राम मंगल दास जी के अनुसार, "इन ग्रन्थों को जो पढ़ेगा, प्रेरणा पायेगा, उन बातों पर चलेगा और तदनुसार अपनी दिनचर्या बनायेगा, तो उसका जीवन सार्थक होगा, उसका कल्याण होगा।"